अनत जीवन

डोरथी विमला

अभिषेक प्रकाशन
ईश–कृष्ण–कुटीर
वालिका डागा म्कल क पास नाखा राड
गगाशहर (वाकानर) फान – 23984

प्रकाशक मडल
सर्वश्री चन्द्रकुमार रावर्ट
अभिपक स्वीटी शुचि शिल्पा
एव भाई जॉन वपटिस्ट अजमरी

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम सस्करण 1000 प्रतियाँ
वर्ष 1996

मुद्रक
जनसवी प्रिन्टर्स
दाऊजी मदिर भवन
बाकानर

लेजर टाईप सेटिग —
दवे कम्प्यूटर्स
कोटगट बीकानर

समर्पण

स्टे आदरणीया मातेश्री उ,

(श्रीमता एस्तर गुलाव पत्ना श्रा समुएल रॉबई

का जिनका प्रबल इच्छा था

वाइबल

की जावन गाथा का

हिन्दा—साहित्य क लिए

काव्य रूप म निबद्ध किया जाय।

(आप भैरव—रत्न मातृ विद्यालय बाकानर (राजस्थान) म गणित व अग्रजा

विषय की अध्यापिका एव गाइडिग की प्रभारा थीं।

श्रीमता गुलाब दवा क नाम स आज

भी पहिचाना जाता हैं।)

नाम — डोरथी विमला

जन्म — 21 1 1934

शिक्षा — एम ऐ

(हिन्दी एव समाज शास्त्र)

प्रशिक्षण — बी एड एवं डिप्लोमा ऑफ एज्युकेशन

नीपा नई दिल्ली

कार्यक्षेत्र — शिक्षा विभाग, राजस्थान बीकानेर

रूचि–अभिरूचि — साहित्य सृजन। शिविरा नया शिक्षक शिक्षक दिवस हेतु शैक्षणिक लेखन

पूर्व प्रकाशन — तीन धाम–तीर्थ झरोखा बैतलहम मे (दोनो पुस्तक शिक्षा विभाग द्वारा चयनित)

वर्तमान निवास — ईश–कृपा कुटीर बालिका डागा स्कूल के पास

नाखा रोड गगाशहर बीकानेर (राज)

फोन — 23984

प्रकाशकीय

अनत –जीवन को मनुष्य सृष्टि की उत्पत्ति से आज तक खोज रहा है।

अधिकाश मनुष्य इसी भ्रम मे रहते हैं कि वे सब कुछ जानते हैं किन्तु मनुष्य जो जानता है वह सीमित है जो वह नहीं जानता वही अनत है।

अनत–जीवन का प्रकटन व्यक्ति की अपनी क्षमता पर निर्भर करता है। ससार मे कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं जो आनदित न रहना चाहे, लेकिन बहुत कम इस बेशकीमती तृप्ति और प्रसन्नता की विनम्र ज्योति को देख पाते हैं। जब मनुष्य कुछ अच्छा करता है तब वह स्वय के साथ दूसरो को भी प्रसन्नता देता है। परमेश्वर से वाचा बाँधता है । पास–पड़ौस समाज देश विश्व के सदर्भ मे भी सोचता है। इसी सात्विक मानसिकता का हस्तान्तरण एक व्यक्ति दूसरे को करता है। उदार–सोच का विस्तारण हाता है। यही मनुष्य की आत्मिक सपदा है।

अनत–जीवन महाकाव्य मनुष्य की इसी आत्मिक सम्पदा को पूर्णता के साथ उजागर करता है। प्रकृति नभ जल खेत वन वर्षा हिम ओस प्रत्येक प्राणी के साथ उसके चिरकालीन सबध है आत्मिकता के साथ वह उसे अनुभूत करे मानवता के विकास पल्लवन, सामजस्य के लिए। हर पीढी का अपना भार–विरेचन होता है। नैतिक सस्कृति चेतना मनुष्य की सबसे बड़ी पूजी है। यदि वही नहीं है तब उच्च चेतना की अपेक्षा कोई नहीं कर सकता।

वास्तविक मनुष्य को कैसा होना चाहिये? उसके जीवन का अर्थ क्या है? आत्मिक पुनरूत्थान उदात्तम नियति क्या है? सादी और शाश्वत समस्याए जीवन के प्रश्न?– इन्हीं का है उत्तर अनत जीवन ।

परमेश्वर के साथ अवस्थिति का मार्ग चुनौतियो से भरपूर है। विध्वसात्मक दृष्टिकोण से परे सृजनात्मक और रचनात्मक प्रवृत्तियो को अपनाना ही अनत–जीवन है। आत्मिक पुनरूत्थान ही अनत जीवन है। लेकिन ससार को देखने के लिए बालक और ज्ञानी की दृष्टि एक साथ चाहिये।

परमेश्वर मनुष्य एव यीशु–ख्रीष्ट के इसी निर्मल एव परिपूर्ण प्रेम का प्रकाशन है अनत–जीवन ।

बाइबल की जीवत गाथा पर आधृत बीस सर्गों का यह 'महाकाव्य शायद उस जिज्ञासा को तृप्ति दे सकेगा, जो यह जानना चाहते है कि अनत–जीवन क्या है? पृथ्वी पर इसके परिभ्रमण का कोई अन्त नहीं यह महासागरीय तरगों की तरह अनत है।

जो जीवन के तट पर शाश्वत रूप से गर्जन–तर्जन करती रहती हैं।

अस्तु प्रत्येक इकाई का जीवन मूल्यवान है। उसकी ज्योतित किरण विश्व पर शान्ति–विभा का वर्षण करती रहे और सारी सृष्टि प्रभु अनुग्रहो से आशीषित होती रहे। पुस्तक का मूल स्वर यही है।

लेखिका का सौम्य समर्पण एक अभिनव उन्मेष है।

प्रकाशक मडल

कृतज्ञ — निवेदन

सवा–निवृत्ति क बाद आप क्या करगा । भाई श्री चन्द्रशेखर नवयुग–ग्रथ कुटीर बीकानर ने जानना चाहा ।

अभी कुछ नहीं सोचा ।

उन्होंने सुझाव दिया– आप के समाज ने हिन्दी साहित्य को स्मरणीय जैसा कुछ भेट नहीं किया है आप बाइबल को महाकाव्य मे निबद्ध करिये । लिखती आप रही हैं ही ।

महाकाव्य! कविता कभी नहीं लिखी ।

वे प्रोत्साहित करत हुए बोल – प्रयास करिये अब आपके पास समय है ।

सुझाव अच्छा लगा । अकस्मात् याद आया मातु श्री न भी एक बार कहा था बाइबल को काव्य बद्ध किया जाना चाहिये।

लकिन क्या यह हो सकेगा ?

ईश्वर का नाम लेकर एक दिन कार्य आरभ कर ही दिया। कभी सप्रयास कभी स्व स्फुरण । तीन वर्ष का लम्बा समय कैसे बीत गया पता नहा चला। इस बीच बाइबल साहित्य सग्रहित करने के साथ–साथ बाइबल साहित्य के सुविज्ञ हिन्दी विद्वानो की भा तलाश रही पर यह अभाव अत तक खलता रहा जिनक साथ खुली चर्चा की जाती ।

हिन्दी क विद्वानो स अवश्य परामर्श लिया जिनम डॉ परमानन्द जी सारस्वत निकटस्थ रहे । श्री इन्द्र नारायण मूथा वरिष्ठ सम्पादक (शिविरा नया शिक्षक मासिक पत्रिका शिक्षा विभाग राजस्थान) बीकानेर ने कहा — शुरू किया है तो पूरा करना ।

उत्प्ररणा भरी चुनौती । पर लक्ष्य सुनिश्चित हुआ। अन्यथा शायद हौसल पस्त हो जात।

कार्य बढता रहा। किसी ने व्यग्य म कहा —नयी बाइबल । ईसाई इस नहीं समझ सकग। काई नहीं पढेगा । कोई मार्केट नहीं होगा। किसी ने कहा– कुछ नहीं छपगी जब दखगे ? किसी ने कहा —भाषा कठिन है लय नहीं लोच नही। किसी ने कहा छपाई भारी पड जायेगी। लिख कर टाड पर रख दना। काई पीढी रूपा लगा। किसी न कहा– बाइबल का निचाड है ।

नहा । मैने सहजता से कहा — बाइबल की जीवत गाथा को पद्य–रूप म निबद्ध करते हुए उसमे समाहित विनम्र –जीवन विज्ञान का एक अध्ययन है। मनुष्य अपने जीवन की इच्छाआ और जीवन म उद्घाटित होने वाले सौंदर्य –बोध म उस परम–सत्ता परमात्मा के साथ निरतरता बनाये रख कर कृतज्ञता के साथ उसका एहसास कर सकता है यदि आत्म–सयमन जागृत हो जाये ।

ऐसा व्यक्ति कह सकता है — चाहे घोर–अधकार की तराइया म चलूँ, तो भी न डरूँगा ।

मैं हूँ तैयार अभी तैयार

हे मर प्रभु मैं तेरी पुकार सुनता हू ।

पुस्तक अनत –जीवन से परिचित होने का अर्थ है– स्वय से परिचित होना। समस्याआ से परिचित हाना। समाधान प्राप्त करना । क्योकि बाइबल की प्रत्यक घटना म है — परमेश्वर का जीवत स्पर्श ।

पृष्ठ वृद्धि की अपेक्षा सत् को अधिक महत्व दिया गया है । थोड़े मे बाइबल के उन स्वर्णिम धागो को गूँथन का प्रयास है जिनमे कहीं सूर्य जैसी प्रखरता है तो कहीं न्द्र–ज्योत्सना से अधिक निर्मल 'वैश्विक–चैतन्य ।

रही बात भाषा की सो बाइबल के शब्द–शब्दाश वाक्य–वाक्याश का अधिकतर उपयोग ऐतिहासिकता का बनाये रखने के लिये किया गया है। यह हिन्दी साहित्य के अर्थ–सौष्ठव रजकता को अपरिपक्व लग सकता है। कथ्यात्मक शैली मे सघन भाव–बोध का उम्मिल प्रबोध सभवतया धरातल पर ही रह गया हो क्योकि काव्य को तराशने क्षाण चढ़ाने खरादन का सुअवसर नहीं मिला ।

जा भी है अनेक वाद प्रतिवादा परिस्थितिया से जूझते लेखन चलता रहा ।

सेवा निवृत–शिक्षा अधिकारी समिति बीकानेर के अध्यक्ष श्री योगन्द्र भटनागर जी न सदा प्रोत्साहित किया 'पूरा करिये आप नहीं लिख रहीं। वही लिखा रहा है।

श्री लक्ष्मण दत्त जी का सवेदनात्मक सहयोग रहा । उनकी पत्नी ने बताया 'वे मातु श्री से पढ़ी हुई हैं। *पिता जी के मित्र आदणाय श्री डी किंग महोदय जी* ने इस कार्य के प्रति खुशी जाहिर की । भाई क्रिस्टोफर सदा उत्साह बढ़ाते रहे ।

कार्य सम्पूर्ण होने पर आदरणीय श्री ई सी एन्थानी, बिशप राजस्थान–डाइसिस अजमेर को उनके बीकानर आगमन पर दिखाया । उन्होंने सराहना की

आशीष देते हुए कहा– बीड़ा उठाया है तो पूरा कर डालिये । फॉरवर्ड मैं लिख दूँगा । परिस्थितियो वश ऐसा नहीं हो सका । श्रद्धेय विशप महोदय क्षमा करेग।

प्रकाशक –मडल के भाई जॉन बेपटिस्ट ने समय की आवश्यकता बताया । श्री चन्द्र कुमार राबर्ट ने कहा – पुस्तक आत्मिक एव नैतिक मूल्या का योग है । अभिषेक ने कहा– 'सितारा की छाँह मे राह बनाती है, यह पुस्तक ।

अस्तु शाब्दिक अल्पत्व म कृतज्ञता स्वीकार करे ' व सब जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष जहा कहीं भी जिस किसी रूप म प्रोत्साहित किया या हतोत्साहित।

वस्तुत पुस्तक परमेश्वर की दीनार है जिसे भूमि म छिपा कर नहीं रखा गया अपितु प्रभु की महिमा के लिये उपयाग मे लिया।

चौपाई दोहा उल्लाला कुडलिया मनहर–कवित हरिगीतिका ताटक आदि छदा मे निबद्ध सात हजार एक सौ सैंतालीस पखुरियाँ प्रभु चरणो मे अर्पित।

—डोरथी विमला

पुस्तक परिचय

सब कुछ बदल सकता है केवल एक चीज नहीं बदलेगी और वह है— मानव की उदारता ।

यही महा—मनस्कता मानवता को सुरक्षित रखने म सदा सहायक रही है/और भी। मानव पुत्र सत नबी आत्म—त्यागी सत्ताएँ आलोक—पुरूष तेजोमय—प्रभा पुज जिनकी लहू—सनी—धारिया का उद्देश्य दूसरो को बचाना है। मनुष्य की महिमा उसकी गरिमा को बनाये रखते हैं।

लकिन मनुष्य के रूप रगा को समझना कठिन है। रोजमर्रा क जावन मे वह कैस पश आता है। काम के समय उसका क्या रूप उभरता है असमानता बाह्य रूपो की भिन्नता उथल—पुथल सकट की घडी म प्रकट होने वाली विलक्षण ऊर्जा सब कुछ अतुलनीय है।

मानव म तीन अन्तर्सम्बन्ध तत्व विद्यमान हैं— मन शब्द और कर्म। यहा मनुष्य की सामर्थ्य है। उसका चरित्र है। उसकी आत्मा की ऊचाई इन्हीं से नापी जाती है। शाश्वत स्थिर सार्विक चेतना प्रभु—सत्ता म विश्वास मानवीय सस्कृति और ससृति की नींव है।

अनत—जीवन पुस्तक का प्रस्थान बिन्दु यही है। बाइबल की पुनीत जीवत गाथा मानव जाति के लिए प्राणि—मात्र की शान्ति व कल्याण के लिये सर्वग्राही *आत्मसात्कारिता न केवल एक नैतिक पैमाना है अपितु नया जीवन देने वाला भी है।*

बाइबल—संक्षिप्त परिचय

बाइबिल जीवन का विनम्र—विज्ञान है जिसकी सर्वोच्च मान्यता यह है कि परमेश्वर की स्तुति हो। परमश्वर दने वाला है मनुष्य लने वाला।

बाइबल की प्रथम पुस्तक 'उत्पत्ति' यह स्पष्ट करती है कि मनुष्य सिद्ध सिरजा गया पर प्रलाभन उस पर हावी हुआ। उसने परमश्वर का व्यवस्थाआ का उल्लघन किया। बाइबल न इस पाप बताया है। मनुष्य क मन विज्ञान का खुलापन बिना किसी लाग—लपट क इसम बताया गया है। यही सत्य—तथ्य मनुष्य का राह चुनन म मदद

देता है।

बाइबल की घटनाए आत्मिक प्रदीप्तियाँ हैं जिन्हे १४५० वर्षों मे ४४ लेखको न अलग अलग देश काल परिस्थितिया म ६६ पुस्तको म लिखा। सब का मूल स्वर एक ही है– 'प्रभु के अनुग्रह म बढना ।

दो हजार भाषाआ, उप–भाषाआ मे अनुदित बाइबल ससार की सबस अधिक आलोच्य दृष्टि से देखी जाने वाली पुस्तका म से एक है क्याकि यह एक कडुवी पुस्तक है। न्याय नरक की सच्चाइयाँ कडुवी हाती हैं।

बाइबल के वचन और शब्द तलवार की तरह नुकीले हथौडे की तरह शक्ति–शाली बीज की तरह जीवित दीपक की तरह प्रकाश दने वाले दर्पण की तरह अक्स दिखाने वाले अग्नि की तरह मैल को भस्म करने वाले भाजन की तरह आत्मा को शक्ति व तृप्ति देने वाल हैं।

आत्मिक चैतन्य जगाने वाले बाइबल के शब्दा को 'मेडीकल –शब्द' कहा जाता है। सम्पूर्ण साँत्वना देने वाल पूर्ण शब्दो का अकत खजाना है –बाइबल।

बाइबल के दो भाग है– पुराना नियम और नया सुसमाचार । पुराना नियम इस्राएल राज्य के उत्थान–पतन के साथ मनुष्य –जाति के उद्धारक की अभिघोषणाए करता है। नया सुसमाचार –'यीशु के सुसंदेश सुनाता है। दिव्य रूपान्तर के शिखर पर मनुष्य का ले जाता हैं जहाँ वह आत्मिक निर्मलता स सज्जित 'पुनरूत्थान को पाता है उसका पुनरागमन अर्पण क लिये सर्वस्व की आभ को लकर आता है।

बाइबल की मूल–प्रतियाँ अस्तित्व मे नहीं हैं, पर चौथी शताब्दी की ४००० पाँडुलिपियाँ रोम लेनिग्रड लदन के सग्रहालयो मे सुरक्षित हैं।

सम्पूर्ण बाइबल आत्म–कथन है । आत्म–कथन मनुष्य का ऐसा गुण है जा उसे 'पवित्रीकरण का चोगा पहिना दता है । मनुष्य अपनी आत्मा का परमश्वर के आग उडलता है। आत्मिक पुनरूत्थान मन जगाता है । प्रार्थना– मय सवाद जब वह परमेश्वर से करता है सारे कलुष धुल कर धवल–श्वत रूप म परिणित हा जात हैं। आत्मा (मन) इतनी हल्की और उजली हो जाती है कि मघा पर विचरण कर। परमश्वर का वाणी तब उसके लिय अनुरणन करती है– तू कुन्दन शुद्ध धार ।

बाइबल की विभाव्य शब्दावली–

परमश्वर का अभिव्यक्ति दन वाल शब्द –

यहावा पिता उद्धारक न्याया चट्टान शाऊ–झिरुम जा हू मा हू

शालेम चरवाहा सेनाओ का प्रभु सृष्टि कर्ता एल्योन रोफ्री एदोनाय यिरे एलाकहम एल–ओलम ।

'यरूशलेम = सिय्योन पुत्री ।

राष्ट = भूमि भूमा ।

पवित्रीकरण = पूर्ण समर्पण ।

सहभागिता = सच्ची और आनदप्रद सगति ।

सु–समाचार = परमेश्वर के अनुग्रह का सदेश।

दुष्ट और दुष्टता = दासत्व कब्र – अंधेरा मृत अधियारा बहिरे मति–अध व अधकार पाप परमेश्वर को अस्वीकार करना।

परमेश्वर का स्वरूप = आत्मिक नैतिक बौद्धिक गुणा का समावेश ।

सिद्द मनुष्य = जो मनुष्यता की सीमाओ को स्वीकार करे मानवता की रक्षा करे परमेश्वर का प्रतिनिधि अर्थात मानव पुत्र।

यीशु मसीह
और आदम = सृष्टि का प्रथम व्यक्ति आदम — जिस पर प्रलोभन हावी हुआ। यीशु मसीह ने आदम स्वभाव से ऊपर उठ कर ,जीवन मृत्यु मे मानवता के पुनरूत्थान को प्रगट किया इसीलिये उसे मानवीय होते हुए भी स्वर्गिक परमेश्वर का पुत्र कहा गया ।

पुनरूत्थान = नया विजयी जीवन ।

पुनरागमन = जीवन का एक नया क्रम । आत्म–विश्वास की परिपक्वता ।

लूसिफर = शैतान बुरे विचार बुरी मत्रणाए।

स्वर्ग–राज्य = प्रेमिल आत्मिक प्रेम निर्मल हृदय अनत जीवन — परमेश्वर की व्यवस्था के तहत रह कर उसकी इच्छा पूरी करना हृदय की निर्मलता के साथ रहना।

परमेश्वर का पुत्र = परमेश्वर का प्रिय जन जो पिता–परमेश्वर के ईश्वरत्व उसके वैभव मे सहभागी होकर उसे महिमाम्वित करता है।

परमेश्वर = अदृश्य सामर्थ्यवान सर्वोच्य शक्ति। प्रेम अनुग्रह कृपा धर्म और न्याय उसका नैतिक सिद्द रूप है।

परमेश्वर का राज्य = एक सार्वभौमिक राज्य एक पूर्णता का अनुभव ।

परमेश्वर का श्वास = प्रेरणा।

पवित्र आत्मा की दीक्षा = ईश्वर के अनुग्रह दान को प्राप्त करना ।
मन्ना = आत्मिक भोजन
बाइबल के वचन = परमेश्वर की सर्वोच्य सत्ता को स्वीकार करना, उसकी महिमा को प्रगट करना ।

'' अनत–जीवन''– पुस्तक का सार सक्षेपण

अत्यत प्राचीन काल से मानव जाति 'मनुष्य की कथा सुनती आयी है। मनुष्य की नियति जन मन और उनके स्वप्न। गुण– अवगुण सघर्ष शान्ति कर्त्तव्य अन्त करण उत्प्रेरणा सौन्दर्य–प्रेम प्यार–विच्छेह जन्म–मृत्यु और वे सब चिन्तन जिनसे जीवन बनता है इस महाकाव्य की विषय–वस्तु हैं।बाइबल की पुनीत जीवत गाथा पर आधृत हैं।

बाइबल उस अनत–जीवन की पैरवी करती है जो यह सिद्ध करता है कि हिसा अपरिहार्य है लेकिन सब कुछ उस पर निर्भर नहीं करता वह मात्र पाप–लिप्त जीवन का दासत्व है । इस घिनौने– स्वरूप से मुक्ति पाई जा सकती है । उपभोक्ता मनोवृत्ति वाले व्यवित हर युग मे हुए हैं होते रहगे । पर बाइबल इन्हे भी आत्म– परिष्करण पुनरूत्थान का अवसर देती है।

जीवन के अनेक पहलुओ क पुनरावलोकन कथनी– करनी क कडे सामजस्य की आवश्यकता हर युग को रहती है। भलाई और बुराई की सौदबाजी से शॉन्ति नहीं प्राप्त हो सकती। इससे भद्दे समझौतो की राहे बनती है। ऐस म ईमानदार धर्मी व्यक्ति खामोशी तलाशते हैं। अधूरा सत्य अधूरी कार्यवाही आशिक दड लाभप्रद मान जाते है ।

पृथ्वी पर धर्म न्याय और सच्चाई का राज्य बना रहे (बाइबल म इसी को 'परमश्वर का राज्य कहा गया है) अत परमेश्वर धर्मी–जन का चयन करता है अब्राहम को परमेश्वर ने इस्त्राएल के आदि पुरूष के रूप मे चुना कि उससे एक 'महान राज्य की स्थापना करे । इस महान राज्य को लाने के लिय परमश्वर का एक महानायक की आवश्यकता प्रतीत हुई, जा इस महाकार्य का कर। धरता और स्वर्ग को जाड़ दिखाये नयी धरा नया स्वर्ग बनाये कि ससार अनत–जावन की आशीष पाय ।

आत्मिक दृष्टि से सशक्त 'मानव पुत्र– यीशु को अलौकिक तजस् क साथ

प्रगट करके परमेश्वर ने अपना महानायक बनाया ।

निष्प्राण होती मानसिकता को मानव पुत्र– यीशु ने भाव–भूमि दी। निरन्तर प्रवाहित एक ऊर्जा के समान। अन्तस का बाध जगाने के लिये सत्य और न्याय के लिये चगाई के लिये वे कहीं निर्भीक योद्धा कहीं सुलह सैनानी कहीं वैधक कहीं रब्बी (शिक्षक) कहीं नेतृत्व करन वाला चरवाहा कहीं पौधो को सरक्षण देने वाला माली कहीं काडा उठाये प्रचड समाज सुधारक कहीं सचेतक न्यायी कहीं दास कहीं सेवक कहीं दिव्य रूपान्तरित 'प्रभु–पुत्र' कहीं पारिवारिक दाय निभाने वाला पुत्र कहीं शाश्वत जीवन देने वाला जीवन–जल का स्रोत कहीं आशीषित रोटी परोसने वाला कहीं युगात प्रकाशन करने वाला भविष्य वक्ता कहीं प्रेम की करूणा कही जीवन कहीं दीन कहीं विनयशील। कभी उदास कभी निराश कभी प्रभु से सवादी बालक के समान शीतल उजास करूणा प्रकाश आत्मिक सम्पदा से पूर्ण। स्वर्ग और धरा के चिरकाल से चले आ रहे सबध का सुदृढ बने जन्म–भूमि और वैश्विकता के प्रति प्यार और कृतज्ञता की भावना जगे प्रत्येक इकाई की नैतिक क्षमता को वे बढाते हैं कि वह प्रकृति खेतो वनो वर्षा हिम ओस बूदो के साथ चिरकालिक सबधो को जोड़े स्वतन्त्र रूप से सोच सीख अपने जीवन मे नागरिक एव वैश्विक बधुत्व भाव का समावेश कर कि–

मानवीय शक्तियो का आरक्षित भडार 'हर खेत–खलिहान' मे प्रगट हो जो सदा बुराई क विरूद्ध युद्ध करता है– कि मनुष्य न केवल आपातकाल मे अपितु शान्तिकाल मे भी शान्ति–पूर्ण कार्यों क प्रति आस्थावान साहसी और ईमानदार बना रह ।

मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी यही है । सचतन–श्रम का अमूल्य मोती यही है। हर पीढ़ी हर व्यक्ति इस अपने पूर्वजो से प्राप्त करता रहे स्थिर रह । पुनीत धरोहर ससृति का खेवट करे सवक बन कर।

सर्ग परिचय

याशु का जन्म–स्थली पवित्र सवादक वादी अभिभूत हो अक्षुण्ण 'तेजस्' का उन्मुक्तता क साथ प्रवाहित कर रही है कि प्रत्यक इकाई की 'जीवन शैली' उस जीवन स जुड़ नहा स सड़ा गली जरा–जीर्ण व्यवस्थाओ स लड़ने की शक्ति मिलना है। जहाँ शरीरो क सैलाब हैं। नये समाज क निर्माण क लिये अनत–जीवन

पान के लिये। एक नया इन्सान बनने के लिए। आत्मा पारलौकिक उदात्तता को महसूस करे। नैसर्गिक प्रवाह बन कर बादलो पर विचरण करे। धरती पर स्वर्ग की आशीषे लाये। जहा न देह बाधक है न कोई अवरोह ।

महाकाव्य के बीस सर्गों का नाम बाइबल की प्रमुख पुस्तको पर ही रखा गया है ।

प्रथम सर्ग — महिमा

परमेश्वर का राज्य कोई वस्तु नहीं है यह व्यक्ति की अपनी आत्म–निष्ठा है। यह एसे ही है जैसे किसी फूल को खिलते हुए देखना या हिम– पुष्पा के विविध कोणा को समझना। मन इस अद्‌भुत आनद की गहराई अपने भीतर महसूस करता है। यही पारदर्शक सौदर्य ईश्वरीय महिमा है चैतन्य है । नबियो ने सता ने राजाओ ने धर्मी जनो ने समय–समय पर इसे पाया और गाया।

महिमा सर्ग मे इसी अन्तर्दर्शन की स्तुति है ।

द्वितीय सर्ग —'उत्पत्ति'

उद्‌भव / आरभ

चयनित अब्राहम बेबीलान के उर नगर म रहता था परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन 'कनान देश का निवासी हुआ। नि सतान दम्पति को यहा पुत्र इसहाक के रूप परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त हुआ । परमेश्वर ने अब्राहम से वाचा बाँधी कि वह एक बड़ी जाति का मूल पिता होगा । लेकिन उसके विश्वास को परखने के लिय पुत्र इसहाक की बलि चढ़ाने के लिये कहा।

मोरिय्याह पर्वत पर वेदी बना कर पुत्र को जैसे ही भेट चढाने के लिये वह प्रस्तुत हुआ कि आकाश–वाणी हुई — रूक जा । तू विश्वास मे परखा गया पूर्ण निकला मैं तुझ स प्रसन्न हू ।

अब्राहम का विश्वास उद्धार का 'वारिस हुआ। बाल्क इसहाक परमश्वर के अनुग्रह म बढता गया । रिबका से उसका विवाह हुआ । एसाव और याकूब जुडवॉ पुत्र हुए। परमेश्वर ने याकूब को वाचा योग्य ठहराया । याकूब के बारह पुत्र हुए जो बारह गोत्रो के मूल पिता कहलाये । याकूब का ग्यारहवॉ पुत्र युसुफ स्वप्न–दृष्टा था। भाइयो ने ईर्ष्या वश उसे बेच दिया । वह मिस्त्र म दास बना। बदी–गृह म अपने विनम्र व्यवहार के कारण उसने मान पाया । सयोग–वश मिस्त्र राजा फिरौन न एक स्वप्न देखा जिसे कोई सुलझा नहीं पा रहा था। युसुफ को बुलाया गया ।

उसने राजा को बताया मिस्र मे सुकाल और अकाल आने वाला है उसे तैयारी करने के लिये परमेश्वर ने चेतावनी दिया है ।

फिरौन उसकी प्रतिभा से प्रभावित हुआ अपनी मोहर देकर उसे अपना प्रधान मंत्री और बाद मे राज्य–पाल बना दिया। अकाल से निपटने के लिये युसुफ ने तारा पानी भंडारण की विकास योजनाएं बनायीं। अन्य देशों से व्यापार बढाया । युसुफ के कार्यकाल मे मिस्र चरम प्रगति पर पहुँचा ।

इसी दौरान कनान से उसके भाई भी अनाज लेने मिस्र आये । वे युसुफ को नहीं पहिचान सके । युसुफ ने उन्हे अपना विशिष्ट अतिथि बनाया। उन्हे परखा तब स्वयं को प्रकट किया । सारे परिवार को मिस्र बुला कर गशान मे बसाया ।

नब्बे वर्ष तक युसुफ ने मिस्र के लिये कार्य किया । मृत्यु के समय अपना इस्राइली पुत्रो को वसीयत रूप मे देकर वचन लिया कि जब कभी वे प्रतिज्ञात देश जिसे परमेश्वर ने देने के लिये वादा बाँधी है जाय तब उसकी अस्थियाँ अपने साथ वहा ले जाये।

सर्ग यहीं समाप्त है । उत्पत्ति पुस्तक मे दी गयी सृष्टि की कहानी प्रलय नूह और उसकी नौका वाचा का धनुष बाबुल का गुम्मट आदि का विवरण स्वप्न –द्रष्टा युसुफ के उस चिन्तन मे है जो अकाल की पग– ध्वनि सुन कर व्यग्र और विह्वल है। अ–काल क्या?

मानव और प्रकृति का संबंध पर्यावरण संतुलन सृष्टि उत्पत्ति परमेश्वर की आशीष उत्तर–जीवी बनो। फूलो फलो और पृथ्वी पर भर जाओ । जल प्रलय वसुधैव–कुटुबकम् की प्रतीक नूह की नौका। धरती पर नव जीवन लाने के लिये परमेश्वर ने मनुष्य को फिर से जीना सिखाया । प्रकृति की यौंदिक–वृत्ति और विकट जीजिविषा की प्रतीक जैतून की पत्तियाँ कपोती ने प्रकृति की ध्वजा के रूप मे नूह को भेंट करके समझाया मनुष्य के क्रूरतम कार्य सह कर भी प्रकृति उसके प्रति दयालु है क्योंकि परमेश्वर ने चैतन्य–आशीष के रूप मे मनुष्य उसे दिया है।

प्रकृति सदा अपने इसी गीतकार को पुकारती है पुकारती रहेगी जब तक उसका अपना अस्तित्व जीवित रहेगा ।

तीसरा सर्ग– निर्गमन

बाहर निकलना। दासत्व से बाहर निकलना।

मनुष्य जाति के इतिहास मे बहुत मूल्यवान थोड़ी सी पुस्तको मे से निर्गमन

इस्राएली अभी लाल सागर के नजदीक भी न पहुँचे कि मिस्र की सेना ने उन्हे फिर से बधक बनाने के लिये पीछा किया । सामने सागर पीछे शत्रु सैन्य। सब घबरा गये। तभी ईश्वरीय चमत्कार हुआ। 'जल–बोर' ने समुद्र पार करने के लिये राह बना दी । सारे इस्राएली पार हो गय । पीछे पीछे मिस्र की सेना भी आ रही थी कि 'जलबोर' की वापसी के कारण सारे सैनिक डूब गये । इस तरह इस्राएलियो ने दासत्व से मुक्ति पायी। परमेश्वर का गुण–गान किया ।

बीस लाख से अधिक इस्रालिया ने प्रतिज्ञात देश 'कनान' की यात्रा मूसा हॉरून क नेतृत्व मे आरभ की। मार्ग की कठिनाइयो को झेलत हुए कभी सगठित, कभी असगठित बिखरते जुड़ते चल पड़ । धीरे–धीरे मूसा ने व्यवस्था को दृढ किया।

जीवन के मूल सिद्धान्तो का परमेश्वर की 'दस आज्ञाओ' के रूप मे स्थापित किया। प्रशासन चलाने के लिय सविधान विधि विधान, प्रतिज्ञाए निर्देश पर्व फसह व्यवहारिक पवित्रता क्षति हिसा मन्नते, भूमि का उतराधिकार समारोह युद्ध के नियम पर्यावरण सरक्षण विवाह नारी का मान आदि विविध क्षेत्रो के लिये व्यवस्थाए ठहरायी ।

अब इस्राएल ने एक नय युग मे प्रवेश किया परमेश्वर की आराधना के लिए 'मिलाप का तम्बू' पवित्रस्थान निर्धारित किया जहा से प्रत्येक व्यक्ति जीवन की अगुवायी प्राप्त करे । लेवी गोत्र का इसका दायित्व सौंपा ।

मूसा ने निर्देश दिया कि परमेश्वर का स्वरूप किसी ने नहीं देखा है इसलिये परमेश्वर को किसी मूर्ति मे नहीं ढाला जाये । मनुष्य उनके प्रति सदा कृतज्ञ रहे । वह सर्व सत्ता–धारी है ।

भविष्य के लिये सारे प्रबध व्यवस्था करके अपना अंतिम समय निकट देख, अगुवाई की बागडोर यहोशू के हाथ में सौंप दी ।

सर्ग के तीन खड है — प्रथम —इस्राएल का दासत्व मूसा का जन्म । दूसरा मुक्ति — अभियान। नये राष्ट्र का सवैधानिक गठन। तीसरा — मूसा शतक ।

चतुर्थ सर्ग — ''यहोशू'

नून का पुत्र यहोशू मूसा का विश्वसनीय दृढ सहायक था । कनान देश विजित कर मूसा के आदेशानुसार बारह गोत्रों में बाँट दिया और याद दिलाया 'इस्राएल अब एक राष्ट्र है यदि वे परमेश्वर का अनुग्रह और आशीष चाहते हैं स्वय को परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ रखें ।

पॉचवा सर्ग– 'न्यायियो'

सम्पूर्ण कनान प्रदेश को विजित न करने की अवज्ञा के कारण दो सौ वर्षों मे इस्राएली एकता समाप्त होने लगी । धार्मिक केन्द्र 'शीलो' दूर था । केन्द्रीय प्रशासन कोई था नहीं । राजा का राज्याभिषेक अभी हुआ नहीं था । किसी एक व्यक्ति को चयन करके उसे परमेश्वर द्वारा नियुक्त मान कर सब उसका नेतृत्व स्वीकार करत थे। दबोरा बाराक शिमशौन इस काल खड के प्रमुख नेतृत्व रह ।

छठा सर्ग – 'रूत'

सब स्वीकार है । सकल्प पूर्ण यात्रा । सातत्य की शुभ–यात्रा जिसने अपने सकल्प से उस सत्य से साक्ष्य कराया जिसे इस ससार ने 'मानव–पुत्र यीशु कहा।

एलीमेलक, नओमी अपने दो पुत्रो सहित अकाल से बचने के लिये मोआब चले गये । वहीं बस गये। दोनो पुत्रो का विवाह हुआ ।

सयोगवश पिता पुत्र काल–कलवित हुए । नओमी ने स्वदेश लौटने का निश्चय किया । दानो बहुएँ भी साथ चलने को तैयार थी । नओमी चाहती थी, युवा बालाए वैधव्य वहन न करके पुनर्विवाह करे अपना परिवार बसाये । ओर्पा ने सास का प्रस्ताव स्वीकार किया, लेकिन रूत अपने निश्चय पर अडिग रही ।

नओमी और रूत बेतलहेम आ गये । रूत प्रेमिल और विज्ञ थी । उसने नगर वासियो का मन जीत लिया । सास उसे सात बेटो के बराबर मानती थी ।

रूत अब बोअज के खेत मे लवनी के लिये जाने लगी । 'बोअज रूत के त्याग विनय धैर्य से बहुत प्रभावित था। उसने नओमी के पास रूत से विवाह करने का प्रस्ताव भेजा। नओमी ने रूत से इस प्रस्ताव को स्वीकार करने की पेशकश की। रूत और बोअज का विवाह हो गया ।

सारा नगर आनदित हुआ । दम्पति को विपुल आशीषे मिलीं । उसके पुत्र का नाम अबोद रखा गया । यही अबोद 'यीशै का पिता दाऊद राजा का दादा और यीशु मसीह का पूर्वज हुआ ।

इस सर्ग मे रूत और नओमी के जीवन–वृत के साथ बाइबल की प्रमुख नारी चरित्रो के माध्यम से नारी के अन्तर्मुखी तेजस् को मुखर किया गया है ।

इस सर्ग का मुख्य स्वर है नारी समय को चुनौती देती है । वह एक युग नहीं अनेक युगो को झकृत करती है।

सातवाँ सर्ग — शमूएल

एलियाह के बाद शमूएल की अगुवानी म इस्राएल समृद्द हुआ । अब वह स्थायित्व चाहता था । अत राजतत्र की माँग हुई । शमूएल ने राजतत्र क गुण और दाष समझाय । जन—इच्छानुसार 'शाऊल' को इस्राएल के प्रथम राजा क रूप म अभिषिक्त किया । दाऊद राज्य का प्रथम सनापति बनाया गया ।

लेकिन शाऊल निरकुश महत्त्वाकाक्षी राजा सिद्ध हुआ । पलिश्तिया क साथ युद्द मे पिता—पुत्र दाना मारे गय ।

आठवाँ सर्ग — राजा दाऊद

शाऊल की मृत्यु क बाद दाऊद का राजा घाषित किया गया । राजा दाउद ने यरूशलेम का राजधानी बनाया । परमेश्वर की वाचा का सदूक राज—धानी म लाया गया। धार्मिक उत्सव मनाया । राज्य परिषद् का गठन किया । परमेश्वर का भवन बनाने की याजना बनायी ।

दाऊद एक बुद्धिमान प्रभु—भक्त और शूर—वीर राजा था। उसन इस्राएल का एक सूत्र म बाँध लिया । अपने ही जीवन काल म पुत्र सुलमान का राज्याभिषक करा कर इस्राएल का राजा घाषित किया । 'यिशै' का पुत्र दाऊद हा उस विराट अलौकिक तजस का पूर्वज था जिसे शताब्दियो बाद ससार ने मानव—पुत्र यीशु कहा।

नवाँ सर्ग — 'राजा सुलेमान'

राजा सुलेमान ने बुद्धिमाना क साथ आस—पास क दशो क साथ राजनैतिक एव व्यापारिक समझौते किय । मिस्र की पुत्री से विवाह कर शान्ति समझौता किया। राज्य म शान्ति काल आया । अत सुलमान न निर्माण कार्यो की ओर ध्यान दिया। परमेश्वर का भवन बनवाया । जहाजी बेड़ तैयार कराये । सुलेमान न्याय प्रिय कला प्रिय राजा था। वनस्पति विज्ञान का ज्ञाता था । नीतिज्ञ होन के साथ ही गीतकार भी था । सुलमान न तीन हजार नीतिवचन लिख उनम स कुछ का सकलन बाइबल म हैं ।

सुलमान का शासन काल इस्राएल राज्य क लिये स्वर्ण—काल था । राज्य न युद्धा स विराम पाया । सगीत भक्ति ज्ञान विज्ञान की ओर जनता की अभिरूचियाँ बढ़ने लगा ।

दसवाँ सर्ग — 'भजन संहिता'

कवि हृदय राजा दाऊद द्वारा परमश्वर की स्तुति म लिख गय भजना का

ल।

अय्यूब का सारा शरीर घाव–फफोलो से भर गया । सारा परिवार सारा जहाजी बेड़े नष्ट हो गये । पत्नी ने चोट करके कहा – 'क्या तू अब भी परमेश्वर पर विश्वास रखता है ।

अय्यूब ने उत्तर दिया– क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेत हैं दुख न ले ।

सब ने पापी कह कर अय्यूब का साथ छोड़ दिया । उसके मित्र एलीपज सोपर त्रिल्दद दिलासा देने आये । वे भी यही सिद्ध करते रहे अय्यूब का दुख उसके पापा का फल है। अय्यूब उनसे सहमत नहीं हुआ । उसका कहना था, सप्रयास धर्म मनुष्य को प्रथम अक बनाये रखता है। वह अतिम अक बनना चाहता है । परमेश्वर के दर्शन करना चाहता है । अत मे एलीह ने ससार की सीमाओ के पार निमल प्रकाश के दर्शन अय्यूब को कराये । विभोर अय्यूब कहता है अब मेरी आँख तुझे रखती है ।

लूसिफर परास्त हुआ । भक्त ने परमेश्वर के दर्शन पाये । आकाश–वाणी हुई– 'तू कुन्दन शुद्ध धार ।

चौदहवॉ सर्ग–'सभोपदेशक'

राजा सुलेमान का कहावत– व्यर्थ व्यर्थ सब व्यर्थ है के साथ प्रस्तुत एक उपदेशक कहता है मनुष्य धन सुख सम्पति, सारा ऐश्वर्य प्राप्त करे और परमेश्वर को भूल जाये यह उसके जीवन का उद्देश्य नहीं है। यह परिवर्तन भयकर है मृत्यु के समान हैं। जीवन थका देने वाला बन जाता है। पद प्रतिष्ठा वैभव बढता है लेकिन सतोष सुख चैन नहीं मिलता । जीवन की दौड़ पूरा करके अत मे कुछ नहीं मिल यह जीवन का दुरूपयोग है ।

पन्द्रहवॉ सर्ग – राजा'

राजा सुलेमान की मृत्यु के बाद इस्राएल उत्तरी और दक्षिणी दा भागो में बॅट गया । उत्तरी भाग का शीघ्र ही पतन हा गया । दक्षिणी भाग दाऊद वशजो के पास था । धार्मिक सामाजिक स्थितिया बिगड़ने लगी । राजा आहाब की पत्नी नबियो का घात कराने लगी। हिजकिय्याह का पुत्र मनश्शे क्रूर राजा सिद्ध हुआ। सिद्धकिय्याह यरूशलेम का अतिम राजा था । उसकी नीतियॉ अपरिपक्व एव निर्बल थीं । यिर्मयाह नबी की चेतावनी के बावजूद उसने बेबीलोन के विरूद्ध विद्रोह छेड़ दिया । उस समय

मिस्र और बेबीलोन म सत्ता की होड़ चल रही थी । बेबीलोन ने भड़क कर यरूशेलम को घेर लिया । शहर पनाह तोड़ दी नगर लूटा। राजा को बदी बना लिया। आँख फोड जजीरो से बाध कर ले गये । पुत्रो की हत्या कर दी । अब यहूदी बधक थे। यहूदा राज्य समाप्त हो गया ।

सोलहवाँ सर्ग –' विलाप गीत'

नबी यिर्मयाह का विलाप –गीत। यरूशेलम के लिए – जो कभी व्यापारिक कन्द्र था आज वीरान पड़ा है। नगरी यात्रियो से पूछ रही है – क्या उन्ह उसके दुखो पर तरस आता है । उसके पापो का भार बहुत है । उसी के घमड न उस नीचा दिखाया। उसके पहरूए ही उसके विनाश का कारण बने । फिर भी उसे आशा है, परमेश्वर उसके पापो को क्षमा करेगा एक दिन वह अवश्य उद्धार देखेगी ।

सत्रहवाँ सर्ग–'एस्तेर'

परमेश्वर के प्रेम का सागर अनत है उससे अनेको झरने जुड हैं ।

कर्त्तव्य का आदेश बाहर से मिलता है लकिन प्रेम का आदेश भीतर से– नाश हो गई तो हो गई 'मैं यह कार्य करूँगी ।

फारस के राजा क्षयर्ष की पटरानी 'एस्तेर एक अनाथ यहूदी बालिका थी जिसका पालन उसके चाचा 'मौर्दक ने किया था ।

राजा क्षयर्ष ने पूर्व पटरानी 'बशती को जेवनार मे राजसी सौन्दर्य मे उपस्थित न होने के कारण त्याग दिया था ।

राज्य के प्रधान मत्री हामान ने कुटिल षडयत्र करके सारे यहूदियो क विनाश की याजना बनाई । मौदर्क इस जातीय विनाश से चिंतित हुआ । उसने एस्तेर से कहा– राजा को इस 'कपट–कार्य से अवगत करे ।

राजा क्षयर्ष को नहीं मालूम था कि एस्तेर यहूदी है । एस्तेर ने अपने चाचा को विश्वास दिलाया – 'नाश हा गई तो हा गई मैं यह कार्य करूँगी '।

समस्त यहूदी तीन दिन का उपवास रखे। परमश्वर से प्रार्थना कर । 'एस्तेर ने भी उपवास रखा । इसके बाद वह राज–दरबार मे उपस्थित हुई। (उस समय राजा की अनुमति के बिना रानी राजदरबार या राजा के कक्ष मे उपस्थित नहीं हो सकती थी)।

राजा क्षयर्ष एस्तेर की उपस्थिति से प्रसन्न हुआ। उसन राजदड रानी की आर बढ़ाया। रानी ने स्पर्श किया और राजा एव प्रधानमत्री हामान का भाज पर आमंत्रित

विषमताओ को शब्दो से तोडा। जीवन को जितनी सरसता से दिखाया समझाया जा सकता है समझाया । ससार को आगाह करते रहे । सरकार और राज्य घबरा रहे थे। लेकिन यीशु के शब्द विश्व–सत्ता का प्रतीक बन कर कार्य कर रहे थे ।

यीशु ने अपने व्यक्तित्व द्वारा पिता पुत्र पवित्र आत्मा का प्रकटन किया। पिता अर्थात परमेश्वर के प्रति समर्पित निर्मल स्वच्छ विवेक। वे एक चेतन सत्य प्रवाह थे, जो हर चुनौती को स्वीकार करता है।

उनकी स्फूर्त घोषणाए– मैं मानव पुत्र हू ।"थोडा देर और तुम मुझे नही देखोगे । थोडी देर और तुम मुझे फिर देखोगे । मैं फिर आऊँगा ।

ये दिव्य स्फुरणाए है– अर्थात देह मृत्यु को प्राप्त होगी लेकिन शब्दो मे एक एसी जीवन शैली समायी है जिसका सार वैज्ञानिक है सर्वोपरि है मानवीय है मृत्युजयी है ।

उनके शब्दो का पुनरागमन होता है । वे आते है। बार–बार आते हैं। जब जब यीशु के शब्दो का पुनरागमन होता है वही न्याय–दिवस है प्रभु का दिन है। अन्तस के रूपान्तरण का दिन । परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट होता है । जीवन प्रार्थना बन जाता है ।

आत्मवत्ता बनने का नाम ही प्रार्थना है। जहा स्वय की सत्ता रूपान्तरित होकर मानव –कल्याण के लिये एक प्रवाह बन जाय ।

यीशु ने अपनी बात को गहरे नैतिक प्रश्न के रूप मे कहा । समस्याओ पर सीधे अपने–अपने साथ्यो पर उत्तर लिये । समाधान उनके अपने प्रकार का था जिसे वे नि सग भाव से प्रस्तुत करते ।

यीशु के वचनो मे हर विषमता का उत्तर है। उत्तर जो मीठा मानवीय समझ के निकट है । हर विषमता को नकारता है पर उस अकुर को सहजता है जो नई मानवता को दिशा देता है ।

उनके शब्द लाईट ऑन दी पाथ कह जाते हैं। उनकी आध्यात्मिक शहादत एतिहासिक परिपश्य मे प्रथम है इसलिये यीशु को एकलौता 'पहिलौठा' कहा जाता है।

सर्ग चार खडो मे विभक्त है –

प्रथम खड –यीशु का अवतरण । दूसरा खड – यीशु का जीवन दर्शन और कार्य क्षेत्र। तीसरा खड – क्रूसीकरण । चौथा खड– पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण ।

उन्नीसवाँ सर्ग -- 'प्रकाशित वाक्य'

व यहूदी जो यीशु विरोधी थे उनके अनुयायियो को यातनाए देने लगे। पतमुस टापू मे प्ररित यूहन्ना कैद था । यूहन्ना ने यहा 'दर्शन पाया उसे लिख कर मसीह कलीसियाओ को भिजवाया कि भटकता विश्वास दृढता पाये ।

इस दर्शन को भविष्य--सूचक कहा जाता है लेकिन इसका सबध अंतिम युग से नहीं है फिर भी हर युग का प्रकाशन करता है।

बीसवाँ सर्ग --''अनत --जीवन''

अनत--जीवन अन्त करण की निर्मलता का एक पावन पथ है, जिस पर एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी चलती है । पृथ्वी पर इसके परिभ्रमण का कोई अत नहीं। मति--अध धुरीण चाहे जीवन को खड --खड करते रहें लेकिन युग--प्रेरणाओ की पग--ध्वनिया सदा उसे जीवित रखती हैं, इस सर्ग का मूल स्वर यही है।

"अनत — जीवन"

(सार सक्षेपण)

प्रभ वाणा का गूज प्रशात।

भोर हुइ फिर भार सुहाना प्रकाश ही प्रकाश घन सुकात।
और प्रभु न देखा अच्छा है पूण सरल तरल निरभ्र शात॥
सृष्टि — उत्पत्ति उत्थान पुकार पर्यावरण समरसता विकास॥
हम कौन। पाप—उद्धार क्या है। क्या उजडता आत्म निवास?॥
मन का प्रस्फोटन सौदागिरा आत्मिक मृत्यु यही लज्जा॥
पूर्ण विश्वास—मया आत्मा सच्चा प्रम आनन्द विनीत सज्जा॥
प्रभु प्रम कथा अनत जावन आढ धर्म की चादर उतार॥
आदि पुरूष कहत बारम्बार॥

यहोवा सदा अनुग्रहकारी। मालिक सदा रहे उपकारी।।
तरम प्रजा पर प्रभु है खाता। मह आशीष यहावा बरसाता।।
खलिहान अन्न प्रभु भर दता। निज ज्योत अधकार हर लेता।।
प्रभु आग झुक राज राज। चचल मन साध — अधिराजे।।
मूल्य क्या ! जीवन का तेरे। भटक रहा घनघोर अधेरे।।
कल की चिन्ता बना चितेरा। नहीं ठिकाने है मन तेरा।।

दोहा — भावी के ऊपर तेरा तनिक नही अधिकार।।
कष्टा स वहीं बचाये कर याद प्रभु उपकार।।

पवित्रशास्त्र महिमा

पवित्रशास्त्र प्रभु वचन सुनाता। कैसा हो जावन समझाता।।
वाणी प्रभु की नियम पुराना। सत्य न्याय का ताना—बाना।।
बडी भार निज कर्म यढ़ाते। दुष्ट आचरण प्रहार लगाते।।
अमर—ज्ञान की धार बहात। जीवन सगीत नबी सुनाते।।
सकल्प नया नियम दुहराता। पूरा कर वाणी दिखलाता।।
पवित्राकरण है अर्थ पाता। समर्पण पुनरूत्थान कहलाता।।

दाहा — गहरा अर्थ भरा जावन सत्य यहा आमीन।
ताप बिना उद्धार नहीं मन शुद्ध रह आमान।।

नया नियम—महिमा

क्षमा कर और प्रेम सराह। त्याग दया जावन की राह।।
शान्ति महिमा यीशु सुनात। जावन अर्थ मुसन्देश जनात।।
मत्ती मरकुस लूका गाथा। पुराने स नए तक पुल बाँधा।।
यीशु वश वृक्ष मत्ती लाया। राजवशी राजा कहलाया।।
मानव पुत्र सृष्टि रूप कल्याणा। कह मरकुस यीशु नूराना।।
दाना का मित्र मसीह आया। लूका प्रीति हर्ष मनाया।।

दाहा — सत्य मार्ग जावन राह सुख दुख आनद रूप।
जग व्यवहार क्रस कह वचन यहन्न अनूप।।

'कसद ' महिमा (भक्ति पूर्ण दृढ प्रेम)

'कसद आह्लाद हर्ष है प्रतिनादी। दृढ़–भक्ति पूर्ण प्रेम निनादी।।
परिपूर्ण क्षणो की यह वाणी। अन्तर अनुगूँज स्वाभिमानी।।
घनीभूत पीड़ा अकुलाये। मन स्पर्शन् आँसू छलकाये।।
भाव–प्रीत मन बढ़ता आये। दाख मधु रस पीता जाये।।
मन सवादी होता जाता। स्वप्नलोक सगीत सजाता।।
प्रभु सग एक वाचा बँध जाता। प्रणत–भाव फिर सदा निभाता।।

दोहा — हृदय रूपी पाटी पर खुद जाता प्रभु नाम।
छूटे फिर आस नहीं, 'बढा हाथ ' 'प्रभु थाम ।।

"दस-आज्ञा" अर्न्तदृष्टि महिमा

'नीति सोच व्यवहार सारे। मनुज जिसे जीवन मे उतारे।।
आचार सहिता प्रभु सुनाया। प्रभु–वचन आदेश कहलाया।।
पावन व्यवस्था प्रभु दिखलायी। पथ–कुपथ राह समझायी।
आचार व्यवहार पछतावा। न्याय व्यवस्था कर्म धर्म आँवा।।
वाद विवाद, वादी प्रतिवादी। गवाह, साक्ष्य शपथ अपराधी।।
दिव्य प्रमाण जिसका यहोवा। जग का खेवन हारा यहोवा।।

दोहा — लिख 'मूसा पाटी उतार दड धर्म विधान।
दस आज्ञा प्रभु सुनाऐं जीवन के वरदान।।

पचग्रथ महिमा

मान करे जो पीढी–पीढ़ी। बना 'पच ग्रथ — आत्मिक सीढी।।
लेखक मूसा प्रभु ठहराया। प्रभु से सीधा प्रकाश पाया।।
'जीवित वचन यह प्रभु सुनाया। अनुग्रह धर्मी जन है पाया।।
विश्वासी का विश्वास बढाया। समीप प्रभु अविश्वासी आया।।
भला — बुरा ज्ञान रूप बताया। उत्पत्ति निर्गमन व्यवस्था पाया।।
खदेड़ दिया जाता वह प्राणी। बडा समझे जो 'ज्ञान अज्ञानी।

दोहा — बधी सृष्टि है एक डोर ढूँढता मूर्ख छोर।
'गिनती आत्मिक पाता बधा रहे जो डोर।।

परमेश्वर 'इच्छा'–महिमा

मारग सारे प्रभु ठहराता। शक्ति देता राहे बनाता।।
सर्वोत्र सत्ता प्रभु अधिकारी। इच्छा उसकी सदा सुखकारी।।
स्थिर करता वह युक्ति सारी। मनसा उसकी जग नियति सारी।।
पर्ची तो है डाली जाती। निर्णय प्रभु इच्छा है पाती।।
कौन रोक पाया बन ज्ञाता। प्रभु कोप जब हाथ बढ़ाता।।
स्नेह–करूण रश्मि जब खीचे। प्रभु प्रीत जनजन मन सीचे।।

दोहा – परमेश्वर का विधान् ज्ञान भरा अपार।
अन्त चेतना प्रज्ञा निर्मल हृदय कर विचार।।

स्वर्ग–दूत महिमा

प्रभु प्रकाश दिखाने वाले। स्वर्गिक गान सुनाने वाले।।
ये दिव्य प्रसून प्रभु फुलवारी। प्रभुता आसन के अधिकारी।।
'जिब्राइल शुभ्र–छद सुनाता। स्वर्ग–राज्य प्रभाती गाता।।
करूब असीम उल्लास जगात। उद्घोष भरे स्वर झनकाते।।
लूसिफर था भोर सितारा। सिद्ध 'करूब प्रकाश मनहारा।।
बुद्धि दर्प वह हुआ अभिमानी। कुँड अगन गिर गया अज्ञानी।।

दोहा – युद्ध छेडा बना द्रोही ससार का सरदार।
'मिकाइल' अजगर लताडे दूर करे अधकार।।

सबत–महिमा

सृष्टि रच प्रभु विश्राम पाया। दिन सातवाँ पवित्र ठहराया।।
प्रभु का दिन सबत कहलाया। प्रभु महिमा की याद दिलाया।।
आशीष विश्वासी है पाता। दिन पावन प्रभु का कहलाता।।
अर्थ गभीर सबत समझावे। दास पशु सब विश्राम पावे।।
स्वेद्‌ सिंचित तन सुख पावे। जग–सघर्ष नेक विराम पावे।।
दिन सबत प्रभु महिमा गाना। भलाई भलाई दान बिताना।।

दोहा – सबत दिन पवित्र महान् प्रभु सगत के सग।।
मनावे मन का समृद्ध स्तुति महिमा रग।।

सख्या सात महिमा

पूर्ण इकाई गार्य मिदि पाय। गिर गार्द सगप रज्ञप॥
कर सात प्रभु सृष्टि रचाया। सात दिन 'बगरा' रातगया॥
पूरा हुआ कार्य सब जैम। अर्थ पाद गग्या सात गग॥
छ दिन कार्य सातवाँ विश्रामी। वष सातव फरा विराना॥
ऋणा क्षमा वर्ष सातव पाता। दास मुक्ति वर्ष पर कहलाता॥
क्षमा करा सात बार भ्राता। प्रभु न्याय सा जा सुनाता॥

दोहा — क्लासिया प्रभु की सात महाप्राप य सात।
दमक ज्यो तारे सात क्रूस वचन भी सात॥

पर्व महिमा

रग रग की य मनुहार। कृषि–चक्र बंधे हैं पर्व मार॥
लाल गुलाबी रग है रचाया। अनुरागी मन उमग पाया॥
पूर्व कटनी धन्यवाद गाया। पूला प्रथम प्रभु भेट चढ़ाया॥
अखमीरी रोटी पर्व मनाया। श्रण दासत्व याद दिलाया॥
प्रथम फल पर्व पिन्तेकुस आया। दॉव लावनी काज बढ़ाया॥
मडप पर्व बैठ मडप मनाया। भेट चढ़ा आशीष पाया॥

दोहा — पर्व पुरीम महा–उत्सव दीन का दान मान।
अर्पण पर्व है मन समर्पण कर ले प्रभु गुण गान॥

नबियो द्वारा प्रभु–महिमा

नबी प्रभु महिमा गुण सुनाते। उमगित मन प्रभु स्तुति गाते॥
अलग रह या साथ तुम्हारे। सुनाते प्रभु जयकार पुकारे॥
परखा जन जन कार्य जायेगा। भला–बुरा फल भी पायेगा॥
जिसको प्रभु ने जैसा ताया। पौधा उसका वैसा बढाया॥
प्रगट काम होगा है जैसा। प्रबुद्ध रह चौकस ! तू कैसा ?॥
मन्दिर है तू प्रभु का दुलारे। प्रभु निवास करे मदिर निहारे॥

दोहा — नष्ट करो नही मदिर बन मूरख अनजान।
कहते नबी प्रभु सेवक शुद्ध बुद्ध रह सज्ञान॥

प्रज्ञा साहित्य महिमा

सुरभित स्वर हृदय महकाते। शीतल जल ज्यों मन हरषाते।।
प्रज्ञा–साहित्य है प्रभु वाणी। प्रकाश स्वर्गिक आकाश–वाणी।।
वाक्य प्रकाश मन समा जाता। ताप संताप हर ले जाता।।
नीति–वचन है जीवन आभा। दीपित ज्ञान दिवस गाभा।।
नाप सके जग विस्तार सारा। सभोपदेशक वचन सहारा।।
मन के चित्र जो खींच दिखाये। तन–ठीकर अय्यूब समझाये।।

दोहा – भजन संहिता तरल तरंग प्रभु की महिमा अपार।
कहते नबी जीवन है सरल खरा व्यवहार।।

नबी यहेजकेल अर्न्तदृष्टि महिमा

आत्म–विश्लेषण मन की थाती। आ संग मेरे उतर वादी।।
मनुज संतान प्रभु पुकारे। अस्थि–तराई हृतंत्र झंकारे।।
मृत – देह प्रभु प्राण जगाये। उठे समूह सैनिक दिखलाये।।
बँधुआ मृत भी मुक्ति पाता। अर्न्त–संवेदन नबी सजाता।।
शक्ति संगठित जब हो जाये। नजर उजाड़ नगर बस जाये।।
संघर्षण संवर्धन बल बढ़ाता। उद्बोधन दे नबी जगाता।।

दोहा – साथी सुवास भरता फसल का इंतिजार।
झकोरे स्वर साँसों के आस्था में मनुहार।।

विश्व शान्ति 'भविष्य वाणी मीका नबी अर्न्त दृष्टि महिमा'

अंधकार से परे एक रेखा। रेख–प्रकाश मीका ने देखा।।
पथ नया यरूशलेम बनेगा। भाव उमंग नेतृत्व चढ़ेगा।।
बूँद बूँद सब मिल कर कैसे। धारा एक बन जाती जैसे।।
प्रवाह बन जायेगा ऐसा। जाति विश्व एक सु–धारा जैसा।।
तलवारे हल फाल बनेगी। शान्ति प्रभुता गान करेगी।।
छोटा नहीं तू, हे एप्राता। न्याय शक्ति जीवन प्रदाता।।

दोहा – नाम प्रताप चरवाहे वह शान्ति का मूल।
दीनों पर आस जैसे अन्यायी हेतु शूल।।

कलीसिया महिमा

जग 'सारा प्रभु कलीसीया। उजली बने प्रभु कलीसीया।
प्रभु प्रजा मडली कलीसीया। सगठित विश्वास कलीसीया।।
देह–गठन ज्यो है कलीमीया। पावन प्रभु मदिर कलीसीया।।
धवल वस्त्र पहने कलीसीया । प्रभु दुल्हिन कहलाये कलीसीया।।
सघ सस्था नहीं कलीसीया। फल–वाटिका ज्यो कलीसीया।।
भाँति–भाँति किस्मा वाली। सत्य की शिक्षा देने वाली।।

दोहा – भाव बंधुत्व हरषाता। सेवा की यह राह।
विपदा असहाय सहारा। मानवता की छाह।।

"देह–तम्बू" महिमा

क्या तू ! दह गर्व करे प्राणी। तम्बू यह डोर बधा अनजानी।।
डार भीतर की जव कट जाये। बिना–डोर डेरा गिर जाये।।
कह पौलुस अब क्या कराह। बोझ दबा उठ पाये न राहे।।
प्रभु मिलाप तम्बू यह प्यारा। सेवा अवसर प्रभु दिया न्यारा।।
परद ओट प्रभु मुसकाते। अनुग्रह भरा हाथ बढाते।।
सुन ! तम्बू– भातर है एक वदा धूप जला मन बना बलि वेदी।।

दोहा – साक्षी पत्र पाटियाँ मन्ना भरा स्वर्णपात्र।
रख तम्बू भीतर सभाल भरा रहे गन्ध पात्र।।

अनत जीवन महिमा

अन्त कोप सलिला जब गाती। अनुभूति अन्तम महिमा पाती।।
शब्द सुरा के पख फैलाता। हर्ष आनद गीत बन जाता।।
सत्य श्रेष्ठ उच्चरित होता। भाव विज्ञान प्रज्ञान बोता।।
जीवन अर्थ है गहरा पाता। अर्थों का अर्थ मन गहराता।।
द्वार दिव्यता तब खुल जाता। स्वर्ग राज्य सा मन मुसकाता।।
ज्योतित प्रकाश मनुज पाता। उजला मन उद्धार है गाता।।

दोहा – पिता पुत्र परमेश्वर कार्य शक्ति मन रूप।
परमेश्वर सग एकता अनत जीवन अनूप।।

द्वितीय सर्ग– ''उत्पत्ति''

बरस रहा शुनि आल्हाद धरा विमुग्ध निहाल।
तन्मय अम्बर ज्योर्तिमय रवि किरणा की माल॥
सृष्टि बनी दर्पण सारी पारदर्शी आलोक।
अनत विश्वास मन विभव आलोकित द्युलोक॥
आधीन हो प्रभु आदेश आदि–पुरूष अब्राम ।
जा बसे प्रदेश 'कनान छाड़ 'उर भूमि धाम॥
सर्वस्व हेतु सर्वस्व की आहुति प्रभु की राह।
'हे विश्वासी ! सुन पुकार 'उठा दृष्टि निगाह ॥
सुनता तेरा दास मै आज्ञा हो पुकार ।
'जाना तुझे 'मोरिय्याह श्रृग पर्वतो पार॥
'साथि आथि तू निअथि 'प्रभु आशीष अनमोल ।
'वेदी बना एक विशाल 'पुत्र चढा रक्त मोल ॥
सॉस रोक ठिठका समय ठहर गया इतिहास।
स्वय परखने चल पड़ा विश्वास को विश्वास॥
शक्ति साध चला विश्वास प्रभु पथ सॉकर राह।
एकलौता पुत्र मन मुराद सुकुमार अपार दाह॥
गूँज रही विरूदावली लता कुँज पुँज पार।
'दमके बश तारो सा तुझ पर अनुग्रह अपार॥
महान प्रभु की निधि विधि बिखर न मन स्पद।
क्षीण स्वर 'एकाकार अवश पलक ज्योत मद॥
दीठी मजिल चद कदम झलक दिव्य बार बार।
हुआ आझल दृग–जल–छल बहती प्रीत धार॥
तरल जीवन दुर्बल गात 'वेदी बना विनीत।
पूछ रहा पुत्र 'इसहाक कहॉ 'मेम्ना पुनीत॥
साधना साधे–दाधे जाग सकल्प प्राण।
'बॉक तेरी काया पुत्र नद्ध आज नलिदान ॥

वचन पिता हृदय धारै नेक पुत्र घुटने टेक।
थिर हुआ नवा कर माथ प्रभु अनुचर वह नेक॥
देह कचन नग नगीना वदा रखा बाँध।
उठी कटार चमकी धार 'रूक जा!' 'निज का साध॥
नभ वाणी ज्योतित गगन 'परखा आस विश्वास।
दख समीप, मेढ़ा उधर पूरी कर अभिलास॥
धन्य धन्य तू विश्वासी! सदा रहे द्युतिमान।
आशीषित वश तेरा जग म हो छविमान॥
तिमिर पार सत्य मिहिर प्रभु सदेश विहान।
वैभव आनद अपार स्नेहिल प्रभु महान॥
सत् के साथ सजा प्रागण रिबका पत्नी इसहाक।
पहिलौठा 'एसाव न्यारा 'याकूब अचल धाक॥
'एसाव फेनिल जल उफार्न 'याकूब धैर्यवान।
छोट को दिया अनजान, ज्यष्ठता अभिमान॥
ज्येष्ठता आशीष ले, एसाव से हो भीत।
नाम इस्त्राएल प्रख्याति बसा 'शकेम विनीत॥
'याकूब वश अग्रेता बारह गोत्र अक।
प्यारा बिन्यामीन अनूप, ' छोटा 'युसुफ नि शक॥
भाइया को न सुहाता 'युसुफ सरल तरग।
स्वप्न अर्थ समझाता सरस जीवन रग॥
बच दिया भ्राताओ ने बधक कैदी दास।
निर्यातित छल फिर धोखा बुझती जाती आस॥
थाह भविष्य कौन पाया प्रभु सर्व शक्तिमान।
'प्रकाश पाता है प्रकाश स्वर्गिक एक विधान॥
प्रभु अनुग्रह जब हो प्रबल लख नहीं कोई पाय।
दरोगा मन उपजी दया - बनाया निज सहाय॥

ममय दौड़ चला देखो स्वप्न - देखे फिरौन।
एक पहेली स्वप्न बने सुलझावे अब कौन?॥
विक्षुब्ध भयभीत अधीर राजा था हैरान।
प्रतिबिंब सब थे धुँधले प्रधान मुख हुए म्लान॥
कैसा कष्ट यह आया आन्दोलित प्रदेश।
स्वप्नदर्शी कौन। कहा। मिले कही? किसी वेश।॥
पथ अनेक प्रभु बनाता मिटाता सब सताप।
कैदी एक स्वप्नदर्शी युसुफ नाम अपाप॥
आदेश फिरौन सुनाया लाओ कर श्रृगार।
कहाँ युसुफ कैदी दास। बदा गृह हुई पुकार॥
कपित गात युसुफ उठा मलिन तन मूक भार।
शोक निसार। उठ। सँवर। कहे दरागा दुलार॥
धूल धूसरित बदी युसुफ निखरा ज्यो सुकुमार।
निरखता सपना अपना अनुग्रह प्रभु अपार॥
फिरौन सभा दास आया मथित ग्रथित थे प्राण।
तरल सरल सहज सुन्दर देखते सब प्रधान॥
नवा शीश वह घबराया मन भाया फिरौन।
राजा स्वप्न सुनाया और हुआ फिर मौन॥
नवा शाश युसफ बोला सपने महिमावान।
दास नहीं प्रभु कहते राज हो करूणावान॥
प्रचुर धन धान्य मिठास बरसे असीस काट।
घनी फसलो का उपहार सुवृष्टि वर्ष सात॥
थमना न एक रात राजा कि दु स्वप्न करे घात।
यत्न कर भारी ऐसा विफल होवे उत्पात॥
सात वर्ष अवृष्टि अकाल सर्वत्र रूदन घार।
शूय घुमडगा विकल भँभर-भँभर कठोर॥

रिक्त बादल भटकेगे सूखेगे जल कूप।
विकल विलाप दाहक दाह दुर्वह है विकृत रूप।।
र्पण पर्ण बिखर–उड़ेगे ऐसा द्वेषी रोप।
तपन से घबरा कर धूप लूटे जीवन कोप।।
पक्षा उडान भूलेगे उष्मा का अभिशाप।
ज्वाला सी दहकती धूप–असह्य ताप सताप ।।
तेरा देश स्रोत बने कर न अटक तू क्लश ।
जोवे राज अब सन्नद्ध समझ चेतावन वेश ।।
फिरौन पुकारा सभा मे युसुफ नहीं अब दास ।
सभाल माहर प्रभा से 'महामत्री ! तू उजास ।।
मेहनत सग चाह जोडी सुखद हाव दशा।
विश्राम स बॅध तोड़ा 'युसुफ व्रती परिवेश।।
नये कार्य धूम मचायी बढा श्रम से लगाव।
भावना चाह जगायी बढा सहज अपनाव।।
लभ्य कोई चूका नहीं महका श्रम अनूप।
मुग्ध फिरौन ऊर्मिल हृदय, सरसा राज्य रूप।।
मिटा दिलो का अन्तर रहे सदैव सुकाल।
श्रम लहका रूप निखार, झुकी वृक्ष की डाल।।
ग्राम–ग्राम ग्राम सभा, घने वृक्ष सी बयार।
पैठी सब के मन म 'कलाम है सहकार।।
शुभ योजना तदवीरे हाथ हाथ म काम।
मिस्त्र बदल रहा तस्वीरे खुशहाली घर ग्राम।।
रक्षक इमान का सकल्प श्रृखला – बद्ध उपहार।
सम्मान माटि का प्रण है श्रम पावन त्यौहार।।
चारा पानी भडारण गूॅज रहा घर ग्राम।
स्पंदित उमग तरग अदम्य चाव लग्गन।।

अग्नि पर तलता है श्रम ऊर्जित मानव प्रधान।
गहराइयो मे बढ़ता पौरूष सदा महान्॥
तचता सामर्थ्य विषम कल्पान्तार अभिराम।
पीसता मदर खरल सकल्प का परिणाम॥
अनुराग भव्य सब ओर, जग मग श्रम उल्लास।
अन्तर मे छिपी रहती श्रम की आभ उजास॥
माह लुढकते गये तक्र ले आये अकाल।
रोक मनुज नहीं पाया वक्र चक्र दुष्काल॥
देख कठिन समय प्रवर्तन अनमना युसुफ उदास।
चिन्ता मग्न, प्रार्थना लीन शक्ति माँगता दास॥
आलोड़ित सघाता से, घायल करते वाद।
कहाँ है चेतना ग्राम प्रकृति से सवाद॥
आत्मा प्राण देह मे जगा चेतना–ज्ञान।
मिट्टी से बना तू मिट्टी सृष्टि कर्त्ता महान॥
तत्त्व छियानवे तू आदम प्रभु इच्छा परितोष।
बहुत अच्छा प्रभु सुहाया , रहना सदा निर्दोष॥
उत्तर–जीवी बन रहना आशाष दी महान्।
सृष्टि बागे–अदन मेरा दे दी तुझे दान॥
सृष्टि सेवक बन रहना रहना चेतन–प्राण।
नित नूतन उमग चाह पर न विजता–शान॥
दिव्य दर्शन सृष्टि महिमा देखत युसुफ प्राण।
सूर्य, चन्द्र, तारागण अलौकिक दिनमान॥
प्रकाश ही जीवन चक्र सश्लेषण नियत्रक ताप।
जल से है जीवन मापन वायु म श्वास माप॥
सदा के लिये अटल ये व्यर्थ न किणी एक।
हिम पर्वत चट्टान सीधा स्थली रूप अनक॥

जल–वायु, समुद्र तूफानी पर्यावरणीय सगीत।
बाडवाग्नि, दावानल कम्पन क्या अविनीत।।
सब सहज समेट गाती सयमी धरा मीत।
गढती है कृति से कृति जिन्दादिली के गीत।।
प्रकृति से उलझे न मानव अटल व्यवस्था तोड।
सदया समझाती मानव मुझ से मुख न मोड़।।
क्षणिक तृप्ति से सर्वनाश, उखड़ा सा भटकाव।
भेद–बुद्धि राह विनाश, हत्यारा है अलगाव।।
आदम पुत्र ईर्ष्यालु 'कैन क्यो बना मृत्यु श्राप।
महास्वार्थी प्राणघाती छलता पाप अपाप ।।
'हाविल हत्यारा है कौन । खोज रहा मन तार।
प्रतिपल उत्तर यह पाया 'जो छीने अधिकार ।।
क्रूर विधाएँ, क्रूर ज्ञान योग प्रयोग विद्रूप।
आग के अक्षर पढता है उद्दाम 'स्वछन्द रूप।।
व्यवसाय मुखी मानव, काट रहा बन बाग।
'गिलगिमेस जैसे दानव मानवता पर दाग।।
सदाम–अमार सी कुत्सा, आग की बरसात।
अब्राम छुड़ाए कैसे रहा न धर्म नगर प्रात।।
'बाबेल गुम्मट जैसे चढ़ती इच्छाए बाम।
दभ स्तूप गिर जाते, मिट जाता सब नाम।।
'स्वलाभ हेतु ही जिय नहीं यह अधिकार।
सब को उत्पीड़न देना पाप यही कुविचार।।
अटल ऐरावत पर टिकी 'नूह नौका विशाल।
बिम्ब लहरा मनहारी सागर मध्य मशाल।।
सुन्दर मन भावन नौका प्रभुदित भाव उदार।
उत्तम प्राणी समूह विशद चित्रपटी सहकार।।

पृथ्वी पर ऐसा जीवन सह–अस्तित्व विधान।
प्यार बस सबके हृदय कैसा मधुमय दान।।
दिल क छोटे भाव ही करत बुद्धि नास।
दिल की अमीरी से ही - जग अगाध विश्वास।।
उदय औ' अस्तकाल म सूर्य रहता लाल।
रख ऐश औ तैश म प्रभु भीति सर्वकाल।।
प्रभु–वेदी नयी वनाते नूह नवात शीष।
'जा सुन्दर विश्व बना ले'' प्रभु दते आशीष।।
अनूप यह नव–मानव धरा का गीतकार।
उज्जवल पूँजी सर्वस्व धरा का दीपाधार।।
सच है मानव हिस्सा एक व्यवस्था का प्रभाग।
लेन देन आश्रय सम्मान सभार भरा अनुराग।।
महामत्री से करबद्ध करे निवेदन दास।
अकाल स्तब्ध–प्रदेश फैले मृत्यु पाश।।
दल दूँगा सब प्राणी कहे हठीला काल।
भीत पीत दुर्बल साँस तरसे रोटी बाल।।
सब ओर है एक पुकार अन्न हेतु गुहार।
जीवन बचाने आये थके हारे लाचार।।
सेवक कार्य कुछ चाहे कुछ बेचना खेत।
मोल अनाज कुछ लेना आदेश हो। जन–हेत।।
मोहर ले दास चला खुले अन्न भडार।
नियति की कैसी कला भ्रात खड़े सब द्वार।।
उमड़ घुमड़ दग्ध युसुफ आँसू छलके नैन।
दौड लिपट जाऊँ मैं /मन का आये चैन ।।
'कैसे है मात–पिता कैसा नगर प्रवाह ।
घाति प्रतिघाती त्वेषी अभी शेष क्या डाह? ।।

चलो मिटा लू सशय परखू जरा ईमान।
उठी आँधी कर आघात, तिरस्कार मे मान॥
'नहीं तुम्हारे शुभ सकल्प खोलो मन का भेद।
'बनाता अल्प बधक इसका है मुझे खेद॥
अन्न माल लेने आये हम है पुत्र 'याकूब।
'चल कर कनान जायगे बारह भाई महबूब॥
'मोल अनाज ले जाओ' बन्धक छोड़ो एक।
अनुज भ्रात साक्षी दो, प्रमाणिक बन नेक'॥
विगत 'कोलाहल भीषण लेता मन की टोह।
असहाय से निर्बल–विफल, उदास मन विछाह॥
पिता हालाहल पीते सुन राज व्यवहार।
'विन्यामीन ! मेरा लाल, 'जीवन का आधार॥
क्या है भेद ! छिपा कहाँ ! पकड़ न पॉऊ डोर।
शपथ 'यहूदा देता 'कहाँ है मेरा भार॥
शका आशका स्नेह कठोर कैसा रग।
'जावन का लेना टना भट अनमोल सग॥
निर्णायक न्याय प्रभु का भ्रात सकुचे भात।
'हम अपराधी, प्रभु के ! अकथ दाषा ! अतीत॥
'न्ढा रहे मनौतिया ण्हुँचे मिस्त्र दश।
द रहे धन्यवादियाँ, रूके नहा आवेश॥
युसुफ देख रहे समोह कहीं स पार्श्व आट।
भ्रात–भक्ति का छोह सहते व्यथा चोट॥
गात पाहुनाई सुनाते आनद हर्ष अपार।
सुन्दर जाजम बिछाया, धा पैर लघु–भार॥
आयु क्रम बैठा रहे ममता रग नेक।
सुरूचि जान परास रहे व्यजन वहा अनेक॥

युसुफ उर–प्रीत–निकेतन पूर्ण दिगंत बसत।
अरूणिम दीप्ति चहुँ ओर अन्तर विभव अनत।।
प्रभु इच्छा बलवती प्रबल मैं युसुफ इतिहास।
जावन–दायक प्रभु विधान सब वा सेवक दास।।
श्वासे हुई शिथिल कपित मुख हुए नील मलीन।
तुमुल तरग हिलकोरे विस्मृति–स्मृति–अधीन।।
निश्छल कामल शिशु से शीतल शात अगाध।
अकलुप उज्जवल आभ बाँध रहे मन अबाध।।
भ्राता मिलन यह अपूर्व सुख–दुख सघर्ष सग।
भावा का मथन अनोखा दान प्रतिदान उमग।।
सदेशा पहुँचा फिरौन भ्रात आये उल्लास।
ध्रुव तारा मिस्त्र का युसुफ पाया राज विश्वास।।
मधु अनुभाव फिरौन चाव 'यहाँ बसे परिवार।
मानस लहरा पर सहसा दमका पिता प्यार।।
दरस पिता मैं पाऊँ करे भ्रात उपकार।
प्रभु महिमा है महान बस मिल कर परिवार।।
'जीवित युसुफ महामत्री मिस्त्र का वह टेक।
आप को पास बुलाया बाले भ्राता नक।।
हेमत ऋतु ज्या श्री हीन हर भाँति धनहीन।
ठिठुरे ठूँठ सा 'याकूब यह प्रवास अतिदीन।।
पर पुत्र ममता औ आस पभु मे ले विश्वास।
बढ चले मिस्त्र याकूब दुखते क्षण मन उदास।।
मन डोर उलझे सुलझे दूरी रहा वह नाप।
सुन्दर अँगरखा पहिने लो 'युसुफ खड़ा आप।।
पिता पुत्र चित्र–लिखे स निर्निमेष नेत्र चकोर।
बिखरा अश्रु की लडियाँ सदियाँ हुई विभोर।।

साझ हुई फिर भोर हुआ प्रभु वाचा प्रतीक।
निरभ्र नभ उजला कैसा मन गगन अलीक।।
सतरगी धनुष प्रकाशी जीवन सरगम ताल।
पार उतरे घन तिमिर से हरी हुई फिर डाल।।
फिरौन भावना भावित, करते अतिथि मान।
सभा आभ 'याकूब थे? गुणज्ञ विज्ञ मुसकान।।
मनोज्ञ विज्ञ फिरौन ने किया मान अभिषेक।
उत्तम चरागाह गोशेन भेट दिया रामसेक ।।
फैली उजास सभा मे प्रगट किया आभार।
स्नेहिल वचन 'याकूब जैसे शीतल बयार।।
'समन्वय राष्ट्र समृद्धि सस्कृति कला ज्ञान ।
ाटक न और टूटे न बढे न कलुषित मान ।
अति कृतज्ञ हुआ मैं विपुल स्नेह आशीर्वाद ।
गोशेन बसे याकूब प्रभु का गुणानुवाद।।
शपथ तुझ मेरी 'युसुफ वाचा दे तू एक।
जहाँ इस्राएल कहलाया मिले वह मिट्टी नेक।।
'बलवन्त लता की शाख फल्वन्त हो उदार ।
पुत्र पौत्र स्नेहिल प्रेमिल कर प्रीत सचार ।।
विघटन दह ने पाया 'याकूब प्रभु म लीन।
मिस्त्र शोकित युसुफ सग शव यात्रा गीत दीन।।
यरदन पार गुफा–द्वार अब्राम इसहाक सग।
खलिहान भूमि आताद , माटि माटि के सग।।
स्वर्गिक नीलाभ प्रकाश झीना सा वितान।
अलौकिक दमकता उजास धवल भार विहान।।
पावन अनुभूति सत्य एक भावना अम्लान।
सत्य मापन युग करे मिस्त्र लौटे प्रधान।।

एक सौ दस वर्ष प्रवासी 'युसुफ–युग नव विहान।
झेले दुख बॉह पसार सुन्दर पुण्य 'कनान ।।
हँसते रसते कहते वचन नयन अभिराम।
श्वेत पुलिन यरदन तीरे तन पावेगा विश्राम ।।
जडा सितारा दूर गगन पौत्र पुत्र चूमते भाल।।
नीर बहाती 'नद–नीला भूपाती यह काल।।
वादी गूँजा प्रश्न विकट अगुवायी करे कौन।
उतर खोज नहीं पायी कण कण बिखरे मौन।।

तृतीय सर्ग — निर्गमन

"प्रथम–खड"

तप्त हृदय उच्छवासित वादी तरल उदास।
युग बीत रहे क्षणा मे, लिख गये इतिहास।।
दुर्बल सग्राम निजबैर सर्वत्र एक हाहाकार।
कॉपत टूटते श्वास, मत्ता की हुंकार।।
जग मे परिवर्तन क्या। होता एसा अनुदार।
अह दंशित बुद्धि–नाग करते दशन व्यापार।।
'युसुफ इस्त्राएल शोभा मिस्त्र की आन–मान।
थे आत्मा की महिमा शील मनुजता शान।।
उनके वशज बधक हुए जीवन हुआ भार।
सहमे सहमे शकित बहाते अश्रु धार।।
मिस्त्र बदल रहा अश्रात एक रूधिर एक जमीन ।
'हर जन अपने लिये हुआ सुब पर सत्ता आसीन।।
मुखिया सामत जमींदार बधक बने किसान।
सभ्यता 'सस्कृति –'मूल्य बदले सब प्रतिमान।।
द्वेष जलन मैत्री प्रेम इनका क्षण तोल माप।
पर इन्हीं से है समाज अर्थ इन्हीं के पाप।।

गबध नियत्रण सब कुछ है अनुकूलन हाथ।
मानव–रचित स्थिति दो भीतरी–बाहरी साथ।।
इस्राएल समूह आब्रजन अकाल का उत्पात।
मिस्त्र सस्कृति हुई प्रभावित उत्कर्ष उपकर्ष, निपात।।
दो सस्कृतियाँ गुजरीं अभ्यान्तर' क्रिया बीच।
'कार्य, स्थिति के बदलाव लाया 'विगठन खींच।।
ऊँच–नीच–छूत अछूत, रडकते भाव नीच।
रूढ़ि अधता उपद्रव विलम्बन गया जीत।।
'मूल्यो का छिड़ा सग्राम अलगाव का उत्ताप।
कटु दूषित धारणाए 'वायुमडल का ताप।।
धनी निर्धनता का भेद, एक विषमता पाश।
घृणा आक्रमण प्रबल प्रेम–बुद्धि का नाश।।
तत्वो स सूक्ष्म अनेक, सस्कृति गुण प्रवाह।
पर मानव – समस्या एक, सस्कृति – 'सकुल आह।।
सजीव मन सूत्र सस्कृति 'मिल जुल रहे प्रमान।
शान्त–अशात भाव स, बटे सस्कृति प्रान।।
सस्कृति–पुत्र मानव अजब गजब जीने के ढग।
जन्म देता सस्करणवाद सात्मीकरण के सग।।
यो इस्राएल निर्बल हुए मिस्त्री हुए भार।
'एपणा ने बढ कर फिर विपम किया प्रहार।।
'प्रवासी राज्य छीन ले पनपे न कहीं लोभ।
बढ़ता जाता इस्राएल मिस्त्र मे बढ़ा क्षोभ।।
'युसुफ को भूले बिसरे शासक नया फिरौन।
तय करती 'राज–सभा 'इस्राएल हा 'मौन।।
भूमि छीनी पशु छीने छीन लिय अधिकार।
'तुम नहीं यहाँ के मूल कहे 'फिरौन हुँकार।।

कुंडलियाँ

सम बुद्धि धीर–वीर ये नद स बढ़त । और।
रोकूगाँ बन अभिशाप कह फिरौन कठार॥
कहे फिरौन कठोर महाजाल बिछाया फिर।
मोहपाश का जाल शिकजा कसेगा थिर॥
निर अतृप्त बुभुक्षा विकराल अधीर कुबुद्धि।
उग्र कुर्लोन अबाध भर रही पाप बुद्धि ॥

आदेश राज सभा म पारित हुआ अबोल।
इस्राएल नर–नवजात घात करो । सब अडाल॥
तरू सिहरे पत्ते झरे बादल हुए रिक्त रवत।
तीक्ष्ण आर सा पवन चीरता मन खेत॥
था मृत्यु–मौन सर्वत्र विष–दंशित स प्राण।
व्यथा पछाड़े खार्ती कहीं नहीं था त्राण॥
रख नवजात कक्काल सिहरा धरती ताप।
मिस्त्र पतन अब निश्चित धरती देती श्राप॥
नद–नील कह सुन अरे सुनहरी मेघ–रेख ।
तूफान का अग्रदूत यही कहीं तू दख॥
सग सखियाँ राजबाले कर रहा वहाँ विहार।
वात्सना सी बालाए निर्भय सरल उदार॥
कर कल्पना नद नीला स्वर्ण–तरी पर सैर।
डाल बाँहा म लेकर वे आनदित तैर॥
राजबाले । कौन वस्तु । वह वहाँ जहाँ कॉस।
कौतुक से चमके नयन लायी सखि एक पास॥
पिटारी देख अचभित गुथी मिट्टी राल सूत।
खींच तरी मे रखा कितनी है मजबूत॥
पालने सी पिटारी माणक मोती आब।
अर्पित किया किसी ने आह । मन की दाब॥

अवश्य , कोई शिशु विवश, सहता राज्य क्लेश।
पुलक दुलार से वंचित बढ़ रहा 'मृत्यु प्रदेश ।।
चचल सखियाँ थी मौन पटल पिटारी खोल।
यह कौन ! ' शिशु सोता एक मोती सा अनमोल।।
स्वर्णतरी पालना 'पिटारी लहरा का दुलार।।
मुक्त मधुर सी मुसकान पापो के उस पार।।
जीवन की यह उजासँ है काई सुसवाद।
स्मित–चेतना प्रकाश ससृति का प्रतिनाद।।
मद मद मथर गति पवन बहे प्रतिकूल।
कौन श्रेष्ठ । कौन हान । पूछ रहा था कूल।।
सखियाँ कर बाँधे खड़ी मिले काइ आदेश।
हृदय–धन झुक चूम लिया राजबाला आदश।।
'नील म असीम उछाल अभिषेक करती छोल।
धरती म आई महक 'कमल ' पखुडी खोल।।
समझ गई सखियाँ चतुर राजबाला सकत।
नेह से शिशु दुलराती चले अब हम 'निकत ।।
झुरमुट ओट खडी थी बाला एक अबोध।
हिम्मत से आई आगे भ्रात नेह स्नेह बोध।।
चलती साँस तेज तेज थकी थकी कुछ दीन।
'मुझ साथ आप लेल काम करूँगी लीन।।
हँस पडीं राजबाले 'नन्हीं सी तू जान।
महल मे तेरा जैसा काम नहीं नादान।।
'जा बाले दौड तुरत ल आ 'काई धाय ।'
मन माँगी मुराद मिली ले आई शिशु माय।।
माता–पुत्र मिलन हुआ रहा बहिन मन डोल।
पिता अप्राप्त कहते धन्य–प्रभु दिल खोल।

निकेत' । हाँ चलो बोली, राज–बाले सभार।
करूण मन दीप्त साध विचारो का श्रृगार।।
विचारो का श्रृगार बेसुध किसलय चचल।
दया ममता समता फहराते बन अचल।।
जड़ता को चैतन्य विकल्प सकल्प सुकेत।
खोलू, अब द्वार नये हम उतरे आया 'निकेत ।।

सामने था 'महल विशाल, लालसा कसक प्रतीक।
तूल झूल के व्याल जहाँ गरल उगलते सटीक।।
राज–बाले सग, आज है नद नील उपहार।
दत्तक सम है अपनाया सिद्ध साधित विचार।।
नेत्र था कोना कोना, राज वेग प्रतिकूल।
सत्ता मान गिरि चढा, प्रतिवादो के शूल।।
सग शिशु मन शिशु करता था सहज हुलास।
अवग्राह सत्य हत्याकर 'हास्य , करे प्रतिहास।।
भृकुटि ताने पिता खड़े था मन 'मे दुलार।
दडवत करे राजबाला मुसकानो मे प्यार।।
'रूक बाले कुछ कहना कहा शिथिल कर तनाव।
अनजान समस्या रच कर कहाँ जा रही नाव।।
'तू अति अबोध बाले 'मत बन ममता स्रोत ।
नहीं बनी सत्ता कभी समता उद्गम–ज्योत।।
'पूज्य पिता को दडवत नहीं 'यह यौवन भाव।
नहीं इच्छा शैल श्रृग कहे राजबाला सद्भाव ।।
भीतर का हाहाकार पीडा तरग दबाव।
दलित दरिद्र दुख रग एक सद्भाव हियाव।।
राज है स्वार्थ आवृत्त मानवता है भीत।
'मिस्त्र हुआ है जड़ 'यह है 'करूण–गीत ।।

राज्य अहता प्रबल प्रपचो का प्रहार।
"यातना है अतहीन, नर' नवजात सहार ॥
सत्ता की अध लकीर प्रसन्न होते आप।
क्रूर अत्याचार असह्य सब के कारक आप ॥
पिता उलझे विवर्तों मे चले गये हो मौन॥
राज सभा है निस्तब्ध करे फैसला कौन॥
तिरस्कृत सन्नाटा घना, फिरौन मन चीत्कार।
राज आकाश गहराये घन गहरे अधकार॥
सहसा सभा मे प्रगटी राजबाले बन दीप।
गोदी मे शिशु अबोध सत्य सग प्रदीप॥
दीपक जो जले निरन्तर वह थीं ऐसा दीप।
निज सहज शक्ति से बनीं प्रकाश प्रदीप॥
प्रभु का उपक्रम देखो प्रभु तेजस की ज्योत।
'बाले ज्योत उपासिका, बनी वे आत्म ज्योत॥
ध्यान मग्न सभा सारी, क्षण क्षण शब्दाकार।
शान्त हो रहे आवेश आत्म तेजस साकार॥
ज्यो दर्पण होता बिबित मन म बिबित भाव।
भाव दख रहे अदृश्य असमजस में चाव॥
आभा स्नेह की दमकी गल रहे भाव म्लान।
सौम्य शिशु तेजस मे, प्रभु तेजस सुजान॥
अशान्त राज सभा म, राज बाला की गूँज।
शिशु बाधक समझे राज घात कर सब ,जूझ ॥
मुख पर आशा की रेख, सभा रही थी डोल।
सुषमा मे प्रभा निहार अनुराग भरे बोल॥
सहस्त्रा मानव शिशुबौर नित्त हा रहे शात।
है मौन क्रूर आकाश हहराता दुख भ्रात ॥

नील हरितिमा प्रिय थी आभा भाव से निहार नीलाभा।।
रताला दरा यह पथराला दक्षिण–उत्तर बहे नद–नीरा।।
ग्रीष्म जल अधीर बढ जाता। झीलो से उफन छलक आते।।
पौधे हर सग ले आता। जल का रग हरा हो जाता।।
रक्त लालिमा जल तब पाता। जब वह चट्टानो टकराता।।
शातकूल शीत मे गाता। पर धुध अधकार छा जाता।।

दोहा — नाले नित पहने शोभा लाल हरी जलधार।
लहरे कॉस कभी धुध मूसा था चित्रकार।।

घनी फसल लहराय ऐसे। प्रभु महिमा गाती हो जैसे।।
झनक झनक झूम रहीं ऐसे। मधुर वाद्य पर नर्तन जैसे।।
बिम्ब चमकता जल मे एसे। रूनक झुनक रथ चलता जैसे।।
सूर्य किरण सी दमक एसे। जागरण सदेश हो जैसे।।
चन्द्र किरण से जगमग एसे। प्रभु कार्य निरत हो जैसे।।
सत्कर्म रत्न फसल के जैसे। दाने दम दम करते ऐसे।

दोहा — रात्रिदीप चन्द्र जब लावे किरण शहतीर।
मूसा के मन तेजस बहता चतन समीर।।

बढ रही विकास योजनाए। मिस्र मे बढ रही एषणाए।
उद्योग धंधे, युद्ध नीतियाँ। झुरमुटो मे पनपी अनीतियाँ।।
विजय उन्माद ज्ञान पथराया। बन्दी मृत समान ठहराया।।
बदी को अब बधक माना। जीवित वे पर मृतक समाना।।
रेत कणो से ज्यादा सोना। गरल सा पिघल रहा सोना।।
सिहासन रूढ [1]फिरौन दिवाना। स्वय को दव रूप माना।।

दोहा — विकृत म्लान–कालिमा से कुभीत्व के व्याल।
क्रूर कृपण सत्ता शान बढ धुप दल जाल।।

श्रम पहिया घूम रहा ऐसे। बधक गुलाम दलता जैसे॥
लेन देन श्रम माप कैसे। अक गणित उपजा ऐसे॥
भूमि मापन क्षेत्र पैमाना। ज्योमिति रूप नया माना॥
सागर मरू पार करे कैसे। तारे नक्षत्र गणना ऐसे॥
तीन सौ पसठ दिन ये कैस। पचाग बना समझे ऐसे॥
धातु मिश्रण कॉस्य बनाया। वन औषध शल्य ज्ञान पाया॥

दोहा — चित्रलिपि पढते 'मूसा पत्र पपीरस पान।
कलम से लेख अभ्यास जमा किया सब ज्ञान॥

घूम—घूम सब पहिचाना। युद्ध निपुण सब ने माना॥
वर वीर प्रबुद्ध मूसा जाना। सेनाध्यक्ष पद से सम्माना॥
पर जीवन नही 'रेख जैसा। जीवन है वक्र मेघ जैसा॥
श्रेष्ठ जब बदी हो जाता। नियम हीन अनुशासन आता॥
आगन म वह बध जाता। दा आसुआ में डूब जाता॥
विसगति क्षेत्र बन उकसाता। क्षुद्र भाव विजेता बन आता॥

दोहा — जीवन नियम है अद्भुत रौंद कुसुम विभार।
कभी मृत्यु तमस बढ़ता कभी अश्रु की डोर॥

स्वय 'मा आज दुलराता। धाय नहीं 'माँ मुसकाती॥
ममता दुलार भाव जगाया। नयन नीर भर कठ लगाया॥
आज प्रगट हो 'पुत्र पुकारा। 'मूसा तू एकी वश सहारा॥
विपुल व्यथा इसराएल गाथा। समझ गया पॉखी वह गाहा॥
स्पनन यन्थन कसते आत । अवमान विषाद भर भर जात॥
क्या इस्राएली मिट जायेंगे। क्या ! प्रभु याना भूल जायग॥

दाहा — प्रतिशाध अनल जागा क्रोध का सचार।
अचल भूधर प्रकंपित खिन्न मन गहन विचार।

प्रखर सूर्य तपता हो जैसे। मूसा मन जलता था एसे।।
झझा प्रेरित जलद के जैसे। आवेश घुमड रह थे एसे।।
तभी शाणित से सनते देखा। श्रम को लुठित होते देखा।।
अह मोद मनाते दखा। धर्म मरणासन्न होत देखा।।
परिणाम न साच व बढ या। अह मद क्षण म चूर कर ज्यो ।।
धड निश्चेष्ट मचलता सा। अरे रक्त कीच बुद्धिदलित सा।।

दोहा – भय सकुल 'मूसा खड़ा बह गयी रक्त धार।
ओह ! करना होगा ताप डूबा हिसा अधकार।।

ध्यान मग्न वे चलत जात। छोड मिस्त्र डग बढते जाते।।
मन बना हुआ था चित्रशाला। पी रहा था हीनता हाला।।
दश 'मिद्यान कूप पर बैठे। निर्बल–सबल' विवाद मे पैढे।।
देख रहे रहट आना जाना। रीते ! कभी भरे फिर आना।।
आस–निरास जीवन रसधारा। कह रहा क्या तू मन हारा।।
घेर कूप खडे कुछ चरवाह। दूर बालाए तकती राहे।।

दाहा – करूणा उपजी मन 'मूसा निर्बल सहायक भाव।।
प्रीति जल स प्लावित क्षण दूर हुआ अलगाव।।

मिस्त्र रेत जो नद था खोया। मिद्यान' मरू मे जल का सोता।।
रूएल पाहुनाई आभावाली। पर्वत श्रेणिया अब मतवाली।।
सिप्पोरा– सग प्रभु गुण गाता। कभी यित्रो के पशु चराता।।
रत्नो की निधि वापस पायी। आकाश नीलिमा फिर छायी।।
गुप्त वेश किसानी अपनाया। मन चरवाहा प्रभु मग गाया।।
मन की गुत्थी रहा सुलझाता। सुलझ उलझ फिर 'वह खो जाता।।

दोहा – विष पर अमृत परत चढी वादी मे आवाज।
विध्वस सिद्धात सदा ही गुजाते नये साज।।

यित्रा पुत्री प्रबुद्ध मनोहारी। अतुल निष्ठा पति पर बलिहारी।।
प्रिय क्या मौन ? कह सिप्पोरा। क्या ! आस मद झूम भौरा!।।
या कि नर्तन सग बालियाँ। रचते गीत या कि कहानियाँ।।
प्रिय ! मैं हूँ नक चरवाहा। पहरूआ हूँ, जीवन चरगाहा।।
नन्ह शिशुआ का रक्षक हूँ मैं। उन्हीं क सग गाता हूँ मैं।।
खत का धूप म सिकता हूँ। अन्न क ताप म तपता हूँ।।

दाहा — जीवन तप चरवाही प्रभु म आस्थावान।
दर्द आत्मसात–करता मन म आशावान्।।

प्रिय! का पवित्र मन्तव्य जाना। परम भव्य मानस पहिचाना।।
'व्यक्ति म सुख माप अधूरा। समष्टि सुख माप दड पूरा।।
मन का रूपान्तर बुनियादी। सम भाव ऱन एक फरियादी।।
आत्म चतना पुन्ज के जैसे। प्रभु म दीन स्व–शासित ऐसे।।
क्या ! काई युग कभी आएगा। वर्ग हीन समूह कोई रचगा।।
बर्बरता जल मे डूबेगी। और धरा आकाश चूमगी।।

दाहा — 'शक्ति–पुत्र सा वह समूह, अपनी शक्ति आप।
प्रभु सग–सग चलेगा बन कर हविष्य आप।।

दिव्य चतना। सुनता भेरी। प्रिये ! दूर मजिल का फरी।।
समूह वह होगा एक एसा। डाले सत्ता आन्दालन जैसा।।
मानवता तुरही फूँकगा। सघर्षों स भी जूझगा।।
आत्मा का चागा बदलगा। बादल सम प्रभु छत्र पायगा।।
हर इकाई पर ध्यान धरगा। संविधान भी एक बनगा।।
सच है जीवन सौन्दर्य–यात्रा। होगी पृथ्वी पर चेतन–यात्रा ।।

दाहा — सुगठित रुप 'समूह वह प्रभु स कान्तिमान।
क्या! क्रान्ति चेता सात ? मजिल का पहिचान।।

'चरवाहा तिल–तिल मन जलाता। लक्ष्य आर पग–पग बढाता।।
हर मतृप्त की आह मे जीता। नव जीवन का बीज वह बोता।।
मर्यादाआ का वह स्वामी। नम्र स्वाभिमान का आयामी।।
धरा–शक्ति पायी एसी। त्याग प्रम सम्माहन जैसी।।
एक लश्य का वह अध्यता। समूह बनाय चतन सुनेता।।
जीवन सवारगा वह एसा। विशाल मानव आस्था जैसा।।

दोहा – रुढ सस्थाआ के प्रति एक सचेत विद्राह ।
असहाया को अपनाना वर्ग विभेद विछोह।।

कलिया स मुस्काते आय। सिप्पोरा मूसा मन लुभाय।।
गेर्शोम सिप्पारा अक समाया। एजेर पिता सग मदमाया।।
सागर सुख बाहो समाया। सग ले माता गुम हुए छाया।।
बिखरी मधु धाराए जैसे। मूसा शत–शत निर्झर एस।।
सभल। वे पर्वत चढते जाते। मन मे दृश्य निराला पाते।।
चमक रहा हारे सा पानी। प्रभु । यह वादी कैसी कल्याणी।।

दोहा – चेतना किरण अपार बढते पथ पर शान्त।
तन मन चाहत आहुति करू सुखद मैं प्रात ।।

गगन महिमा रहा बरसाता। पल–पल छिन–छिन विभव हरषाता।।
भाव–जगत मे मूसा गाता। पॉखो पर मन उडता जाता।।
धरा रुप स्वर्णिम सा पाता। राम राम झकृत प्रभु गाता।।
प्राण बधा आलोक म जैसे। खींचे दृष्टि उर तन्मय एस।।
'झाडी ज्योतिर्मय यह कैसी। देखी नहीं । उजास है एसा।।
दिव्य आलोक वहाँ है जैस। बॉध रहा है मन का एसे।।

दोहा – झाडी जलती ज्वाला सी ज्वाल नहीं आलाक।
आलोक नहीं है ज्वाला पर्वत पर प्रभु–आलोक।।

झाडी पास ज्या बढते जाते। मन रुपान्तर सा वे पाते।।
आलोक–साम्राज्य यह कैसा। सौ सौ सूरज जलते जैसा।।
पारदर्शी मन होता जाता। अरहट चक्र घूमता जाता।।
हे मूसा! चकित पग थम जाते। 'क्या आज्ञा' मन थाह सुनाते।।
पवित्र भूमि तूने यह देखी। तुझे बनाता इसका लवी ।।
'मैं हू परमश्वर पिता तेरा । अब तू है संदेशक मेरा।।

दोहा – 'करुगा पूरी मैं वाचा परमश्वर अब्राम ।
प्रभु मे जीवत निष्ठा, धन्य हुआ यह याम।।

मुहँ ढ़ाप बन्द नेत्र वे बोले। 'मैं हत्यारा' भय कम्पित डोले।।
क्रोध उचित था क्षम्य माना। तूने पर–पीडन पहिचाना।।
'करुण–क्रोध टिकी सृष्टि सारी। 'करुण–क्रोध है सदाचारी।।
लोक क्षमा की है एक सीमा। पर उत्पीड़न सदा असीमा।।
पराजित भाव क्षमा समाता। तत्पर करुण क्रोध हो जाता।।
क्रोध जो सात्विकता धारी। 'हे मूसा वही तामस हारी।।

दोहा – लोक राज कोप धर्म सब य हैं दड विधान।
बैर सचित क्राध कलुपित उसका नही विहान।।

इस्त्राएल समूह तुझे जगाना। प्रभु दर्शन वचन 'यहोवा सुनाना।।
प्रभु वाचा अब सब पहिचाने। मधुमय देश 'कनान को, जाने।।
'पुरनिय सगठन एक बनाये। तब फिरौन समुख सब जाये।।
अपनी सामर्थ्य तुझे मैं देता। बल बुद्धि नीति विधान प्रणता।।
भ्राता हारुँ सग म प्राज्ञा। हे मूसा । सुन ' मेरी आज्ञा।।
तीन शक्ति दे सबल --उठाता। समूह नायक प्रबल बनाता।।

दोहा – शक्ति होगी 'लाठी मे 'दुर्जन नाशक ताप ।
' हाथ यह चगाई देता 'जल से थाह माप।।

रश्मि वलय अब बढता जाता। शिथिल प्राण प्रभु बल पाता।।
निर्मल मलिन विकोच वे सारे। विद्युत तरग बदल गये सारे।।
मूर्च्छना भाव हटता जाता। शक्ति भाव मन जगता आता।।
तेज उदित मन हुआ ऐसा। प्रात सूर्य लालिमा जैसा।।
मैं व्युत्सर्ग उपद्रव मिट जाते। आज्ञा–पाल प्रभु मूसा पाते।।
मोह श्रृखला अब थी टूटी। प्रभु तेजस् सकल्प बन फूटी।।

दोहा — शात अशात ज्वार से उबरा मन ससार।
पथ पावन प्रभु सहायक कर ले तू श्रृगार।।

'यित्रो से 'प्रभु दर्शन गुण गाया। ले विदा ! चले मन हरषाया।।
प्रिय से प्रिय है नाम 'यहोवा। आत्मिक आनद नाम 'यहोवा ।।
मौन थे वे डग बढते जाते। मौन से बडा शब्द न पाते।।
सागर मे नौका के जैसे। शान्त उड़ान 'कपोत जैसे।।
आशा स्वर्ण विहान के जैसे। सत्य ज्योति समूह के जैसे।।
सागर मिलन महानद जैसे। महा–शक्ति दलित उद्धारक जैसे।।

दोहा —सचित कर विपुल वैभव, आत्मा की पहचान।
बन स्फुरण रुप अनेक शक्ति–पथ जय गान।।

महा–'मरुस्थल आया भा' तन हुआ 'मूसा दुर्बल हारी।।
क्या नद यहाँ खो जाएगा ? या कि पार वह कर पायगा।।
रेत निगल रही उसे ऐसे। अस्तित्व मिटा अब ही जैसे।।
दूर हवा 'उससे यू बोली। 'नद वही जो हवा हमजोली।।
धुध रेत उडा ले जाती। पावन निष्ठा भर भर जाती।।
'सिप्पोरा प्रभु सकेत पहिचानी। पुत्र रक्त चढा मन्नत मानी।।

दोहा — तवता है जब मानव पाता स्वर्ण निखार।
कण–तट तभी पाता दृढ रखता आधार।।

उदास व्यथा साये जैसी। सरीसृप कोई विचरता एसी॥
मैं क्यो उलझा विपदा ऐसे। या प्रभु रुष्ठ हुए क्यो! एसे॥
अन्तहीन घुटन जल्त निदाघ जैसे। क्षुब्ध स्त्रोत मन बहता एसे॥
शायद मैं था केवल लाभी। शिखर चढ़न का एक प्रलाभी॥
दृढ चट्टान आरुढ़ मै भूला। दलदल कर्दम पर नस फूला॥
आत्म चेतन पुरुष हूँ मैं। असाध्य पीढी दाय भी मैं॥

दोहा — याद दिला दाय पीढी समझायी प्रभु राह।
अर्न्त–जीवन भी बदल यह थी वहा कराह॥

और सामने भ्राता पाया। बढ़ हारुँ भ्रात गले लगाया॥
होरेब पर प्रेम गहराया। 'मूसा तन बल भर आया॥
भाई को 'प्रभु–दर्शन समझाया। नाम 'यहोवा चिन्ह बताया॥
'ईसरी समूह नव रुप धरेगा। प्रभु इच्छा का केन्द्र बनेगा॥
आध्यात्म यात्रा एक करेगा। प्रभु वाचा की ज्योत बढेगा॥
आत्म प्रतारण 'मिस्त्र नपेगा। नये रग का ओप तपेगा॥

दोहा — कनान यात्रा है समग्र प्रभु से साक्षात्कार।
कवल घटना चक्र नहीं जीवन लक्ष्य विचार॥

भ्राता तू स्नेही सह–योद्धा। कहे 'मूसा हम प्रभु के योद्धा॥
प्रभु मे बनना चोखा सोना। बीज सौ दानो का है बोना॥
दुष्ट बुद्धि की धरी करौती। 'इसरी शक्ति हीन कडी कसौटी॥
आन्तरिक शक्ति सुदृढ बनाना। बाह्य नियत्रण मुक्त कराना॥
इच्छा सग हो बुद्धि नेकी। रीति–नीति प्रभु–भक्ति एकी॥
इतिहास धार बदल चलेगा। समय सिंचित स्वर्ण– कण बनेगा॥

दोहा — गुथे सौर–मडल समान केन्द्र से रह प्रीत।
समूह प्रबुद्ध हो एसा कोमल ज्यो नवनीत॥

दा दापा की ज्योति आशा। बनी शिखा जगी प्रत्याशा।।
अगरु मन बना था कैसा। चिन्तन धार डूबा ऐसा।।
पूरे उतरे तौल हरषाता। किरण शहतीर चढ़ता जाता।।
बहने लग वे अनुभव धारा। मर्मों का था उन्हें सहारा।।
पूवज व्यथा नयन गहरायी। प्रति–युग तपन उदासी छाया।।
भौतिक चक्र विप्लव उठाता। क्रूर लाभ चादर फैलाता।।

दोहा – उत्सर्गों का अन्त नहीं दारूणतम निदाघ।
अपमानों की पीडा आहों का था दाघ।।

दिव्य मिलन को चले भाता। प्रभु से जोडा मन का नाता।।
जडता त्याग कर्म प्रभु बताया। भूगोल मनुज शरण में आया।।
गर्शोन मध्य स्वय का पाया। दीन हान–उद्यान भय छाया।।
फहरा रहीं मिस्र ध्वजाए। लहर जैसे कपट भुजाए।।
पशु आकृतियाँ द्वार सजाया। श्रम दीनो के चुरा बनाया।।
विलासिता नगर नर्त्तन रचाती। परिजन जलते ज्यों दीप बाती।।

दोहा – आह ! पवन सुना गयी लुंठित कुंठित दाह।
परिवर्तन जीवन आशा स्वप्न का एक चाह।।

कौन! मनोज्ञ ये पवित्रनामा। जगा रहे मन आदमी–नामा।।
दिव्यता हर ओर है छायी। रत्न किरण सी विभा समायी।।
निकट रंशक कुछ इधरी आये। यात्रा शुभ हो! कहा मैं आये।।
लेवी वशज हम हैं भ्राते। मूसा हॉरू प्रभु गुण गाते।।
अब्राम इसहाक याकूब हमारे। पूर्वज ये हम सब के प्यारे।।
रुक यहीं। दृश्ता वे लाते। प्रभु में हम नित परखे जाने।।

दोहा – दुखी रहे ये हारून सुनी पवनी मान।
चढ रहा रंग अनुराग कितना पुनीत ज्ञान।।

कृतज्ञ हम आप नगर पैठे। मन जन आनद — डूब बैठे॥
भोजन तृप्ति आशीष पाते। पूर्वज गाथा हारू सुनाते॥
'इब्राहीम से प्रभु वाचा—बोधी। जाति—पिता आशीष प्रबोधी॥
धर्म—जयत प्रथम व्यक्ति कैसा ?। पुरनिय कह 'इसहाक जैसा॥
याकूब समान हक लेना होगा। विनम्र सेवा—नामा लिखना होगा॥
माप पैमान सही बनाये। तब मकान उत्तम बन जाये॥

दोहा — लघु न देख प्रभु महान, स्व घटी से न नाप।
शिला म सोता पाया साक्ष्यो का एक माप॥

युसुफ श्रमा जीवन की पोथी। मानव—श्रम आब का मोती॥
श्रम जग मे सग्राम विजेता। शौर्य मुकुट धीरज चहेता॥
'युवा जनो सुनो ! प्रभु बुलाते। सैनिक अपना तुम्हे बनाते॥
हारून युवा—शक्ति जगाते। उबलता लावा राह बनाते॥
देखा ! दुख बादल की माया। अधेरा जाने वाली छाया॥
सोचो ! पुष्प बनता है कैस ! पत्ते पर पत्ता जुड़ता ऐसे॥

दोहा — पवित्र जीवन म दुख क्लेश पर आनद की राह।
तुम फरिश्ते देहधारी प्रभु का सब की चाह॥

कहे हारूँ पृथ्वी ज्योति नारी। जन जन है उसका आभारी॥
सारा 'राहेल प्रभु अनुरागी। प्रभु म 'रिबका थी बड़भागी॥
नारी मे है ज्योतिया सारी। वह स्वज्योति प्रभु महिमा भारी॥
जब पति सग प्रकाश पाय। चन्द्र—ज्योत्मना गरिमा लाये॥
दया प्रेम ममता जब छाये। 'ज्योति—रूप छवि है दिखलाये॥
अखड ज्योति सी जलती जाये। फिर भी अ—ज्योति कहलाये॥

दोहा — नारी स्वय एक व्यवस्था सस्कृति का कोष।
शाप—मयी उसे न जानो बस वहाँ प्रभु—तोष॥

यो, मन उजियाला छाया। जावन अर्थ समझ म आया।।
'महा–शक्ति सम ईसरी जाग। सरिता–स्व रम्य बन धागे।।
उल्लासित युवा शिशु भी नाचे। मगल ताला पर नारी लास।।
कखट ले इतिहास अब जागा। गुलामी अध पतन लागा।।
जन–शक्ति रूपान्तरण पाया। हारूँ मैत्री भाव–सद् जगाया।।
दूर भेद भाव होते जात। अव–चेतन गुठन खुल्ते जाते।।

दोहा – मूसा मानचित्र बनाना नया प्रान्तर पुकार।
नयी सभ्यता नई राह समय काल अधिकार।।

'मूसा अविश्रात प्रार्थना जैसा। किरण पर किरण प्रकाश ऐसा।।
धीर अगाध चेतन वह ऐसा। दीप–स्तभ–ज्योत क जैसा।।
मन मे विश्वास बल हितकारी। दिशा – कोण भेदक दृष्टि भारी।।
अधकार म दीप जलात। शाति न्याय नींव बढते जाते।।
तूफाँ – आँधी झेलते ऐसे। सुरक्षा शाति गढ हो जैस।।
सहिष्णुता धैर्य रूप वे ऐसे। गढ़ते काई राष्ट्र हो जैसे।।

दोहा – इसरी पोत ले चले बज्र – विद्युत को झेल।
तमस दुर्दम ललकारे मनुज स्वर सुमेल।।

हुए चमत्कृत फिरौन सहारे। उदित हुआ 'मूसा तेजस धारे।।
अनुपम सहज सरल उजियाला। प्रहरी सा जागृत ज्या ज्वाला।।
फिरौन कुछ अधीर घबराया। सर्प कुडली आसन कसमसाया।।
बुद्धि विलोपित होती जाती। अध तमस दुर्बलता समाती।।
अशात सी सभा छटपटायी। अदृश्य से भीत ल्टपटायी।।
छूटा धैर्य टूटा सा जाता। तन मन विकल डिगता जाता।।

दोहा – मूसा हारूँ सभा खड़े सग पुरनिय अभिराम।
दास य पर्व मनाव आज्ञा दे अविराम।।

मफल फ़र फिरौन यू बोला। तुम सवक किसके यूँ तोला॥
हम सेवक है प्रभु यहावा। पर्व मनावें आदेश यहावा॥
कह फिरौन य कौन। यहावा। आदि सृष्टि का वचन महावा॥
उजियाला अधिकार यहावा। दिन रात का स्वामी यहोवा॥
पृथ्वी की हरियाली यहोवा। जल की गहरायी यहोवा॥
मानव है स्वरूप यहोवा। हर प्राणी म श्वास यहोवा।

दाहा — वह एलाहिम है सामर्थी सृष्टि कर्त्ता महान॥
एलएल्यान जो सर्वोच्च कहे मूसा तू जान॥

पृथ्वी है आशीष यहावा। आकाश गाय महिमा यहावा॥
यह सृष्टि सामर्थ यहावा। आकाश मडल शिल्प यहावा॥
हर ज्योति मे प्रकाश यहोवा। ज्योति अगम्य है यहावा॥
अनत जीवन स्रात यहावा। आत्मा और सच्चाई यहोवा॥
सारा पृथ्वी न्याय यहोवा। करूणा अनुग्रह है यहोवा॥
कर्म—आश्चर्य कर्त्ता यहावा। है आशा विश्वास यहोवा॥

दाहा — एदोनाय प्रभु हमारा वहो हमारी ढाल।
एल ओलव एक रहस्य वही सनातन काल॥

अनादि से अनत काल यहोवा। गुणानुवाद हावे यहोवा॥
सृष्टि व्यवस्था है यहोवा। हम सब बालक पिता यहोवा॥
प्रभुआ का प्रभु है यहोवा। मन भावन स्तुति है यहोवा॥
विलब से काप करे यहोवा। प्रेम रूप परमेश्वर यहोवा॥
दयालु अनुग्रहकारी यहोवा। धीरजवन्त सत्य यहोवा॥
अपरिवर्तनीय रूप यहोवा। दया क्षमा अधिकार यहोवा॥

दाहा — शालम शान्ति दाता उस की हो जयकार॥
सनाआ का है प्रभु स्वामित्व अधिकार॥

पवित्र पवित्र पवित्र है यहोवा। पवित्र नहीं कोई तुल्य यहोवा।।
हर प्राणी मे प्राण यहोवा। सब का स्वामी सदा यहावा।।
सर्वशक्ति मान है यहोवा। सब का उद्धारक है यहावा।।
'सब का चरवाहा है' यहावा। सुखदायी जल झरना यहोवा।।
धर्म मार्ग अगुवायी यहावा। विश्वासी की चट्टान यहोवा।।
अधकार मे प्रकाश यहोवा। भलाई करूणा जीवन यहावा।।

दोहा – वह फिरे है उद्धारक हर क्षण रहता पास।
वह रोफी है चगायी विपदा म है आस।।

धर्मी जन का विश्वास यहोवा। दीन सहायक सदा, यहोवा।।
युवा–जन की शोभा यहोवा। शीतल ओस समान यहावा।।
सदा सर्वदा अटल यहोवा,। महिमा अविनाशी यहोवा।।
जन मन राह विश्वास यहोवा। रक्षक अदृश्य अद्‌भुत यहोवा।।
भले जनो की ज्योत, यहोवा।। प्रिय मित्र साथी रूप यहोवा।।
विधवाओ का न्यायी यहोवा। अनाथो का पिता यहोवा।।

दोहा – सदा समीप रहे शम्मा मन म उसका वास।
निर्मल मन की धार्मिकता यही यहावा उजास।।

बुद्धि का मूल भय है यहोवा। दयालु अनुग्रहकारी यहोवा।।
सृष्टि पालक दयालु यहोवा। दुष्ट बल सहारक यहोवा।।
जीवन सोता प्रभु यहोवा। युगानुयुग जीवन यहोवा।
भोलो का रक्षक प्रभु यहोवा। सकेती सुने पुकार यहोवा।।
'इसरी है जेठा पुत्र यहोवा। अटल वाचा विश्वास यहोवा।।
धर्मी सिवाना सदा यहोवा। स्तुति सदा गाओ यहोवा।।

दोहा – कुटिल मनसा विफल करे भस्म करे ज्यो आग।
दोधारी तलवार 'वह दे आज्ञा ! तू जाग।।

दृष्टान्त दिखा तू प्रभु यहावा। कह फिरौन क्या भय! यहोवा॥
चमत्कार नहीं शक्ति यहावा। तर्क विवाद स पर यहावा॥
सुन, फिरौन सर्वव्यापी यहोवा। गुण अनत सर्व आधार यहावा॥
शक्ति और शक्तिमान यहोवा। दख इधर यह दड यहोवा॥
न्याय नीति प्रतीक यहोवा। दुष्ट दमन समर्थ रुप यहावा॥
अर्थ वाणी समायी यहोवा। प्रभु—राज दड न्याय यहोवा॥

दोहा— अघटित को घटित करे दड के रूप अनेक।
असभव को सभव करे तिनका भी शक्ति नेक॥

देख! प्रभु—दड शक्ति दिखाता। विवक तेरा मान उठाता॥
उपादान उच्च अश घटाये। तब बुद्धि तर्क क्षुद्रता जुटाये॥
शक्ति छिटक व्याल हो जाये। पलट उसे ही डसने आये॥
दड सर्प बन बढ़ता आया। कुटिल मत्रणा जादूगर लाया॥
ढेर सर्प सभा मे लहराये। प्रथम व्याल उदर सब समाये॥
उपाय खोज न पाये हारे। व्याकुल सा फिरौन निहारे॥

दोहा — दड की मर्यादा अपनी नहीं हिसक उछाल।
माशा रत्ती चावल माप बनता व्याल विशाल॥

विकट सन्नाटा सभा मे छाया। भाव पराजय राज समाया॥
धीरज से हारूँ फिर बोले। हो आज्ञा कि फिरौन डोले॥
प्रभु पर्व इसरी यही मनावे। बात सुहानी सभा मन भावे॥
हे राजा! तू विधान ज्ञाता। प्रभु का प्रतिनिधि रूप है दाता॥
समय है भर ले जीवन रीता। जगा ले मन अखड प्रभु प्रीता॥
प्रभु से ओट मन रूग्ण बनाता। ढॉप हाथ कोढी दिखलाता॥

दोहा — आज चिन्तन की है रात, सत् का कर ले ज्ञान।
नद—नील—तट हे हॉरून भेट करूँगा विहान॥

चचल तारे सिमटत जाते। निज कर्म निभा अब वे जाते।।
धीरे धीरे राज रथ आया। घोर तिमिर नील हृदय छाया।।
'फिरौन' निष्ठुर शाप रगीला। धर्म रूढि का ताज सजीला।।
देखे एक द्रुम बहता आता। मोद म आगे बढ़ता जाता।।
धारा का हूँ, अकेला ज्ञानी। लहरा पर नर्तन कौन सानी।।
तिरस्कृत करे लहरे मानी। उखड़ा बहता करूण कहानी।।

दोहा — बाजी जीत फिर हारा नील मे प्रलय नाद।
'इसरी पर्व यहीं मनावे' प्रचड हुआ विवाद।।

निर्धन दानी मन रीता कारा। देश मिस्त्र ठहर गया सारा।।
'हारूँ' ने तब प्रभु दड उठाया। उठा तूफाँ नद नील छाया।।
क्या! रक्त लाल हुआ पानी! कहता जैसे अश्रु—रक्त कहानी।।
गुमसुम हुई लहरा की वाणी। समय न भीतर कुछ ठानी।।
,छिड़ा धर्म युद्ध लोहित धारा। हारा मनुजत्व द्वेष हुँकारा।।
हे फिरौन! तू सत ही अकूला। अविचारी अन्यायी प्रभु भूला।।

दोहा — चट्टान पछाड़ खाती लहर वेग अतिभार।
नील रूप बदला ऐसा रक्तिम हुई जलधार।।

दूषित हुआ नील जल भारी। फैली मछलियो मे महामारी।।
पर्यावरण दूषण प्रति—घाती। जल सकट हुआ आघाती।।
जल दूषण से मेढक आये। घर घर मे वे भाग समाये।।
माना कहते मिल कर सारे। हम कपट द्वेष भाव तुम्हारे।।
मनुज अनीति जब अपनाये। निज दोष वह लख नहीं पाये।।
घोर दुर्गन्ध म मिस्त्र जीता। आह! शाप ही मानो पीता।।

दोहा — शीत हुआ सूर्य ताप महामारी की मार।
धुध कोहरा अभिशाप टिड्डी दल का प्रहार।।

पासा पलटा वर्षा के कोड़े। मरे पशु पाप ज्यो दुर्गंध छोडे।।
धर्म कदर्य, कुटक दश शूले। मनुज श्राप मच्छरता धूले।।
काल जिघासा, बरसे ओले। गरल द्रोह से छाले फफोले।।
घर–दीप बुझ निर्जन राहे। काला रग काल की बाहे।।
तिमिर–ग्रस्त देश नगर बचाओ। मूसा हारूँ सभा बुलाओ।।
आग्रह स्वीकार पर्व मनाये। वचन विनीत फिरौन सुनाये।।

दोहा – शान्ति दे दो आशीष घबरा कहे फिरौन।
सकट से उबारे मिस्त्र करे निवदन मौन।।

प्रभु आशीष विश्वास जगाये। विदा हुए भ्राता छोड गाथाये।।
मूसा– हॉरून बढते जाते। नव भाव विकसते मुसकाते।।
लोक पथ कान्ति का गाभा। रत्न मणि माणिक प्रभ आभा।।
पूर्वज युसुफ शीष नवाते। नत हो अस्थि सग ले जाते।।
बादल बन प्रभु दिन हरषाते। रात प्रकाश– पुज बन सरसाते।।
राम–सेस सुक्कोत एत् डेरा। पहुँच 'कनान पूरा हो फेरा।।

दोहा – चढता मन, बढते पैर जाना दश 'कनान।
अजब समा बाध रही, अटल व्यवस्था मान।।

जीवन सुहाना एक सद्यात्रा। कर चेतन निज समग्र मात्रा।।
देश कनान आध्यात्म बाती दासत्व की कथा सुनाती।।
ऋत् धुरी पर प्रभु ने तोला। अविश्वासी मन कॉपा डोला।।
समूह मे कोलाहल भारी। देखा सागर ज्वार तैयारी।।
क्या! 'मृत्यु पर्व मनाने आये। धुरी हीन बोले बौखलाये।।
धर्म विप्लव भीषण बड़जोरी। प्रभु अवज्ञा मनुज कमजोरी।।

दोहा – मनुज मन बधे न सीमा पग पग जाये डोल।
खुद गूँथे फिर उलझाये करे प्रभु का मोल।।

फ़िरौन मन अब उठती आँधी। सचमुच मैं ही था अपराधी ।।
जीवन — मरण बुदबुद सी काया। मन दौड़ा क्या पीछे छाया।।
कैसा अधम मैं समझ न पाया। कलुषित करता रहा मन काया।।
गूँज पीछे मैं भागा दौडा। कुटिल अज्ञानी बोझ न छोड़ा।।
पाप दुख से तू थका हारा। बना ले प्रभु को निज सहारा।।
जलद वही जो जल बरसाये। पुजित धूम जल कहा समाये।।

दोहा — मन क उच्छल प्रवाह अटके भटके प्राण।
सुख दुख लेते हैं थाह कर न प्रभु का मान।।

मनुज बुद्धि तम टटोलन वाली। हित को सदा देखने वाली।।
फ़िरौन अहँ ऐसा जागा। 'ईसरी रोको सैन्य सजा भागा।।
अधम तमकार क्षण के छाले। तर्क मोह उपादान उछाले।।
दाहक क्रोध उबता लावा। मन हुआ तपता जलता आवाँ।।
अधीर मान फिर रथ बैठा। प्रचड वेग बन सागर पैठा।।
द्रोह विस्फोट से मनुज हारा। अभिमान सदा मनुज हुकाँरा।।

दोहा — अट्टहास करे लहरे दुरमति की यह हार।
प्रलय वेग बह जाता टूट टूट लाचार।।

भय से विकल समूह सारा। सैन्य फ़िरौन देख मन हारा।।
कहते 'मूसा प्रभु मत भूलो। या दुविधा मे मत झूलो।।
दीप्त प्रकाश मध्य है देखा। मन मे प्रभु महिमा अवलेखा।।
प्रभु स्वय हैं सागर समाये। पूर्वी पवन जल है लहराये।।
'जल बोर बना वहा अतिभारी। उतरी पार सैन्य प्रभु सारी।।
प्लावित हुआ तन मन सारा। कर्षित हर्षित चकित जन धारा।

दोहा — जगा समूह अटल धैर्य प्रभु देते दिशा ज्ञान।
बढ गया उत्साह प्रवाह कहते सब प्रभु महान ।।

बीस लाख आगारु नर नारी। नहृत तिमिर त्याग बल भारी॥
निर्मल ज्योत दुग्ध फन उछाला। अन्तस हिलोर गूँथती माला॥
धीरज पाया समूह न्यारा। गाता महिमा प्रभु ही सहारा॥
अरूण ललित प्रभात अब आया। आशा विजय किरण सग लाया॥
नभ नीला सागर भी लहराया। धवल किरण चादर फहराया॥
क्षण मे सागर हुआ हुकारी। उत्तुग तरग अजगर फुँकारी॥

दोहा – आवृत्त म घिर गये सागर लघन भाव।
टूट निखर रथ बहते लगन के महाचाव॥

जा प्रतिकार ध्यय चनाये। लोलुप लाभ्य पाप सजाये॥
ऐसे नाश पास बुलाय। जलता दर्प जल डूब जाये॥
रथ वैभव योद्धा अभिमानी। युद्ध की आग बहे सब मानी॥
हठ पर दृढ़ रहता अविचारी। बुद्धि प्रमाद विनाश विकारी॥
शव निस्पद डाल रह ऐसे। पाप शाप कूल–हीन जैसे॥
सीमा भूले नर अवमानी। डूब जाये या निजत्व पानी॥

दोहा – यहावा महा प्रतापी सरहाते प्रभु महान।
युक्ति डूबे शीशे समान पार उतरे अज्ञान॥

मरियम मूसा हॉरून गाते। अर्न्त मन उमग सब छलकाते॥
भर भर ओमेर मन्ना पाते। सरल शुचि सगीत सुनाते॥
हृदय गुफा मे छिपा है सोना। प्रभु विश्वास फसल है बोना॥
हर काम प्रार्थना की आभा। स्वालबन शुद्धता का गाभा॥
प्रेम बधुत्त्व भाव जगाओ। अर्न्त समूह मडलिया बनाओ॥
स्थिरता आये गोत्र जगाओ। शून्य को सौ गुना बढाओ॥

दोहा – मस्सा मरीब रपीदीप होरेब चट्टान नीर।
यित्रो भट हुई पावन हुए प्रधान गभीर॥

समूह विज्ञान वट अनाखा। कहा वीथि किस पथ है धोखा।।
नैतिक कर्म धर्म बधे सीमा। सग प्रकृति पर्व हर्ष भी धामा।।
उत्तम आचार चमक ऐस। सूर्य बिम्ब चमके जल जैसे।।
नव्य आगार सहिता रचान। प्रभु आकाश्रा विधान बनाने।।
मूसा परवत चढते जाते। पख उकाब वे उड़ते जाते।।
सीनै पर्वत प्रभु अनुगूँजे। महा शब्द ज्या नरसिगा गूँजे।।

दोहा — तेज न तज दिखाया ज्यार्तिमय अभिपेक।
शक्ति तरग निखर उठी रचा विधान प्रभु टेक।।

आनद अखड ले प्रभु काक्षा। पाटी पावन विधि आकाक्षा।।
शिविर लौट उलझन मे आये। कोलाहल प्रश्न मूसा पाये।।
मनुज मन अति निर्लज्ज कैसा। कारा बन्द समूह यह ऐसा।।
तिमिर लिपटे इसरी जब देखा। तोडी पाटी प्रभु का लेखा।।
छाये बादल धुआँ ज्यो काला। चमका पर्वत ज्या विद्युत हाला।।
कहे मूसा प्रभु अनुग्रहकारी। करो आन्दोलित हृदय भारी।।

दोहा — अनत जीवन है नजात ल आती प्रभु पास।
प्रभु समीप आ पछताआ मिट हिरदय पिपास।।

ऊब डूब कर समूह उतराया। गहन गर्त गिर पाप पछताया।।
अश्रु जल अधीर अन्तर धोते। समूह प्रधान जीवन बल बोते।।
हिलोरे अछोर शाभा छायी। भक्ति प्रणत समूह सुखदायी।।
निर्जन म सृजन नव दीक्षा। इस्राएल नव्य भाव प्रतीक्षा।।
नव सगठित जीवन पहिचाना। प्रतिफल प्रभु साक्ष्य माना।।
तब विधान मूसा सुनाते। स्वर समवत जय जय गाते।।

दोहा — प्रभु वाचा दस्तावेज जीवन सार महान।
सरताज स्वराज प्रकाश दान वरदान ज्ञान।।

पावन प्रभु आज्ञाए सुनाता। हृदय – पाटी लिख अमिट खाता।।
आस–विश्वासी प्रभु की वाणी। तू सेवक रह प्रभु में साची।।
नाम–प्रभु व्यर्थ नहीं लेना। विश्राम दिन तू आशीष लेना।।
माता – पिता आदर हरषाना। हत्या विचार कभी न लाना।।
नारी लालच मन न जमाना। सदा दूर व्यभिचार जाना।।
प्रभु आज्ञाए आशीष लाय। वश वय आनद हर्ष बढाय।।

दोहा – देना न साक्ष्य झूठा गिरता मन की आन।
तराश पत्थर न जुटाना वेदी हो मन आप।।

प्रभु मिलाप तम्बू एक सजाते। भाव–जगत अलौकिक रचाते।।
गात्र–गोत्र आलोक पाये। प्रभु तेजस छावनी गहराये।।
गोत्र पहिचान झंडे न्यारे। लय लय लहराते नेह दुलारे।।
मूसा–हॉरू पूर्व दिशा भागी। दक्षिण दिशा 'कहात बडभागी।।
पश्चिम के गर्शोन सहभागी। दिशा उत्तर 'मरारी रहे भागी।।
छॉव जहॉ बादल दिखलाते। डेरा कर प्रभु महिमा गाते।।

दोहा – प्रभु निकेत समूह केन्द्र मन प्रभात सुकेत।।
सरल विरल ज्योतिर्मय परम पवित्र प्रभु निकेत।।

प्रभु निकेत चैतन्य जगाता। मन बचन काया नव्य बनाता।।
पूर्व द्वार मार्ग अविनाशी। रहे लिपट प्रभु–डोर विश्वासी।।
विशाल अनुग्रह द्वार प्रकाशी। सकट – राह खभ चार भाषी।।
जीवन रग भाव सिखलाते। परत पर्दे सघन पुलक जगाते।।
कृपा प्रभु असीम रग नीला। बैंजनी सामर्थ्य बल शीला।।
रग लाल प्रभु तेजस गाये। आत्म शान्ति श्वेत से पाय।।

दोहा – निकेतन आगन ऐक्य शरीर, आत्मा प्राण।
आत्म शोधन सदेश पुलकित करता प्राण।।

वदी बबूल पावन कैसी। तत्र तत्र पावन हो गयी जैसी।।
पीतल जड़ा आवरण ऐसा। ओढ लिया ईश्वरत्व जैसा।।
प्रभु समर्पित होता बलिदानी। छाड निर्मम निष्ठुर लघु–वाणी।।
सुगध लोबान सी वह लाता। जावन मान नमक ज्यो पाता।।
खमीर मलिन जीवन न घटाय। सजग भाव आनद बढाय।।
पापी एक समाज पर भारी। निर्दोष चुकाये कीमत सारी।।

दोहा – आशीष सवा सच्चाई वदी मेल मिलाप।
अर्न्तदाह तपे अनुताप प्रभु लौ जग आप।।

प्रभु निवास द्युतिमान कैसा। निश्छल प्रेम रस धार जैसा।।
स्वर्ण मढे तख्ते सधे ऐसे। आत्मिक बध प्रेम रूप जैसे।।
प्रभु विश्वासी आस के जैसे। नही दरार दृढ आलय ऐसे।।
आत्मिक जल हौदी समाया। जल दर्पण मन शुद्ध बनाया।।
करूब पख ज्यो यहोवा साया। भूगाल खगोल ज्ञान छाया।।
या ईसरी पहिलौठा कहलाया। परम पवित्र निशान ध्वज पाया।।

दोहा – देश नया जन्म अयुध्य पाया प्रभु दुलार।
वसुधा पर नव निर्माण राशि राशि विस्तार।

अनत शक्ति ज्योत बन जाए। प्रभु महिम मनुष्यत्व अपनाए।।
ज्ञान पूर्ण दीवट के जैसे। पाप पर पुण्य विजय के ऐसे।।
महायाजक महिमा सुनाते। गौत्र लवी हॉरु उत्तम पाते।।
प्रभु सेवकाई बागा पुनीत। झिलमिल एपोद स्वर्ण धागा।।
पगडी पर मुकुट सिर बाधे। पवित्र मन यहावा हतु साधे।।
धूप दीप लोबान गहराए। दीवट लौ ईश अश समाए।।

दाहा – आलाक मे प्रभु निवास अर्पण करा निज भाग।
अनुष्ठान प्रभु सहभागिता प्रायश्चित पवित्र आग ।।

सर्व चिन्तन नीति धर्म सुनाया। मूसा मन स्पन्दन जगाया॥
जैसा दृष्टि वैसी ही सृष्टि। इच्छा सकल्प कर्म मन पावे॥
सब मनुज मोती के दाने। प्रभु म एक आत्र एक ही याने॥
ऊँच नीच वर्ण हीन वचनाए। घट समष्टि मान हानताए॥
कुड़कुड़ाना लाभ लालसाए। कुठा टूटन अनिष्ट मत्रणाए॥
कनान–यात्रा बढ़े न आगे। जब लौं मन प्रभु म न जागे॥

दोहा – उजला रग बने काला तब सिसक उच्छवास।
रग काला बन धवल जीवन म मधु मास॥

परिवार हृदय–देश सुख कोपी। समन्वय शक्ति समाज पापी॥
दिव्य वाटिका भव्य छाया। भाव भावित अनुपम सुच्छाया॥
सुमधुर स्नेह मन हरषावे। शोक दुख मुलायम बनावे॥
आत्म त्याग साहस जुटाता। आनद स्रोत नितनित बहाता॥
सतति एक महा जिम्मेदारी। बढ़े नय निष्ठा भागीदारी॥
परिवार एक वृक्ष दो शाखाए। युग युग आशीषित प्रशाखाए॥

दोहा – एक आत्मा नर नारी मधु सद्भाव अम्लान॥
प्राणो के प्राण मुस्कान। भरत रहे उडान॥

कनान है लक्ष्य बढना होगा। मार्ग बना चलना ही होगा॥
सहानुभूति का कोमल पौधा। मन माधुर्य से सींचा सोधा॥
क्लेश–मान का बड़ा परकोटा। आनद का मदिर है छोटा॥
ईर्ष्या का होना न कैदी। क्षमा कवच पहिनो फौलादी॥
प्रतिघात ठहर जीवन जाता। गुरूत्व विस्तार बाहें फैलाता॥
पाशविकता से बचकर भागो। विनय गात प्रीत प्रभु से मांगो॥

दोहा – खुला न्याय है जीवन क्षितिज चमकता ज्ञान।
जीवन वस्त्र बुन लो सूत्र ये हैं महान्॥

दस आज्ञाए सुखद लासानी। प्रकाश स्तभ राह सुहानी।।
तन मन कोढ प्रमेह बचाये। भाव पवित्र प्रभु – लगन सजाये।।
ज्यो नद – आरभ लघु दिखावे। ज्यो वृक्ष समूल बीज समावे।।
ज्यो बूँद प्रचड वर्षा लाये। पाये वही जो बढता जाये।।
घर कर्‌ द्वार पथ द्वार दरशाये। लक्ष्य आर पथ ही ले जावे।।
समय ज्ञान अस्तित्व तीनो। परम मनोहर भाव मे बीनो।।

दोहा – मन वेग फेन बनाये जल कण उछले गोल।
छाया तारा नभ सजाये ओस कैसा सुडोल।।

अब जीवन के पर्व मनाओ। समझ करूणा जीवन अपनाओ।।
हर क्षण जो है जीवन देता। दान प्रतिदान भेट वह लेता।।
दशमांश प्रभु भेट चढाओ। दीन हीन स्नेह भी पाओ।।
फसह पर्व तीन मना सुख पाओ। प्रकृति सतुलन गीत निभाओ।।
नियम कानून दड़ का लेखा। परिवार समाज राज्य मेखा।।
न्याय मे धन शक्ति न गँवाना। रूग्ण पक्षपात न बढाना।।

दोहा – युद्ध मद न आये क्रूरता नारी सुरक्षा मान।
रहे सुरक्षित वन सम्पदा सदा रहे यह ज्ञान।।

पर्व झोपड़ी मना हरषाये। डाल खजूर वृक्ष शाख लाये।।
हव्य चढा तन मन सुख पाया। प्रभु स्तुति कृतज्ञ हृदय चढाया।।
प्रस्थान नरसिगा गूँजा पूरा। चला कारवाँ अन्न भरपूरा।।
मंजिल दर मजिल बढता जाता। दूर परान मुग्ध दिखलाता।।
अग्रदूत कनान को जाते। आशीर्वाद याजक से पाते।।
नद यरदन मनु किनारा। वाचा देश कनान है न्यारा।।

दोहा – आत्मिक बल मन समाया माना प्रभु उपकार।
प्रभु मे मन दीन हुआ गूज मन के सितार।।

डेरा देश 'एदोम सिवाने। हारू प्रभु समाये छवि–माने॥
हारूँ पुत्र एलिअजर लेबी। 'महायाजक अब प्रभु सेवी॥
अबी कोरह दातान द्रोही। पतित समूह भ्रष्ट विद्राही॥
जले जलन मूढ़ मति हारे। मूढ़ता खाजे विकट किनारे॥
भ्रम जिसको है भटकाता। पथ वीथि वह चक्कर खाता॥
आकुल द्रोही धरा समाय। खरे परीक्षा न उतर पाये॥

दोहा – ध्वनित न हो फिर घात सुलझे जीवन लीक।
भ्रम विभ्रम द्विधा चितरा पीतल साँप प्रतीक॥

दाता विधाता घट न बोलो। 'रोटी से कभी प्रभु न तोलो॥
घट बढ बटखरे रख न थैले। पूरे रख नपुए कभी न मैले॥
जीवन का भर ले तू प्याला। प्रभु वचना से मिले उजाला॥
घुमावदार राह नहीं जाना। दुरित दैन्य निज का उलझाना॥
सिहनी सा यह दल उठेगा। तारे सा अधिपति आयेगा॥
यदन पार 'कनान जब जाओ। पर्वत एबाल वदी बनाओ॥

दोहा – आज्ञा विधि अंकित करके गढ शिलाए महान।
पूर्वज अनुमत साथ आस सहेज रखना ज्ञान॥

'कनान सीमा 'मूसा दिखाते। गोत्र–गोत्र भूमि नाप लिखाते॥
देते धन सम्पति भागीदारी। पुत्रियो की भी हिस्सेदारी॥
शमोन युसुफ इस्साकार लेवी। बिन्यामोन यहूदा प्रभु सेवी॥
रूबेन गाद अशार नफ्ताली। जबूलून दान, प्रभु माली॥
गिरिज्जीम से आशीष सुनावे। एक सकल्प मूसा दिलावे॥
लेवी प्रधान धन्य पुकारा। 'मूसा तू जीवत सहारा॥

दोहा – सर्व भाव अभिव्यक्ति तू जीवन दर्शन लिबास।
सन्त हरित रहे इसरी जो थिर रह प्रभु आस॥

आशीष और शाप

गूँजा पर्वत गिरिजिज्जीम शाप और आशीष।
अवज्ञाकारी को शाप धरमी को आशीष॥

धर्मी को धन्यता आशीष

चौकस रह प्रभु विनीत प्रजा कह आशीष।
अनत–जीवन गूँज सुने प्रजा कह आशाप॥
कठौतियाँ भर भर लाये प्रजा कह आशाप।
भूमि धान्य उपजाय प्रजा कह आशाष॥
भीतर बाहर हर ठौर प्रजा कह आशाप।
रह प्रभु मे ध्यान लीन प्रजा कह आशीष॥
खाल प्रभु मारग सात प्रजा कह आशी॰।
पभु विश्वास मे भरपूर प्रजा कहे आशीष॥
उत्तम भडारी आकाश, प्रजा कहे आशीष।
बरसावे मह उदार, प्रजा कहे आशीष॥
दुख दैन्य पास न आवे पजा कह आशीष।
स्वर्गिक प्रकाश अगुवाई प्रजा कह आशाप॥
ज्ञान गुणी बुद्धिमान प्रजा कह आशीष।
दाखबारी लता कुंज प्रजा कहे आशीष॥
धन्य है वह खत नगर प्रजा कह आशाप।
कर धर्मी जहाँ निवास प्रजा कह आशीप॥
धन्य उसक पावन काम प्रजा कह आशाष।
प्रभु की पवित्र प्रजा नाम प्रजा कह आशाप॥

पर्वत पर आशाप वचन हन्य आनद अपार।
शान्त गगन असाम कात आशिपित का श्रृगार॥

प्रभु अवज्ञा और अवज्ञाकारी को शाप

आज्ञा और विधियाँ सुने, चौकस होवे ज्ञान।
प्रभु व्यवस्था टाल करे अवज्ञा यह अभिमान।।

अवज्ञाए

कि शापित है वह मनुष्य प्रजा कहे आमीन।
प्रभु मूरत सूरत ढाल करे प्रभु मान दीन।।
कि शापित है वह मनुष्य प्रजा कहे आमीन।
तुच्छ माने माता पिता सकीर्ण करे दीन।।
कि शापित है वह मनुष्य प्रजा कहे आमीन।
छीन जा पर–सिवाना सकीर्ण करे दीन।।
कि शापित है वह मनुष्य प्रजा कहे आमीन।
अनाथ विधवा जो लूटे सकीर्ण करे दीन।।
कि शापित है वह मनुष्य प्रजा कहे आमीन।
गन्दे विचार व्यभिचारी, सकीर्ण करे दीन।
कि शापित है वह मनुष्य प्रजा कहे आमीन।
छल हत्या कर मारपीट , सकीर्ण करे दीन।।
कि शापित है वह मनुष्य प्रजा कहे आमीन।
छीने सम्पत्ति छल बल से सकीर्ण करे दीन।।
कि शापित है वह मनुष्य प्रजा कहे आमीन।
व्यवस्था से भटके राह सकीर्ण करे दीन।।

अवज्ञाकारी को शाप

कृतघ्न सहेगा मार भारी रोग ज्वर दाह जलन कारी।।
अधा हो पागल सा भटकेगा काम सुफल नहीं पावेगा।।
चाहे लगाये दाखबारी फल नहीं शाप पाये भारी।।
आकाश पातल सा पावेगा नही मेह बस ठन ठनायगा।।
धरती लौह सी जल तपेगा फसल नहीं धूल बरसायेगी।।
जीवन मरण लाभ हानि धोखा सहे प्रभु सग बन तू चोखा ।।

मूसा की विदाई

रहन सहन आदर्श समझाया। सन्दूक वाचा साक्ष्य सजाया।।
हारूं 'लाठी 'मन्ना औ पाटी। रख सदूक निभाई परिपाट'।।
अबीरीम से 'कनान देखा। 'यहोशू प्रभु सेवक अवलखा।।
अर्पण कर 'यहोशू सेवाकार्यी। दे दी 'इसरी समूह अगुवायी।।
समत्व भाव तुझ है बाना। समूह यह प्रभु आदश अन्होना।।
साक्ष्य गीत 'मूसा रचाया। गाकर आशीष सभा सुनाया।।

आशीष — गीत

जैसे पौधो पर झड़ी, झींसी हरा घास।
ऐसे करुणामय यहावा निर्मल मन कर वास।।
गहरे वचन यहावा जैस जल पाताल।
सूर्य किरण से अनमाल हरीभरी ये बाल।।
ओस ज्या दमके 'समूह, पुलकित करे परिवेश।
मह समान ये बरसें हर्षित करे प्रीत वेश।।
हर मडल प्रभु का भाग गोत्र गोत्र आमीन।
सदा सहायक यहोवा, सराहे सब आमीन।।

दोहा — नबो पर्वत 'मूसा गये, हुए प्रभु म लय लीन।
विलपते 'इसरी कहते, मूसा थे प्रभु वीण।।

खड तृतीय

मूसा महिमा शतक

१ अतुल नेह गहन आस्था अर्पित करते दास।
सश्रद्ध भाव अश्रु बिन्दु लाये भेट सुवास।।
२ बुझी बुझी लगता आज हृदय तार झकार।
सूने मे जा छिपी उमग डूबे दुख की धार।।
३ झालर सपना की परते भीगी दुख विषाद।
पावन निर्झर सुखकारी भरत रहे अहलाद।।

४ डगमग अब यह नौका हवा हुई धारदार।
घिरे तूफाँ विद्युत वज्र घेर रहा अधकार॥
५ लहरे फेनिल है मुखर, और हम डाँवाडाल।
शक्ति चाहे हम ऐसी सदा रहे अडोल॥
६ अनगिन नयनो की आस सुने समूह सरताज।
पहुँचाया पार किनारे सुरक्षित ईसरी जहाज॥
७ महा मृषा खड कर तिमिर, दिया प्रकाश अपार।
स्थिर किये कोण दिशाए युग दृष्टा कर्ण धार॥
८ उत्पीडन की दाह समझ हृदय बनाया विशाल।
शोषित वर्ग अपनाया सजाया धनुष ढाल॥
९ बधक दास ये विषण्ण करना इनका श्रृगार।
भीतर आँधी आवेश नवल आशा उच्चार॥
१० नरवाही हृदय जुड़ाया बना जीवन प्रवाह।
तप्त दीप्त हुए आदर्श अह की शीतल दाह॥
११ गढते रहे राज नियति एक प्रार्थना समान।
धीर अगाध ज्ञान ज्योति सजग औ' सावधान॥
१२ प्यारी मधुमय मुसकान करती आशा सचार।
उजली पारखी आँख देती आनद अपार॥
१३ प्रभु सुसेवक दृढ सिद्ध श्रम के थे उपहार।
परम्परा विमुक्त पूर्ण, मन वैश्विक विस्तार॥
१४ पौरुष पराक्रम सबल स्वचेतन थे प्राण।
समय शिला ने उकेरा आयुध पौरुष मान॥
१५ चारित्रय रहा उज्जवल हर पल कर्त्तव्य पाल।
ध्रुव तारे सम पथदर्शक दुर्जन क महा काल॥
१६ समूह नयन कणणिका जन जन के आलाक।
मधुमय देश क राही प्रकाश के महाआक॥

१७ जल स्रोत जैसे निर्झर रूकने से प्रतिवाद।
बोझ पाप सब उठाय करते प्रभु से वाद।।
१८ स्थिर रहे पर्वत समान गहरे समुद्र गभीर।
विशाल और भव्य भाव युग पौरूष थे धीर।।
१९ पवित्रनामा बलिदानी अखड ज्योत सुकान्त।
आनद उत्मव अह्लाद रस सिन्धु प्रशात।
२० शिशु समान नेही स्नेही सरल मृदुल सुकुमार।
जीवन काव्य बनाया, हरित हरित सुविचार।।
२१ रक्षक योद्धा थे गायक जन जन के हृदयेश।
स्वय प्रभु जिसे तराशा ऐसा दिव्य परिवेश।।
२२ जीवन तत्त्वो की कुजी सकल्पो की पुकार।
विधि विधान न्याय प्रणेता, कण कण पर फुहार।।
२३ समूह विज्ञान मन ज्ञाता मूल्यो के प्रतिमान।
उजास मानवी गौरव युगो की चट्टान।।
२४ अद्‌भुत आस्था अनुभव न्याय स्तम्भ आधार।
इस्त्राएल भविष्य दृष्टा विश्वासमय ससार।।
२५ प्रतिगति विध्वसक नाद, प्रगति ज्योत महान।
गहन तमिस्रा मे आलोक गुँजाया प्रभु गान।।
२६ प्रभु वक्ता प्रेम उद्‌गार करते शब्द विभोर।
कोमल वाणी मधु मीठी अटल निष्ठा अगन और।।
२७ दृढ चट्टान सघन विचार फौलादी पर शात।
दिव्य सौंदर्य नम्र विनत प्रेमिल श्रद्धा सुकात।।
२८ गहरी आँखो मे बाँध अन्तर लेते टटोल।
सशय ज्वार मिटा कर भाव जगात बाल।।
२९ अक्षय शक्ति भडार वचन द्युतिमान मणि हार।
एक दिशा जीवन पथ राह प्रभु गुलशन दिया सवार।।

३०	न्याय मीमासा एक अटल सम्पूर्ण हृदय उपाग।
शाश्वत सत्य आलाक प्रामाणिक वे साग।।
३१	आत्मा के स्वर अनूप झरन पर्वत चाह।
अति नच्च काव्य मनस्वा बहते रहत प्रवाह।।
३२	एक साधक जीवत प्रभा, महामानव लघु काय।
प्रभु शिरकत आशीष्ति वाचा का था दाय।।
३३	प्रभु कसौटी खरे रहे अनुशासक एक कठोर।
लीक अलीक जो चले, प्रायश्चित पुर जोर।।
३४	ध्रुव तार स अटल रहे जीवन दिशा सकेत।
धुध कुहास से ऊपर ज्यातित प्रभु निकेत।।
३५	सार अश सृष्टि का कर्म प्रेरित रहे आप।
साहित्य शिल्प सगात सस्कृति सकुल माप।।
३६	सागर उर म समाये लहर तरगित धार।
धरा स ताराओ तक महा उत्सव उपहार।।
३७	किरण चढ आह्वान किया, इसरी मनावे पर्व ।
घोर महा अधियारा फिरौन सभा का दर्प।।
३८	डूबा छल बल सब सागर हुआ पार इसरी विश्वास।
मिस्त्री मान दर्प उत्ताल बहा ऐश्वर्य विलास।।
३९	दुर्बल सहाय बल सहारा दिया मानवता ज्ञान।
जीवन माल मनामय लिखी व्यवस्था विधान।।
४०	खारत से पावन परम प्रेम प्रीत अवदान।
प्रभु इच्छा आयस सहज गति अन्तर स्वर मुसकान।।
४१	चिन्तन स्त्रात बहते रह प्रभु मडप मन शोध।
तम्बू मिलाप प्रभु निवास केन्द्र बनाया बोध।।
४२	सात्विक भाजन मन्ना स्वर्गिक सा आह्लाद।
बटोर स–तोष कहते ऐसे ज्या प्रभु प्रसाद।।

४३ व्यग्र श्रृखला टूट कमी, हो जाती कूल हीन।
ओस कणो से सिचित कर हरते भाव मलीन।।
४४ लक्ष्य साध बढते रहे दूर रखा अभिमान।
। हर फूल से शहद जुटाया मधु मक्षिका समान।।
४५ मन चरवाहा, भार गुरूत्तर, अद्‌भुत नियति खेल।
प्रभु सैनिक प्रभु समर्पित भाव अनुपम मेल।।
४६ बढायी आत्म–चेतना अह क्षेत्र किया चूर्ण।
शिखरो किया प्रभु मिलाप आत्मक मन परिपूर्ण।।
४७ बदल रहे थे परिपाटी बनकर धुरी समूह।
जीवन मान दिर्या बदल गिरा पुराने दूह।।
४८ पर्व पितेकुस पर्व कटनी भर देते अहलाद।
अ–खमीरी रोटी त्योहार पर्व फसह धन्यवाद।।
४९ याद दिलाते अर्ध चढा करो यहोवा याद।
छाड़ो अनाज दरिद्र हेतु प्रभु का हो जयनाद।।
५० प्रभु सर्मपण धन्यवाद सबत दिन विश्राम।
पर्व जुबली वर्ष अभिराम, भरता चाव ललाम।।
५१ पवित्र दिवस नरसिगे का 'प्रायश्चित त्यौहार।
'कृतज्ञता पर्व प्रगट करो प्रकृति का आभार।।
५२ सह–सवेदन सुख वैभव बढाते स्व–अनुभूति।
या शीतल छाँह देत बिखराते निज विभूति।।
५३ कर्त्तव्य दायित्व सुमेल मानव धर्म की मेख।
दस आज्ञा मन सतुलन दिया अमिट प्रभु लेख।।
५४ लिखे अक्षर पाटी पत्थर अद्‌भुत थे शिल्पकार।
अक्षर ऐसे चमके जैसे सूर्य किरण सचार।।
५५ होते नियमित सब काम नीति नियम तिथिवार।
स्वशासन की थे आब अनूप सवक उदार।।

५६ अचूक लय नियमन बधे प्रभु महिमा म विभोर।
सूर्य चन्द्र नक्षत्र जैसे जीवन रहा कठोर॥
५७ रखते कर्म से अनुराग सैनिक थे महान।
कहते स्व–शासित मन करता प्रभु गान॥
५८ प्रभु पर रख कर भरोसा कहत दुख को जीत।
आकाश कुलाच भर मत बढ़ जा प्रभु प्रीत॥
५९ तप तन कर जो बढ़ता व्यक्ति या कि समाज।
देखे वह प्रभात कहते प्रभु पहिनावे ताज॥
६० गुलामी का वह व्यामोह हम थे असहाय दीन।
तिमिर दूर कर जगाया दिव्य दृष्टि शालीन॥
६१ स्वर्ग विभव धरा उतरा केन्द्र तम्बू मिलाप।
आत्म–सिद्धि कर चेतन, प्रभु से कर आलाप॥
६२ समाज सुष्ठु गति पावे मनोरम होवे चाव।
मन आलस्य दूर हटा भरते प्रज्ञा दृढ भाव॥
६३ महला मे ऑखे खोली रहे दीन निर्धन सग।
जैसे फूल सग सुगध थे सुवास मन रग॥
६४ ज्योतित किय दीप अनेक प्रकाश दीप महान।
रश्मि वलय वे अभिराम नयी दिशा नव ज्ञान॥
६५ भाव चेतना जागृत कर, कोमल धागे जोड़।
सयम विनय उभारते जीवन कला के मोड॥
६६ स्वैराचार सर्प लीक रह सदा सब दूर।
पीतल सर्प सकेत दिया मूढ मति मद–चूर॥
६७ जल स्त्रोतो के थे शिल्पी बहाते वाणी स्रोत।
बाण झुकाते प्रभु चाह बन 'यहोवा ज्योत॥
६८ स्वय सूर्य तप सहते बरसाते नेह मेह।
सागर–खार खुद डूबते हम पाते ओस नेह॥

६९ नद–कूला सा मर्यादा और सतुलन याग।
कहते जोश म होश युद्ध नहीं क्रूर भाग।।
७० हारुँ था पार्श्व योद्धा प्रज्जवलित अगार।
प्रभु अनुरर सहज सहचर बधु सम तैयार।।
७१ हृदय सिन्धु ससुर चित्रा भाव किरण समुदाय।
बल बुद्धि विभव गभीर पथ–दर्शक सम सहाय।।
७२ साँचे ढली विनम्रता 'सिप्पोरा प्रीत अथाह।
सह पथा सविता छद प्रयसी प्रेम चाह।।
७३ किया 'यहाशू अभिषिक्त सौंप दी आस टेक।
भाव चेतना पुलकित आभा दमकी नेक।।
७४ रहा दास एश्वर्य सदा प्रभु पथ किया स्वीकार।
दुखी मानवता स प्यार सब कुछ दिया वार।।
७५ पूरे मन से सकल्पित सहर्ष सहा विषाद।
निर्धन मन के क्रन्दन का बना दिया अहलाद।।
७६ तपिश सहा जलते रहे देने शीतल छाह।
मानवता अराधन मे फैलाये रहे बाँह।।
७७ गुलिस्ताँ नया एक सजाया जुटाया प्रभु समाज।
दिल की दुनिया पर हुकुमत अन्दाज नया स्वराज ।।
७८ खिदमत ही खिदमत सेवा बदला सब परिवेश।
दिशा दर्शन सबके लिए प्रभु विधान आदेश।।
७९ है इसरी उर प्रदेश विभव सुप्त आशा उठान।
यहोवा का प्रिय प्रतिनिधि करुणा की उड़ान।।
८० ह अन्तस् ऊर्जा प्रकाश रहे सदा द्युतिमान।
एक सुरीली लय ताल प्रभु का नवल विधान।।
८१ हे मनुज की अर्न्तचाह वीण सुनहरा तार।
स्वर्ग–गगन मिलन धरा स्नेह हिलोर अपार।।

८२ हे इसरा सूर्य तजस्वी प्रभु लालिमा वितान।
उज्जवल मगल–गीत, मन प्रभा पहिचान।।
८३ ह ज्वाल समुद उद्वेलन मन की उमडन ताल।
नव जावन रचना कठार कुसुमित वृक्ष डाल।।
८४ हे परिवार प्रेम प्रतीक समूह पिता द्युतिमान।
स्थिर आनद नेह स्रात समन्वय शक्ति महान।।
८५ ह दल मानस सुखदायक क्षोभ हठ करे माफ।
परिवार प्रधान सहचर शुद्ध हृदय मन साफ।।
८६ हे आशा के उद्‌गार पावन मन के प्यार।
स्नेहिल दुलार मन अपाप, फूलो सा उपहार।।
८७ ह मझधारा के माझी मानवता आधार।
हे निर विरतन सग्राम, जग आभा श्रृगार।।
८८ हे मृत्युन्जयी सदश अन्तर मन की रेख।
हे जन मन अलकार अमिट युग का लेख।।
८९ हे अग्रदूत ऊर्ध्वता आकाश लहर महान।
दिव्य पथ प्रकाश रज्जु निगूढ सतु समान।।
९० ह अन्तरतम स्फुरण पग पग का सोपान।
मन नेतना तेजस श्रृग आरोहण पथ गान।।
९१ ह प्रगृढ चतना सृजक गौरव दृष्टा कात।
दारूण अधकार भेदक उग्र शर साधक शात।।
९२ ह छद स्फुरण थाप प्रेमिल श्वास नव राग।
वसुधा सौरभ मकरद पुष्प पराग अनुराग।।
९३ ह युग निधि अजस्त्र यौवन यहोवा की आशीष ।
हे विराट युग पौरूष तुझे नवाते शाश।।
९४ ह अजात क्षण भव्य भाव निरतन सघर्ष गान।
हर आठ की प्रार्थना रोटी न्याय का मान।

'गिलगाव पड़ाव था पूरा। आशीष यहोवा भरपूरा।।
नगर 'यरीहो भेदी जाते। प्रभु सहायक राहाब पाते।।
उत्तर दक्षिण 'कनान - समाये। असहाय सा शत्रु घबराये।।
सैन्य बढ़ी यरीहो ऐसे। नगर जलजला आया जैसे।।
मध्य कनान ऐ किया डेरा। पूर्व ओर ढाई गोत्र बसेरा।।
गिज्जी पर्वत शकेम को जाते। आस विश्वास प्रभु प्रेम बढ़ाते।।

दोहा — सुनते प्रभु आशीष शाप, कहते सब आमीन।
शिला लिखे साक्ष्य लेख अर्पण किया मन दीन।।

'इसरी हुए कनान देशवासी। नहीं दास अब गुलाम प्रवासी।।
'प्रकाश—सभा यहोशू बुलायी। प्रभु वाचा ध्वजा लहरायी।।
'शीलो मिलाप—तम्बू सजाया। केन्द्र समूह यहा बसाया।।
सीमा सीमा गोत्र बसाया। 'युसुफ पूर्वज 'अस्थि दफनाया।।
पवित्र 'यहोवा महा प्रतापी। पवित्रमय धैर्य जीवन मापी।
आत्मिक ज्योति वचन परमात्मा। शुद्ध रहे मन वचन आत्मा।।

दोहा — चौकस रहे 'व्यवस्था आत्मिक यह वरदान।
ज्ञान अनुभूति चेतना वाचा साक्ष्य कनान।।

देश कनान की अद्‌भुत यात्रा। आत्मिक गुलामी मुक्ति यात्रा।।
उजली विभुता मन उजियारा। प्रभु आच्छादित यह जग सारा।।
वचन सनातन अटल 'यहोवा। देश कनान 'वितान—यहोवा ।।
मै हूँ निज अस्तित्व पाया। 'होना अपना गुण मन भाया।।
प्रतिपल रूपान्तर पहिचाना। दृश्य अदृश्य अनत पहिचाना।।
समष्टि मे निज आस उतारी। व्यष्टि से सृष्टि है सारी।।

दोहा — प्रभु प्रति रूप यह जीवन सेवक रूप सुविचार।
धर्म जयत मधुर अनूप खरा रह व्यवहार।।

यहोशू वचन मूसा सुनाता। नव चेतन समूह सजाता।।
इसरी हुआ यहोवा विश्वासी। प्रभु विधि नियम हुए सतोषी।।
लिखी व्यवस्था पुस्तक सारी। बॉज वृक्ष साक्ष्य आभारी।।
सवाद यहोवा सब ने गाया। तुमुल जयघोष नभ गहराया।।
निज निज भाग विग सब पायी। आशाष यहोवा कनान छायी।।
एक सौ दस वर्ष जीवन पाया। गाश दह अर्पित प्रभु छाया।।

दोहा — सयमित सुस्थिर समूह बना सगठित देश।
ज्ञान मय सकल्पो से प्रभु स पाता निर्देश।।

फिर चूकेगा मूढ अन्देशा। वादी मे गूजा सदेशा।।
सोच सोच वादी मन डोला। छिन्न भिन्न श्रृखला को तोला।।
निज निज लोभ प्रभु भूलेगे। मेल मिलाप दूर भटकगे।।
शीलो केन्द्र दूर बसेरा। क्रूर मत्रणा तम अँधेरा।।
युद्ध युद्ध विनाश हाय भारी। वावा सदूक बधक हारी।।
कनान कपित आस खायेगा। छल कपट लूट ढोयेगा।

दोहा — अन्तर–विरोध घटाटाप घिर जायगे प्रवीर।
जर्जर जीवन अवसाद वादी नयनो नीर।।

पचम —सर्ग

न्यायियो

झिलमिल झिलमिल यर्दन किनारे। अकूल तरगे तारक तारे।।
वादी मे नव्य शशि , रेखा। शिमौन आत्मक विश्वास–लखा।।
माप हर डग समय उठाता। चुप्पी खोल हर कदम जगाता।।
इस्राएल जन बँटते जाते। रग कनानी व रगते जात।।
सीसर नौ सौ रथ ले आया। झझानल सा सैन्य बढ़ आया।।
गरजा बाराक कँपित दिशाए। दिन म रात हुई जगी निशाएँ।।

दाहा — हबर छिपा सीसर क्रूर दुष्ट हुँकार।
मृत्यु नींद शत्रु सुलाया या–एल पाना फुँकार।।

वर्ष चालीसवे शान्ति ढॉचा। चरमरा गिरा लो एक खॉचा।।
मिद्यानी राज हुआ अब भारी। इस्राएल दुर्बल हेय लाचारी।।
सपने मिटे धूल हुए सारे। हताश दीन विकल वे हारे।।
तृण–तृण भूमि को रक्त सींचा। लूट रहे मिद्यानी सब खींचा।।
अमोलिकी आते हहराते। अज्जा पूर्व छावनी गहराते।।
टिड्डी दल से जब वे आते। धरती बध्या बजर कर जात।।

दोहा– दु स्वप्ना की छाया मे इसरी जीवन अधियार।
प्रभुता दड कठार हुआ दुख अवसाद मार।।

गिदोन वीर चेतना धारा। कनान आलोकित किया सारा।।
जीवन सघर्षो 'गिदोन खेला। 'पनुएल गुम्मट अह का मेला।।
वर्ष चालीस 'वचन सरसाया। अबिमलेक शकेम भरमाया।।
झाड़ कटील अब ताज सजाया। योताम मृत्यु श्राप बन आया।।
भयकर वाद भीषण तबाही। प्रत्यचा कहॉ! कौन सिपाही।।
वादी का इतिहास अनोखा। हॅसना जीना रोना धोखा।।

दोहा– प्रभु से दूर घटा काली कुचक्र शासन का अग।
टूट श्रृखला बिखर गई राज इसरी छिन्न भग।।

ऐसे मे आशा किरण फूटी। 'मानोह आशीष यो लूटी।।
पुत्र जन्म दूत वचन सुनाया। वृक्ष फल–हीन प्रभु दान पाया।।
वारिधी सी शक्ति पुत्र पावेगा। दाख मधु पास न जावगा।।
मॉस मिट्टी स उस बचाना। प्रभु म पुत्र गुणी पवित्र बनाना।।
नाम 'शिमशोन मुकुट बनेगा। /रोम राम म शक्ति भरेगा।।
घार निराशा म उजियारा दूत सामने खड़ा दिखलाया।।

दाहा– रखना केश राशि विशाल इस्राएल भव्य भाल।।
भीगा मन हुए कृतज्ञ नयन झर रहे जलद–माल।।

शिमशोन प्रभु न्याय कहलाया। बुद्धि ज्ञान रूप शक्ति पाया।।
दिव्य गुण शोभा सर्व प्यारी। सदा रहा वीर वश–धारी।।
खल–विनाशक भुजाए बलशाली। और मन चाल दमक निराली।।
इस्त्राएल मुक्ति बीड़ा उठाया। एक अकेला बादल सी छाया।।
सिंह सी गरजन शान निराली। घुमड़ बरसता बदली ज्यो काली।।
छिपते पलिश्ती शोक मनाते। कितने मरे ! किसको गिनाते।।

दोहा – एक बल मे सौ युक्तियाँ शिमशोन एक उद्बोध।
प्रभु का अनुराग विहाग जीवन सरल अबाध।।

अति बलिष्ठ शिमशोन रण बाँका। शत्रु पलिश्ती युद्ध भारी आँका।।
रच षडयंत्र जाल फैलाया। दस्यु चाल दलीला उलझाया।।
बहा कपट प्रणय भाल लाली। कब टिके तरू काटे जिसे माली।।
रहस्य शत्रु केश–कर्षण पाया। छल हिंसा शिमशोन घबराया।।
नेत्र बींध डाला कारा। दर्द अशक्त पर जरूद –हुंकारा।।
युग नेत्र सहते व्यथा मानी अपमान औ संताप अभिमानी।।

दोहा – अंध चक्षु बने नेत्र हजार अलौकिक प्रभु गुंजार।
अज्ञान तन्द्रा अन्त हुई शब्द–शब्द प्रभु पुकार।।

प्रचण्ड श्रृंखला शिमशोन बाँधा। शत्रु मन मुदित अब नहीं बाधा।।
नाच नाचे मद पीते गाते। बुझा मन –दीप मशाल जलाते।।
हुए प्रवृत कुकृत्य वे सारे। पाप–पाश उलझते हारे।।
विषय राग बाल भरमाये। लाओ बरबार हम रिझाये।।
अहंकृत पापी बुद्धि मैला। अलक्षित क्षण ज्योति वहा फैला।।
कहता शिमशोन ज्यों अंगारा। आज करूँगा गर्व मर्दन सारा ।।

दोहा – प्रचंड किया बल विस्तार लुंठित भवन धूल।
मणि–फणि सब अन्त हुए हत हृदय के शूल।।

गौरव मृत्यु सैनिक पाया। शान्ति इस्त्राएल वह मुस्काया।।
वह था भोर चमकता तारा। आधार न्याय प्रभु का प्यारा।।
एक अकेला पुंज बन आया। प्रखर चेतना जन–मन जगाया।।
ज्योतिर्मय आकांक्षा मन पाया। पर नैतिक पतन शूल चुभाया।।
शिमशान था स्वप्न एक ऐसा। नर्तन विवर्तन अन्वेषण जैसा।।
सुख दुख निःश्वास मन की पीडा। विश्वास मे सपना की क्रीड़ा।।

दोहा – आत्म बलिदान प्रेरणा प्रणयी हृदय अपार।
जन सेवक रूप अनूप दीन–न्याय पुकार।।

समय काफिला बढ़ता जाता। हर मोड़ झमेले सुलझाता।।
बोझिल भाव उलझते जाते। बटमार लुटेर क्षितिज आते।।
चाँदी पर मीका मन लुभाया। माँ का श्राप तनिक घबराया।।
कसका उद्वेलन हुआ भारी। किया प्रायश्चित हितकारी।।
अन्तर– सलिला सूखी जाती। मन की प्यास बुझा न पाती।।
गात्र गात्र नैराश्य छाया। हास–रूदन भाषा में आया।।

दोहा – झंझा घात शीला पर बादा विकल बजार।
गरल विस्फोट हुआ ऐसा वह गई रक्त धार।।

छठा सर्ग

रुत

कितने दुख वेदना कथाएं। कभी प्रताड़न दुर्भिक्ष गाथाएं।।
भर आया आंखों में पानी। बोली मौन व्यथा की वाणी।।
शान्त करुणा दीन मलीना। पत्नी एलीमेलेक भाग्य हीना।।
निराशा आन्दोश धैर्य पताका। नओमी थी शीतल मधुराका।।
दिन ढलता गाते हार। मोआब बसे उजड़ सहार।।
जाति पुत्र प्रभु अंक समाये। नओमी मन टीस गहराये।।

दोहा – वचन मृदु कहे बहुआ से बसाओ निज परिवार।
सज श्रृंगार फिर सुदिन हो यूं न मन को हार।।

स्नेह ममता कभी नहीं हारी। घटी नहीं कभी महिमा नारी।।
नारी है जीवन की धारा। हर युग का उद्‌बोधन सहारा।।
प्रेरणा औ प्रोत्साहन भारी। प्रतिक्रिया चेतावन प्यारी।।
एक अवधि प्रविधि उपक्रम काया। जीवन कई जिये यह छाया।।
तन से मन तक पुल बनाती। शब्दो की महा गूँज सुनाती।।
भवलोक की महिमा जगाती। तमस मे प्रकाश बन गाती।।

दोहा — सिन्धु–को महा–सिंधु बना, रमती ज्यो अनुभूति।
जोड द्वीप महाद्वीप बना बनती परिधि विभूति।।

वह नहीं मणि जडित स्वर्ण झूला। नहीं पाषाणिक प्रवचन मूला।।
अभिचिन्तन उसे सृजन बोला। अध्ययन कर पुनर्ध्ययन तोलो।।
वह वृत्ति के वृत तोडने वाली। पग नहीं चिन्ह छोडनेवाली।।
धर्म–शक्ति वह प्रभु की भारी। इच्छा क्रिया और बलधारा।।
नारी गीत अर्थ बस है प्रीती। निज नहीं कुल देश मे जीती।।
कला कौशल सवेग मे गाती। सुन्दर सस्कृति नाद सजाती।।

दोहा — युग अधीक्षक इसीलिये है— समीक्षक कमान।
विलय विस्फुटन केन्द्र और —वंदी का मान।

सुनो हाजिरा दासी थी सारा। बनी पुत्र हीन सारा सहारा।।
पर वाद दुष्टता सब गवाया। मद अह अब्राम नहीं सुहाया।।
हुई आश्रय हीन गर्व भटकाया। भूल अपना पछतावा आया।।
उलझा मन रह गया अकेला। क्षण कठिन जीवन उस धकेला।।
मधुर प्रेरणा बनी मन आशा। इश्माएल पुत्र जगी अभिलाषा।।
समय काल बदल न पाया। पर प्रभु ने दी शीतल छाया।

दोहा — नारी नहीं दुर्बल द्वन्द वह है धवल विहान।
मन मरुस्थल रह जाय जो भटक अभिमान।।

नवल प्रभात भोर वही पाये। बादल सा उठ जा बढ़ जाय।
लूत परिवार घातिका न्यारी। जड़ता नाश जड़ी लगारी॥
हठी दुर्बल मन जब उकसाय। तुमुल कोलाहल मडराय॥
बने लूण-खभ मर्म भेदी। मन हो जाय तब कैदी॥
फिर प्रकाश न जीवन समाय। लूत पत्नी ज्यों श्राप पाय॥
मन की दशा मधु छत्त जैसा। छिड़े छत्ता मक्ष भिन्नाहट कैसा॥

दोहा— लूत पत्नी क्षिपा डूबी बना लूण-खभ आप।
आत्म-हनत तृष्णा जागी उद्विग्न मन उताप॥

'राहेल पत्नी याकूब छाया। तन सुन्दर पर मन तमस जगाया॥
अटक भटक स्वर्ण ईंट उलझाया। धोखा दे लाग रुत्न कमाया।
तर्क त्रुटि लिडा युग गलाया। अभिशिप्त सा जीवन बिताया॥
छाड़ दो कहता मैं अपराधी। कपट हूँ मैं पाप की आँधी॥
यही राह मरु-करुँ पछतावा। मन कलुष दहका ज्यों लावा॥
क्या उलगा प्रतिशोध या गाना। क्षमा दो आसू हार पिरोती॥

दोहा— शून्य हृतन्त्र है यदि घुमड दीन हीन।
मन है यदि अतल कुआ जल भर नित्य नवीन॥

यौवन मदिरा सा मतवाला। उफनता ज्यों हलाहल प्याला॥
सभलना यह झाड कटीला। कभी न उलझाना जाल रगीला॥
लीना तोड बध कुल मर्यादा। बढ़ा थी अगाध मुक्त वादा॥
भर यौवन उजडी सब खेती। कुल यश मान मिला रेती॥
जब मन अनजान डगर भरमाता। कोना काला जाल फसाता॥
हिंसक पजे नोच नोच खाते। उद्दाम काम भवर बन जाते॥

दोहा— यौवन है फेनिल सागर तेरा डूबती ज्वाल।
उजला वृत बन यौवन तर है वैभव माल॥

शीतल ज्योति चमक ज्यो तारा। सुना, लिआ थी स्नेह धारा।।
पत्नी धर्म निभा वश सवारा। मन सकल्पी बना उजियारा।।
मोह–प्रश्न भी सामने आया। तेजस और शिल्प तपाया।।
भाव प्रेमिल पर नहीं हठीला। प्रभु म रहा मन ज्ञान सजीला।।
प्रभु शक्ति आशीष समायी। सम्मान पूर्वज सग वह पायी।।
सतति दूदा फल ज्ञान लाली। लिया वशज् गरिमा हरियाली।।

दोहा – थी नहीं पति मन–रानी फिर भी रही मधु–धार।
नारी अन्तस् से जीती सह दुख ज्यो उपहार।।

तामार पवित्र पावनी बाला। सुविनीत भक्ति भाव छवि आला।।
साहस से निजता उच्च बनाये। डाले प्रभु परीक्षा कि बल पाये।।
सुव्रता हुई दीन पति विहिना। अभिन्न पति स वह पुत्र–हीना।।
तुला तुली नार रीत पुरानी। वश वाहक ध्वजा फहरानी।।
मातृ–शक्ति से कुल दीक्षा। अर्न्तमुखी साधना प्रतीक्षा।।
या ठान ससुर दीप दिखाती। शिक्षित सयम तामार सिखाती।।

दोहा – वह नहीं थी पकिल धार नहीं भ्राति का दोष।
वृक्ष खजूर थी सुमेधा, पूर्ण विचार एक कोष।।

नारी तेजस

नहीं त्रिपथा रति अभिलाष, अर्पण रही आचार।
निज शक्ति से शक्तिमान महाशक्ति तामार।।
सत्य शीला महाराशि हारी नहीं कुहास।
अतुल महिमामय सकल्प जागृति की उजास।।
समय चुनौती तामार दीन विधान उत्थान।
नारी मे व्यवस्था सारी गुण रत्ना की खान।।
जलती मिटती बहती वह मन पावन प्रदेश।
पर्वत शिखर लॉघ जाती पीयूष वर्षिणी वश।।

अन्न बालिया झनक सुनाती। फसल लवनी याद दिलाती।।
लवनी का शार मिला लाऊँ । द आज्ञा मैं धीरता पाऊँ।।
मानस भर भर बहू निहार। सात बटो की शक्ति धार।।
खेत रोअज लवन रत जाना। वैधव्य भार मिला सुलझाती।।
वह कौन ! कन्या सुकुमारा। नआमी पुत्र–वधु नक निहारी।।
प्रधान सेवक सब बतलाया। धान रह अधिक वचन सुनाया।।

दोहा – मलच्छ भाव न आवे बोअज का आदश।
भाजन जल भी पाव यह राटी का देश ।

साँझ एपा भर धान ल आयी। दख सास बहू तृप्ति पायी।।
कहा दाना मिला बहू दुलारी। बाअज न्यायी नेकी धारी।।
कह नआमा कुटम्बी हमारा। भूमि छुडान का हक सारा।।
नवरु प्रभात स्वण किरण लाया। सजन वृक्ष मा काई मुसकाया।।
भर ऊ एपा वचन मन भाया। हर पूले सग दोहराया।।
दान दान भाव उजाले। मृदु स्वप्न गाते निराले।।

दाहा – स्वामी अनुग्रह मैं पाऊँ दिया है वचन मान।
त्याग का फल तू पाव सृष्टि सपदा महान्।।

धरा पर स्वर्ग–इच्छा कछ गाती। स्वर्णिम बालियाँ उन्हे रिझाती।।
त्याग तेरा है जग उजियाला। प्रभु यहावा तरा रखवाला ।।
लतिका सी नय शीश झुकाया। दूर क्षितिज भूधर मुसकाया।।
छ नपुए जौ चादर डाले। दना सास सगुन यह बाले।।
नओमी हर्ष आनद मनाती। बार बार मनौतियाँ चढाती।।
रुत–बोअज हुए दम्पति गवाही। देते सब आशाष विवाही।।

दाहा – परेसा सा घराना बेतलहेम का मान।
हे एप्राता तू न छोटा राहेल लिआ आन।।

सातवा सर्ग

शमूएल

उदास वादी मन पनीला। गगन क्या है लोहित नीला।।
कैसी उमडन ! कहा किनारा। गहन अधकार कहाँ सहारा।।
दृष्टि कर प्रभु तुच्छ यह दासी। परख ले चाह तू निज आसी।।
पाऊँ प्रभु, अनमोल एक मोती। 'करूँ अर्पण, 'हन्ना बिलख रोती।।
हृदय का मथन एक अभिलाषा। बादी सुनती क्रन्दन भाष।।
निर्मल उत्सर्ग अदभुत खामोशी।✓ करते सितारे ताजपोशी।।

दोहा — 'यहोवा का तेरी सुधि, तू उजास मेहराब।
याजक एली आशीष रहेगी तेरी आब।।

नेह आशाष दम्पति पाया। 'हन्ना मन वीणा पर गाया।।
ममत्व आशा, कामल आभा। बालक समुएल प्रभु का गाभा।।
पख मार वय उड गये कैसे। हर्ष विमूढ माँ देखे ऐसे।।
'बालक प्रभु अर्पित कर सुखपाया। पूरी कर 'मन्नत हरषायी।।
नन्हा 'उल्लास वह, अकुर जैसा। याजक सग छदित कैसा।।
प्रभु भवन का सेवक ऐसा। भोर पछी मधु वर्षण जैसा।।

दाहा — कृतार्थ तन्मय निहार, 'भरे आनद छद।
रिक्त बाँह भर सँवारे 'तुम हो प्रभु अनुबध ।।

बालक 'समुएल प्रभु का प्यारा। याजक एली का बना सहारा।।
प्रार्थना अर्पण टक सुनाता। सच्चा मोता प्रभु टेक गाता।।
धरती का निर्झर प्रभु अभिलाषी। रजत शिखर विचरता आशी।।
समुएल ! समुएल ! प्रभु पुकारा। क्या आज्ञा ! दौड़ एली निहारा।।
जा लट रह मेरे बेटे। जो फिर सुने पुकार ऐ बेटे।।
कहना — 'सुने दास कर आज्ञा समुएल तुझ पर प्रभु आशा।।

दाहा — बालक गुनता आदेश मौन थे क्षण उजास।
दोलित सा सावे जागे स्पदित श्वास—श्वास।।

हे समुएल! फिर प्रभु पुकारा। तू मेरे वैभव का तारा॥
इस्त्राएल–न्यायी तुझे बनाता। अभिषिक्त कर तुझ उठाता॥
खोई आस्था फिर है जगाना। इसरी महिमा बल बढ़ाना॥
लेवी याजक हुए पतित सारे। मंगल–भाव गिर व हारे॥
लिपट एली शमूएल रोया। स्नेह वृष्टि प्रीत स्पर्श बोया॥
सुन बेटे! यहोवा है न्यायी। 'मापन खरा वह है यह न्याया॥

दोहा — मैं दोषज्ञ नहीं निर्दोष, व्याकुल सा सकोच।
निर्लज्ज उद्दाम पुत्र मेरे नास कारक उत्कोच॥

बिखरा समूह छिद्र है भारा। रजत चमक रीझे मतिहारी॥
कुचलते तर्क वितर्क मैं हारा। समूह हित बंदी हुए कारा॥
क्षुब्ध मन शांत करू कैसे। युद्ध घन घिरे आते ऐसे॥
विजय हेतु प्रभु संदूक उठाने। आये 'शीलो भीरू–स्याने॥
शत्रु दुर्दम प्रबल ये मतवाले। भीत पराजित कायर निराले॥
छीना संदूक, हाश उड़ाया। पहुँचाया अश फिर न लौटाया॥

दोहा — हे अभिषिक्त! सुन मेरी 'केन्द्र–भाव रहा डोल।
आशीष तुझ पर है मेरी परिवर्तन–पट खोल॥

प्रकाश–सभा समुएल जुटायी। मिस्पा भेट यहोवा चढ़ायी॥
सनातन परमेश्वर जय बोलो। सर्व शक्तिमान जय जय बोलो॥
उसकी बुद्धि अगम है बोलो। धन्य धन्य पराक्रम बोलो॥
पवित्र! पवित्र! यहोवा बोलो। युगानुयुग धन्य धन्य बोलो॥
हमारा स्वामी एदोनाय बोलो। सब का न्यायी जय जय बोलो॥
सृष्टि कर्त्ता एलोहिम जय बोलो। अतुल्य करूण दयालु बोलो॥

दोहा — अथाह–अदृश्य अविनाशी वह धीरजवंत अपार।
प्रेम विश्वास महिमामय अनुग्रह का नहीं पार॥

जाग्रत आत्मा इस्त्राएल पाया। जन जन समुएल मात सुहाया।।
इस्त्राएल सैन्य बिजली समायी। होमी पलिश्ती मुँह की खायी।।
छीन पवित्र सदूक ल आये। अबीनादाव पुत्र सभलाये।।
अपूर्व अह्लाद हृदय सरसाया। सत्य साधक सत्य हरषाया।।
अब परिवर्तन टेक सुनाता। मेघ–धनुष आशा दिखलाता।।
चाहत जीवन निर्भय बिताये। ज्ञान कल्पना ससार सजाये।।

दोहा — जन जन की अभिलाषा जन इच्छा का घोष।
समय का मन्वतर टेक समुएल सुन उद्घोष।।

निशा–दिन सग्राम उलझ जाते। प्रभु अराधन कर नहीं पाते ।।
राजा–प्रजा प्रजा का राजा। न्यायी होवे प्रजा का राजा ।।
शासन तत्र राजा सब चाहे। प्रम–युक्ति से जीवन छाँहे।।
विकास प्रक्रिया चक्र चलाती। उन्नति अवनति पथ पर आती।।
दिशा, परख, सभ्यता सिखलाती। रतन सस्कृति अब मुसकाती।।
स्त्रोत अजस्त्र ऊर्बर बनाये। राज–तत्र प्रजा को सरसाये।।

दोहा — समुएल कहे चुनाव यह आशीष और शाप।
प्रभु वचन सुन नहीं पड जीवन मरण अनुताप।।

सुनो राज–प्रवृति समझाता। विकृत शक्ति राज्य कहलाता।।
तूफा एक भयकर यह जानो। बुराई कष्ट कपट पहिचानो।।
डाकू लुटेरे आश्रय देता। निर्धन कौशल का नहीं चेता।।
दीन श्रमिक भूख शोषण पाता। धनी–मानी धन–मान पाता।।
भेदभाव, घृणा बैर बढ़ावा। युद्ध हिसा हत्या चढे चढ़ावा।।
स्वार्थ लोभ ईर्ष्या गणनाए। सज्जन दोषी दोषी अपनाए ।।

दोहा — धरा आकाश साम्य बीज बाता अज्ञात।
राज्य है स्वेच्छाचार भेद शक्ति आघात।।

राजा तुझ पर राज करेगा। रथ घोड़ो पर चाकर रखेगा।।
प्रधानो का सेवक तू होगा। दास, दासी हल हाली होगा।।
भडार तो राजा भरेगा। तू युद्ध, खेत हल जोतेगा।।
दमन शक्ति, क्रूर चक्र चलेगा। भ्रष्ट निरकुश राज करेगा।।
जगल का नियम राज रचेगा। पशु बल शक्ति भय दड बढ़ेगा।।
कहते इसरी राजा हमारा। 'जन्म से कब्र तक सहारा।
दोहा — पूर्वज शपथ यहोवा बदल गया परिवेश।
दीर्घजीवी हो राजा, इस्त्राएल अब देश।।

समुएल चिन्ता सी मन धारे। वेग व्यग्र डग डग निहारे।
'हो शक्ति सूरमा तेजोधारी। 'मनोज्ञ हो राजा सुखकारी।।
सन्मुख अनूप युवा एक देखा। वीर बालक तेज भी लेखा।।
भला कौन यह! यहाँ क्यो आता। बढता 'सूफ नगर को जाता।।
सद्गुण शील बल विक्रम वाला। नृप–तुल्य, शैल–देह यष्टि वाला।।
गौरव दृष्टि नयन समायी। पूर्ण चन्द्र सा है सुखदायी।।
दोहा — सुयोग्य सुधी परिपूर्ण क्या यहोवा 'विश्वास'।
सुनिये! कहता वह वीर 'समुएल मन हुलास।।

दरशन समुएल को मैं जाता। 'कीश पुत्र 'शाऊल कहलाता।।
'समुएल मन ही मन हरषाया। प्रभु–आलोक 'इसी पर आया।।
यहोवा की यह सब तैयारी। प्रबल–पानी दृढ सत्ताधारी।।
शाऊल 'तू तेज बल धारी'। आत्म–शक्ति प्रभु देगा भारी।
'तू होगा प्रभु का सेनानी'। 'वीर–वर तेरा नहीं सानी।।
'लायेगा तू नया सबेरा। रहे दीप्तिमय आभा धरा।।
दोहा — रवि किरण मुकुट सजाती 'समुएल करे अभिषेक।
भाव दृष्टि भरन लगी प्रभु इच्छा रहे टेक।।

गोत्र गोत्र समुएल बुलाया। मिस्पा 'प्रकाश सभा जुटाया।।
चिट्ठी डाल प्रभु इच्छा जाने। 'बिन्यामीन गोत्र सब पहिचाने।।
कुल, वश पत्री सभल जो खाली। पुत्र 'कीश नाम 'शाऊल बोली।।
यहोवा सन्मुख 'शाऊल आया। शीश यहोवा झुक झुक नवाया।।
'जय जय राजा इसरी पुकारा। चिरजीव–राजा , धन्य निहारा।।
हुआ अभिषेक मुकुट पहिनाया। इसरी प्रजा हर्ष आनद मनाया।।

दोहा – प्रभु प्रतिनिधि तू सेवक जन जन का विश्वास।
'समुएल की आशीष, हृदय रहे, प्रभु–निवास।।

'शिक्षक कार्य समुएल मन धारा। ज्ञान–गूज उपदेश मधु धारा।।
आत्म–विस्तार किया भारी। विद्या केन्द्र बने मनिहारी।।
प्रभु मे सच्चे बन हरषाओ। विनम्र सरल जीवन अपनाओ।।
अशात पक्षी सा मन न बढ़ाओ। सीमा रह, एक नीड़ सजाओ।।
धार्मिक नैतिक शक्ति बढ़ाओ। प्रेम प्रीत प्रभु मे बढ़ आओ।।
जेठे पुत्र समान प्रभु अपनाया। निज विश्वास तुम पर बरसाया।।

दोहा – सेवा कर मन हरषाओ राज्य का उपकार।
आत्म–त्याग सुख सच्चा जय मानव–परिवार।।

यशगिरि 'शाऊल चढ़ता जाता। देश स्थिरता पाता जाता।।
इसरी प्रजा जयकार सुनाती। साँस–साँस दशमाश चुकाती।।
तह गीला ढ़ही। प्रभु भुलाया। विजय पताकाए मन लुभाया।।
योद्धा राजा मद म फूला। खनक तलवार समुएल भूला।।
धरा अम्बर तक राज करूँगा। पीढ़ी पीढी ताज धरूगा ।।
पवत सा दर्प हुआ प्रहारी। मखमली पक धसा मतिहारी।।

दाहा – वीण धुन मन बहलाय भरम पर हा सवार।
राजा मुग्ध हुआ 'दाऊद सुन्दर रूप निहार।।

निज रक्षक, 'दाऊद वीर बनाया। स्वर उपवन दाऊद सजाया।।
पलिश्ती करते युद्ध तैयारी। सैन्य सजी इस्त्राएल भारी।।
पर्वत खड़े दानो रण बाके। नीचे तराई बल–मूल आके।।
घात–प्रतिघात बहता लावा। दहक रहा भावा का आवाँ।।
दैत्य गालियत हसँता आया। मत्त गयद ज्या झूमता आया।।
देख महाकार इसरी थर्राया। पर्वत सा विशाल घबराया।।

दोहा – घूम–घूम ललकारे 'चुना वीर करे हास।
प्रबल हो मारे मुझे बन पलिश्ती 'दास।।

'दाऊद था चरवाहा न्यारा। प्रभु अभिषिक्त बालक दुलारा।।
केश पकड़ था पछाडा। सिह मुख मेम्ना छुड़ा दहाड़ा।।
गोलियत गर्व उसे न सुहाया। शत्रु पछाडे गायक मन गाया।।
हे राजा! सुनता शत्रु फुकारे। 'दास दलित करे शत्रु हुकारे।।
हे पुत्र! तू बालक मुख लाली। 'वह दानव ! 'घटा है काली ।।
हे राजा मुझे प्रभु निहारे। साथ है मेरे नहीं बिसारे।।

दोहा – निज वस्त्र दिये 'शाऊल झिलम टोप तलवार।
'बोझ सभाल नहीं पाऊँ 'दाऊद दिये उतार।।

मुदित 'दाऊद हरषाया एस। दिव्य राग सुनता हो जैस।।
कह शाऊल रह साथ यहावा। 'जय कर शत्रु आशीष यहोवा।।
हाथ म लाठी गोफन ताली। पत्थर पॉच चुन डाले झाली।।
शत्रु पलिश्ती 'दाउद जा देखा। तुच्छ जाना बालक ही लेखा।।
'क्या! मैं श्वान लाठी ले आता । 'दास यहावा युद्ध का आता ।।
दौड़ गोलियत झपटा एस। नार आकाश फेंक दे जैसे।।

दोहा – ताल 'गोफन पत्थर एक फेंका कर रण घाप।
जा धँसा गहरा ललाट गिरा भूमि कर घाप।।

दिव्य आलोक तराई धानी। असमजस क्षण मौन हुई वाणी।।
तीर वेग छाती चढ आया।। शत्रु तलवार शत्रु की काया।।
खडग पलिश्ती म्यान से खींचा। काट शीश तराई रक्त सींचा।।
शीश 'गोलियत दाऊद उठाया। इसरी विजय तरग लहराया।।
नक्षत्र पलिश्ती नभ स गिर टूटा। शत्रु सैन्य बल साहस छूटा।।
कट कट अरि-शीश गिरत जाते। मैदान शत्रु-हीन इसरी पात।।

दोहा — मुदित यानातन आया दाऊद बनाया मीत।
बाधते वाचा पवित्र अनोखी रही प्रीत।।

बुद्धि बल दाउद बढता जाता। गायक सेनापति पद पाता।।
जन-प्रिय सनापति हुआ जाता।। संदेह 'शाऊल मन भडकाता।।
करूँ हत्या कथा अत हो सारी। 'शूल भयकर पीडा यह भारी।।
प्रभु आराधन दाऊद था बैठा। ले भाला 'शाऊल कक्ष म पैठा।।
सेनापति निशान लो साधा। ईर्ष्या द्वेष राजा-मन बाँधा।।
राज छोड सेनापति भागा। कहे राज पुत्र सजा अभागा ।।

दोहा — फिर न सनापति आया राज क्रोध आघात।
शाऊल से न द्वेष रखा मन शुद्ध दिव्य प्रभात।।

शमूएल रामा मिट्टी पाया। दुख शोक इस्राएल मनाया।।
छाती पीट 'शाऊल पछताया। राज-आशीष मैं बिसराया।।
'मैं ही भूला' राज मद ताया। रूठा प्रभु उठी 'शमुएल छाया।।
कुशल सेनापति 'दाऊद खोया। जल-झारी खाया फिर न साया।।
करता परिताप नाश बुलाया। राज दर्प राज किरीट गँवाया।।
तभी पलिश्ती फिर चढ आये। जला नगर सब लूट ले जाय।।

दोहा — मारा पुत्र 'यानातन युद्ध हुआ घमासान।
घोप खडग 'शाऊल हत्या प्रथम राज अभिमान।।

आठवा सर्ग

'दाऊद'

आज प्रश्नो से आवृत्तवादी। पढ़ रही राजनामगा घाती।।
'पुत्र उत्तराधिकार दे न पाया। अनत विस्तार छू नहा पाया ।।
रूप स्नेहिल मुसकान गँवाया। मन–पाखर कलुष गँदलाया।।
पर्वत 'गिलबो दूत एक आया। राजमुकुट कगन दिखलाया।।
हे दाऊद! इन्हे तू पहिचाने । भूमि देखे 'इस्राएल दाने ।।
हाय शाऊल ! इस्राइल राजा । सिह सा पराक्रमी राजा।।

दोहा – छावनी 'दाऊद 'सिकलग छाया महाविलाप।
हे योनातन! मित्र मेरे! तू था इसरी प्रताप।।

प्रकाश सभा 'पुरनिय जुटायी। नीतिज्ञ 'दाऊद आस्था बढ़ायी।।
'राज–अभिषेक हुई तैयारी। नगर यहूदा हलचल प्यारी।।
राजा–दाऊद गूज एक न्यारी। जय–जयकार करे सब भारी।।
सुदृढ़ सेना दाऊद बनाया। सनापति याब उत्तम पाया।।
कौशल पिकास बढता जाता। समझौतो से राह बनाता।।
प्रभु काव्य सा जीवन प्यारा। भोला सवग 'झिलमिल तारा ।।

दोहा – दूरदर्शी गुणज्ञ राजा राज घटक पहिचान।
सुधि–परिषद गठन किया 'राजा भी इन्सान ।।

एक हाड माँस पुतले सारे । प्रजा दही राजा सवार।।
गूज महान शब्द लहराये। रश्मि–रश्मि प्राण चेतन आये।।
विधि नियम राजा अधिकारी। न्याय राज विवक उपकारी।।
अपराध है समाज विराधी। अपराधिक कार्य है गतिरोधी।।
राज माप दड व्यक्ति बनाता। 'नागरिक – रक्षा राज अपनाता।।
'बर्बर–शक्ति हो न व्यापारी। निर्बल मनुज भी न्याय अधिकारी।।

दोहा – धन और जन गहरा सबध लगान हा न भार।
सतुलन रह आय व्यय मन चाहा पुरस्कार।।

राज—शान्ति एक साझेदारी। सम्पत्ति स्वतन्त्रता हिस्सेदारी॥
राज आय चक्र हो न तूफानी। मुद्रा—नीति लक्ष्य रहे प्रमाणी॥
वस्तु विनिमय व्यवस्था टाले। मुद्रा टकण सिक्के भी ढाले॥
जाखिम लाभ तरल प्रतियागी। हेतुक व्यापार ब्याज प्रतिभागी॥
माग—पूर्ति महराब बनाती। कीमत सतुलन पत्थर लगाती॥
स्थिरता राज साख है जैसे। स्वर्णमान लगर जहाज ऐसे॥

दाहा — सीढी दर सीढी चढे कर पर्वत क्रमिक ढलान।
लिखे शापात इतिहास धन एक सेवक समान॥

किसान हम । धधा बढ़े किसानी। कह राजा दाऊद लासानी॥
पर्व फसह हर्ष आनद गाये। कृषि चक्र बढ उत्सव मनाये॥
जुबली वर्ष भूमि शक्ति पादे। धन्यवादी प्रभु भट चढाये॥
मन सामर्थ्य तन शक्ति सरसाये। दिन सबत अराधन हरषाये॥
मनुज—मनुज मान प्यार घाले। दे सम्मान नारी से बोल॥
सचय—वृति घात कर जाय। धनी नाक से पार न जाय॥

दाहा — युद्ध बदी राज अधिकार स्त्री बालक नही घात।
लिख शापात इतिहास और न क्रूर आघात॥

जल बिन जीवन एक लाचारी। द्रव्य विलक्षण है अति भारी॥
प्रकृति—चक्र जीवन सबल प्यारा। जड़—जीवन जीवन की धारा॥
नद सर सागर मेघ हरषाता। पानी फसलो को लहराता॥
रत्नाकर क्षमता मर पहिचान। मूल्यवान जल महिमा जान॥
नदी सर जल भडार निराले। स्वच्छ रहे न हो मटियाले॥
भू—आर्द्रता टूटी न जाय। नाग तक न सूख जाय॥

दाहा — नाग नगल जा नाश कर पहन मृत्यु परिधान।
लिख शापात इतिहास कूप—मैत्रा—जुडान॥

प्रभुता पा मित्र नहीं भूला। मैत्री जग सुगध बल–मूला॥
सीबा सेवक राज बुलाया। 'योनातन वशज वचन निभाया॥
वश मित्रता 'दाऊद मन साधी। मित्र 'योना वाचा थी बाँधी॥
मत –डर 'मपीबोशेत दुलारे। भूमि सम्पत्ति य तेरे सारे ॥
अतुलनीय ऋण दाऊद धारे। शगीक रहे तू भोज प्यारे॥
धवल रह राज कीर्ति पुकारा। सेवक राजा ज्ञान निहारा॥

दोहा – 'लोद छोड 'मपी आया निरखी 'दाऊद प्रीत।
लिखे 'शापात इतिहास रहे प्रीत की जीत॥

प्रकाश–सभा दाऊद जुटाता। सहस्त्रपति प्रधान सब बुलाता॥
लवी याजक संदेशा पाता। तराई वाले नगर कहलाता॥
मडली मडली बात पहुचाता। प्रभु यहोवा विजय दिलाता॥
जो अच्छा लगे सबको भाये। वाचा सदूक हम यहाँ लाये॥
शीहोर से 'हमात की घाटी । दान से बेशवी हलचल भारी॥
कहती मडली बात सुहानी। आओ करे–हम मेहमानी ॥

दोहा – गाड़ी नई बनवायी पहुँचे किर्यत्यारीम ।
'उज्जा अहया गाडी हाके दाऊद आनद असीम॥

तु–रही नरसिगा झाझ गुंजाते। गायक मडली राग उठाते॥
दिव्य दृश्य मणि झालर झूले। नाचते इसरी मनोरम–फूले॥
पहिने प्रधान सन के बागे। राजा पहिने एपाद सन धागे॥
झूम–झूम प्रभु महिमा गाते। झरते गान निर्झर मदमाते॥
शीतल सुगध समीर अति प्यारी। पवित्र कात शात छवि न्यारी॥
पारावार सा समूह लहराता। लहर प्रमिल–भाव मुसकाता॥

दोहा – नगर 'दाऊदपुर आया आनद का सैलाब।
विधि विधान पूरे किये रह यहावा आब॥

विपुल सुन्दरता मडप धारे। प्रधान याजक आसप निहारे॥
याजक 'बनयह तुरही बजावे। 'हेमान्' महिमा स्तुति गावे॥
प्रभु सेवक लेवी अड़सठ प्यारे। सेवा–व्रत यहोवा मन धारे॥
गायक मडली स्वर उठाता। जन जन महिमा यहोवा गाता॥
आदि अनादि काल तक गावे। नाम पवित्र यहोवा सुनाव॥
आमीन! आमीन! सब पुकारे। छोर पृथ्वी तक स्वर गुजारे॥

दोहा — राजा आशीष सुनावे दाख रोटी परसाद।
विदा लेते इसरी सारे मन उमग प्रभु अहलाद॥

देश पराक्रम बढता जाता। यश गगन–प्रभु–ध्वज लहराता॥
'दान' से प्रभु ध्वज फहरावे। बेशवी तक जय–घोष सरसावे॥
क्षेत्र–क्षेत्र क्षेत्राधिप न्यारे। राजा–प्रजा ज्यो चॉद सितारे॥
तारा सी परिषद मुसकाती। दुष्कर कार्य सरल बनाती॥
पर खामोशी मलिन थी वादी। गुम–सुम खड़ी नगर आबादी॥
सशय चुप्पी विस्मय की पॉखे। खोली महामारी ने ऑख॥

दाहा — उजड रहा बाग सारा चटक रहा थी आस।
सन्नाटा विलाप मृत्यु देश इस्राएल उदास॥

पर्वत ओर ऑख उठाये। दाऊद प्रभु यहोवा मनाये॥
'कर उपकार दास पर तेरे। 'करूणा कर खोल बधन मेरे॥
देख दुर्दशा तू यहाँ सारी। मन्नत मानता मैं मतिहारी॥
पलक न झपकूँ, न पल्ग चढूगा। चरणो चौकी पडा रहूगा॥
परख मुझ दूर कर चिन्ताऐ। मन विकल वीणा नहीं गाऐ॥
चितौनियाँ है अनूप तेरा। प्रकाश धर्मभय बाते तेरी॥

दाहा — ताड़ना दे तू मुझे फैलाय खडा हाथ।
जिस मार्ग से है चलना सदा रहे तू साथ॥

महावीरता राजा पाया। दिव्य प्रकाश तन–मन छाया।।
फिर शोभित हुआ देश सारा। मुग्ध दृष्टि प्रकृति ने निहारा।।
राजा प्रभु वेदी एक बनाता। प्रार्थना, सुगंध धूप चढ़ाता।।
कहे राजा सुने सभा सारी। 'यहोवा अभिनदन तैयारी।।
भवन–यहोवा का बनवाना। पावन हृदय छद है गाना।।
प्रभु महिमा मंडित हो एसी। दिव्य ज्योत पावन प्रभु जैसी।।

दोहा – साँस साँस चाहत यही देश पाये प्रभु छाह।
अर्पित करता उर पात्र पूरी कर प्रभु चाह।।

'नातान नबी वचन सुनाये। सुन राजा अपनाये।।
मनसा 'दाऊद प्रभु को भायी। पर 'दाऊद नहीं, कृपा पुत्र पायी।।
भवन यहोवा उसे बनाना। स्थिर मडप द्युतिमान सुहाना।।
सग उसके यहोवा रहेगा। इस्राएल देश हर्ष सरसेगा।।
शान्ति चैन राज पावेगा। आशाष सुलेमान गायेगा।।
'कुमार सलोना अनजाना। ज्ञानी परिषद ज्ञान बरसाना ।।

दोहा – करे परिषद यदि स्वीकार राजा पर उपकार।
'इसाक अपूर्व बलि भूमि अकित करो। विचार।।

सबकी चाहत सबका प्यारा। कुमार सलोना सभा निहारा।।
नयकार परिषद पुकारे। सुलेमान कुमार स्वीकारे।।
दाऊद भवन नक्शा समझाता। आसार भडार सब दिखलाता।।
पवित्र वस्तु भडारण सिखलाता। दीवट पात्र वजन समझाता।।
सवा उपासना पात्र सारे। ढले सोना चाँदा न्यारे।।
पख फैले करूब ढल सोना। भेट राटी मज गढे सोना।।

दोहा – दाऊद भेट चढाता लाख माना किक्कार।
लोह पातल गिनती नहीं दस हजार किक्कार।।

कठिन काम प्रभु सरल बनाया। शक्ति भर सब भेट चढाया।।
गजा बनाता दल प्रभु सेवी। सेवा टहल उपासना लवी।।
वीणा सारगी झॉझ बजाये। हजार चार साज बनवाये।।
वर्षा भीग धरा महके जैसे। क्यारी इस्राएल लहकी ऐसे।।
कभी दासता का था घेरा। सघर्ष लड़ाई युद्ध का फेरा।।
आज सृजन का केन्द्र निराला। गूँथ रहा एक प्रार्थना माला।।

दोहा — हे इस्राएल कर प्रशसा यहोवा प्रभु महान।
कहो आमीन! आमीन सरसे दाऊद प्रान।।

नपी तुली चाल बढ़ते आय। आकाश काले गुबद छाये।।
झुलसी क्षितिज रेखा पर आहे। सूरज डूब छिप जाना चाहे।।
दाऊद वय दीन हुआ जाता। सॉस सॉस समय आजमाता।।
कहे नातान हो सत्ताधारी। सुलेमान सिहासन अधिकारी।।
याजक आये कुमार बुलाओ। करो अभिषेक गिहोन जाओ।।
जय–जयकार गूँजी जय भेरी। सुलेमान राजा प्रभात फेरी।।

दोहा — दाऊद आशीष पाया रह यहोवा साथ।
जीवन मृत्यु राग रग रखता प्रभु निज हाथ।।

वादी आच्छादित उच्छवासो। गहराया दाऊदपुर नि श्वासो।।
भागता हिरण खुदी बिसराया। क्षितिज निढ़ाल आज त्खिलाया।।
मरु से जमीन छीन था लाता। सूखे नद जल–पाट लहराता।।
धूसर भूखड़ फूल खिलाता। बालू सगीत राग उपजाता।।
राजा मे व्यक्ति मुसकाता। व्यक्ति चेतना धनी थी आया।।
रण जुझारु प्रचड़ आग गोला। दूर्वा सा कामल दानी भोला।।

दोहा — दूरदर्शी राजा प्यारा भला और ज्ञानवान।
वीण मधु रव घोला प्रभु का था वरदान।।

अष्टम् सर्ग

सुलेमान

वादी मे सुषमा लहरायी। नीरद माला नभ गहरायी।।
शान्ति ने अब किया बसेरा। दूर हुआ क्रूर युद्र अंधेरा।।
हुए शान्त अधड आघाती। विवाद वाद रहा न घाती।।
जागी चेतना लौ अगड़ायी। कृपा प्रभु की अब मुसकायी।।
पर्वत गिबोन भेट ले आया। सुलेमान मन प्रभु के भाया।।
हर्ष गगन ने नेह बरसाया। हीरक हार किरण पहिनाया।।

दोहा — भेट चढाता राजा प्रभु ज्यात सुलेमान।
उपकृत वादी निहारे आज कल वर्तमान।।

धूप जलाया बलि चढ़ाया। पुत्र दाऊद प्रभु नेह बढाया।।
कहता छोटा बालक तेरा। और विभव उल्लास घनेरा ।।
भीतर बाहर आना जाना। कैसे सँभालू ताज सुहाना।।
भला बुरा परख पहिचानूँ। शक्ति तेरी न्याय को जानूँ।।
बुद्धि दान सुलेमान मागे। धन दौलत मोह को त्यागे।।
रना ले हे प्रभु निज बैरागी। सुलेमान कहे प्रभु अनुरागी।।

दोहा — माँग माँग ह अभिलाषी सब कुछ दूगा दान।
तेर तुल्य नहीं होगा युग युग कीर्तिमान।।

प्रभ मारग तू चलते जाना। नित नित आशीष तू पाना।।
दर्शन मधुर विभोर था ऐसा। दृष्टि अभीष्ट देखे अधिराजा।।
अ–विराम प्रार्थना उर ऐसा। प्रभु निकेतन पावन जैसा।।
राज–पतवार अब सभाली। दिशा कोण थिर कोई न खाली।।
विश्वास भरी थी राज बोली। 'न्याय–तुला जग ने तोली।।
समुद्र जल हैं जैसे पाता। विभव सुलेमान बढ़ता जाता।।

दाहा — नभ उडते श्वेत कपोत बढा प्रजा का मान।
राष्ट रक्षक सुलेमान प्रभु सवक कान्तिमान।।

विश्वास धुरी का उजियाला। प्रभु मंदिर का उत्तम आला।।
राजा गूँथे विचार माला। चेतन अवचेतन उजियाला।।
सुखद प्रवाह अथाह जल राशी। स्नेह शीतल मैत्री सुख राशी।।
पिता दाऊद मन मग सुहाया। सदेशा हीराम भिजवाया।।
भूली बिसरी सुधिया वह लाया। नृढ सुलेमान गले लगाया।।
राज तेरा विभव प्रभु पाय। धन्य तू प्रभु –भवन बनवाय।।

दोहा – जो तू चाहे दूँगा सनोवर देवदार।
आनद स्नेह के रग देता हू सभार।।

हीराम विभा अनुपम निराली। अमद स्नेह बयार मतवाली।।
विचर रहा उपवन वन–माली। प्रशात मन झूमे ज्यो डाली।।
देवदार–बन पुलक हरषाये। सग सनोवर भी मुसकाये।।
झूमे अम्बर ये सुषमाए। शबनमी वितान लतिकाए।।
रूप रस गध सुगध मदमाती। आत्म बुद्ध सी हरषाती।।
प्रभु उपवन यह सुखद न्यारा। अर्पण करता प्रभु को मै सारा ।।

दोहा – प्रभु खेती प्रभु सेती पूर्ण हुई मन साध।
धन्य धन्य हुआ जीवन उपवन हर्ष अबाध।।

राजा माप रहा पैमाना। दाऊद न था जिसे माना।।
सत्ताइस लम्बाई नौ चौडाई। साढ़े तेरह हाथ ऊँचाई।।
गर्भगृह मजिल तीन निशानी। द्वार मडप जालिया सुहानी।।
सीढियाँ चक्करदार र–वानी। भीती तख्ता बदी लासानी।।
करूब दो पख पसारे ऐसे। भवन रक्षक बैठे हो जैसे।।
स्वर्ण गढी वेदी नूरानी। जीव–माह नीव रख रूहानी।।

दोहा – पत्थर विशेष गढे हुए स्वर न हो सघात।
गुच्छ फूल और खजूरी आकाश बेलि कात।।

दूर नगर बनी उधम–शाला। काल प्रबुद्ध शारदीय हाला॥
दिव्य भाव मणि रत्न प्रशोभी। हीराम मन मृदुल प्रभ–शोभी॥
दर्पण बना विशाल एक ऐसा। स्वर्ग सुमन खिला कोई जैसा॥
श्रमित जन हर्षित पुलक गुँजारे। धन्य धन्य कला शिल्पी पुकारे॥
मन से मन मिला शोभा शाली। अरूणिम प्रीत की छिटकी लाली॥
सनावर बंडे आते जापा। चाप रहे नक्काशी चापा॥

दोहा – हीरक मणि नीलम पशर, प्रात वग के साथ।
सजीव हुई सुवर्ण–कान्ति ढल–ढल विधि के हाथ॥

परम विनूठे प्रभु सेनानी। पुर ज्योति पर्वत नूर लासानी॥
आया जीव–माह दिन सुहाना। अम्बर तक आवाज उठाना॥
रखन प्रभु–भवन नीव पुनीता। हर्ष मनाओ अक तिमिर–जीता॥
दीप सजाओ धूप जलाओ। फूको नरसिंगा पथ सजाओ॥
सुलेमान वेदी भट चढ़ाता। प्रभु–सता म विश्वास बढ़ता॥
मुक्ति इसरी शाभा न्यारी। हृदय प्राण मन थिरकन दुलारी॥

दोहा – हो आशीष दया निधान तुझ स हो उद्धार।
शील सुरभित उर निर्मल, खुले प्रीत के द्वार॥

बीस वर्ष स्निग्ध पावन ऐसे। भाव प्रवण क्षण बीते कैसे॥
विभव प्रभु प्रम छलका एसा। पूर्ण चन्द्र सा निखरा जैसे॥
अगाध सुषमा प्रशात धारा। बह रही अटूट प्रेमल धारा॥
प्रकाश प्लावन आनद एसा। नीरव शब्द झरना जैसा॥
[illegible] गमक प्रभु भवन ऐसी। ऐश्वर्य प्रभु का छाया जैसी॥
मिलन द्वार यह एक अनतोला। मनुज–मन–भाव–उद्गम खोला॥

[illegible] – गरिमा से महिमा मंडित सस्कृति की पाठ।
[illegible] [illegible] [illegible] तट [illegible] है [illegible]॥

अटल वाचा राजा पुकारा। पवित्र साम्य स्तुत्य उजियारा।।
प्रवाह–मान याजक कतारे। मृदुल समीरण ज्यो सह झंकारे।।
तरल तार वादक–वृंद लहराया। याजक लेवी संदूक उठाया।।
अर्न्तगृह पवित्र 'करूब हरषाये। बादल बन स्वयं प्रभु छाये।।
भव्य–भाव मन भर उजरा। युगानुयुग कर प्रभु बसेरा।।
पूर्वज अर्जित 'मान यह न्यारा। समर्पण मे अर्पण अति प्यारा।।

दोहा – भवन प्रभु शोभित संदूक पवित्र पाटियाँ अभिप्रय।
यरूशलेम ने है पाया प्रभु वाच्य अभिधेय।।

विनीत 'सुलमान प्रभु नहा। टक घुटन बोल्े सनेही।।
'हर भेद जानता तू ज्ञाता। अद्भुत है तेरा नेह नाता ।।
मिस्त्र बँधुवाई से तू लाया। देश कनान निज प्रीत बसाया।।
गिडगिड़ा आज व्यथा सुनाता। मनुज आथा मनुज मन गाता।।
हे प्रभु ! हे मुक्ति के दाता। ऊँचे स्वर्ग तू नही समाता।।
पृथ्वी पर कर वास कहूँ कैसे। तुझ मनाऊँ मन दुर्बल ऐसे ।।

दोहा – "मानव निर्मित भवन मे आराध्य कर वास !
कहूं कैसे मन काँपे हे प्रभु ! दे निज आस।।

सुन ले ! हे प्रभु विनता मेरी। भवन ओर रहे दृष्टि तेरी।।
सुन ले ! सुन ले विनती मेरी। 'प्रार्थना भवन करे जो फेरी ।।
दिन रात ध्यान धर तेरा। खाली न जाये उसका फेरा।।
करना अपराध क्षमा सारे। भर विश्वास जो हाथ पसारे।।
शोक डूब टूट जो आये। स्वर्ग ओर आवाज उठाये।।
हे प्रभु ! उसकी तू सुन लेना। कष्टो से बचा छाँह देना।।

दोहा – निर्दोष का निर्दोष ठहरा पूरी करना चाह।
दुष्ट का दुष्ट ठहरा सिर उसी पड़े कराह।।

जब दूर प्रभु से जग उलझाय। मन विलास पाप कुहास लाये॥
भूल जाये बन्दे भवन फेरे। या फिर क्रूर काल हो घेरे॥
काल टिड्डी मरू गेरू सूखा। विपदा रोग अकाल रूखा॥
भीत मेघ जल न बरसावे। वृद्ध–बाल अन्न जल तरसावे॥
और शत्रु भी शक्ति दिखलाये। छिडे युद्ध बँधवई ले जाये॥
फिर कर जब नाम ले तेरा। करना दूर तिमिर अधेरा॥

दोहा – धरमी पुकार सुन ˘ लेना बरसा देना मेह।
पाप क्षमा कर बन्दा का ल आना तू गेह॥

दूर देश याचक कोई आय। भवन तेरे फरियाद सुनाये॥
नाम तेरा सुन शीश झुकाये। प्यासा मन शीतल जल पाये॥
सरसे शुचिता सिन्धु लहराये। शुद्ध भाव दृष्टि सुफल पाये॥
'वेश–सैनिक जब जब सजाय। ह प्रभु ! समीप तुझे नित पाये॥
जहा कहीं ले नाम पुकारे। ढाल बनकर प्रभु देना सहारे॥
जो शत्रु करे कुटिल प्रहार। दया उपजाना सुन पुकार॥

दोहा – निष्पाप तो कोई नहीं पर तू न करना कोप।
निकट हो चाहे दूर तेरी प्रीत चढे ओप॥

प्रतिष्ठा– प्रार्थना सुन हरषायी। धन्य ! हमात घाटी मुसकायी॥
मेल–बलि भट राजा चढाया। ज्वाल–माल उतरी धूम छाया॥
जय– निनाद घाष हुआ भारी। धन्य धन्य राजा सुखकारी॥
सप्ताह दो पर्व प्रतिष्ठा मनाया। विधि विधि भट वेदी चढ़ाया॥
विजयी–विश्वास दृढता पाया। पूर्ण परितृप्त भाव ल्हराया॥
पावन तरग उल्लास ऐसा। निर्मल उजले सरित जल जैसा॥

दाहा – देता आर्शीवा॰ राजा स्मित अमाल मुसकान।
रत्नकण बिखरे वादी लहरा विदाई मान॥

जन प्रिय निर्भीक निडर राजा। राज सभा सिहासन विराजा॥
हे न्याय प्रिय ! शिशु यह मेरा। दो नार–विवाद शिशु सवेरा॥
'सुन राजा ! फूहड़ यह माता। पीठ दबा मारा शिशु घाता॥
उलट–पलट गढ़ी एक कहानी। सत्य यही ! ममता नादानी॥
कहे राजा– 'तलवार लाओ। चीर शिशु बाट वाद मिटाओ॥
पैरो गिरी ममता मुहानी। उसे दे शिशु कर न नादानी॥

दोहा – शिशु इसी का राज न्याय मा की सुनी पुकार।
उसके हृदय आह ! नहीं शिशु किलका हुंकार॥

झोपड़ी से महल तक गाथा। न्याय धर्म की गूजी आथा।
सुलेमान अब हुआ श्रम शीला। अन्तर लोक जगा बुद्धिशीला॥
हर कोन प्रकाश पहुचाना। निर्धनता अधकार मिटाना॥
'बेडा जहाजी तट लहराया। सैनिक रथ सवार ठहराया॥
'विभक्त–शक्ति जोड़ अभिप्रेता। झुकाता 'शान्ति –तुला सुचेता॥
कवि हृदय सुलेमान पुरोधा। पथ प्रदर्शक मित्र औ सहयोद्धा॥

दोहा – राग छद आख्यान एक चिन्तन का आरोह।
सध स्वतत्र देश का अभिनव अहदी–छोह॥

विज्ञान वनस्पति का वह ज्ञाता। जीव जतु जातिभेद सुज्ञाता॥
नीति वचन हजार तीन रचाये। मनुज माप आत्मा गहराये॥
अद्‌भुत वक्ता, सुमधुर वाणी। 'धुध – दशक का उजला प्राणी॥
युग परिवर्तन का अग्रनेता। एक दृष्टा ! सत्य नीति विजेता॥
रानी शीबा पाहुन आयी। भेट सग प्रश्न दावे लायी॥
'तेरे काम औ बुद्धिमानी। कीर्ति से बढकर तू ज्ञानी॥

दोहा – धन्य तेरा परमेश्वर धन्य हुआ यह देश।
राज सबध गहराये प्रभा पुज परिवेश॥

दसवा सर्ग

भजन संहिता

महिमा स्तुति मडल मनहारी। प्रज्ञा साहित्य कला उद्गारी।।
घना दर्द सौन्दर्य अभिलाषी। शाश्वत सत्य सच्चाई सुभाषी।।
प्रभु प्रेम उद्गार सवादी। निश्छल पावन प्रीत निनादी।।
अन्तस ताप टाऊ उजासी। आत्म उजास वादी प्रकाशी।।।

यहोवा महिमा

प्रथम खड

महिमा--मय है यहोवा प्रतापमय तेरा नाम।
चन्द्र और तारागण गाते महिमा अविराम।।
आकाश महिमा गाता मडल बिखरे रग।
दिन से दिन बाते करे रात ज्ञान के सग।।
न कोई बोली न भाषा पर शब्दो की गूँज।
प्रभु स्वर है पृथ्वी सारी जग सारा अनुगूँज।।
सूर्य मडप कैसा आला, सुन्दर महल समान।
दूल्हे सा वह सज आता, शूर–वीर सी आन।।
इस छोर से उस छोर दौड़ रहा लक्ष्य साध।
उसका तप धरती निहाल एक कर्म चक्र अबाध।।
लहराता समुद्र कैसा पृथ्वी पर दृढ़ नींव।
महानद पार करे कौन कौन है ऐसा धींव।।
मेघ यहोवा की वाणी प्रभु संदेश की टकार।।
पिघल वाष्प से देता आशीष वह अपार।।
प्रभु वाणी गर्जन तर्जन से कॉपते वन विशाल।
कहीं शून्य कहीं पतझड़ कहीं बॉसुरी ताल।।
अन्न भरपूर तराइयॉ नदियॉ 'उसकी शान।
बॉध–फेटा हर्ष आनद करती पहाड़ियॉ गान।।

उदयाचल औ अस्ताचल गाते महिमा गीत।
डफ और चग बजा कर भरते पुलकन प्रीत।।
दिन है प्रकाश यहोवा दीप जले सब रात।
जाड़ा और धूपकाल प्रभु सिवाने प्रभात।।
वचन यहोवा बल शाली चटक जाते देवदार।
प्रभु वाणी प्रतापमयी, कभी अगन कभी धार।।
कैसे उजाले प्रभु नियम उत्तम बुद्धि और ज्ञान।
नेत्र ज्योति उपदेश खरे निर्मल आशा दान।।
प्रभु व्यवस्था है खरी शीतल छाया समान।
कुन्दन सोने से मनहर मधु से मधुर दान।।
दया उसकी ओर न छोर धीमा उसका कोप।
दृढ़ और स्थिर यहोवा करे दूर सब प्रकोप।।
चन्द्र समान वह शीतल सूर्य समान सर्व अधिकार।
अतुल्य अनुपमेय महत मुखर वचन साकार।।
हजार वर्ष हैं यहोवा एक प्रहर रात समान।
आदि अनादि वह सर्वज्ञ क्षण का क्या अनुमान।।
दुध– मुँहे बालक गाते उसकी महिमा नक।
परम प्रधान है यहावा सब का सामर्थ टेक।।
न्याय धनुष जत्र उठाव झुक घमड की आँख।
दयावत का टया मिल' बढ दान की साख।।
निज रूप मनुज सवार दे दी निज मुसकान।
सीस धरा मुकुट प्रताप महिमा और विहान।।
वह प्रकाश का प्रकाश है प्रकाश स्रात।
धरा आकाश उल्लास दिव्य आनद ज्यात।।
उसका वैभव अनतोल सृष्टि है परिपूर्ण।
अद्‌भुत अनुपम उपहार दता मुद्त्रा सपूर्ण।।

हे फाटक सनातन द्वारो, सिर ऊँचा करो सग।
राजा प्रतापी आता तुम बजाओ चग।।
वह प्रतापी राजा कौन कौन सनातन द्वार।
सेनाओ का राजा वह यहोवा। जयकार।।
सराहो सामर्थ्य उसकी सुनाओ सु– सवाद।
हे परमेश्वर पुत्रो! करो, यहोवा गुणानुवाद।।
धन्यवाद करो यहोवा बजा वीण के तार।
करूण का वह राजा करो उसकी जयकार।।
धर्म मूल न्याय सिहासन सच्चाई करूणा विधान।
बलवन्त भुजा यहोवा हाथ उसका शक्तिमान।।
प्रभुओ का प्रभु यहोवा करूणा का परिधान।
धर्मी सुधि रखता सदा उसकी दया महान।।
हे वृक्षो जयकार करो पवन आनन्द घोल।
गाओ महिमा यहोवा लाओ भेट अनमोल।।
ह धरा मगन हो धूम प्रभात प्रकाश अपार।
पत्ते–पत्ते प्रभु आभा नदियाँ प्रभु गुजार।।
हे सागर हे हिम जल पक्षी पशु देवदार।
गाओ उसकी महिमा हे बालका नर नार।।
हे ज्योर्तिमय तारागण हे प्रचड बयार।
गाओ स्तुति बारम्बार हे चन्द्र सूर्य पुकार ।।
यहोवा की स्तुति करो पवित्र ह उसका नाम।
सदा सर्वदा धन्य कहो सामर्थी उसके काम।।

द्वितीय खड

निवेदन

हे यहोवा पथ अपने कर स्थिर मरे पाँव।
निज प्रकाश पुलकन भर ढक ले अपनी पाँख।।
तेरे मदिर ध्यान धरू मनहर रूप की छाँह।
मन मे तेरा ध्यान रहे एक यही है चाह।।

हॉफ्ती हिरनी जैसे हो आकुल जल प्यास।
मैं हॉफता तेरे लिये प्रभु दर्शन की आस।।
गिन ले ऑसू तू मेरे लिख पुस्तक तू अक।
निर्वासित सा मैं फिरता दुष्ट लगाते डक।।
दिखला दे पथ अपना जहॉ सत्य की हाट।
हे यहोवा मेरे प्रभु जोहता तेरी बाट।।
शरणागत प्रभु तेरा कुछ तो मुझ से बोल।
क्षमा कर पाप मेरे नीरव स्वर को तोल।।
जाग रहा मैं दिन रात, भटक गया हूँ राह।
धूल मिले प्राण जाते अब तू थाम ले बॉह।।
बल मेरा टूटा जाता हृदय पिघला ज्यो मोम।
हे उद्धारक तू कहॉ घेर रहा दुख तोम।।
जग ने मुझे बिसार दिया टूटा बासन दीन।
मैं थका शरण तेरी जीर्ण वस्त्र मन क्षीण।।
ऑसुआ मैं डूब रहा कॉप रहा है गात।
घर–घर मे हास उपहास कैसे हा प्रभु प्रात।।
बैठा मैं हाथ पसारे कर प्रार्थना स्वीकार।
मूढ कुचाली मैं अधम पडा पाप अधियार।।
चहुँ ओर घना अधेरा, टूटा मन अधीर।
हर्ष आनद बात सुना कर प्रकाश मन कुटीर।।
जूफा से शुद्ध कर मुझ कर श्वेत हिम समान।
हे यहोवा मेरे प्रभु दे दे अपना ज्ञान।।
डूब गया अश्रु सागर नयन धुधलाय शोक।
कर अनुग्रह थाम मुझे तू ही दिव्य आलोक।।
टाट वस्त्र पहिने मैंने तुझ रहा मैं पुकार।
न्प गया मैं लज्जा निदा फुर्ती कर हे उद्धार।।

प्रभु हार गया मैं हार मन मग गया हार।
बिध गया हृदय मेरा व्यर्थ हुई क्या पुकार।।
खोजू मैं तुझ कहाँ सृष्टि तरी विशाल।
स्वर्ण मडप मैं खड़ा लिय अश्रुआ का थाल।।
नियति का मैं खल बना नहीं छिप हैं दाष।
तू जाने मूढता मेरी दया कर नही रोष।।
ज्या पहरूआ भोर चाह मुझे तेरी चाह।
बाट जोह वह भार मैं जा—हूँ प्रभु राह।।
जिस मारग मुझे चलना प्रभु बता रखूँ आस।
दिखला दे पथ अपना मैं हू तरा दास।।

विश्वास

तू मेरी शक्ति पदुका सामर्थ का कटिबन्ध।
तेरी करूणा नहीं टले मैं वाग्रा अनुबन्ध।।
कुछ घटी नहीं मुझे तू मेरा परवाह।
शीतल झरने जैसे हरी तराई छाँह।।
तू जी म जी ले आता नाम तरा सुखदाइ।
अपन नाम की खातिर कर मरा अगुवाइ।।
घार अधकार भरी हावे चाह तराइ।
तौ भी नहीं डरूगा। सग तरी अगवाइ।।
तू मान बढाता मेरा हल्का करता भार।
शक्ति दता दृढ करता आशीष और उपहार।।
जीवन कटारा उमड़ रहा मिला आनद वरदान।
करूणा और भलाई का कैसा सुदर दान।।
धन्य कह मन मरे भूल न प्रभु उपकार।
क्षमा हुए अधर्म मर प्रभात प्रकाश अपार।।
रखे सदा निज छाया सब का पालनहार।
टलन पाँव नहीं दता कर सदा उपकार।।

मेरे आने जाने मे यहोवा मेरे सग।
सदा सर्वदा रक्षा करे बढता मैं उमग॥
रात हो चाहे भयावह विचरे महाकाल।
शरण स्थान है यहोवा वही झिलम और ढाल॥
जग का ज्ञान अधूरा उसके नियम प्रदीप।
हे यहोवा मेरे प्रभु 'तू ही ज्योति दीप॥
टिकी हुई मेरी आँखे दृष्टि है पर्वत ओर।
तू ही मेरा सहायक। देख रहा चहुँ ओर॥
चितौनिया है सुख मूल और मत्री सुविचार।
हृदय रखूँ वचन तर, कण कण बजे सितार॥
धर्म से स्वर्ग है झुकता उगता है सद्भाव।
सत्य चले आगे आगे, पद चिन्ह मारग चाव॥
ऊँचा गढ़ वह मेरा धर्मी का शैल श्रृग।
दाहिने हाथ से देता, मन को नयी उमग॥
घर को यदि प्रभु न बनाये, सब श्रम निष्फल जाय।
नगर रक्षा जो प्रभु न करे, रक्षक श्रम व्यर्थ जाय॥
धन्य धन्य वह राज करे प्रभु जिसका उद्धार।
खते उसके भरे रहे बहे करूणा अपार॥
पीढ़ियो प्रभुता करं पीढी हो छविमान।
पीढियाँ जय गान करे पीढियाँ दिन मान॥
प्रभु अनुग्रहकारी भला युग युग रहे प्रताप।
गिरते को सँभाले और बचाये ताप॥
दीप जला राहे सजा पहन नये परिधान।
देख प्रभु ने द्वार खोले तेरा है महमान॥

स्तुति

सब का शरण स्थान यहोवा और सब का बल है।
संकट में अति सहज मिले रक्षक सदा सहायक हैं॥
पलट जाय पृथ्वी चाहे धर्मी को भय नहीं।
डाला चाहे वार समुद्र पर्वत पर फेंका कहीं॥
फेन उठे गरज सागर कांपे पर्वत गढ़ बहे।
पिघल जाये पृथ्वी चाहे धर्मी प्रभु प्रसाद रहे॥
एक नदी अनुपम प्रभु प्रेम अद्भुत लहर तरंग है।
प्रभु निवास है मन भावन आनन्द पवित्र उमंग है॥
चमक उठे पौ फटते ही पवित्र नगर प्रभु का।
लय ताल संग सजे स्वर उड़े पराग विभुका॥
प्रभु यहोवा है शिरोमणी ध्यान उसका मन धरो।
पवित्र आसन वह विराजे, उसकी जयकार करो॥

आशीष

जो मनुज प्रभु में रहे आशीषित वृक्ष समान।
मिठास सफलता पाये हरे खजूर समान॥
जलधार निकट जो बसे वृक्ष वह सदा नवीन।
ऋतु ऋतु वह फूले फले कभी न होवे दीन॥

धर्मीजन

कौन बसे डेरे उसके। पर्वत चढ़ता कौन।
धर्मी जन रहते प्रभु मे, चलते खराई मौन॥
जिह्वा उच्चारे नहीं निन्दा दुखी मन का सवाद।
मरा का जो साझेदार प्रेम का सुसवाद॥
पाते मान युगानुयुग हर्ष आनद का साज।
प्रभु अभिषिक्त धर्मी जन पहिने कुन्दन ताज॥
पूरी करते प्रभु मन्नत आशीष प्रतिष्ठा दान।
धर्मी देखे प्रभु महिमा ममता क्षमता त्रान॥

दुष्ट आचरण

उड़ाये जिसे पवमान दुष्ट भूसी समान।
मति अधूर प्रतिशाधी मन बिगाड़ अभिमान।।
विप्लव की छटपटाहट दुष्टता गर्भ उत्पात।
तपते दुष्ट काम – पीड़ा पुत्र हुआ झूठ प्रात।
खाद गड्ढा गहरा किया, गिर उसी मे आप।।
पल्टा खाय जब उपद्रव फल बने दुष्ट माप।
आदर पाव न्याय तुरा चले अकड़ ज्यो वीर।
करते प्रभु का तिरस्कार मन मे कपट अधीर।।
दुष्ट नाश मिट जाता, रहे न कहीं निशान।
न्याय बहावा जब आवे मिट जाये अभिमान।।
धातु मैल समान दुष्ट जूझ रहा अज्ञान।
दुख भरी रोटी पाव जीवन क्षुद्र म्लान।।

चेतावनी

रे मानव अधर्म तेरे घनेरे ज्यों सिर बाल।
अनगिन छल कपट घिरा प्रभु से दूर बहाल।।
बलिशत भर आयु पाई ढल सूर्य विलीन।
पतंगे सा जीवन तेरा क्या करे अभिमान।।
कर तू मुँह की चौकसी निकल नहीं छल बात।
जीभ रोक बुराई से कर भलाई की बात।।
प्रभु से कुछ छिपा नहीं, तू है बदी पाप।
भेट नहीं चाह प्रभु अर्पण हो तू आप।।
घटी बढ़ी हाथ प्रभु के भरे कटोरा रात।
हे घमंडी घमंड न कर कर न ढिठाई बात।।
कर ले हे मनुज विचार तू संख्या का जोड़।
बाल किनके प्रभु गिने समझे मन के तोड़।।

सर्ग ग्यारहवाँ

नीति वचन

नपी तुली भाषा मे जीवन पुत्र देते ज्ञान नया॥
जीवन मान पिता समझाते क्षमा चेतुराई दया॥
मनुज का जीवन नौका समान, ये पतवार सब पकडे॥
समझ की समझ ये बुद्धि मूल हृदय उतारे सब जकडे॥
न्याय नीति और समझ विवेक वादी मे गीत ढले॥
राजा सुलेमान नीति वचन प्रभु प्रीत सब साथ चले॥

बुदि– समझ विवेक के प्रति

हे पुत्र ! सुन बुद्धि रहीं पुकार सुन चेतावनी यहा।
भीड़ चौराहे बाजार नगर द्वार पूछती तू है कहाँ॥
कब तक उड़ायेगा अज्ञानी तू ज्ञान की हँसी।
हे मूढ़ ज्ञान से बैर किया और समझ अज्ञान फँसी॥
न कर बुद्धि का उपहास मूरख, क्यो तुच्छ समझ बरजे।
कर ताड़ित अपमानित निशदिन खीच केस झिडक गरजे॥
यौवन बना उच्छल मुक्त प्रवाह कर रहा कौतुक नया।
मिलेगे जब करनी के फल फिर न कहना 'सब गया॥
हँस कहेगी तब बुद्धि तुझ से, पुकारे अब क्या मुझे।
छिपता रहा अधकार तू अधम ढूढ़ती थी मैं तुझे॥
चलता जो तू सलाह मेरी पाता सुख तू सर्वदा।
मैं दीपित प्रकाश 'बुद्धि हू उजला करू मन सदा॥
मोती से अधिक मूल्यवान कुन्दन से वैभव घना।
वृक्ष घना छायादार हू मैं सत्य फल सुख–मय तना॥
दीर्घ व्यय हाथ दाहिने/ म बाये हाथ मान लिये।
मारग मेरे आनंद से पूरित, विजय भरी दृष्टि जिये॥
गुप्त धन समान जो ढूढे रहती सग उसके।
उजली हू मैं चाँदी समान किरण रेख सी झलके॥

खोज लता है जा मुझ ढाल उसकी बन खड़ी।
विवक रधक ज्ञान हू मनहर न्याय पर रहती अड़ी॥
बुद्धि जब है घर बनाती, लगाती मैं खभे सात या।
कि मनुज जो है सीधा सरल पहुँचे भीतर ज्यो॥
कपट चतुर या कि मूरख जो है, पाये नहीं द्वार कहीं।
हँस के ना समझ कहता रहे बिन द्वार का घर भला नहीं॥

सीख

पुत्र! बुद्धि का कर सम्मान सदा कीमत ऊची तू लगा।
सभ्यता मुकुट वही पहिनाय दूर अधर्म को भगा॥
सुन! धर्म पथ है उजला ऐसा लयमान विहान दमके।
भोर से मध्याहन् ज्यो चढ़े प्रकाश उतना ही मन चमके॥
निज पैरा को तोल अपने डग भरने से पहले।
प्रभु करे, निरापद पथ तरा, जो राह बुरी न चले॥

सगति

पुत्र सुन मेरे! शिक्षा की बात शुद्ध सरल जीवन बना।
घात लगाये दुरजन रहते दूर रहे सँभलना॥
हे पुत्र साथ न चलना राह न उनकी थमना।
दौड़ते हैं अपकर्म करते दल उनके तू बचना॥
कहे तुझ से आ साथ यदि वे निर्दोष हम घात करे।
लूटे धन और छिप करे वार आ बटुए हम एक करे॥
कटक जाल झोक दंगे तुझे हिसा लोभ ये भटके।
दीन हीन बरबाद करेगे जाल मे मूरख अटक॥

माँ के प्रति

माँ की सीख हृदय मे धरना सुन्दर मुकुट सी छटा।
अनमोल कठ माल बनाले कीमत अक न घटा॥
निज जल तू शुद्ध रखना व्यर्थ धार न बहना।
द्वार परायी नार न जाना धन मन से न उजडना॥

पत्नी के प्रति

निज पत्नी सग रहना ह पुत्र यश तग रह सुखा।
प्रेम कर उसका हरषाना झरन सा रह हँसमुखी॥

क्षमा

उलझ जाय यदि शब्द अपन द्वन्द गवाहा तुल।
माग लना क्षमा मान यह उलझन जटिल खुल॥

चींटी से सीख

हे आलसी देख चींटी को गिन जग काम उमग।
न प्रधान न प्रभुता नही न्यायी पर थम एक नहीं रूक॥
सचय करती धूपकाल म कटनी वह बटोरती।
दिव्य लहर सी जीवन राशि श्रम निरवास बिखेरती॥
दरिद्री जब घेरेगी मूरख पथ लुटेरे सी त्वरा।
सैनिक सम तब ही अभाव पटकग तुझे धरा॥

सात दुर्गण

दुर्गण सात रखता वैर प्रभु करता प्रबल तर्जना।
घमड चढ़ी आखे झूठी जिव्हा करे घार प्रभु गर्जना॥
घात रग हाथ हृदय कुचक्री पाव न उद्धार कहीं।
चाल बुरी कपट झूठ साम्य प्रभु कोप सहता यहीं॥

दुर्जन

दुर्जन ता है जीवन अहरी प्राणा का नाश करे।
अगारा का सग है उसका क्या लपटा झुलस मरे॥
क्रोध ईर्ष्या मनुज धधकता य हैं पाप की लपट।
पतित समूह औ पशुता शक्ति हिस्त्र पशु ज्या झपटे॥

व्यभिचारी विचार

दुधारी तलवार से पैन मृत देह लहू पीते॥
व्यभिचार विचार तू बचना नागदौन कडुवे रीते॥
य उद्दाम लालस सलौने उन्माद ज्वाल से हल्के।

मद भरे पात्र ये मतवाले अतृप्त वासना झलके।।
ये मृद–आलस हेरा फेरी निर्मम घात है इसके।
करते व्याकुल चचल लोलुप छलते मन को जिसके।।

अन्य उपदेश और सीख

हर्षित करते मन सुजान मीठे उनके बोल।
घात करे दुर्जन वचन उपद्रव उनके किलोल।।
ठट्ठा करने वाला पुत्र वचन सुने न तात।
सुपुत्र आदर करे पिता सुने सीख की बात।।
चौकस रहे जो निज वचन सुख–निवास करे वास।
व्यर्थ जो बजावे गाल होता उसका नाश।।
दुष्ट बटोरे धन चाहे टिक न दमडी एक।
श्रम से यदि धन कमाये सदा बढे वह नेक।।
धर्मी मनुज एक ज्योति करता आनद दान।
दीप दुर्जन का बुझ जाता मूरख रह अनजान।।
धन प्राण छुडौती धनी धन प्राण का माल।
निर्धन देता निज प्राण धन प्राण का मोल।।
वह पिता पुत्र का बैरी छड़ी रखे न उपाय।
पुत्र प्रेम जो करे पिता सीख दे बन सहाय।।
केवल मन ही जाने अपनी पीडा भेद।
जन जन आनद बॉटे रखे छिपा कर खेद।।
दरिद्रा का नहीं मित्र कोई रख पड़ौसी दूर।
धनी पडौसा मित्र अनेक धन लूट मद–चूर।।
रोटी सूखी भी मीठी जो प्रेम की मनुहार।
उत्तम भोग त्याज्य तुच्छ यदि घृणा तिरस्कार।।
ठोकर से पहले खव नष्ट करे सब ज्ञान।
विनाश से पहले गर्व राह बनाये श्मशान।।

दीर्घ वय और श्वेत केश सुन्दर मुकुट समान।
यह आशीष प्रभु की बड़ी हीरा शोभायमान।।
रख मन वश योद्धा ज्या नगर विजेता आन।
जिसका मन वश म नहीं निपट मूरख तू जान।।
थैली बटखरे तराजू, इनमे ईमान मान।
चिट्ठी डाले, निर्णय उठे प्रभु आदेश समान।।
लघु छिद्रो से ही बाँध बाँध हाता निर्बाध।
ऐसे ही छोटे बिन्दु से बढे झगड़े अबाध।।
मित्र सच्चा उसे ही मान सकट मे रहे साथ।
विपदा मे सहायक ऐसा जैसे भाई का हाथ।।
बुद्धिमान सगत करे और रहे जो मौन।
समझदार माने सभी मूर्ख कहे अब कौन।।
जिव्हा म बसता जीवन जीवन की पतवार।
कभी मन को सरसाती कभी प्रलय जलधार।।
प्रभु अनुग्रह उसे मिला पत्नी जिसकी सुजान।
पति सहाय मित्र अनमोल प्रभु आशीष प्रमान।।
भाई भाई का है झगड़ा महल अर्गला समान।
रूठे भाई को मना लेना नगर विजय समान।।

मनहर कवित्त

मूरख सदा टेढा चले, छोड़े नहीं बुराई।
निर्धन जो चले खराई से नहीं निर्धन चेतन।।
वही तो है चूक जाता दौड़ता उतावली मे।
सभल सभल के जो चले पहुँचता है वही सदन।।
मनुज सदा मूढ़ता से ही अपने बिगाड़ता काम।
आलसी सोता है पथ गारग देख छाँह घनी सघन।।
श्रम करना सीख मे रहना भय प्रभु का जो माने।
वही सदा बचा रहे विपदा रहे सुख– निकेत वतन।।

मन को भली लगती है चापलूसी की बात।
कान भरने की है बात, उत्तम भोजन रात॥
धन सम्पत्ति से बढ़कर उत्तम है यश नाम।
पर कुन्दन से भी उत्तम जन भलाई का काम॥
दिल नहीं दुखाना गरीब, प्रभु है उसके करीब।
नहीं पीसना कचहरी जान उसे न गरीब॥
पुरखो ने जिन्हे बाँधा सिवाने वे न तोड़।
प्रकाश स्तभ पथ ये है जीवन राह के मोड़॥
शराब है साँप करैत सीधे उतरे पेट।
डगमग डोले बीच समुद्र सुध बुध होवे भेट॥
बलवान से बुद्धिमान अधिक शक्तिमान जान।
शक्तिवान से ज्ञानवान, रहे सदा शक्तिमान॥
गिरे सात बार फिर उठ कर नहीं मन निराश।
शक्ति युक्ति फिर बाँध होना नहीं हताश॥
जैसे को तैसा नहीं हाथ न लेना न्याय।
छोड़ प्रभु पर सब कुछ प्रभु देता है न्याय॥
शुद्ध होती है चाँदी धातु मैल निकाल।
हटा दुर्जन मैल समान आये राज सुकाल॥
गरजे पर बरसे नहीं ऐसे बादल निर्लाभ।
दान नहीं पर शान बड़ी ऐसे दानी निर्आभ॥
जो दुश्मन हो भूखा भोजन करा सभार।
यदि वह प्यासा व्याकुल जल का दे आँधार॥
पिता मुह काला करता यदि है पुत्र कपूत।
यश मान है बढ़ जाता जो है पुत्र सपूत॥
जन जयवत होते धर्मी नगर शोभा सतोष।
दुष्ट की हो जब जयकार फैलता जन आक्रोश॥

सर्ग बारहवाँ

सुलेमान का श्रेष्ठ–गीत (भक्ति श्रृगार)

जैसे गगन घन घटा सुहानी। भक्ति–श्रृगार एसा लासानी।।
प्रेम प्रीत पगी अनुरागी। आज वादी दुल्हन परागी।।
चहु ओर साधना हरियाली। झीना अचल निरमई लाली।।
सुलेमान अर्न्त–पट उजियारी। धन सुख भाग महल अटारा।।
रग सुरग विरह अभिरामा।। आत्मा दुल्हन खाज परमात्मा।।
बिखरी मन की विहृल निरवास। विरही अनल तप्त उसाँस।।

दोहा – प्रार्थना सा आनद चाव सरल तरल मन भाव।
मिलन विरह व्यथा प्रीत प्रभु दरशन अनुभाव।।

हे शिरान देश गुलाब मेरे। बसी सुवास तन मन हर।।
प्रियतम – प्रियतम हृदय बसाया। भातर बाहर यही समाया।।
प्रेम विवश मन डूबा जाता। मधुर मधुर रग मन सजाता।।
प्रिय स्पर्शन क्षण सघन सहारा। सुवासित इत्र की उत्तम धारा।।
मधु चुबन दते हैं सितार। मन के तार झकृत हुए सारे।।
ओढ़ चाँदनी मैं थी सायी। प्रियतम बाँहा म थी खायी।।

दोहा – उपास्य मेरे अनुपम जीवन का आधार।
व्यष्टि मे समष्टि सौरभ मिलन का हर्ष अपार।।

प्रम करूणा घट–घट लूटी। प्रणत शुचि कापल प्रणय फूटी।।
देकर अपने को जा पावे। वाणी क्षमता चुकती जावे।।
मौन महा–वाक्य बन जाता। असीम सागर हिलोर लाता।।
प्रथम प्रेम पवित्र दीपित गाभा। महाव्योम मन रत्नो की आभा।।
मर प्रियतम पुलकन छायी। प्रीत ध्वजा हृदय लहरायी।।
मिला हृदय धन प्रियतम प्यारा। छवि निहारूँ अनुपम सहारा।।

दाहा – आत्मा रगी परमात्मा रहा नहीं मन खेद।
कहे वादी रग एक हुए कौन पढ़े मन भेद।।

अतृप्त अधीर मैं हुई भिखारी। बधन बुद्धि क जड़ी लाचारी॥
अतिचारी उन्मत्त मन मेरा। अध–प्रेरणा लालस का घेरा॥
प्रीत रीत समझ न पाया। फासला दूरी मिटा न पाया॥
कलुषित मन अलसाया एस प्रीत अनमोल समझता कैस।
प्रिय बोल मन जो सुन लेता। परम जीवन के स्वर गा लेता॥
ओस बूँद कमल पर मुसकाये गिर न सरोवर इठलाये॥

दोहा – मोह तृष्णा सुख सपने मन पर हाते न भार।
मिलता प्रियतम आलाक या न भटकती हार॥

डगर डगर भटकूँ झुलसायी। वाद प्रतारण भय उलझायी॥
राह रोकते वचक प्रतिहारी। विश्वास आत्नी छीन उतारी॥
प्रियतम बचाओ करो न देरी। लूट रहे मुझे य अहरी॥
तू छिपा कहाँ मैं हू तेरी। हे प्राण–प्रिय रात अंधेरी॥
धुँधला जीवन – धुँधली कहानी। हे प्रिय ल आ भोर सुहानी।
मद भरे स्वर पिडुक लहराया। मरी प्रिया प्रिया प्रिया गाया॥

दोहा – सदेश हिरणियाँ लायी मादक गध अजीर॥
मेघ झरोखे अकेला बैठा प्रियतम अधीर॥

पुलकित प्रियतम कहते मेरे। तू 'कपोती आँगन की मेरे॥
नील गगन से उतरी जैसे। कौंध समायी देह मे ऐसे॥
परम पवित्र कान्तिमय कैसी। धवल ज्योतिमय पाँख ऐसी॥
भोली चितवन नयन नूरानी। थिरक थिरक मन कहे कहानी॥
शब्द शब्द झरनो जैसे। प्रिये बोल मीठे ये कैसे॥
मै उसकी वह मेरा प्रेमी। बेतेर पर्वत खोजू नेमी॥

दोहा – वह चाहत मन पाहुन छाया सा एकाकार।
उसकी दृष्टि मन हरती खुले हृदय–पट द्वार॥

विराट प्रेम रूप प्रिय समझाया। मन का उजला रूप दिखाया।।
कहता तू प्रीत बहती धारा। स्वर माधुर्य मेरा सहारा।।
मेरी शक्ति तू मेरी वाणी। नहीं दोषी तू और न फानी।।
तू मेरी भाषा परिभाषा। सर्व व्यापी मेरी अभिलाषा।।
लम्बी छाया सिमट न पाये। तू एसी प्रीत रीत निभाये।।
लाबान पर्वत ओट मैं जाऊँ। तुझे वहाँ हे सुन्दरी पाऊँ।।

दोहा — हे प्रिया मेरी दुल्हिन मेरे मन की चाह।
तेरा दूल्हा मैं विभोर चली आ प्रीत प्रवाह।।

लबानोन से आ मतवाली। तू मन की नूतन हरियाली।।
नयन ज्योति तेरी मनहारी। हे स्रोस्विनी मैं बलिहारी।।
तू है अगर–सुगध जटामासी। मेहदी सुबुल मुश्क सुवासी।।
पथ जोहती प्राणो की ज्वाला। मेरी दुल्हिन दाख की माला।।
हे उत्तर वायु जाग तू ज्ञानी। हे दखिन वायु छोड़ मन मानी।।
घुमड़ घुमड़ बरस अनुरागी। बरसा प्रेम–बारी–परागी।।

दोहा — भर दे पुलकन सिहरन छेड़ स्वागत का गान।
उतार घूंघट मुख से प्रिया सुन ले आह्वान।।

प्रिय वाणी सुन मन अकुलाये। आनद सागर ज्वार सा आये।।
दौड़ प्रिय मे जाऊँ समाऊँ। कौन पथ रोके समझ न पाऊँ।।
हृदय द्वार पट खोल न पाऊँ। प्यार की शबनम क्या न पाऊँ।।
पुकार सुनूं पर जाऊँ कैसे। मूल्यवान क्षण पाऊँ कैसे।।
उलझी विभव सम्पदा ऐसे। प्रीत वस्त्र पहनूं अब कैसे?।।
प्रीत राहें तय करू कैसे। प्राण मेरे अकुलाये एसे।।

दोहा— ऊहापोह अजब ऐसा विचित्र विलक्षण जाल।
रात अँधेरी रिक्त पहर उलझ रही चक्रवाल।।

अतृप्त अधीर मैं हुई भिखारी। बधन बुद्धि के जड़ी लाचारी।।
अतिचारी उन्मत्त मन मेरा। अध-प्ररणा लालस का भरा।।
प्रीत रीत समझ न पाया। फासला दूरी मिटा न पाया।।
कलुषित मन अलसाया ऐस प्रीत अनमोल समझता कैस।
प्रिय बोल मन जो सुन लेता। परम जीवन के स्वर गा लेता।।
ओस बूँद कमल पर मुसकाये गिर न सरोवर इठलाय।।

दोहा – मोह तृष्ण सुख सपने मन पर होते न भार।
मिलता प्रियतम आलोक यो न भटकती हार।।

डगर डगर भटकूँ झुलसायी। बाद प्रतारण भय उलझायी।।
राह रोकते वचक प्रतिहारी। विश्वास ओढ़नी छीन उतारी।।
प्रियतम बचाओ करो न देरी। लूट रहे मुझे ये अहरी।।
तू छिपा कहाँ मैं हू तेरी। हे प्राण-प्रिय रात अधेरी।।
धुँधला जीवन – धुँधली कहानी। हे प्रिय ले आ भोर सुहानी।
मद भरे स्वर पिडुक लहराया। मेरी प्रिया प्रिया प्रिया गाया।।

दोहा – सदेश हिरणियाँ लायी, मादक गध अजीर।।
मध झरोखे अकेला बैठा प्रियतम अधीर।।

पुलकित प्रियतम कहते मेरे। तू कपोती आँगन की मेरे।।
नील गगन से उतरी जैसे। कौंध समायी देह मे ऐस।।
परम पवित्र कान्तिमय कैसी। धवल ज्योतिमय पाँख ऐसी।।
भोली चितवन नयन नूरानी। थिरक थिरक मन कहे कहानी।।
शब्द शब्द झरना जैसे। प्रिये बोल मीठे ये कैसे।।
मैं उसकी वह मेरा प्रेमी। बेतेर पर्वत खोजू नेमी।।

दोहा – वह चाहत मन पाहुन छाया सा एकाकार।
उसकी दृष्टि मन हरती खुले हृदय-पट द्वार।।

विराट प्रेम रूप प्रिय समझाया। मन का उजला रूप दिखाया।।
कहता तू प्रीत बहती धारा। स्वर माधुर्य मेरा सहारा।।
मेरी शक्ति तू मेरी वाणी। नहीं दोषी तू और न फानी।।
तू मेरी भाषा परिभाषा। सर्व व्यापी मेरी अभिलाषा।।
लम्बी छाया सिमट न पाये। तू एसी प्रीत रीत निभाये।।
लाबान पर्वत ओट मैं जाऊँ। तुझे वहाँ हे सुन्दरी पाऊँ।।

दोहा — हे प्रिया मेरी दुल्हिन मेरे मन की चाह।
तेरा दूल्हा मैं विभोर चली आ, प्रीत प्रवाह।।

लबानोन से आ मतवाली। तू मन की नूतन हरियाली।।
नयन ज्योति तेरी मनहारी। हे स्त्रोस्विनी मैं बलिहारी।।
तू है अगर—सुगध जटामासी। मेहदी सुबुल मुश्क सुवासी।।
पथ जोहती प्राणो की ज्वाला। मेरी दुल्हिन दाख की माला।।
हे उत्तर वायु जाग तू ज्ञानी। हे दखिन वायु छोड़ मन मानी।।
घुमड़ घुमड़ बरस अनुरागी। बरसा प्रेम—बारी—परागी।।

दोहा — भर दे पुलकन सिहरन छेड स्वागत का गान।
उतार घूघट मुख से प्रिया सुन ले आह्वान।।

प्रिय वाणी सुन मन अकुलाये। आनद सागर ज्वार सा आये।।
दौड़ प्रिय मे जाऊँ समाऊँ। कौन पथ रोके समझ न पाऊँ।।
हृदय द्वार पट खोल न पाऊँ। प्यार की शबनम क्यो न पाऊँ।।
पुकार सुनूँ पर जाऊँ कैसे। मूल्यवान क्षण पाऊँ कैसे।।
उलझी विभव सम्पदा ऐसे। प्रीत वस्त्र पहनूँ अब कैसे?।।
प्रीत राहे तय करू कैसे। प्राण मेरे अकुलाये एसे।।

दोहा — ऊहापोह अजब ऐसा विचित्र विलक्षण जाल।
रात अँधेरी रिक्त पहर उलझ रही चक्रवाल।।

दूर क्षितिज महल मेरा राजा। कुदन–किवाड़ जड़े फिरौजा।।
नीलम फूल जड़ी फुल्वारी। हिमानी सगेमर मनहारी।।
देवदार वृक्ष खड़े बलिहारी। सौरभ भरी 'बालसन क्यारी।।
साँस साँस वा वह रखवाला। सब को राह दिखानेवाला।।
मैं उसकी वह मेरा प्रमी। जैसे मुगध पुष्प की नमी।।
कहता तू है मरी वाची। निर्मल भावना सुन्दर प्राची।।

दोहा – एकान्त महल विराजे मेरा प्रिय मेरा मीत।
कहे 'लौट आ सुलेमिन साज सजाये प्रीत।।

अब न दूदाफल रूप दिखाये। सुख दुख सशय भाव जगायें।।
आ। बाँह–वलय हम बध जाये। भूमा सर्व–भाव जग जाये।।
मैं सूर्य तू किरणो की माला। भोर तुल्य तू है उजियाला।।
खेतो मे आ प्रीत जगाये। फूलो कलियो म खो जाय।।
आ! प्रकाश वितान बनाये। भाव धारा रस छलकाये।।
प्रणय उजाम अर्न्तप्रीति गाये। जीवन मधुरिम धन्यता पाये।।

दोहा – मुग्ध भाव तू मेरी निर्मल प्रेमल महान।
बिखरे फूल चुन ले आ रहे प्रीत की शान।।

जोड़ लिये प्रियतम से धागे। पैर जमा अब बढी जो आग।।
हृदय आट प्रियतम बिराजे। ठगी सी देखूँ / प्रिय अधिराजे।।
बना हृदय कोठर फुलवारी। प्रिय आप बिराजे बलिहारी।।
आँख मिचौनी यह अति सुहानी। बसे हृदय मैं ही अभिमानी।।
क्षण क्षण कृपा पाऊँ तुम्हारी। धरूँ तन मन सौगध भारी।।
दा नयनो म सौ सौ धारे। मौन नि शब्द स्वर गुंजारे।।

दोहा – तुम ही भाव सगीत अपना दो आलोक।
उमडने दो प्रीत सोता घुमड़ने दो रोक।।

जीवन प्रभात हुआ अब मेरा। दूर हुआ अज्ञान अधेरा॥
प्रेम सन्ती सब भेट चढाऊँ। तरू की छाया दाप जलाऊँ॥
नगीने सा हृदय म जड़ाऊँ। बना ताबीज बॉह सजाऊँ॥
प्रबल प्रेम धधका ज्या ज्वाला। पावन अगन बना उजियाला॥
बाढ़ उसे अब बुझा न पाय। डूब डूब महानद उतराय॥
प्रम शक्ति सामर्थ प्रबल पायी। ज्योत प्रभु की तन मन समायी॥

दोहा — दृढता पनाह सम्पदा तू ही नयन उजास।
मै दाख की कुद कली तू रक्षक गोपन आस॥
सनातन पुरूष प्रिया मैं मन की मधुर गुजार॥
कनक रेख सा सौष्ठव पाऊ दुलार॥

तेरहवाँ सर्ग

अय्यूब एक भक्त का विलाप

आज गूँज ज्ञान गर्व विवादी। सुख दुख भ्रम शब्दित वादी॥
दंभी मूढ भरता अँजोरी। मान बडाई करता कोरी॥
प्रवाल सुरंगे मनुज भटकावे। चक्र विवर्तन काल दिखावे॥
झुलसा मन तप तच निनादी। घोर प्रहार मूक है वादी॥
देश ऊज का अय्यूब निवासी। खरा सीधा वह प्रभु विश्वासी॥
प्रभात धूप सा जागृत ज्ञानी। पूरबिया म था धनी मानी॥

दाहा — महा वृक्ष सा वह सघन प्रभु भक्त भक्ति सुधीर।
अनागत से डर क्या! वह बना रहा प्राचीर॥

निर्मेघ रहे कुटब जन आसी। विधि नियम धर्म टेक प्रतिमासा॥
सब है उसका वही विधाता। शक्तिमान प्रभु मरे दाता॥
स्तुतिवाचक मैं गुण गाता। नित भेट दान प्रभु चढ़ाता॥
बान वाला प्रभु ही माली। खेता का स्वामी वहीं हाली॥
लाख भक्तो मे पुष्प अकेला। अनुरागी राग पराग खेला॥
दर्पित लूसिफर प्रभु से बाला। प्रभु और प्रभु भक्ति यूँ मोला॥

दोहा — भक्ति रूप दखूँ जरा ज्ञानी वह विद्वान।
कष्ट भुलावे पहिचान तेरा भक्त महान॥

सभल कर एलीपज यू बोला। धीरज धर! अय्यूब क्यू डोला॥
दुख के घाव प्रभु जो देता। मरहम चैन भी वही देता॥
धन्य मनुज जिसे प्रभु तचावे। प्रभु ताड़ना तुच्छ क्यो पावे॥
दिन को रात समझ चकराता। भ्रमित बुद्धि प्रभु स टकराता॥
तू ज्ञानी, शिक्षा देनेवाला। दीन सहाय बल भरने वाला॥
चाल–चलन जो खरा है तेरा। रहेगा रक्षक प्रभु मत मेरा॥

दोहा — सृष्टि कर्त्ता पवित्र न्यायी मनुज मिट्टी नाशवान।
करता क्यो प्राण अधीर श्वासो का कर मान॥

मेरी विपदा खेद को तोलो। कहे अय्यूब तुला धर बोलो॥
बालू के किनको से भारी। हुए प्राण मेरे विषधारी॥
आशा धरूँ धीरज रखू कैसा। झनझनाता पीतल मन ऐसा॥
भाई बँधु सब ने छिटकाया। पापी अनर्थ कारी ठहराया॥
अधोलोक दृष्टान्त बनाया। शत्रु उपहास कटु जग सुनाया॥
प्रभु श्रमी सेवक विनीत पूरा। मजदूरी मे क्या रहा अधूरा॥

दोहा — प्रभु से न्याय माँगता हूँ अर्पित प्रभु अधीन।
धन मान सब लुट गया वायु से प्राण दीन॥

कहे बिल्दद मन तेरा द्रोही। कर न बात तू प्रभु–विद्रोही॥
मनुज प्राण एक पौधे जैसा। जैसा खाद बढ वह वैसा॥
खाद अधिक पौधा मुरझाये। बुद्धि अतिरेक भ्रम उलझाये॥
बूँद बूँद तू चुका मयादा। अर्थलाभ ताला प्रभु वादा॥
सग प्रभु के मन न बहाया। प्रभु पर्वत तू चढ़ नहीं पाया॥
टेक लगायी शोभावाली। चाल चली तून जगवाली॥

दोहा — निज माह का अराधन प्रभु लख कन्राइ।
भ्रात उद्भ्रान्त तू शापित सुन न प्रभु दुहाइ॥

माँग लिया भक्त मन भाया। असद स्वाग भर 'लूसिफर आया।।
जग वैभव लूट मन झकझोरा। देखा भक्त नहीं है कोरा।।
पीड़ा तन देता अब भारी। फोड़े–फुंसी कष्ट रूप धारी।।
क्षार क्षार तन अगन झुलसाया। बागे फाड़े राख लुटाया।।
'तेरी दया हो प्रभु कर छाया। 'मैं हूँ पापी 'ठीकर काया ।।
डूबा जहाज हाय लुटा कैसा। टूटा बिखरा अय्यूब ऐसा।।

दोहा — हहरा गिरा दाम्पत्य तरू और सब आधार।
पत्नी मन भरा जुगुप्सा पति–प्रेम क्षीणधार।।

अय्यूब घिरा विपदा भारी। हाल सुन मित्र आये सुखकारी।।
'एलिप 'बिल्दद 'सापर सारे। रिसते घाव देख मन हारे।।
मित्र कष्ट आकुल जलते, रोते। निज आँसुआ घाव वे धोते।।
कैसा सात्विक धर्म प्रणेता। सत्सेवक सद्भावी अग्रेता।।
धर्म नीति नय नहीं अभिमानी। प्रभु विश्वासी कर्म लीन दानी।।
दया दीप कर्म क्यो बुझ जाता। हाय दु शान्ति मित्र कष्ट पाता।।

दोहा — कैसा दुख झुलसन कैसी सुह्रद करते विलाप।
बिलखते आर्त आलाप धर–धुलि सिर श्राप।।

धिक–धिक जीवन अय्यूब धिक्कारा। लील गया भीषण अंधियारा।
हाय अधकार मृत्यु ने घेरा। जीवन कैसा सुख–दुख डेरा।।
धुध घिरा मै प्रकाश हेरा। पाप जन्म का हुआ बसेरा।।
'घेरे बँधा क्यो? मित्र समझाये। अर्थ जन्म का मुझे बताये।।
अधर्मी सुख सेज हर्ष मनाता। धर्मी को कष्ट या उलझाता।।।
नगा आया नगा ही जाता। मन हताशा सताप बढाता।।

दोहा — देह पीड़ा मन उदास कलप रहा दिन रैन।
दीन विपन्न मैं पड़ा दुख–बधक नहीं चैन।।

सभल कर एलीपज यू बोला। धीरज धर! अय्यूब क्यू डोला।।
दुख के घाव प्रभु जो देता। मरहम चैन भी वही देता।।
धन्य मनुज जिसे प्रभु तचावे। प्रभु ताडना तुच्छ क्यो पावे।।
दिन को रात समझ चकराता। भ्रमित बुद्धि प्रभु स टकराता।।
तू ज्ञानी, शिक्षा देनेवाला। दीन सहाय बल भरने वाला।।
चाल-चलन जो खरा है तेरा। रहेगा रक्षक प्रभु मत मेरा।।

दोहा — सृष्टि कर्त्ता पवित्र न्यायी मनुज मिट्टी, नाशवान।
करता क्यो प्राण अधीर श्वासो का कर मान।।

मेरी विपदा खेद को तोलो। कहे अय्यूब तुला धर बोलो।।
बालू के किनको से भारी। हुए प्राण मेरे विषधारी।।
आशा धरूँ, धीरज रखू कैसा। झनझनाता पीतल मन ऐसा।।
भाई बँधु सब ने छिटकाया। पापी अनर्थ कारी ठहराया।।
अधोलोक दृष्टान्त बनाया। शत्रु उपहास कटु जग सुनाया।।
प्रभु श्रमी सेवक विनीत पूरा। मजदूरी मे क्या रहा अधूरा।।

दोहा — प्रभु से न्याय माँगता हूँ अर्पित प्रभु अधीन।
धन मान सब लुट गया वायु से प्राण दीन।।

कहे बिल्दद मन तेरा द्रोही। कर न बात तू प्रभु-विद्रोही।।
मनुज प्राण एक पौधे जैसा। जैसा खाद बढ वह वैसा।।
खाद अधिक पौधा मुरझाये। बुद्धि अतिरक भ्रम उलझाये।।
बूँद बूँद तू चुका मयादा। अर्थलाभ ताला प्रभु वादा।।
सग प्रभु के मन न बहाया। प्रभु पर्वत तू ढ नहीं पाया।।
टेक लगायी शाभावाली। चाल चली तून जगवाली।।

दाहा — निज माह का अराधन प्रभु लख कराइ।
भ्रत उद्भ्रान्त तू शापित सुन न प्रभु दुहाइ।।

नहीं। नहीं। मैं नहीं प्रवासी। मगऊमय चेतन है सर्वव्यापी॥
मानव-विरव किराव एक न्यारा। प्रभु दामन नहूँ मैं प्यारा॥
मनुज परिस्थिति कैसी अहरी। लक्ष्य-दृष्टि उराव सी हरी॥
सेना पर सना यह जैसा। धवल भव मायारु कैसे॥
भूला भटका मैं हू राही। नाव पग अस्पृश्य प्रवाही॥
आधी झल उतरना नहूं। बिलनई आस न दामन नहु।
दाहा – राहू कैसे प्रभु दूरी, सुनता नित अरज्जन।
जीवन का हरकारा बह रहा अनजान॥

कहे सापर प्रभु करूणा पाय। परम निमल धर तू गाय॥
जीवन रूपान्तर आय कैसे? नह मान प्रभु पाय कैसे॥
ममत्व कीट तिल तिल खाया। आत्म-दलन मुखर स्वर पाया॥
अजगर सा रेंग गिरा पानी। दुख पतझर करता है मानी॥
धूर्त उद्दामी उदार मांगे। फुसला दाता बांधे धागे॥
स्वार्थ भरे भाव मन आत्मा। भूला तू परम प्रभु परमात्मा॥
दाहा – हाय जा तू फैलाय कुटिल कपट से दूर।
भार उजियाला पाव पर तू है मगरूर॥

कहत मित्रगण ह हठवादी। पूर्वी पवन सा तू विवादी॥
काठ ठुका तू कडुवा उत्पाती। मन दरिद्री निनामी निपाती॥
पागल गा भटक मतिहारा। हर अधकर, धुंध से हारा॥
तू है टपकत छप्पर जैसा। अर्न्त विघटन पतन तू ऐसा॥
व्यर्थ भरोसा मन का धोखा। शत शत खंडित मडन अनोखा॥
मनका सा बिखरा तू ऐसे। ईश्वरीय-छड़ी बचता कैसे॥
दोहा – बुद्धि शिखर चढ बैठा युद्ध हेतु तैयार।
मैला सकारा छिद्र अनेक करता प्रभु तिरस्कार॥

बुद्धिमान मित्र मेरे प्यारो। वाणी तर्क बुद्धि के सहारो॥
चट्टान खोद मित्रो लिख डालो। लौह टाँकी शीशे ढ़ाला॥
ज्ञान जो तुम मुझे सिखलाते। कहो प्रभु दर्शन क्या तुम पाते॥
मैं हूँ प्रभु दर्शन का प्यासा। प्रभु मे अटकी मेरी आसा॥
सर्व शक्तिमान स्वामी मेरे। खोल प्रभु निज द्वार अब तेरे॥
आस नव विश्वास नव, दिखा गहे। सुनू गुँजार रहूँ प्रभु छाँहे॥

दोहा — दुख कातर मन है अधीर कैसे करू सतोष।
जीर्ण वस्त्र से जीर्ण प्राण, रिक्त जीवन कोष॥

पुत्र 'बारकल नयन मुसकाया। प्रीत जल प्लावित शीश नवाया॥
मैं 'एलीहू प्रभु आज्ञाकारी। 'तलछट छान रहे उपचारी ॥
अध—कूप भ्रम वही पुराना। बोझ भारिल दरिद्री पहिचाना॥
उगे सूर्य छिप जाते तारे। पर अम्बर—अक रहते सारे॥
प्रथम अक 'मय पढ़ घबराया। अंतिम अक अविदित न पाया॥
तत्व छियानवे पुतला सलौना। अध—वीथी भटकता बौना॥

दोहा — है सच बात यही गुनो सहज बोध पहिचान।
देख न पाये मनुज प्रभु महिमा महान॥

सुनो! वह आकाश क्या गाता। प्रभु हस्तकला मडल दिखलाता॥
ऊँचे स्वर स्तुति गान सुनाता। प्रभु सनातन प्रमाण दिखाता॥
हिम शिखर स्वर्ण मुकुट पहिनाता। शुभ्र धवल मेघ भी दमकाता॥
तरगित सागर लहर नचाता। सावन बोझिल मेघ झुकाता॥
उजले मेघ शरद ओढ़ाता। ओस बिन्दु किसलय बैठाता॥
उन्मत्त निर्झर आह्लादित गाता। दिव्य आभा कमल हरषाता॥

दोहा — कुहरा, मेह टपकावे हिम—कुसुमो मे ज्ञान।
प्रभु स्व अनुभूति विश्वास आलोक वह महान॥

पूरब दिशा ईश्वरीय उजियाला। परिश्रम ज्ञान विभुता वाला॥
उत्तर प्रभु मंडप श्वेत हिमानी। मन वेग ज्यों दक्षिन तूफानी॥
कण कण समा रहीं विभुताए। दिशा दिशा प्रभु महिमाए॥
पावन चैतन्य स्वर धारा। मनुज मन दर्पण मैला हारा॥
खंड खंड कर द्वैत जुटाता। तर्क ज्ञान त्रुटि मन बनाता॥
टूटा ठोकर कलश बढ़ाता। मलिन विवेक रास टपकाता॥

दोहा — सुन दुख खुजाली ऐसा दहक ज्यों फफोल।
पदाघात लूसिफर देता प्रलोभन लेता मोल॥

जलगज सम अहं है बलधारी। देख पहिराव दंत–पंक्ति आरा॥
आँख भार पलक चमकीली। मुख चिनगारी उगल पीली॥
नथुन धुआ भरा जहरीला। निस्पंद दृश्य कठोर पथरीला॥
बर्छी भाल बेध न पाय। सुध–बुध भूल वीर भय खाय॥
वश करना उस निष्फल जाता। जलगज यह मनुज मन लुभाता॥
श्वेत लीक गड़ मन हारी। धीर गंभीर जल मध भारी॥

दोहा — निर्भय गर्व का यह राजा कुरूप सा विचार।
प्रतिफलन आस रूग्णता कर लुंठित अधिकार॥

सत् असत् रूप परख जो पाय। श्वेत लीक फिर नहीं लुभाय॥
दुष्पूर तृष्णा फिर क्या लेवे। इच्छा फैलाव क्षितिज न देवे॥
आत्मिक बदलाव मन तराय। जलगज सरल निर्दोष दिखाय॥
भव्य भाव समता जब आये। उपद्रव विभ्रम सब मिट जाये॥
प्रार्थना पखुरियाँ खिल जाय। प्रकाश–ईश्वरीय मन समाय॥
नेह दीप आभा मुस्काय। जीवन संयम संगीत सुनाये॥

दोहा — मन उकाबी हो जाय कर बसेरा चट्टान।
धूल है कुंदन आपोर त्याग पत्थर जान॥

भीरू शुर्तमुर्ग धावन थम जाये। पॉख हीन मर नहा सताय।।
तर्कस सॉग उठ गाह भाला। मन हावे ज्या अश्व निराला।।
अग्नि ज्वार फिर गढ़ न आव। घात परिस्थिति मन सह जावे।।
दुख अराधन मन को भाय। गवाक्ष खुले मन भराव पाय।।
कष्ट पीडा मान पहिचाने। देह प्रक्रिया रूपान्तर जाने।।
पथराया मन स्पदन आय। मन गश्रु विराट दरस पाय।।

दोहा – प्रीति पाश अश्रु झलक बढ जाय प्रभु गाह।
आतुर साक्ष्य औ मिलन स्वर्गिक आनद राह।।

टिम टिम तारे अक बनावे। लक्ष हजारा दान बरसावे।।
निर–आस दिव्य बोध समाया। अय्यूब आनद दिव्य पाया।।
जा निर–आस क्या फिर आशा। बा न जात हार आकाक्षा।।
क्या करे फिर वहॉ निराशा। अर्थ गहन समेटे हुए निराशा।।
अय्यूब हा निर आस प्रभु गाया। जीवन प्रभु मय परम बनाया।।
एलीहू झुक झुक शीश नवाये। प्रभु जय गान महिमा गाय।।

दोहा – भाव मूर्च्छना टूटा खुला मन दिगत आस।
चैतन्य शक्ति आनद मन मे भरा प्रकास।।

जीवन सम्पदा वादी पायी। बूँद बूँद चमका मुसकाया।।
नव पल्लव वृक्ष वृक्ष खिल आये। सुरभि सौरभ पुष्प भर लाय।।
पवन शीतल पुलकन भर लायी। महान प्रभु महिमा कह गायी।।
अय्यूब ग्रात सा बहता जाता। प्रभु आनद आशीष पाता।।
वाणी कहे मन आधि व्याधा। दूर हुई दीप बुझा न आँधा।।
निर्मल तज पारदर्शी प्रकाशी। पृथ्वी स्वर्ग बधे ज्या भाषी।।

दोहा – दिगत स्वर गूज अनुगूज वह कुन्दन शुद्ध धार ।।
कौन कुन्दन शुद्ध धार । भक्त अय्यूब विचार।।

सर्ग चोदहवाँ

सभोपदेशक

र्पण किग्नी भाव है धामा। रहता ज्यादा क्या लाँघ सीमा॥
समय से लड़ता भिड़ता भागा। उलझ गया साँसा का धागा॥
सुधिया का धन अब क्या लूटा। पल पल अनुबंध टूटा॥
जीवन चक्र अजर है अनाखा। आज पुराना कल नया राखा॥
खड़ा नित नूतन का राजा। कह उपदेशक वाणी अधिराजा॥
आ सुन उपदेशक की बात। क्या जीवन पाता आघात॥

दोहा — देह का भर भर परासा यही समय का ताट।
ताज तख्त किया भरोसा मन अटका पर्दे का ओट॥

नद नाले सब समुद्र समाय। पर जल खारा हो सब पाय॥
मूरख मनुज बावला ऐसा। आनंद में मतवाला कैसा॥
आशाओं के महल बनवाय। पकड़ वायु खुद उड़ जाय॥
बाँधे मनसूबे औ हरषाय। महल बनाय बाग लगाये॥
सोना चाँदी मणि जड़वाय। बारी कड़ खेत जुतवाय॥
दास दासी सेवक मँगवाय। साज सजा नौबत बजवाय॥

दोहा — नगर धनाढ्य कहलाय छूट गया ला तार।
व्यर्थ व्यर्थ व्यर्थ सार रख सताप धार॥

आग दरिया जीवन बनाया। ठाठ मार गाता लगाया॥
अश्व रथ तलवार उठाया। निज जवानी सफल बतायी॥
धन लिप्सा से बढ़ा क्या जाना। संयम के क्षण नहीं पहिचाना॥
जकड़ा बंधन अम्बर उतार। ताड़ लाय सितारे सारे॥
हिल गया गगन ऐसा हुँकारा। भूल से कभी प्रभु न पुकारा॥
पाय जीवन–प्रभात कैसे? गली अंधेरी राह मिले कैसे॥

दोहा — भूतल पाना एक किया लिख नये इतिहास।
व्यर्थ व्यर्थ शक्ति का नाश बुद्धि कर उपहास॥

पीढ़ा आता पीढ़ी जाती। पृथ्वी अटल महिमा गाती।।
नाशवान है यह ठिकाना। निज श्रम पाली का ये जाना।।
क्या! पाली श्रम मान करेगा। श्रम में श्रम का दान करेगा।।
जीवन एक निर्माण कहानी। रोग संताप गुण लासानी।।
मृत्यु व्याधि जरा औ जवानी। इनसे बचा क्या कोई ज्ञानी।।
देह सरा को है सुन फानी। जा पशुता जात वही ज्ञानी।।

दोहा — बिंदु में सिन्धु समाया मन से कर ले गौर।
सब है मिट्टी के पुतले व्यर्थ व्यर्थ सब ठौर।।

श्रम की महिमा बड़ी निराली। श्वेद बिन्दुओं की यह प्याली।।
इस प्याली से जो भी पाता। झूम झूम जीवन का जीता।।
श्रम से काम सफल सब होते। श्रम पथिक मीठे फल खाते।।
श्रम से धरती धनी हो जाती। महाकाव्य बन महिमा गाती।।
हाथ आलसी धरता छाती। डाल दीपक–तल न बाती।।
देख श्रम के काम जल जाता। मन कुढन ताप ही पाता।।

दोहा — चैन के साथ एक मुट्ठी देती मन को चैन।
दो मुट्ठी से कहीं भली जो दे कुढन दिन रैन।।

हे श्रमी तू है अलबेला। भागे श्रम करे तू अकेला।।
न बेटा न सगी भाई तेरे। फिर भी धन तुष्टि नहीं तेरे।।
लालस भरा मन चैन न पाता। बूझ बूझ यह धन क्यों कमाता।।
व्यर्थ दुख भरा काम है तेरा। जीवन सुख रहित निरा अँधेरा।।
सुन एक से दो अच्छे होते। श्रम का फल बाँट वे खाते।।
गिरे एक • दूजा है उठाता। गिरे अकेला क्या कोई आता।।

दोहा — दो बनाते मेवा पथ करते शब्दों का मेल।
तीन तागों की डोरी सत्संगत का सुमेल।।

सर्ग चोदहवाँ

सभोपदेशक

दर्पण किसी गाव है धामा। कहती दादा क्या लाँघी सीमा॥
समय स लड़ता भिडता भागा। उलझ गया सासा का धागा॥
सुधिया का धन अब क्या लूटा। पल पल अनुबध टूटा॥
जीवन चक्र अजर है अनाखा। आज पुराना कल नया ताखा॥
खड़ नित नूतन का राजा। कह उपदेशक वाणी अधिराजा॥
आ सुन उपदेशक की बात। क्या जीवन पाता आघात॥

दोहा — दह का भर भर परासा यही समय की चाट।
ताज तख्त किया भरासा मन अटका पर्दे का आट॥

नद नाले सब समुद्र समाय। पर जल खारा ही सब पाय॥
मूरख मनुज बावला एसा। आनद म मतवाला कैसा॥
आशाआ क महल बनवाय। पकड़ वायु खुद उड जाय॥
बाँधे मनसूब औ हरषाये। महल बनाय बाग लगाये॥
साना चाँदी मणि जडवाय। बारी कुड खेत जुतवाय॥
दास दासी सवक मँगवाय। साज सजा नौबत बजवाय॥

दोहा — नगर धनाढ्य कहलाय छूट गया ला तार।
व्यर्थ व्यर्थ व्यर्थ सार रख सताप धीर॥

आग दरिया जीवन बनाया। ठाठ मार गाता लगाया॥
अश्व चढ़ा तलवार उठाया। निज जवानी सफल बतायी॥
धन लिप्सा स बढ़ा क्या जाना। सयम क क्षण नहीं पहिचाना॥
जकडा सधन अम्बर उतार। ताड़ लाय सितार सारे॥
हिल गया गगन ऐसा हुँकारा। भूल स कभी प्रभु न पुकारा॥
पाय जीवन–प्रभात कैसे? गली अधेरी राह मिले कैसे॥

दोहा — भूतल पाना एक किया लिख नय इतिहास।
व्यर्थ व्यर्थ शक्ति का नाश बुद्दि कर उपहास॥

पीढ़ा आती पाढ़ी जाती। पृथ्वी अटल महिमा गाता।।
नाशवान है रह ठिकाना। निज श्रम पाढ़ा का ट जाना।।
क्या! पाढ़ा श्रम मान करगा। श्रम म श्रम का दान करगा।।
जीवन एक निर्माण कहानी। रान सताष गुण लासानी।।
मृत्यु व्याधि जरा औ जवानी। इनसे बड़ा क्या कोई ज्ञानी।।
रह सब को है सुन फानी। जा पशुता जाते वही ज्ञानी।।

दाहा — बिंदु मे सिन्धु समाया मन स कर ल गौर।
सब है मिट्टी क पुतल व्यर्थ व्यर्थ सब ठौर।।

श्रम की महिमा बड़ी निराली। श्वद बिन्दुओ की यह प्याली।।
इस प्याली स जो भा पाता । झूम झूम जावन का जीता।।
श्रम स काम सफल सब हात। श्रम पथिक मीठे फल राते।।
श्रम स धरता धना हा जाती। महाकाव्य सब महिमा गाता।।
हाथ आरुसी धरता छाती। डाल दीपक–तेल न बाती।।
दख श्रम क काम जल जाता। मन कुढन ताप ही पाता।।

दाहा — चैन के साथ एक मुट्ठी दती मन को नैन।
दा मुट्ठी से कहीं भली जो दे कुढ़न दिन रैन।।

ह श्रमी तू है अलबेला। भागे श्रम करे तू अकेला।।
न बेटा न सगी भाई तर। फिर भी धन तुष्टि नहीं तरे।।
लालस भरा मन चैन न पाता। बूझ बूझ यह धन क्यो कमाता।।
व्यर्थ दुख भरा काम है तेरा। जीवन सुख रहित निरा अँधेरा।।
सुन एक से दा अच्छे होते। श्रम का फल बॉट वे साते।।
गिरे एक दूजा है उठाता। गिरे अकेला क्या कोई आता।।

दोहा — दा बनाते मेवा पथ करत शब्दा का मल।
तीन तागो की डोरी सत्सगत का सुमल।।

सज्जन मनुज सदा मुसकाते। जीवन–कोण सदा हरषाते।।
सूर्य प्रकाश विभव–मय जैसे। गुण शाली आदर पाता एस।।
आचरण है मनुज कसौटी। लोक प्रतिष्ठा खरी कसौटी।।
कार्य पटुता राजा ही लाये। नया उमग उत्साह जगाये।।
जो नेतृत्व चतुराई न धारे। चतुर बालक से राज हारे।।
दस बुद्धि चतुराई जगावे। बुद्धि समझ नई राह बनावे।।

दोहा – प्रजा तो सेवक चाहे, जो देव प्रतिदान।
अधिकार दे तभी तक जब तक सच्चा प्रधान।।

भवन प्रभु के जब तू आय। भाव विनात धार कें जाये।।
वचन मनौती रहना सीमा। बढ़ चढ़ बात नहीं रह धीमा।।
कहे मनौती जो तरी वाणी। पूरी करना सुन ल प्राणी।।
सुख म भूल बन कर लोभी। फँसे पाप म फिर प्रलोभी।।
धन की प्रीति बढ उदासी। रहती लालस सदा ही प्यासी।।
व्यर्थ सपनो से दूर बसेरा। उपकार भरा मन हो तेरा।।

दोहा – निर्धन पर अंधेर न करना रखता तुझ से आस।
भूमि उपज सब के लिये जान प्रभु का पास।।

बडी बुरी बला एक है ऐसी। धन सचय की बात यह कैसी।।
धन का स्वामी धन से जाये। बुरे काम मे धन उड जाये।।
खाली हाथ सब हँसते कैसे। धन से तुष्ट हुआ कौन ऐसे।।
व्यर्थ कमाया व्यर्थ गँवाया। खाला हाथ तू था आया।।
दुख और रोग बनाया छाता। आघाते सहता घबराता।।
खाली हाथ ही अब जाता। पुत्र सन्मुख पिता पछताता।।

दोहा – व्यर्थ व्यर्थ सब व्यर्थ है सतोष सुखद महान।
धन–अधेरा चहुँ ओर झेल रहा अपमान।।

जिसने जाना प्रभु को स्वामी। उसे सब कुछ देता अन्तर्यामी।।
आयु भरपूर वह है पाता। आनदित मन प्रभु गुण गाता।।
नीति रहे सदा सद्-आचारी। मिले प्रभु का दान उपकारी।।
हर क्षण श्रम को सफल बनाता। रोग क्रोध शोक नहीं जलाता।।
सतोष सदा जो अपनाता। महानाश से बच बच जाता।।
बुद्धि चक्षु देत हैं सहारा। वही उत्तम अमिट है उजियारा।।

दोहा — प्रभु अनुग्रह ग्रहण करो व्यर्थ न होवे ज्ञान।
घटी मे रहता आनद यह है प्रभु का दान।।

आयु का क्या गर्व अभिमानी। सौ सौ पुत्र व्यर्थ बेमानी।।
जीवन मे जो मान न पाये। अत समय की क्रिया न पाये।।
सीधी बात समझ न आये। मरा सिह क्या बल दिखलाये।।
फँसाना जाल मछली जैसे। समय दुखदायी आता ऐसे।।
उलझे चिड़िया फदे मे जैसे। विपदा मनुज उलझाती ऐसे।।
जितने दिन प्रभु ने ठहराये। उजल वस्त्र तू नहीं गमाये।।

दोहा — व्यर्थ व्यर्थ सब व्यर्थ है रहे प्रसन्न न प्राण।
जीवन हेतु श्रम सारा जीवन का लख मान।।

एक बुराई सूर्य के नीचे। सत्य ने आख हाकिम मीच।।
मान प्रतिष्ठा मूरख को देता। बुद्धिमान से आसन लेता।।
दास लेता घोड़े चढ़ लेखा। प्रतिष्ठित धर्मी लुठित देखा।।
डस सर्प बाड़ा जो तोडे। गिरे उसी मे खड्डा जो खोड़े।।
पत्थर जिसने हाथ उठाया। निज को घायल उससे पाया।।
आलस घर दर से भटकाता। हाथ की सुस्ती घर टपकाता।।

दोहा — यदि कुल्हाड़ा है बोदा नहीं है पैनी धार।
बल अधिक लगाना होगा, ले बुद्धि आधार।।

सुन रिश्वत नाग–पाश जैसे। बुदि नाश मृत्यु गीत एस।।
दुष्ट–दुष्टता भागीदारी। ढीठ ढिठाई की हिस्सेदारी।।
उतावला हठ मान गर्वीला। अधेर करता गज हठीला।।
मूरख हँसी उबलती ऐस। जलते काँटे चर्राहट जैस।।
समय डोर बँधे सब किनार। आदि अत तक बूझ ल सारे।।
रूपया तो है छली किनारा। बुदि समझ का पकड़ सहारा।।

दोहा – समय चक्र प्रभु घुमाता। सबका दता न्याय।
समय है ज्ञान फुलवार। दता शीतल छाँय।।

आज आज के लिए उजाला। आज आज के लिए ज्वाला।
अभी है अभी मिटना होगा। कौन बताय । कल क्या होगा।।
बुझे दीप कल कौन सा कैसे।। जीते मृत्यु राक प्राण कैसे।।।
कोई धर्मी नहीं है ऐसा। भूल चूक बन जाय जैसा।।
अति से बचना बुद्धिमानी। तनिक चूक मात खाये ज्ञानी।।
मन की बात प्रगट हो जाये। उड़े पक्षी आकाश ल जाय।।

दोहा – जिसे प्रभु टेढ़ा किया सीधा कर दे कौन।
मूरख डूबता विलास कल की सोचे कौन।

पापी एक ही नाशक होता। बहुत भलाई नाश कर सोता।।
मरी मछली जो तल गिर जाये। गधी–तेल सडे, बुस जाय।।
मत्र से पहले सर्प डस जाये। क्या लाभ मत्र से मिल पाये।।
शास्त्रा से उत्तम बुद्धि पहिचाना। नगर बचे समझ से माना।।
बुद्रि वचन व्यर्थ न होवे। सिर पर तेल घन्न ने होवे।
मूर्ख चिल्लावे शोर मचाये। बुद्दि वचन प्रभुता कर जाये।।

दोहा – विजयी होता प्रभु अनुग्रह नही दौड का वेग।
शूर नहीं युद्ध जीते जीतता है प्रभु तेग।।

उत्तम वचन बहते धीमे धीमे। बुद्धि पराक्रम बल हैं झीने।।
शक्ति बुद्धि व्यर्थ जो खोता। काट लकडी निज ठौर सोता।।
घटी–बढ़ी कर क्या दुख पावे। सुख–कोष 'घटी ही बढावे।।
टेढा मारग सदा उलझावे। सीधा मारग घर पहुँचावे।।
भेद–बुद्धि अधकार बढाये। ज्ञान बढे, तब दुख बढ जाये।।
'शाप किसी को कभी न देना। 'हाय किसी की कभी न लेना।।

दोहा — मनुज प्रकृति अधोगामी ढुलक जाये अनजान।
जो कर मन शोधन 'घटी मे पावे ज्ञान।।

जल के ऊपर डाल दे रोटी। दिन बीत पर हो न छोटी।
सात वरन आठ स बढाओ। भाव सद्भाव सत्र अपनाओ।।
बादल जल भर भर लाते। उडेल भूमि वे हरषाते।।
गिरा वृक्ष वहीं पडा रहेगा। जो सोचे वह मरा रहगा।।
सुधि वायु का जो रखगा। वह बाज क्या बोने पायेगा।।
देखता बादल जो रहेगा। फमल नहीं लवने पायेगा।।

दोहा — भोर को बीज अपना बो साझ रोक न हाथ।
वायु मार्ग बदल जाये सब कुछ प्रभु के हाथ।।

यौवन का उपहार जो पाया। आनद गन झूम तू गाया।।
घर दीवार लाघ तू आया। तन मन मे रामाच समाया।।
नस नस पुलकित भरी जवानी। डगर न जाने करे मनमानी।।
जीवन–मृत्यु भूल भूलैया। ल्गर खोल चला गवैया।।
जग व्यापार समझ न पाया। जल–धारा म डूब समाया।।
कोलाहल से अब घबराया। अतिशय मोह सब झूठा पाया।।

दाहा — यौवन म आनद कर पर न हा मति भग।
प्रभु स डरना ह जवान रखना विवक सग।।

जाने का दिन जब आयगा। जग सहारा पास न पायगा।।
तन तेरा विघटन पायेगा। सग दुख कई–कई लायगा।।
चन्द्र सूर्य देख न पायेगा। ज्योत प्रकाश फिर न आयेगा।।
तारे अधकार छिप जायेग। वर्षा मय नयन घिर आयगे।।
बद झरोखा तू पायेगा। सड़क किवाड़ खुल न पायेगा।।
देह पहरूए काप झुकेगे। पीसन हार काम छोड़ रूकेग।।

दोहा – सकेत देह ये देगा जग कहेगा दीन।
जीवन व्यर्थ नहीं होवे प्रभु म रहना लीन।।

प्राणो का रथ जर्जर पायगा। जब देह–विपदा दिन आयेगा।।
धीमा शब्द चक्की पायगा। सग चिड़िया तड़के जागगा।।
वजन टिड्डी भारी पायगा। पर वृक्ष बादाम अब खिलेगा।।
ऊँचे स्वर भय तू खायेगा। तन डरावना हो जायगा।।
भोजन मान भूल तू जायेगा। सासो का मोल चुकायेगा।।
फिर रजत तार टूट जायेगा। स्वर्ण कटोरा फूट जायेगा।।

दोहा – सोते पास घड़ा फूटे रहट टूटे कुड पास।
मिट्टी मे मिट्टी जायेगी आत्मा प्रभु के पास।।

उपदेशक प्रजा ज्ञान सिखलाता। सब मन भावन बात सुनाता।।
तन मन निर्मल रखना होगा। देह चोगे को गलना होगा।।
व्यर्थ व्यर्थ सब व्यर्थ होगा। बुद्धि का तू पहन ले चोगा।।
चलने का दिन जब आयेगा। कह न पायेगा मिट जायेगा।।
कामा का अत नहीं आयेगा। क्या अर्पण प्रभु कर पायेगा।।
थकी देह मन उलझायेगी। मन वेदना तन झुलसायेगी।।

दोहा – बुद्धि की पैनी बाते जीवन मेख समान।
चौकस रहो सावधान सदा रहे प्रभु ध्यान।।

सर्ग पन्द्रहवाँ

राजा

युग परिवर्तन का अग्र नेता। एक दृष्टा सत्य नीति विजता।
देश शिरौन गुलाब जैसा। लुभा रहा जग बगिया ऐसा।
नव्य प्रभा सुलेमान अनोखा। नेह परिपूर्ण कुन्दन चोखा।।
भूल गया प्रभु विधि आशाए। शून्य ज्योत चूका सीमाए।।
भ्रात पथिक सा मारग भूला। भटक गया ज्या किश्ती अकूला।।
हे राजा तू कुछ नहीं पाया। अ–पथ खड़ा ध्वज लहराता।।

दोहा — वर्ष चालीस गगन गूँजा सुन्दर सुहावन रुप।
जगमग दीप बुझा महल गिरा दश अधकूप।।

राज इस्त्राएल बटा दो भागा। गोत्र यहूदा जुड़ा न धागा।।
सुलेमान पुत्र रहोब राजा। गोत्र यहूदा का अधिराजा।।
प्रजा कहे सुन हे नीतिज्ञाता। कर–मुक्ति दिला हे दाता।।
कहे पुरनिय जुआ है भारी। युव–जन–मति राज अ–हितकारी।।
प्रजा ताड़ना तब बढ़ी एसी। सौ सौ बिच्छु डक क जैसा।।
यरोबाम विद्रोह रग लाया। मगर बतेल पर्व मनाया।।

दोहा — गृह युद्ध नगाड बाजे उत्तर दक्षिण भू भाग।।
सामरिया औ यरुशलम रहे नहीं बेदाग।।

गोत्र दस इस्त्राएल का राजा। यारावाम इस्त्राएली राजा।।
भ्रष्टाचार को दिया बढावा। नबी दमन और कर चढ़ावा।।
दुष्ट कहलाया शापित राजा। फिर नाबाद वशा एला राजा।।
दिन सात जिम्री आसन विराजा। दुर्बल आहाब इस्त्राएल राजा।।
जागे शत्रु दौलत मस्ताने। इजबल सगा मस्त दिवाने।।
एलियाह नबी वचन बोले। माशा रत्ती घट न तोले।।

दोहा — इजबल प्राण गिरगा दता नबा शाप।।
नबी घातक तू श्रापित कुटिल मुक्ति का छाप।।

घात करा इजबेल पुकार। एलियाह बसा करीत किनारे।।
नमका जगल मे वह सितारा। मीत बना काग एक प्यारा।।
सारपत नगर एलियाह जाता। प्रभु पहिचान सामने पाता।।
निर्जन म विश्वास की रेखा। उस विधवा म प्रभु का देखा।।
गाहू कुछ पानी–टुकडा रोटी। दासी बान रही आस छाटी।।
तनिक तेल मुट्ठी भर मैदा। निर्धन जग म क्या होता पैदा।।

दाहा — मन म सशय न आवे चुके न मैदा तल।
नीरोग है पुत्र तेरा सुख दुख जीवन खेल।।

महादान विधवा ने पाया। दिव्य–आत्मा शीश झुकाया।।
आहाब सदेश नबी भिजवाया। इजबेल अह दूना मुसकाया।।
धधक उठी लोहित पिपासा। सिहर उठी इसरी जीवन आशा।।
हे इजवल महल रह जात। कुटिल मनसूबे सब जल जाते।।
सब मिल प्रभु को भेट चढाव। महिमा उसका हम सब गाव।।
दीपित वेदी नह क धागे। क्रूर हिसक भाव सब त्यागे।।

दोहा — नबी बाट रह दिव्यान्न बचे सब मृत्यु–अकाल।
उडेल रह जल वेदी ऊँचा हो मनुज भाल।।

गति वेग बढा रही तराजू। विवेक झूलता आजू–बाजू।।
कर्मेल पर्वत बन गया साक्षी। अग्नि बन सत्य प्रगटा भाषी।।
राजा न प्रभु को घट ताला। सग इजवेल मिल वह बोला।।
नबी सब बदीगृह म डाला। एलियाह मीका एक न टाला।।
युद्ध मृत्यु आहाब मिटाया। शापित रक्त पौदान बिखराया।।
धरा लुठित इजवल दखा। रक्त चाटते श्वान अवलेखा।।

दाहा — प्रश्न एक वेदी चढ़ा हुआ तिरस्कृत विशष।
जटिल है युग की जड़ता पीडन सहता दश।।

यरदन कूल बढ़ता सग एलीशा। शुचि सगम ऐलियाह एलीशा।।
अब मैं यरदन पार जाता। ले ओढ़ दुशाला मैं जाता।।

जल मर्दन उठा बवडर ऐसा। सत् पथ अगन रथ के जैसा।।
मेघ गर्जन आँधी तट सूना। एलियाह महासेतु हर्ष दूना।।
पिता–पिता पुकार एलीशा। आत्मिक दान पाया एलीशा।।
बना द्युतिमान स्नेह धारा। जन मन आशा सब का प्यारा।।

दोहा – रोगी दुखी की छाया हर जावन दिया मान।
शुद्ध किया कोढ नामान, प्रभु प्रेम का प्रमाण।।

डूब डूब वादी अश्रु बहाये। दुष्ट रूप मनश्शे दिखलाये।।
गाफन म रखा देश ऐसे। गिरे कहा नबी कहे कैसे।।
चरवाहे हुए हाय शिकारी। इरादे हाय कैसे विकारी।।
गिरी कनाते ऐसा घेरा। तम्बू लुट गया हाय अन्धेरा।।
देखो मृत्यु महल घुस आयी। सियूयोन बेटी हाय अकुलायी।।
सिकुड़े बैठे अजगर लोभी। शेर चूहा से दौड़े क्षोभी।।

दोहा – साझ परछाई से लम्बे, हाय हत्यारे हाथ।
ठट्ठा करे लोग सारे बिक रहा देश हाट।।

दोहे– *कहे वादी मैं हारी नयन बरसता नीर।*
राजा दुर्बल यहोयकीन विकट क्षण मन अधीर।।
महादुष्ट है बेबीलोन लूटा चैन आराम।
लुट गया हाय प्रभु भवन नगर मान नीलाम।।
राजा सहित सब बधक कारीगर लोहार।
सिद्दिकियाह अब देनदार हुआ राज कर्जदार।।

ह सिद्दिकियाह! सुन राजा। जीवन मृत्यु राह तू विराजा।।
कसदी राज द्रोही न होना। विद्रोही बन राज न खोना।।
सुने क्यो नबी ज्ञान अज्ञानी। पिटवा कूप उतारा मानी।।
पलट गया इतिहास ऐसा। मिटा न पाये कोई जैसा।।
ताड़ शहरपनाह नगर छाये। कसदी सैन्य व्यूह रचाये।।
राजा बन्दी जकड़ा जजीरो। पैदल चले सग निज वीरो।।

दोहा – अतिम गुम्बद टूट गिरा रुक गया एक प्रवाह।
धुध भरा श्राप सन्नाटा कौन बनाय राह।।

घात करा इजबेल पुकार। एलियाह बसा करीत किनार।।
चमका जगल म वह सितारा। मीत बना काग एक प्यारा।।
सारपत नगर एलियाह जाता। प्रभु पहिचान सामने पाता।।
निर्जन म विश्वास का रेखा। उस विधवा म प्रभु का देखा।।
चाहू कुछ पानी–टुकड़ा राटी। दासा बान रहा आस छाटी।।
तनिक तल मुट्ठी भर मैदा। निर्धन जग म क्या होता पैदा।।

दाहा — मन म सशय न आव चुके न मैदा तल।
नीराग है पुत्र तरा सुख दुख जीवन खल।।

महादान विधवा ने पाया। दिव्य–आत्मा शीश झुकाया।।
आहाब संदेश नबी भिजवाया। इजबल अह दूना मुसकाया।।
धधक उठी लोहित पिपासा। सिहर उठी इसरी जीवन आशा।।
ह इजवल महल ढह जात। कुटिल मनसूब सब जल जात।।
सब मिल प्रभु का भेट चढ़ाव। महिमा उसका हम सब गावे।।
दीपित वेदी नह क धागे। क्रूर हिसक भाव सब त्यागे।।

दोहा — नबी बाट रह दिव्यान्न बचे सब मृत्यु–अकाल।
उडेल रह जल वेली ऊँचा हो मनुज भाल।।

गति वेग बढा रही तराजू। विवेक झूलता आजू–बाजू।।
कर्मेल पर्वत बन गया साक्षी। अग्नि बन सत्य प्रगटा भाषी।।
राजा न प्रभु को घट ताला। सग इजवल मिल वह बोला।।
नबी सब बदीगृह म डालो। एलियाह मीका एक न टालो।।
युद्ध मृत्यु आहाब मिटाया। शापित रक्त पौदान बिखराया।।
धरा लुठित इजवेल देखा। रक्त चाटते श्वान अवलेखा।।

दाहा — प्रश्न एक वेदी चढ़ा हुआ तिरस्कृत विशष।
जटिल है युग की जड़ता पीडन सहता देश।।

यरदन कूल बढता सग एलीशा। शुचि सगम एलियाह एलीशा।।
अब मैं यरदन पार जाता। ले ओढ़ दुशाला मैं जाता।।

जल यर्दन उठा बवडर ऐसा। सत् पथ अगन रव के जैसा।।
मेघ गर्जन ऑधी तट सूना। एलियाह महासेतु हर्ष दूना।।
पिता–पिता पुकारे एलीशा। आत्मिक दान पाया एलीशा।।
बना घुतिमान स्नहे धारा। जन मन आशा सब का प्यारा।।

दोहा – रोगी दुखी की छाया हर जीवन दिया मान।
शुद्ध किया काढ नामान प्रभु प्रेम का प्रमाण।।

डूब डूब वादी अश्रु बहाये। दुष्ट रूप मनश्शे दिखलाये।।
गाफन मे रखा देश ऐस। गिरे कहा नबी कहे कैसे।।
चरवाहे हुए हाय शिकारी। इरादे हाय कैसे विकारी।।
गिरी कनाते ऐसा घेरा। तम्बू लुट गया हाय अन्धेरा।।
देखो मृत्यु महल्ल घुस आयी। सियूयोन बेटी हाय अकुलायी।।
सिकुड़े बैठे अजगर लोभी। शेर चूहो से दौड़े क्षोभी।।

दोहा – साझ परछाई से लम्बे हाय हत्यारे हाथ।
ठट्ठा करे लोग सारे, बिक रहा देश हाट।।

दोहे – *कहे वादी मैं हारी, नयन बरसता नीर।*
राजा दुर्वल यहायकीन विकट क्षण मन अधीर।।
महादुष्ट है बेबीलान, लूटा चैन आराम।
लुट गया हाय प्रभु भवन नगर मान नीलाम।।
राजा सहित सब बधक कारीगर लोहार।
सिद्धिकियूयाह अब देनदार हुआ राज कर्जदार।।

हे सिद्धिकियूयाह! सुन राजा। जीवन मृत्यु राह तू विराजा।।
कसदी राज द्रोही न होना। विद्रोही बन राज न खोना।।
सुने क्यो नबी ज्ञान, अज्ञानी। पिटवा कूप उतारा मानी।।
पलट गया इतिहास ऐसा। मिटा न पाये कोई जैसा।।
ताड़ शहरपनाह नगर छाये। कसदी सैन्य व्यूह रचाये।।
राजा बन्दी जकड़ा जजीरो। पैदल चले सग निज वीरा।।

दोहा – अतिम गुम्बद टूट गिरा रुक गया एक प्रवाह।
धुध भरा श्राप सन्नाटा कौन बनाय राह।।

सर्ग सोलहवाँ

विलाप—गीत

बैठ डीह पर कवि एक गाता। नाश विनाश व्यथा सुनाता॥
नगरी जो भरपूर थी कैसी। बैठी विधवा सी हाय ऐसी॥
जातियो मे महान गतिमानी। प्रांतो की थी महारानी॥
हाय! अब कर्ज चुकाने हारी। फूट फूट रोती सब हारी॥
दुलकाती गुमसुम रक्त आँसू। खोज रहे हाय रक्त पिपासू॥
मित्र बने सब विश्वास घाती। शत्रु हुए हाय ऐसे आघाती॥

दोहा — सकती मे पड़ी नगरी रहा कहा सुख चैन।
बधक यहूदा प्रदेश कौन सुनाए बैन॥

मारग सिय्योन कलपते सारे। आते नहीं पर्वों पर प्यारे॥
सुनसान फाटक कर्ज चुकाते। याजक आशीष नहीं सुनाते॥
प्रधान हुए हाय सब द्रोही। मौज उड़ा रहे देश—द्रोही॥
बालक देते रहे कुरबानी। हाँकत शत्रु कर मनमानी॥
शोकित हैं कुमारियाँ सारी। कठिन दुख भोग रहीं वे प्यारी॥
सिय्योन पुत्री का हाय सारा। उजड़ा सब प्रताप ललकारा॥

दोहा — सकट भरे दुर्दिन य सितम जुल्म रही बीन॥
भाग छिपे जैसे कुरग हाकिम थ बलहीन॥

तराई देश का सासन प्यारा। शीरोन गुलाब फूल न्यारा॥
उलझ गया काटा हाय कैसा। झड़े पत्ते—हुआ ठूँठ जैसा॥
स्वर्ग सुने कान पृथ्वी लगाये। कहता कवि तन मन सुलगाये॥
दाख बारी एक बाग प्यारा। वाग़ा का निर्मल उजियारा॥
कुन्दन तचा नूतन सहारा। जन जीवन तत्र लोक धारा॥
पालित पोषित था वह एसे। बढ़ते बालक दुलार जैसे॥

दोहा — हाय यह झटका कैसा कैसा यह भटकाव।
कदम तोल रहे जैस जीवन क अलगाव॥

अधर्म लदा था ऐसा। तन हा घावो भरा जैसा॥
भी निज चरनी पहिचाने। प्रभु प्रजा हाय प्रभु न जाने॥
कवि मन लगाया गैरो। रौंदा प्रभु भवन निज पैरा॥
न बलि धूप नित चढाया। अनाथ विधवा नाम मिटाया॥
दला न्याय कफन सजाया। बॉज वृक्षा से प्रीत निभाया॥
से खेत बढ कर मिलाया। घर घर म घुँघरु घमकाया॥
दोहा— करधनी सती रस्सी बधक पट्टुके सती टाट।
शूर वीर सब युद्ध मिटे लगी सुन्दरता हाट॥

श्राप प्रभु का गहराया। खेतो पर अकाल बन छाया॥
र बीज एपा एक पाया। बत दाख बीघा दस उपजाया॥
मरी मुख नाश पसारा। जीवन दुश्वार मौत सहारा॥
त्त ज्वाल अर्थ होड फैली। मीठे को कडुवा कहे थैली॥
वही छक जो मधु पीता। बुद्धिमान बन मूरख जीता॥
प्र सत्य सिहासन उतारा। यातनाआ का अधियारा॥
दोहा— रिश्वत दश उजाडा लिव्यातान के जाल।
अन्धे हाकिम अगुवानी ज्या आग मे घृत माल॥

गर धधका था ऐसे। चकरा धूम लौ उठे जैस।
। ईधन जलता जैसे। देश जलाते दो रूप एस॥
ओर हाय भूखे प्राणी। कर्ज दब रोटी नहीं पानी॥
ो ओर लोभ अभिमानी। रौदे मदमस्त वन कर दानी॥
रह थे पृथ्वी सारी। काट रहे कराह व आरी॥
शहर—गिन लिय ताडे। गिने बालक रहे वृक्ष थाड॥
दोहा— टुकडे टुकडे देश हुआ डगमगायी हाय मचान।
पाप बोझ दबी गिरी थी सुदृढ जा चॅट्टान॥

•

कहे नगरी रुक अरे बटोही। सुन व्यथा गाथा अवरोही॥
दृष्टि कर देख कैसी पीड़ा। जलता तन हाय मन मे व्रीड़ा॥
हाय! यहूदा कन्या कुमारी। हाय सियुयोन बेटी सुकुमारी॥
धरा स आकाश तक शोभा। प्रभु चरण चौकी थी प्रशोभी॥
सर्वनाश हुआ कैसा मरा। अपार दुख–सागर ने घरा॥
किया प्रभु न जुआ हाय भारी। काल कोल्हू परता हारी॥

दोहा — परम सुन्दरी थी नगरी— हाय लुटा श्रृगार।
तू भी हसी उड़ाता दहकाता अगार॥

मिले मिट्टी भवन गढ़ सारे। मिलाप भवन के बुझे उजारे॥
भरी जवानी मिली बदनामी। लुटी पुरखो की नेकनामी॥
युग का वैभव क्यो मुरझाया। परख चलन क्या पतझर आया॥
ढॅपी मिट्टी हाय राख उदामी। हीर अगूठी थी उत्तम प्रकाशी॥
हिम से उजली निर्मल ऐसी। कुन्दन खरा उत्तम थी कैसी॥
मूगो से लाल प्रभ लाली। नील मणि सी प्रभा निराली॥

दोहा — झूठे याजक औ नबी रहा न कोई धींव।
लगी आग सियुयोन ऐसी भस्म हुई सब नींव॥

हे नगरी तुझ पर क्या बीता। प्याला तेरा क्यो हुआ रीता॥
हठीली कलोर ज्यो हठ ठाना। तुच्छ प्रभु को तूने जाना॥
हे नगरी क्या व्यथा सुनाऊँ। मुँह ढॉप रोऊँ कभी गाऊँ॥
डीह डाह हाय नगर सारा। दिन रहते छाया अधियारा॥
बालक मॉगते रहे रोटी। फेकत रह द्रोही गोटी॥
हे नगरा अब क्यो कुडकुडाये। पाप दड को बुरा बताये॥

दोहा — कहे बटोही सुने नगर नाश हुआ निज खोट॥
उत्तम श्रे जा पात्र प्रभु मिट समय की चोट॥

दोहा

भूत भविष्य के फेरे कसके यादे हाय।
उद्वेलित–भाव घनेरे ग्रस्त क्षुब्ध असहाय।।
संघर्ष मुक्ति निर्मम विनाश जीवन एक प्रमेय।
मनुज का धवल उन्मेष मानवता एक ध्येय।।
डीह हो फिर खुशहाल विजय प्रयाण की राह।
फिर से बने शुभ प्रवाह कहती कवि की चाह।।

सर्ग सत्रहवाँ

एस्तेर

वादी में अविरल उजियाला। जल रही कोई दीप सी ज्वाला।।
कैसी शीतल है रश्मिमाला। जीवन उत्सर्ग रहा निराला।।
शरत्–सुन्दरी सी एक बाला। तुषार स्निग्ध वनफूल माला।।
चुपके चुपके हँसना सीखा। सरसाई क्यारी यौवन दीक्षा।।
तारक द्युति अमद सी रेखा। दुख भरे आसुँओ की पत्–रेखा।।
भवित्वयता उसकी बलिदानी। शबनमी मुसकान बनी वाणी।।
दोहा — शंकित कंपित सपने पर सूर्य का अनुवान।
गुँजाया कल्याण सुखद् यहोवा का गुणगान।।

निष्कप शिखा दुखहारा कैसी। तरलित पारद नार वह एसी।।
नवल भावना विश्व–वारा। नारी अनुपम ज्ञान धारा।।
विद्या कला प्रकाश सरसाती। शीतल निर्झरणी सी मुसकाती।।
आहुति बन जीवन हरषाती। शुद्ध प्रबुद्ध विवक जगाता।।
प्रखर सूर्य महिमा गतिमानी। निर्मल ज्योत्सना चन्द्र हिमानी।।
वैभव नक्षत्र जीवन बिखराती। मुसकाना तारा पथ सजाती।।
दोहा — तारिका सी जगमगाती ज्योति अमद अनूप।
टिमटिमाता हास रुदन जग कल्याण स्वरुप।।

कहे नगरी रक अरे बटोही। सुन व्यथा गाथा अवरोही॥
दृष्टि कर दख कैसी पीड़ा। जलता तन हाय मन मे व्रीड़ा॥
हाय! यहूदा कन्या कुमारी। हाय सियुयोन बेटी सुकुमारी॥
धरा से आकाश तक शाभा। प्रभु चरण चौकी थी प्रशोभी॥
सर्वनाश हुआ कैसा मरा। अपार दुख–सागर ने घरा॥
किया प्रभु न जुआ हाय भारी। 'काल काल्हू परता हारी॥

दाहा — परम सुन्दरी थी नगरी— हाय लुटा शृंगार।
तू भी हसी उड़ाता दहकाता अगार॥

मिले मिट्टी भवन गढ़ सारे। मिलाप भवन के बुझे उजारे॥
भरी जवानी मिली बदनामी। लुटी पुरखो की नेकनामी॥
युग का वैभव क्यो मुरझाया। 'पाख चलन क्यो पतझर आया॥
ढँपी मिट्टी हाय राख उदासी। हीर अगूठी थी उत्तम प्रकाशी॥
हिम से उजली निर्मल ऐसी। कुन्दन खरा उत्तम थी कैसी॥
मूगा से लाल प्रभ लाली। नील मणि सी प्रभा निराली॥

दाहा — झूठे याजक औ नबी रहा न कोई धींव।
लगी आग सियुयोन ऐसी भस्म हुई सब नींव॥

हे नगरी तुझ पर क्या बीता। प्याला तेरा क्यो हुआ रीता॥
हठीली कलोर ज्यो हठ ठाना। तुच्छ प्रभु को तूने जाना॥
हे नगरी क्या व्यथा सुनाऊँ। मुँह ढाँप रोऊँ कभी गाऊँ॥
डीह डार हाय नगर सारा। दिन रहते छाया अँधियारा॥
बालक माँगते रहे रोटी। फेकत रहे द्रोही गोटी॥
हे नगरा अब क्यो कुडकुडाये। पाप दड को बुरा बताये॥

दाहा — कहे बटोही सुने नगर नाश हुआ निज खोट॥
उत्तम थे जा पात्र प्रभु मिट समय की चोट॥

दोहा

भूत भविष्य के फेरे, कसके यादे हाय।
उद्वेलित–भाव घनेरे त्रस्त क्षुब्ध असहाय।।
सघर्ष मुक्ति निर्मम विनाश जीवन एक प्रमेय।
मनुज का धवल उन्मेष मानवता एक ध्येय।।
डीह हा फिर खुशहाल, विजय प्रयाण की राह।
फिर से बने शुभ प्रवाह कहती कवि की चाह।।

सर्ग सत्रहवाँ

एस्तेर

वादी म अविरल उजियाला। जल रही कोई दीप सी ज्वाला।।
कैसी शीतल है रश्मिमाला। जीवन उत्सर्ग रहा निराला।।
शरत्–सुन्दरी सी एक बाला। तुषार स्निग्ध 'वनफूल माला।।
चुपके चुपके हँसना सीखा। सरसाई क्यारी यौवन दीक्षा।।
तारक द्युति अमद सी रेखा। दुख भरे आसुँओ की पत्–रेखा।।
भवित्वयता उसकी बलिदानी। शबनमी मुसकान बनी वाणी।।

दोहा — शकित कपित सपने पर सूर्य का अनुवान।
गुँजाया कल्याण सुखद् यहोवा का गुणगान।।

निष्कप शिखा दुखहारा कैसी। तरलित पारद नार वह ऐसी।।
नवल भावना विश्व–वारा। नारी अनुपम ज्ञान धारा।।
विद्या कला प्रकाश सरसाती। शीतल निर्झरणी सी मुसकाती।।
आहुति बन जीवन हरषाती। शुद्ध प्रबुद्ध विवेक जगाती।।
प्रखर सूर्य महिमा गतिमानी। निर्मल ज्योत्सना चन्द्र हिमानी।।
वैभव नक्षत्र जीवन निखराती। मुसकाना तारा पथ सजाती।।

दोहा — तारिका सी जगमगाती ज्योति अमद अनूप।
टिमटिमाता हास रुदन जग कल्याण स्वरुप।।

कहे नगरी रुक अरे बटोही। सुन व्यथा गाथा अवरोही।।
दृष्टि कर देख कैसी पीड़ा। जलता तन, हाय मन मे व्रीड़ा।।
हाय! यहूदा कन्या कुमारी। हाय सियूयोन बेटी सुकुमारी।।
धरा से आकाश तक शोभा। प्रभु चरण चौकी थी प्रशोभी।।
सर्वनाश हुआ कैसा मेरा। अपार दुख–सागर ने घेरा।।
किया प्रभु ने जुआ हाय भारी। काल कोल्हू पेरता हारी।।

दोहा – परम सुन्दरी थी नगरी– हाय लुटा श्रृगार।
तू भी हसी उडाता दहकाता अगार।।

मिले मिट्टी भवन गढ़ सारे। मिलाप भवन के बुझे उजारे।।
भरी जवानी मिली बदनामी। लुटी पुरखो की नेकनामी।।
युग का वैभव क्यो मुरझाया। 'परख चलन क्यो पतझर आया।।
ढँपी मिट्टी हाय राख उदासी। हीर अगूठी थी उत्तम प्रकाशी।।
हिम से उजली निर्मल ऐसी। कुन्दन खरा उत्तम थी कैसी।।
मूगा से लाल प्रभ लाली। नील मणि सी प्रभा निराली।।

दोहा – झूठे याजक औ नबी रहा न कोई धींव।
लगी आग सियूयोन ऐसी भस्म हुई सब नींव।।

हे नगरी तुझ पर क्या बीता। प्याला तेरा क्या हुआ रीता।।
हठीली कलेर ज्यो हठ ठाना। तुच्छ प्रभु को तूने जाना।।
हे नगरी क्या व्यथा सुनाऊँ। मुँह ढ़ॉप रोऊँ कभी गाऊँ।।
डीह डाह हाय नगर सारा। दिन रहते छाया अँधियारा।।
बालक मॉंगते रहे रोटी। फेकत रहे द्रोही गोटी।।
हे नगरी अब क्यो कुडकुडाये। पाप दड को बुरा बताये।।

दोहा – कहे बटोही सुने नगर नाश हुआ निज खोट।।
उत्तम थे जो पात्र प्रभु मिटे समय की चोट।।

दोहा

भूत भविष्य के फेरे कसके यादे हाय।
उद्वेलित–भाव घनेरे, ग्रस्त क्षुब्ध असहाय।।
संघर्ष मुक्ति निर्मम विनाश जीवन एक प्रमेय।
मनुज का धवल उन्मेष मानवता एक ध्येय।।
डीह हो फिर खुशहाल विजय प्रयाण की राह।
फिर से बने शुभ प्रवाह कहती कवि की चाह।।

सर्ग सत्रहवॉं

एस्तेर

वादी में अविरल उजियाला। जल रही कोई लैंप सी ज्वाला।।
कैसी शीतल है रश्मिमाला। जीवन उत्सर्ग रहा निराला।।
शरत्–सुन्दरी सी एक बाला। तुषार स्निग्ध 'वनफूल माला।।
चुपके चुपके हॅंसना सीखा। सरसाई क्यारी यौवन दीक्षा।।
तारक द्युति अमद सी रेखा। दुख भरे आसुँओ की पत्–रेखा।।
भवितव्यता उसकी बलिदानी। शबनमी मुसकान बनी वाणी।।
दोहा – शंकित कंपित सपने पर सूर्य का अनुवान।
गुॅंजाया कल्याण सुखद् यहोवा का गुणगान।।

निष्कप शिखा दुखहारा कैसी। तरलित पारद नार वह ऐसी।।
नवल भावना विश्व–वारा। नारी अनुपम ज्ञान धारा।।
विद्या कला प्रकाश सरसाती। शीतल निर्झरणी सी मुसकाती।।
आहुति बन जीवन हरषाती। शुद्ध प्रबुद्ध विवेक जगाती।।
प्रखर सूर्य महिमा गतिमानी। निर्मल ज्योत्सना चन्द्र हिमानी।।
वैभव नक्षत्र जावन बिखराती। मुसकाना तारा पथ सजाती।।
दोहा – तारिका सी जगमगाती ज्योति अमद अनूप।
टिमटिमाता हास रुदन जग कल्याण स्वरुप।।

वृश से उपवन खिलता जैसे। समाज–श्री नारी घटक ऐसे॥
उर वैभव अनघ प्रीति आशा। 'दृष्टि–सयम नारी परिभाषा॥
अखड असीम ममता न डाले। जीवन शक्ति जीवन म बोले॥
प्राण शक्ति परम पावन माता। गीतिमय जीवन नेह प्रदाता॥
सौम्य–भाव लारी वह गाती। वाणी सुष्ठु अभिवर्धन पाती॥
ऋत–पथ सत्य सुमारग रागी। कर्म ज्ञान शक्ति धर्म अनुरागी॥

दोहा – सख्य भाव हित–चितक भद्र भावना विस्तार।
यश–प्रसूति काव्य तेज नारी जग आधार॥

स्थैर्य–कर्म बल–शौर्य मानी। नारी गूढ गहन स्वाभिमानी॥
दापित सत्य तेज प्रभ–धानी। निजता दानी परीषह ज्ञानी॥
नारी शीतल स्निग्ध–जल जैसे। क्षुद्र सीमाए बाँधे कैसे॥
सागर सी गुरु गभीर कठारी। कोलाहल कलह नहीं मतिहारी॥
मन निग्रही साधना प्यारी। साँझ नहीं प्रभात की क्यारी॥
नि शब्द मौन सयम वृत्तिभारी। धरा समान ताप गुण धारी॥

दोहा – समन्वय का उपादान नारी मे समुदाय।
देश गौरव मान प्रतिष्ठा लिखती नय अध्याय॥

उत्सर्गो की महिमा सुपासी। वादी सपना की अभिलाषी॥
स्नह स्पर्शन गाथा निराली। छिप रहती घटाओ काली॥
अगाध तिमिर अनाथ बाला। नीरव मौन अशब्द अश्रुमाला॥
धूप छाव सा जीवन बसहारा। तारक–पुजित विभा सा न्यारा॥
शान्त प्रभा एम्तेर अनतोली। प्रकाश स्तम्भ सी अनमोली॥
अरी पुत्री प्रभु धरी निहाई। कडा परीक्षा कृपा दिखलाई॥

दोहा – जय पराजय सग चले पथ रेखाए नवीन।
वचा मौर्दक अपनाया सुख दुख प्रभु अधीन॥

जैसे निर्देशन छोटे तारे देते। भूमि दिशा पोत सागर खते।।
ज्योत अधकार की है तार। दिन के विश्वास साथी प्यारे।।
कण कण मिल एक ज्योत बनाते। ज्योति–पथ फिर नया कहलाते।।
एस्तेर मौर्दक बनी सहारा। ध्रुव दृढता अतुल धैर्य धारा।।
समय धार सग बहती जाती। प्रश्न–केन्द्र गहराई पाती।।
सृष्टि सग दृष्टि गूँथ माला। घिर गयी हिम तुषार बाला।।

दोहा – टूटे डैने पक्षी क्या! नभ विचरे तू बाल।
पर प्रभु परीक्षा लेता औ देता मुरठी खाल।।

काली घटा जल बाँधे कैसे। जल बोझ फटे न मेघ जैसे।।
बिन आधार आकाश साधे। प्रभु महिमा एस्तेर मन बाँधे।।
वह थी प्रभु अगुवानी ऐसी। मेघ ढ़के तारे के जैसी।।
निर्मल अजर मिरास अविनाशी। तारक ज्योति धवल प्रकाशी।।
अल्हड बचपन प्रभु सभाला। नई भोर नई अनुग्रह माला।।
एस्तेर पर प्रभु करूणा न्यारी। ईसरी–उद्धारक प्रभु युक्ति प्यारी।।

दोहा – प्रभु मे टिक जो रहता पाता पृथ्वी अधिकार।
निर्मल जल–स्त्रोत बहाव पहिनाता प्रभु हार।।

राजा क्षयर्ष थे तेजोधारी। शासन उनका था सुखकारी।।
सद्गुण शील बल विक्रम वाले। साज बाज सब ओर निराले।।
सर्वत्र रत्न घटाएँ गहराती। राज रश्मियाँ क्लेश मिटाती।।
हिन्दोस्ताँ से कूश तक मापा। प्रात एक सौ सत्ताइस नापा।।
मर्दित शत्रु तलवार पहिचानी। शूशन से राजगढ राजधानी।।
यश विस्तार हर्ष भाव बढाता। पर अनमोल कुछ लुट जाता।।

दोहा – मैत्री बढी पुष्प खिले, और बढे सद्भाव।
वर्ष तीसरे राज्य मे जेवनार का चाव।।

राज वैभव मान दिखलाआ। ध्वजा कीर्ति गान फहराआ ॥
क्षयर्ष राजा आदेश सुनाओ। भाव स्वप्न सा राज सजाआ॥
प्रात प्रात संदेश पहुँचाओ। बैर भाव तम [illegible] गिराआ॥
सगर्व आनद स्त्रोत बहाओ। दाख मधु नूपुर झनकाआ॥
उठे प्रश्न न शका मिटाआ। अतिक्रमण अलध्य बनाआ ॥
न रुको । क्षण समेट दिखलाओ। जयकार क्षयर्ष अबर गुँजाओ ॥

दोहा — प्रबल पवन वेग समान जाग उठे वर वीर।
पात्र मदिरा लाआ राजा हुआ गभीर॥

प्रात प्रात प्रधान अधिकारी। मादै—फारस उत्साह भारी॥
सजे मडप शिविर अलबेले। क्रीड़ा कौतुहल जीवट मेले॥
दुल्हिन सा राजभवन सजाया। राज—विभव अनमोल बताया॥
श्वेत नील परदे रेशम धागे। छल्ले चाँदी झूलते आगे॥
सगेमर छटा खभो निराली। स्वर्ण रत्न दमके मधु प्याली॥
झूम रहे कठोर अभिमानी। समय लिख रहा एक कहानी॥

दोहा — रगमहल रानी बेशती परोस रही थी प्यार।
मुसकानो की भाषा गूँज रहे मन सितार॥

जेवनार पर यौवन आया। प्रीत रीत उपहार सजाया॥
मन दिगत वातायन खोले। भाव भरे सभाषण बोले॥
वीर वरिष्ठ सब सभा विराजे। मत्री प्रधान औ महाराजे॥
पहिचान बनाने खर्व जागा। राज मर्यादा क्षयर्ष त्यागा॥
मान नारी का रुप से तोला। दर्प वेग उद्दाम यूँ बोला॥
मुकुट सजा पटरानी बुलाओ। यौवन सुषमा सभा दर्शाओ॥

दोहा — निर्वसन वचन सुन रानी सिहर गया तन प्राण।
ज्वार अनल शोणित उफान, कैसा यह तूफान॥

घूर्णिचक्र पर बशाती रानी। विकल व्यग्र अश्रु की वाणी।।
काल सर्प ऐठ रहा था ऐसे। गह्वर अतीत जाता जैसे।।
श्रृंगारित थी रात वह कैसी। प्रीति प्रथम जागी थी ऐसी।।
तब यह ज्ञान न था गर्वीला। अह धधक था नहीं रगीला।।
शीतल सा मन स्त्रोत नूरानी। हरियल स्वभाव था ज्ञानी।।
रत्न पूरित सागर सुखकारी। अजेय क्षयर्ष थे तेजधारी।।

दोहा — आज धनुष झुका कैसे चकित हो रहे प्राण।
सत्ता प्रतिमान कठोर बींधा प्रयसी मान।।

राज या नर लॉघी सीमा। शका प्रश्न अनेक उत्तर धीमा।।
कान्तिमान सौंदर्य हे नारी। पुरुष न समझ जडता भारी।।
देह–रुप नर देखे अज्ञानी। दुरुह पुरुष न समझे जडता भारी।।
कूट–प्रश्न । नहीं शान्त वारा। पुरुष मन कोलाहल की धारा।।
नारी मन अतल कूप जैसे। खड़ा मुडेर वह मापे कैसे।।
राजा नहीं पुरुष विवादी। युग कहता नारी प्रतिवादी।।

दोहा — नार उपहार अनोखा प्रणय छटा चन्द्रकात।
पारस पुरुष विभा–मय खीचे ज्यो लौहकात।।

आरे धार खडी थी नारी। इधर कुआँ उधर खाई भारी।।
काल बहेलिया जाल पसारा। राज्य–विवेक को ललकारा।।
समय–समीर का क्या भरोसा। मेहमानो उपहास परोसा।।
टूट गये तार मन अलगोजा। खड़ा दास–हाथ बाँधे खाजा।।
डूब महासिन्धु निस्पद उतरायी। एक गर्जना रानी मुसकायी।।
सौंदर्य सुन्दरी नहीं पटरानी। याद है निज मर्यादा रानी।।

दोहा — यश–मुकुट अर्पित करती विभा नारी अदीठ।
है स्वीकार राज–दड उभर काडे पीठ ।।

हे मौर्दक चूक न मौका। क्षयर्ष राज मस्तूल तू नौका।।
वचन यशायाह मन सुनाया। कण कण जुड़े हज़ार दिखलाया।।
निर्बल पात्र चयनित बन जाता। जन मन पीड़ा निज गलाता।।
कर्मठ तेज–साक्ष्य 'यह बाला'। 'प्रकाश–यात्रा रूप है निराला।।
इसरी मोती यह अनुपम पाया। प्रभु दया एस्तेर पर दिखलाया।।
प्रात अंधेरे क्या सकुचाता। नाम ले प्रभु उसे है बुलाता।।

दोहा — धुंध छटी बिखरे रंग निष्कप 'एस्तेर शांत।
पहन रही बेड़ी सभार टेक रखे प्रभु शुद्धात।।

आदि अन्त तक क्षण को जीते। तिरस्कार को धैर्य से पीते।।
उर्म्मिल धार नयन छलकाती। उद्वेलित लहरे मन टकराती।।
अनगढ़ पाहन वेदी जैसी। शीतल ज्वलित साधना ऐसी।।
श्वेत हिमानी सीपी जैसे। सुललित मधुर चाँदनी ऐसे।।
धरा की सौंधी सुवास जैसी। कोमल कान्त पदावली ऐसी।।
सुमधुर नाम एस्तेर बतलाया। उदार 'हैगे निहार हरषाया।।

दोहा — तराश तराश बनाऊँ शक्ति स्फटिक महान।
न बधे सीमित सीमा ऐसी दूँ पहिचान।।

छ माह श्रृंगार प्रशिक्षण बेला। सात सखी समूह अलबेला।।
जल की सरल रेखाए जैसे। सौंदर्य अतल निखरा ऐसे।।
रत्न–आभ सितारो जैसी। प्रभ–अरूण विवेक प्रज्ञा ऐसी।।
झिल–मिल रेख एहसास जैसी। प्रभु–हस्त कारीगरी कैसी।।
महिमा यहोवा देखो कैसी। बुझती बाती जगमग ऐसी।।
शुचि वैभव अपार धारे। राजा क्षयर्ष 'एस्तेर निहारे।।

दोहा — पाश बधे अम्बर धरा गूँजी राज झंकार।
क्षयर्ष पटरानी एस्तेर 'पुलकित हैगे अपार।।

ति मौर्दक भेट चढ़ाता। यहोवा स्तुति महिमा गाता॥
वन अर्घ एस्तेर समझाता। बलिदानो जीवट मुसकाता॥
ाय की धूप सदा ही झेला। सुघड़ मिट्टी देह समझ ढ़ेला॥
ाु जीवन सग्राम सिखलाती। अतुल पराक्रम बन कर गाती॥
ास सघात उलझाता। अनबूझ पहेली सुलझाता॥
कप शिखा जीवन तू गाये। इसरी श्रृखला बाध जो पाये॥

दोहा — प्रजापति होता राजा प्रभु वाणी का स्रात।
प्रेरणा प्रीत है नारी रहे दया की ज्योत॥

ा मन एस्तेर लुभाया। विधि विधान विवाह रचाया॥
ि शक्ति राजा सुखकारी। जयकार ध्वनित हर्ष भारी॥
नि अम्बर बने साक्षी। लिखता इतिहास पत्र भापी॥
ब्र की सुमधुर विभा छायी। मद सुगध वायु अलसायी॥
—रागिनी मधु मतवाली। झंकोरे मन हरने वाली॥
वास हर्ष विमूढ़ सा गाता। स्वाद व्यजनो का अकुलाता॥

दोहा — बशती रानी अवसादी, विद्रूप नियति है नार॥
सगर्व क्षर्यष दर्प कहता एस्तेर की जेवनार॥

वन मे अनगढ़ कामयाबी। बन जाती उफान सैलाबी॥
षि आवेश हुआ तूफानी। विदीर्ण निर्झर सा चट्टानी॥
वेड वन ऐश्वर्य अभिमानी। हीरक गुण बिखरे सब पानी॥
ा सागर पुल बनवाया। राज दर्प सागर न सुहाया॥
ा श्याम अथड पुल गिराया। क्षर्यष सागर कोड़े पिटवाया॥
ाक एक कोष भेट चढ़ाता। भर औदार्य दूना लौटाता॥

दोहा — पुत्र मुक्ति चाही सैनिक भेट किया मृत देह।
दुष्टिकरण तुष्टि उद्वेग कभी बरसे ज्यो मेह॥

टेढे खेल बिसात बिछाते। अहमक ख्याल रग दिखलाते।।
बीच समुन्द्र के टापू जैसे। दुरभिलाषी उभरे कुछ ऐसे।।
देख रहे टकटकी गढाऐ। मुर्दा ऑख न पलक झपकाये।।
ठग पिन्डारी घात लगाये। महामारी से बढते जाते।।
चक्र षडयत्र 'तेरेश' घुमाता। थाम मौदर्क राज बचाता।।
विश्वास पुष्टि राजा करावे। 'मक्कार' मक्कारी दण्ड पावे।।

दोहा- नाम दर्ज करो इतिहास, और चुकाओ ब्याज।
रत्न-निकाय 'मौर्दक', हुआ ऋणी राज आज।।

शूशनगढ सम्पन्न अलबेला। पर 'इसरी' जनमत रहा अकेला।।
घिरी तमस की हाय घटायें। करे क्रीडाऐं ज्यो मनभाये।।
राज-मत्री 'हामान' बनाया। राज-कुहासा लो घिर आया।।
अनुदारवाद राज रोग भारी। विषम अन्यायी अत्याचारी।।
पेच अवरोध कसता जाता। जटिल दूरियॉ सदा बढाता।।
मौर्दक प्रभु का एक अनुरागी। नहीं चाटुकारी प्रतिभागी।।

दोहा- लबालब भर अहकार, क्रूर हुआ 'हामान'।
चैन न लेता सर्वनाश, "मिटा दूॅ इसरी मान"।।

कच्छप- वृत्ति राज सिखलाता। खेल आन, रति हामान' रचाता।।
"झुक दडवत जो नहीं करेगा। राज कोप वह मिट जायेगा।।"
पाखडी स्वीकृति छल से पाया। बर्बर हत्या आदेश लिखाया।।
राज मोहर राज से पाता। राज विवेक हर ले जाता।।
इसरी विध्वस दौर चलेगा। युवा, वृद्ध, बालक न बचेगा।।
हर देश प्रात प्रात भाषा। छाप लगा, लिखता परिभाषा।।

दोहा- अश वश काट गिरा दो, लिखा सहार तत्र।
देश शत्रु है ये इसरी रटते विग्रही मत्र।।

हरकारे ले मृत्यु ध्वजाय। दौड़ रहे लाचारी त्रिपाय।।
ठिठुरा शूशानगढ जीवन सारा। सर्द एहसास नहीं किनारा।।
माह आदार चक्र चलेगा। दिन तरह यह नहीं रूकेगा।।
लूट हत्या राज कोष भरेगा। इसरी–नस्ल जीवन मिटेगा।।
कट्टर पागल स्वेच्छाचारी। पर प्रतिष्ठा की व्यभिचारी।।
राजनीति की एक मौकेबाजी। खप्पर भरती सौदेबाजी।।

दोहा – *मजहब की सीमा म राष्ट्रवाद की आट।*
मापदड फिर करत जीवन प्रत्यय चाट।।

दुख भर शब्द मौर्दक चिल्लाया। टाट पहिन फाटक पर आया।।
सिसकती आह बन फौलादी। कहती राज हुआ क्या जल्लादी।।
उपवासी राख लपेटे यहूदी। चाह कपा–कोर एक बूँदी।।
एस्तेर खोजा बाहर आया। रग महल तक बात पहुचाया।।
राज क्रोध उबलता लावा। मानव पर मानव का धावा।।
जाति–धर्म का टेढा नारा। 'हामान षडयत्र का आरा।।

दोहा – *धुआँ जहरीला उगला उन्मुक्त कर प्रहार।*
'जोड तार सितार एस्तेर बन इसरी सूत्र धार ।।

साँस साँस एस्तर मन डोला। कैसे प्रगट कर अनबोला।।
लघु खडो मानव क्यो बँट जाता। उमड़ते ज्वार समेट न पाता।।
जटिल व्यापार बीच इन्सानो। हो जाना अवरूद्ध अभिज्ञाना।।
एक त्रासदी शान्ति खोती। अपूर्ण त्रासद क्रान्ति बोती।।
आत्म–निर्वासन बन वह आती। लहुलुहान इन्सान कर जाती।।
'राजनीति हवा वेगवानी। जुड़े एकता ईसरी कल्याणी ।।

दोहा – *हो गई ता हो गई नाश कहे एस्तर नेक।*
दिवस तीन उपवास करे रख प्रभु सब टेक।।

वायु मे लटका चॉद एकाकी। एस्तेर जीवन रहा न बाकी।।
राज–भेट माह एक बीता। आज्ञा–बिन प्रवेश है रीता।।
व्यस्त राज काज है राजा। कैसे दे संदेशा अधिराजा।।
जीवन आज बना मेहराबी। ऊहापोह मन हुआ सैलाबी।।
इतिहास मे पैठ बढाती। सुरग अंधेरी सेध लगाती।।
उपवासी प्रभु से लौ जगाती। अर्न्त–चक्षु साक्ष्य वह पाती।।

दोहा – बूँद बूँद झरने जैसे झरते अश्रु हर–सिगार।
बूँद एक सयम स्वाति युग देती सँवार।।

प्रश्ना के उत्तर मन पाता। शुद्ध प्रबुद्ध विवेक जगाता।।
पर्वत श्रृखला माला जैसे। यशायाह वचन निराले कैसे।।
शिखर खड़ा नबी समझाता। निज भ्रम मनुज है इतराता।।
देखो नींव धरा की डोली। मनुज पाप बोझ दब बोली।।
नाश! नाश! कहती ये भूमा। हाय अपघाती मद मे झूमा।।
सुनसान धरा कर इठलाता। खडहर बैठा शून्य घबराता।।

दोहा – सुन ले अरे पथिक भ्रात सुन पर्वत की गूँज।
पर्वत ओर दृष्टि लगा सुन जीवन अनुगूँज।।

जीवन फैला जीवन चाहो। कहे यशायाह प्रभु सराहो।।
पर्दा हटा भोर को देखो। सचरण सुरम्य शक्ति लेखो।।
जो मन रहता प्रभु का प्यासा। पूरी करे वह उसकी आशा।।
पर्वत सा दृढ आसन पाता। चढ शिखर प्रभु दरशन पाता।।
मुर्दो सा जीवन क्या बीते। धर्मी ज्योति कभी नही रीते।।
धरा भी मृतक है लौटाती। अकुरण दे फल वह निपजाती।।

दोहा – गुने एस्तेर वचन मधुर पावे मन सकून।
उतार चढाव अनुभाव सामर्थ से परिपूर्ण।।

कहे नबी वचन सुनो मेरा। जाग! जाग! अब हुआ सवेरा।।
नरसिगा अब फूँका जायेगा। शान्ति ज्योत जगत देखेगा।।
आशीष पर्वत बरसायेगा। जीवन मधु ससार पायगा।।
वश याकूब फलवत बनेगा। मानवता पथ प्रशस्त करेगा।।
स्वय प्रभु बारी सींचेगा। समदर्शन के भाव भरेगा।।
झाड कँटीले नाश करेगा। रक्षक यहोवा सग रहेगा।।

दोहा — मनुज प्रश्नो का उत्तर 'वह कहे नबी ज्यात रेख।
मृत्यु नहीं है विजता स्वर्ग खुला तू देख।।

देख समय ऐसा आयेगा। बहिरा सुन ज्ञान पायेगा।।
गूँगा ज्ञान कथा कहेगा। अँध–दीन पुस्तक बात पढेगा।।
प्रभु अनुग्रह अनुपम प्यारा। धर्मी मान बढ़ाता न्यारा।।
वह दयालु राजा है दानी। कजूस नहीं न्यायी औ ज्ञानी।।
उस हाकिम की ध्वज लहराये। आनद की फसले निपजाये।।
युक्तियाँ उसकी अद्‌भुत न्यारी। बिखर जाये प्रवीणता सारी।।

दोहा — कहे ज्ञानी खोलू कैसे पुस्तक मोहर बद।
अनपढ कहे पढूँ कैसे हूँ अज्ञानी मति मद।।

धर्म का फल है शान्ति औ परिणाम सुख चैन।
तप्त धरा छाँह पाये कहे नबी दिन रैन।।

दाँये बाँये सब ओर जीवन का प्रतिनाद।
तेज सात गुना पाये सुन–प्रभु के सवाद।।
सागर लहरे बल खार्ती पाल उतार सुजान।
सुवर्ण तुला तू बैठा बेच रहा ईमान।।
पोत बाढ़ ले जात दुरमति हे मतिहान।
कण कण बिखरी चट्टान रह न प्रभु म दीन।।
राल [illegible] [illegible] सरवर होगा [illegible] सहार।
धनेश–साहुल सर्पो सग [illegible] [illegible]।।

गीध काक झपट रहे खाली हुए भडार।
ईमान गला, पात्र गले, बद हुए प्रभु द्वार॥
उजली चादर मैली हुई मन कठोर मलीन।
रौंद रहे प्रभु ऑगन अधर्मी ये मतिहीन॥
मौन हुए धर्मी न्यायी, सूखे ज्योति निर्झर।
लुट गया प्रभु सिवाना, तलवारो पर निर्भर॥
वृक्ष विशाल हुआ ठूँठ यहूदा गिरा टूट।
काप प्रभु हाय भडका ढाल गयी अब छूट॥
कुचल गया क्रूर काल मोती रहे न सीप।
इसरी हुए बधक सारे कौन जलाये दीप॥
बेडियाँ लाया 'बाबुल बँधक हुए इसरी पाँव।
उतर गया कँवार माटी नीति बढी अलगाव॥
यरूशलेम प्रभु का प्यारा भूमडल नाभि—स्थान।
राष्ट नया नेम नया भूला 'स्व पहिचान॥
ठहरे व्यर्थ बड़े बोल रपट गया हाय वीर।
भूल गया सृष्टि कर्ता छूट गया हाय तीर॥

नबी 'यहेजकल दस्तक देता भाव रूप सवाद म खेता॥
मनुज मनुज हे मनुज सतानो। फहरा ध्वज मानव इन्सानो॥
गुनन मनन करो समझाता। सुनो कहावत एक सुनाता॥
दाख तोड पुरखे सब खाते। खट्टे दॉत पौत्र क्यो पाते॥
पर समय देखो अब आता। जीवन शपथ प्रभु दिखलाता॥
'जो पाप करे दड भरेगा। धर्मी न्याय यहोवा करेगा॥
दोहा— सघर्ष चेतना अब जागे बने सुदृढ एक नींव।
अभिभूत एस्तेर विस्मित 'रथ सकेत सजीव।

दृश्य 'मनुज सतान दरशाया। युद्ध परिणाम दृष्टात दिखाया।।
जीत–हार अपमान समझाया। बाल अपने नबी छितराया।।
फिर पैनी कटार मुँढवाया। तीन भाग काँटे तुलवाया।।
एक जला दूजा पवन उडाया। तीसरी काट कुछ शेष बचाया।।
कहे नबी अभिमान गिराया। इसरी जीवन मान घटाया।।
भूख मँहगी ठट्ठा बेईमानी। युद्ध विनाश एस्तेर पहिचानी।।

दोहा — कहे नबी यरूशलम यह देखो जला निज पाप।
हे अन्यायी अधर्मीनगर तू सहता प्रभु श्राप।।

'एस्तेर खोजे ध्यान लगावे। मनुज सतान सबोधन गावे।।
'तराई–दर्शन सुने फिर बाली। पाँव खड़ी हो हे अनबोली।।
तुझे न डरना रहना सीमा। शोक विलाप दुख सहना धीमा।।
दुख भरा 'चर्म–पत्र तुझे खाना। अर्थ मानवता है समझाना।।
जीवन मे 'मरण शब्द रसीला। मधु सा मीठा नहीं कसीला।।
सुन पीढ़ी यह निर्लज्ज हठीली। विद्रोही प्रभु से दूर गर्वीली।।

दोहा — हुआ कुछ बोझिल सा मन सिमट सहमी उसाँस।
करती सतरण शब्द–शब्द हर एक एहसास।।

प्रभुता का सघर्ष निराला। कु–विचारी मेला मतवाला।।
युद्ध सभ्यता नयी बनाये। ऊँची ऊँची दीवार उठाये।।
अर्थ अधिपति आसन जमाये। खून बहाये तलवार चलाये।।
शिरोमणि बाबुल कहलाता। हे कसदी तू क्या इठलाता।।
हे तर्शीश[1] फिनीके[1] अतिचारी। हे सागर छिल्ली मतवाली।।
कह नबी तू भी है जाता। राज मादी उभर कर आता।।

दोहा — दश खडा विनाश कगार स्वार्थो का दौर।
मैत्री सधि की युक्तियाँ हँसुए काटे तौर।।

'कसदी राज आदेश सुनाता। खोज लाओ प्रवीण सुज्ञाता।।
कसद शास्त्र भाषा सिखलाओ। वर्ष तीन दे शिक्षण दिखलाओ।।
'हन्ना, 'मीशा अर्जयाह 'हामी। दानियल स्वप्न अर्थ मे नामी।।
सयोग हुआ तब एक ऐसा। राजा व्याकुल खेदित ऐसा।।
स्वप्न अनोखा राजा दखा। राज दर्शी दे सके न लेखा।।
'करा घात ये दर्शी झूठे। राज कोष य मिल क्यो लूटे।।

दाहा — स्वप्न अर्थ मैं सुनाऊँ हे राजा रख धीर।
दानियेल विनय सुनावे लौटा क्रोध तू वीर।।

भेदा का भेद प्रभु बताता। झलक भविष्य तुझे दिखाता।।
एक अनुपम मूरत देखी। सुवर्ण शीश, भुज चाँदी लेखी।।
जर्घा पीतल, पाँव–लौह देखे। आया एक पत्थर अनदेखे।।
चूर मूरत मिट्टी निशानी। पर्वत बना पत्थर नूरानी।।
तेरा स्वप्न यही था राजा। समझता अर्थ सुन महाराजा।।
सोने का सिर तू ही राजा। शक्ति देते प्रभु अधिराजा।।

दोहा — कुछ दृढ़ दुर्बल लौह कूत बिखरे छितरे राज।।
लौह माटी मेल नही मत भेदो का साज।।

चूर चूर धातु राज मिटेगे। विजयी मानव एक पायेगे।।
नभ से उतर धरती पर आये। सग्राम 'मनुज मुक्ति का उठाये।।
नई दृष्टि सूझ बूझ बढाये। भाव स्नेह दृढ जग सजाये।।
'मनुजता सौंदर्य प्रभ लायगा। चेतन आलोक जग पायेगा।।
मन उजास पर्वतीय आशा। जग म रहे न भाव निराशा।।
शब्द एक आकाश उठायेगा। युद्ध नरसिगा फिर गूँजेगा।।

दोहा — सयुक्त राज मानव का एकता विश्व प्रसार।।
युगानुयुग स्थिर रहगा नई धरा नभ विस्तार।।

राजा वेदी भेट चढाया। 'दानियल पद–मान बढ़ाया।।
सुयश सुख समृद्धि जब घेरे। द्विधा–ग्रस्त मानव मन फेरे।।
राजतत्र एक पथ बनाया । सुवर्ण मूरत एक ढलवाया।।
आदेश कठोर एक सुनाया। धर्म प्रतीक राज्य बतलाया।।
'हर कदम चल कर यहा आये। राज–भक्ति का दीप जलाये।।
कपट ने तेवर बाण चलाय। चदुक तूफान जलधि उफनाये।।

दोहा – दानियल कहे प्रभु महान व्यर्थ राज आदेश।
'परदेशी नहीं आया । व्यग्र छल परिवेश।।

दर्प खर्व ज्वाल राज दहकाया। तम का मादक मोह छाया।।
कहता राजा भ्रम मिटाओ । 'दभी चागे बॉध तुम लाओ ।।
'उगले आग भट्टी धधकाओ। झोक' आग आस्था बढ़ाआ ।।
शुद्रक, 'मेशक अबद प्रभु ध्याते। क्षण दारूण, आनद मनाते।।
सकते राजा टूटी लहासी। ज्वाल बनी मुक्ति प्रभु साक्षी।।
शुभ्र पावक विचर रहे प्राणी। सग अरूप' वस्त्र कामदानी।।

दोहा – सिजदे करू मैं अज्ञानी, प्रभु महिमा अपार।।
'बाहर आओ पुकारे राज करे मनुहार।।

'नबूकद विभव बढ़ता ऐसे। छायादार वृक्ष के जैसे।।
देखे स्वप्न राजा निराला। झड़े पत्ते वृक्ष डाला डाला।।
एक पहरूआ स्वर्ग से आया। डाले काटे फल छितराया।।
'ठूठ भूमि सहित जड़ छोड़ा। बॉध जजीरे मैदान थोड़ा।।
भीगे ओस स्वर अकुलाय। सगत पशुआ पशु कहलाये।।
सात कल्प ऐसे ही बीतें। 'पावे ज्ञान', प्रभु बिन सब रीते।।

दोहा – दानियेल है स्वप्नदर्शी स्वप्न अर्थ तू तोल।
फल से व्याकुल मत हो खोल अर्थ तू बोल।।

हुआ मौन दानियल विचारा। राज व्यग्रता विकल निहारा।।
स्वप्न घटित तुझी पर होगा। प्रभु कोप का भागी होगा ।।
गरल सी पियेगा तू पीडा। छोड आवरण पछता व्रीड़ा ।।
शान्त नहीं राज एषणाए। बैठ किरीट बोले तृषणाए।।
बन जाता मानव है बौना।। जब मन का धूमिल हो कोना।।
भवन छत टहले अरण्यानी। दर्प बोला राजा की वाणी।।

दोहा — निज बल सामर्थ्य बसाया शत्रु सके नहीं माप।
कैसा सुदृढ नगर भवन बेबीलोन प्रताप ।।

बात पूरी राजा कह न पाया। प्रभु वाणी ने कोप सुनाया।।
हाथ से राज तेरे जाता। भ्रम उन्माद जीवन उलझाता ।।
पशुआ सग पशु बन जीयेगा। तद्रिल सज्ञा जगत हँसेगा ।।
वर्ष सात पशुओ की बोली। चरे घास बुद्धि अनमोली ।।
स्वर्ग ओर जब तू देखेगा। और परम प्रधान धन्य कहेगा ।।
इन्सान फिर इन्सान बनेगा। पीढ़ी पीढी राज करेगा ।।

दोहा — सिमट जाती सब आब। चले जा कर घमड।।
बुद्धि तर्क नीचे गिरे प्रभु प्रताप प्रचड।।

एस्तर मन ऐसा वन—यात्री। अधकार कभी ज्योत—पात्री।।
ऊबड़ खाबड़ राह पथरीली। घाटी यह एक विकट गर्वीली।।
बीते सात कल्प दुखदायी। वामाक्षी तब राह दिखायी।।
जग सारा प्रभु का गुण गाता। निदाघ—मरू ही मन भटकाता ।।
मन विवेकी विषाद का शोधी। विवर्ण विनिद्र है विशाधी।।
शरण प्रभु आवे अन्तर्शोधी। विश्राति है चेतन अवरोधी ।।

दोहा — राजा प्रभु गुण गावे प्रभु मे होकर नेक।
धवल ज्योत राज बिखरे प्रजा सुनावे टेक।।

राजा झुक प्रभु शीश नवाता। प्रभु अनुग्रह आशीष पाता।।
एस्तेर मन प्रखरता पाता। काव्य बना इतिहास गाता।।
राजा बलशासर हर्ष मनाता। राज भवन जेवनार सेजाता।।
यरूशलेम मंदिर पात्र मगाता। ढाल ढाल दाख मधु पिलाता।।
मतवाले सब मौज उडाते। शान्त भाव सकेत सुनाते।।
लेखन उभर दीवार ऐसे। लिखे मनुज हाथ अगुली जैसे।।

दोहा — कौन पढे समझाये, प्रधान सब निरूपाय।
बधक दानियल बुलाया स्वप्नदर्शी सहाय।।

दूर तृष्णा से आत्म उजासी। प्रभु वचन अर्थ करे प्रकाशी।।
हे राजा प्रभु जिसे दिलाये। मान प्रतिष्ठा वही जन पाये।।
हो गई कठोर तेरी आत्मा। बिसारा परम प्रभु परमात्मा।।
धोखाधड़ी भरा मन तेरा। बुराई नहीं देखे सबेरा।।
तरूणाई की बातो का घेरा। राज मे अब विपदा का डेरा ।।
क्षण अलोकित कर रेखाए। लिखती सदा मनुज सीमाए।।

दोहा — लिख गये शब्द सुनाता मने तकेल उपासीन ।
प्रभु तुला तोला गया घट निकला तू दीन।।

दोहे

पलट गये राज पासे सूरज उगा अशात।
कटी फटी तट की रेखा एस्तेर मन हुआ क्लात।।
शासन दारा मादी अक्स हुए खौफनाक।
राज भक्ति मे शीश झुके हुई मुनादी बेबाक।।

तूफान धर्म धुरीण उठाया। राज प्रधान घात लगाया।।
आज्ञा पत्र हे राजा तेरा । निष्प्राण समझे दानियल तेरा ।।
घूर्णिचक्र अब समझा राजा। दीर्ण विदीर्ण आसन विराजा।।
दुर्निवार यह झंझा कैसी। छल बुद्धि अनल दहकी ऐसी।।
राजा दुखी महा उदासी। दानियल तेरा मन प्रकाशी ।।
रक्षक है परम प्रधान तेरा। घेरे नहीं तुझे अँधेरा ।।

दोहा — आदेश से बँध नेता राजा है आदेश।
दानियल डालो माँद राजा पाता क्लेश।।

माँद अँधेरी चमकी आँखे। सिंह गरजन ज्यो मृत्यु पाँख।।
देख दानियल चुप्पी साधे। दुलराते संग बैठे वे आधे।।
मैत्री जैसे कोई घनरी। मधुर संकेत बाते उजेरी।।
राजा उपवासी निज धिक्कार। पौ फटते ही आस पुकारे।।
छोड़ मर्यादा राजा दौड़ा। 'निराश–बध आशा ने तोड़ा।।
'हे दानियल राजा पुकारे। बार बार सिंह माँद निहारे।।

दोहा — 'युग युग जीवित रह राजे न्याय आसन बिराज ।
'प्रभु दास जीवित तेरा प्रभु मेरे सरताज ।।

राज्नीति भेद औ तनावो। एस्तेर चल रही नंगे पाँवो।।
काल के फेरे समय मेखे। साँझ सवेरे एस्तेर देख।।
विकट 'मेढा ऊल नदी किनारे। दक्षिण ओर अज नबी निहारे।।
दरस नबी प्रभु दूत यू समझाये। भावी चिन्ह यू बतलाये।।
पर्यावर्षीय राज ये निनादी। और अज यूनानी विवादी।।
जग मुकुट ये स्वेच्छाचारी। दुखदायी प्रपचक व्यापारी।।

दोहा — पानी पेच से दरश देश काल परिवश।
भावी के संकेत गूढ धूमिल धरा उन्मेष।

प्रभु दूत नबी मंत्र एक देता। 'प्रभु के अंक समझ सुचेता।।
सत्तर सप्ताह वे तेजाधारी। 'मानव–पुत्र होगा उद्‌गारी।।
'बासठ–सप्ताह प्रत्ययकारी। कुटिल भाव तब हाग प्रहारी।।
अभिषिक्त पुत्र काटा जायेगा। पर 'मानव वाचा बाँधेगा।।
अथ उन्मेष बलि युग बीतेगा। प्रबल बाढ सा सत्य जीतेगा।।
यरूशलम पुनरूत्थान अमोला। युग धर्म प्रकटेगा अनमोला।।

दोहा — अन्त तक युद्ध ठनेगा उत्सर्गो का अभियान।
ध्वसक बैठ कगूरे सुनायगे व्याख्यान।।

भूत भविष्य नबी दरशाया। मानव जागृति संदेश सुनाया॥
इच इच समय नाप बताया। सत्य पूर्ण विश्वास जगाया॥
नबी परमेश्वर मुख वाणी। भविष्य चितौनी स्थिर प्रमाणी॥
एस्तेर पायी जीवन दीक्षा। शुभ्र शान्ति युग करे प्रतीक्षा॥
नाम अभिषिक्त है इब्रानी। ख्रीष्ट मसीह कहे यूनानी॥
अभिनन्दन स्पदित मन गाया। पाप बलिदान अत है आया॥

दोहा — एस्तेर मन गुने वाणी विस्मय-कारी अचूक।
दो हजार तीन सौ दिन गवाही देगे मूक॥

मधुर संदेश नबी सुनाता। कहे यशयाह भोर है आता॥
हठ न करो मुँह न छिपाओ। पीछे न हटो न पीठ दिखलाओ॥
मुँह खोलता यहोवा मेरा। कहता थके हुए करे डेरा॥
लिखो नबी कहे हृदय—पाटी। पाओगे सुवास देश माटी॥
आँख उठा आकाश निहारो। कमर कसो हिम्मत न हारो॥
कीट चाटते वस्त्र पुराने, लाया वस्त्र नया पहिचाने॥

दोहा — जिस चट्टान गढ़े गये ध्यान धरो उस खान।
हर्षित हो धन्य धन्य कहो निजता निज पहचान॥

धन्य धन्य वे पाँव लुभाते। मन भावन संदेश जो लाते॥
सुनो पहरूए पुकार सुनाते। बन्धन सारे खुलते जाते॥
मुँह के बल था जिसे गिराया। पीठ को जिसकी सड़क बनाया॥
धूल झाड़ वह खड़ा है ऐसा। शोभा मुकुट पहिना है कैसा॥
फूट निकला वह शाखा जैसा। मरू मे अकुर फूटा कैसा॥
धवल प्रकाश इस्त्राएल पाया। बिगड़ा रूप सँवर निखराया॥

दोहा — देखे जग चकित सारा पाया कैसे उद्धार।
पड़ा था मूर्च्छित अचेत घायल था तलवार॥

सुन पुकार यहोवा बुलाता। कहता तुझ छुड़ाने आता।।
'रत' आग चाहे नही जलेगा। पार कर नदी न डूबेगा।।
अंधियारे म करे उजाला। टढा मारग सीधा आला।।
सुनो समुद्र पर चलने वालो। द्वीपो म भी बसने वालो।।
गीत यहोवा के नये गाओ। गुणानुवाद करा मिल आओ।।
महिमा अब इस्राएल पायेगा। शक्ति अजेय बन जायेगा।।

दोहा — जिस मारग तुझे चलना बनाये प्रभु राह।
कह नबी 'वाचा–वारिस प्रभु अनुग्रह अथाह।।

भरा तराई पहाड़ गिराओ। ऊँच–नीच टेढी धार मिटाओ।।
गौरस कर राज मार्ग सुधारा। कहे नबी सुन पुकार प्यारा।।
शान्ति–शान्ति सर्वत्र पुकारा। छिप जाओ गर्वित तलवारो।।
तेज प्रगट अब होना चाहे। कठिन सेवा उद्धार की राहे।।
चरवाहे सा वह है आता। एक झुण्ड कर सबको चराता।।
जीवन–खलिहाना का सुनेता। दुलार अकवार भर भर देता।।

दोहा — मारग नया एक बनेगा जन मन का आधार।
स्वर्गिक शिखर का विभव जीवन रव् उपहार।।

मडप यरूशालम एक बनेगा। शोभा महिमा जग दखेगा।।
सवा समर्पण भाव लायगा आहत मानव त्राण पायेगा।।
सृष्टि का कौमार्य वह हागा। शान्त अगाध प्रम वह होगा।।
'यहावा का पल्लव उहरेगा। मधु–रोटी–जीवन बाँटेगा।।
जन–गण–मन प्रकाश पायगा। ऐसा दीपक वह लायेगा।।
अक्षय वैभव जगत छायेगा। नाम 'इम्मानुएल पायेगा।।

दाहा — स्थिर करेगा धर्म न्याय मानवता आधार।
सर्व काल प्रभुता करगा 'शान्ति राजकुमार ।।

ठूंठ यिशै डाली फूटेगी। शाख एक फलवत होवगी।।
देगी जग-छाह तपन-हारी। प्रभु शक्ति प्रचण्ड तेजधारी।।
दिव्य शक्ति बल-प्रद होवगी। यहावा शक्ति सतत बढ़गी।।
जग सुगध सुवास छायगा। दीन हीन जन मान पायगा।।
धरा खराई न्याय देखेगी। वचन-शक्ति वैभव पायगी।।
छोट लड़के की अगुवानी। भेद मिटेगा महिमा वाणी।।

दाहा — अगाध जल समुद्र जैस एसा देगा ज्ञान।
क्षमा दया मान बढगा मानव मान महान।।

प्रकाश पथ मानव पायेगा। कहे नबी मुक्ति-क्षण आयगा।।
दिन एक यहोवा ऐसा देगा। पर्वत सिय्यान दृढता पायेगा।।
मानव-पुत्र धरा सँवारगा। धर्म फेटा बाँध कमर कसेगा।।
हुँडार मेम्ने सग विचरेगे। दुधार गौ सग सिह चरेगे।।
शक्ति नम्यता शोभित होगी। ज्योत्सना पावन निर्मल होगी।।
तेज तप सतसत धार बहेगा। मधुर एक्य भाव जग विकसेगा।

दोहा — निर्मल वचन तम हरग आयेगा नव प्रात।
राज पथ नया बनेगा न्याय विचार प्रभात।।

वचन यहोवा अनुग्रह पाये। शान्ति-दायक वाचा सुनाये।।
निर्मल हृदय शान्ति पायेगे। सत् गुणा बल शक्ति धारगे।
टल पहाड वाचा न टलेगी। नया प्रकाश अनोखा दगी।
दीन हेतु अपमान सहगा। पाप अधर्म बोझ उठायेगा।।
राग से वह पहचान करेगा। घायल होगा दड पायेगा।।
तुच्छ जान सब छोड देगे। पर मसीहा कह सराहेगे।।

दाहा — देखेगा जगत उत्सर्ग प्राण देगा उडेल।
भुजबल यहोवा का वह निर्धूत शान्ति बेल।।

उठ हा प्रकाशमान नूरानी। हे ज्योति पुत्र तू बलिदानी।।
तेज यहोवा तुझ मे समाये। पावन प्रेम बल द्युति पाये।।
तेज मुदित है शान्ति आभा। अरूणिम शिखर पर मुक्ति गाभा।।
धनुप झुका, प्रत्यचा चढ़ाता। अतुल पराक्रमी राजा आता।।
पुत्र पुत्रिया आनद मनाती। प्रकाश मडली स्वागत गाती।।
अस्त अब प्रजा सूर्य न होगा। पीढी पीढ़ी उत्थान होगा।।

दोहा — फाटक नाम यश रखो शहरपनाह उद्धार।
मल मिलाप धर्म कसौटी सबसे छोटा हजार।।

जैसे भूमि उपज निपजाती। प्रभु वाचा है हष उपजाती।।
देखा दुल्हिन श्रृगार सजाती। ओढ धर्म चादर मुसकाती।।
कहे नवी राज मार्ग सुधारो। दूल्हा आता पथ बुहारो।।
पहिन बैजनी वस्त्र इठलाता। धर्म—शक्ति बल वह हरषाता।।
हर आगन म दीप जलाओ। शान्ति भवन एक नया बनाओ।
कठिन प्रेम का वचन निभाने। सेवक धर्म को मधुर बनाने।।

दोहा — धब्बेदार दाख रगे, पहिराव तू उतार।
करूण प्रेम सच्चाई का मिला तुझे उपहार।।

नह निकेतन एस्तेर पाया। सवेदन मिट्टी महक जगाया।।
चित्र पारखी रानी आयामी। ज्यात बना इतिहास सुनामी।।
राह अंधेरी म ताप देता। कोप ज्योति का एस्तेर खेता।।
हे एस्तेर तू सतत प्रवाही। मजिल विश्वास तू एक राही।।
स्रोतस्विनी तू सुखकारी। सदेह—काही न हो भारी।।
क्षर्यष राजा की पटरानी। नीति अनीति सब, पहिचानी।।

दोहा — तुझ पर पीढ़ी दाय तू ही धीव प्रवीर।
प्रभु सहायक है तेरा अधकार को चीर।।

हे एस्तेर तू युगीन धारा। क्षणावेश की तू नहीं कारा॥
खडहरो पार तुझे है जाना। अनुभूत क्षणा पर मिट जाना॥
निर्जन देश आबाद कराना। नया सबेरा किरण है लाना॥
रात अधेरी सुन खामोशी। प्रथम किरण ले फूल आगोशी॥
देश माटी तू मान बढ़ाये। आनद सिय्योन तब मनाय॥
कॉप उठे विकराल ये धोखा। लिख इतिहास तू अनोखा॥

दोहा — समझ भाषा से भाषा सुन प्रभु का आह्वान।
सॉस सॉस है अभिलाष आयगा नव विहान॥

प्रभु महिमा स्तुति एस्तेर गाय। मन सॅवार प्रभु भेट चढ़ाय॥
दिव्य ज्योत्सना एक समायी। जीवन निदान नीरद बन छायी॥
उन्मना मन राज–भवन ऑके। अन्तस नयन राज–मन झॉके॥
राज ऑगन सौरभ सुहानी। परम प्रयसी खड़ी लुभानी॥
श्वेत श्याम ऑखे रतनारी। तप से तपी कचन काया प्यारी॥
नभ से उतरी प्रभा के जैसे। सौंदर्य अनुपम जगमग ऐसे॥

दोहा — स्वर्ण–राजदड बढ़ाकर राजा करे मनुहार।
छुआ राजदड एस्तेर बिखरे रग अपार॥

तू क्या चाहे पूछे राजा। 'दूँगा आधा राज वचन राजा॥
'यदि राजा मन सरसाये। स्वीकारे जेवनार हरषाये ॥
सूर्य सग ज्यो तेज आये। जेवनार 'हामान भी लाये॥
रग चढी जेवनार आला। 'मॉग एस्तेर कुछ निराला ॥
स्वीकार हो तो कल फिर आये । फिर एस्तेर जेवनार सजाये॥
धीरज से सुनना हे राजा। देना तब वरदान अधिराजा ॥

दोहा — उन्मना राजा गभीर कैसा यह आह्वान।
नींद नहीं नयनो मे, मन कहे, 'सावधान ॥

उधर 'हामान हर्ष मनाता। कुटिल गरूर मगरूरी चढाता।।
ज्वार बिफर हौसले बढाता। पहिन कूट चोगा नृत्य दिखाता।।
मौत से जिन्दगी उलझाना। आज मौर्दक सूली चढाना ।।
अभिप्सा साथी बन कर आये। मित्र पत्नी मिल सभी बहकाये।।
'बनाओ फदा ऊँचा फॉसी। भोर राजाज्ञा पाये आसी।।
'मौर्दक–मृत्यु जशन मनाता। जवनाग खुशी खुशी जाता।।
दोहा — साजिश करे जेरेश सूई गाडे आसमान।
मीनार चढता लोलुप पद–लिप्सा अरमान।।

रैन न बीते उन्निद्र राजा। अर्थ गुने जवनारी राजा।।
बनी रहे राज मर्यादा वैसी। घुमड़े क्यो मन शकाए कैसी।।
पुस्तक इतिहास तब मगवाया। मन अधियारा दीप जलाया।।
क्षण था एक वह प्रलयकारी। छद्म छाया थी घातक भारी।।
जूझा था मौर्दक भर हुकारी। क्षर्यष राजा का वह हितकारी।।
मान मिला क्या उसे सुहाना। पूछे राजा उसका ठिकाना।।
दोहा — 'राजॉगन फिरता कौन प्रधान हुआ बेचैन।
भीतर हामान बुलाओ क्षर्यष मन मिला चैन।।

आदर सहित प्रधान बैठाया। राजा उसका मान बढ़ाया।।
'करना चाहे उपकृत राजा। सुविज्ञ तू है मत्री राजा ।।
मान प्रतिष्ठा भी है बढाना उत्सव चाहे राजा सुहाना।।
जिसको चाहे राज हरपाये। जब चाहे प्रजा सरसाये।।
राज वस्त्र मे महिमा पाये। शीष मुकुट रख मान दिलाये।।
राज–अश्व वह करे सवारी। करे नगरी जयकार भारी।।
दोहा — मन ही मन वह बोले मिगा राजा मान ।
और न कोई अधिकारी हामान का सम्मान।।

घनघोर नशा छाई खुमारी। क्या औकात है घुर–घुरारी॥
मन झींगुर करते झनकार। अहर गी दर्प भरी टकारे॥
फुर्ती कर गुन हे अधिकारी। कहे राजा उपकृत मैं भारी॥
चाहता करूं प्रतिष्ठा ऐसी। राज न भूल पाय जैसी॥
तुला द्वार से मौर्दक यहूदी। राज प्रतिष्ठा पाये यहूदी॥
खदित हामान लज्जित कांपे। औंधा गिरा अह मुंह ढापे॥

दोहा – समय चक्र घूमा कैसा दूर किया अंधकार।
धर्मी का प्रभु रखवारा कहता समय पुकार॥

मुरक अम्बर हिना छिड़काया। कलश तगाई भाज सजाया॥
खिल गया महल रेशा–रेशा। जैसे देता कोई संदेशा॥
राजा संग हामान मानी। आय अभिषयी वरदानी।'
सेतु बन एस्तेर तू आधारी। दर्प दानवी कुटिल असि धारी॥
कहे क्षयर्ष मन प्रसन्न मेरा। 'सुनू, निवदन आज मैं तेरा॥
एस्तेर कहे हे प्राणदानी! विध्वंस नाश बचा वरदानी॥

दोहा – क्षयर्ष नहीं प्रजापाती दुष्ट यह हामान।
झुंझलाया राजा ऐसे उठा जैसे तूफान॥

अधीर हुआ धीर धरने वाला। मलिन हुआ अर्पित करनेवाला॥
तपन जलजलाहट मन भारी। अगरू धूम सा जले हितकारी॥
विकल व्यग्र सा घूमे बारी। सींचने वाला बारी सारी॥
चरणो पड़ा रानी डोले। प्राण–दान हामान मुँह खोले॥
ज्वाल सा राजा भवन आया। 'दूर हटाओ पापी काया॥
क्षमितव्य नहीं यह दुराचारी। फाँसी चढ़ाओ भ्रष्ट आचारी॥

दोहा – खभा वही शव बदले फन्दे चढा हामान।
प्रभु की इच्छा जग देखे क्षण मे पल्टे विधान॥

अर्न्तदाह की व्याकुल क्रीडा। रूका कोलाहल थमी पीड़ा॥
प्रवचना एक विकृत अधेरा। एस्तेर बन कर आई सबेरा।
कहे क्षयर्ष 'तूने कुछ न माँगा। माँग आधा राज भी त्यागा॥
'प्राण–दान पाये बधु मेरे। सारी प्रजा सब बधु तेरे॥

क्षमा प्रत्यादेश ले हरकारे। दौड़ रह प्राता के द्वारे।।
सुखद स्पर्श वायु हरषायी। निर्मल आभ एस्तर मुसकायी।।

दोहा — निज शकाओ से विफल हुए थे जो विभक्त।
झरनो की ढलानो पर हुए सभी एक रक्त।।

मान 'मौर्दक राजा बढाया। द मुद्रिका निज मत्री बनाया।।
दहते मूल्य ऊँचे उठाया। पूर्ण उत्कर्ष सृजन गहराया।।
कहे राजा, 'सब मिल बीनो। 'प्रकाश ऊष्मा ऊर्जा तीनो।।
भाव समष्टि बोध दिखलाया। मिटा शोक आनद बढाया।।
'पर्व–पुरीम आनद मनाओ। नगर यरूशेलम देश बसाओ।।
प्रभु भवन नया एक बनाओ। स्वर्ण पात्रो मदिर सजाओ।।

दोहा — झुक दडवत करे एस्तेर वचन नबी करे याद।
दृढ बना शहरपनाह नगर हुआ आबाद।।

अमर पौध मानवता ऐसी। हर युग जीवित रहे जैसी।।
महस्त्रा चाहे बलि चढ जाये। खडहर चाहे सब हो जाये।।
छितर बिखर लुट चाहे जाता। पर धर्मी जन स्थिरता पाता।।
शत्रु विनाशी स्वय मिट जाता। प्रभु जब निज हाथ बढाता।।
बँधक दास लौटा ले आया। वाचा प्रभु अटल ही पाया।।
क्षर्यप रानी एस्तर सद्आशी। सूखे मरू की स्रोत प्रत्याशी।।

दोहा — आस्था पर ही है टिका वसीयतनामा नेक।
ओस बूद प्रभात का सन्त करे अभिषेक।।

जीवन यह दौलत है प्यारी। एक बार खिले अवसर क्यारी।।
कुटिल अगन यदि मन समाये। ओछापन जीवन मिटा जाये।।
ढब से जीवन जो बिताये। जग भी औ मन भी सुख पाये।।
मानव लगा दे ताकत सारी। 'तपन मिटा दे बन सुखकारी।।
इन्सानियत एक गहरी धारा। सिसकते प्यार का है सहारा।।
टेढे मेढे पत्थर शिलाए। कहे वादी गुत्थी सुलझाए।।

दोहा — तथ्यो को पार कर पहुँच उस 'रब्बी के पास।
उपकृत जिससे है सच्चाई विश्वासा का विश्वास।।

सर्ग अठ्ठारहवाँ

यीशु महिमा

प्रथम खड– यीशु अवतरण

झूम झूम वादी हरषाय। मधुर मधुर सुगध लहराय॥
स्वर्ण लावण्य बिखरा एस। सरल सुवासित हिरदय जैस॥
क्षण क्षण नवल तरंगे ऐसी। प्यार का सागर लहर जैसी॥
झील गलील लहर लहराये। गुजन अनुगुजन मन भाये॥
प्रीतवारि झरने भर लाये। उमग उमँगित उमड़ाय॥
नमित नेह नभ बूद बरसाये। जन–जन मन सुख परम पाय॥
दोहा— आशा प्रेम औ विश्वास त्याग सत्य के सग।
वसुधा देखे विमुग्धा छिटके अनुराग रग॥

निर्मल निर्माल्य वादी ऐसी। रजत धवल चाँदी के जैसी॥
बाल–चन्द्र सी सतत् विकासी। शात, प्रशात मृदुल सुभाषी॥
स्वर्गिक विभा–विभव मुसकानी। मजुल मुकुर दीपित द्युतिमानी॥
वृक्ष देवदार सुज्ञाता ऐसे। प्रभु विधान सुनाते जैसे॥
हरे भरे भव्य वन ऐसे। सदेशा भरा मन हो जैसे॥
वीथियाँ अजब अनूप प्यारी। निर्मेघ गगन धीरज धारी॥
दोहा— लहक माटी अभिज्ञानी पावन भरा सुज्ञान।
उत्सर्गी यह वरदानी पवित्र पवित्र महान॥

कस्बा नासरत

कस्बा नासरत न्यारा प्यारा। माधुर्य भरा प्रभु का दुलारा॥
पर्वत क्रोड़ बसा वह सुहाना। कार्मेल पर्वत पवित्र लुभाना॥
वादी निहारे पावन बाला। अकलुष आभ शारदीय हाला॥
सहज सरसता सरिता जैसी। शान्ति सदेश सुकविता ऐसी॥
वश दाऊद 'यूदा कुल डाली। धरा–लवण ल्द भोली–भाली।
पर्वत ओर वह दृष्टि उठाये। लौ बाँध प्रभु की महिमा गाये॥
दोहा—करती प्रभु से सवाद बाला जानु टेक।
सीपियो मोती अनेक पाये अनुग्रह एक॥

मरियम

बाला अनाथ, कस्बा अपनाया। 'सिय्योन बेटी कह हरषाया।।
'मरियम सहज सरल सुकुमारी। कन्या कुमारी सबकी प्यारी।।
सुरभित सुमन आयी बहारे। मुदित प्रमुदित सखिया निहारे।।
मँगनी हार युसुफ पहिनाता। नभ नय रग पटल लाता।।
सखिया स्नेह गीत भर लायीं। रग सुरग तरग मदमायी।।
अम्बर से धरा सेतु बनावे। नारी स्वर्ग धरा पर लावे।।

दोहा— चिर–युवा रह तू मरियम तोड तम के कगार।।
सग इम्मानुएल रहे पाये शान्ति कुमार ।।

(लूका 1 26-31 एव यशायाह 62 3-4 पर आधृत)

प्रणय प्रीत प्राणो मे गाती। प्रभु अनुगामिनी प्रभु सुनाती।।
सुन प्रभु मेरे अन्तर्यामी। नयी राह, नया पथ स्वामी।।
'तेरा प्रकाश सदा मैं पाऊँ निष्ठा पूर्ण मैं प्रीत निभाऊँ ।।
धवल प्रभा एक जगमग आयी। दृष्टात प्रकाश मरियम पायी।।
पुलकन प्राणो मे एक मीठी। आत्म–विस्मृत सी दृष्टि दीठी।।
गूढ रहस्य मन हुआ प्रकाशी। वाणी सुने मरियम आकाँक्षी।।

दाहा — सिय्योन मुकुट तू पहिने तेरा हो बडा नाम।
भूमि 'बूला - कहलाये देखे प्रभु अभिराम।।

दिव्य वसना बाला द्युतिमानी। मर्मर ध्वनि प्रार्थना वाणी।।
तरू से तृण तक प्राण प्रवाही। वचन सुने 'मरियम अगुवाही।।
प्रेम रूप आदान अवधानी। मद मद फुहार सुहानी।।
न्याय धर्म सत्य सचारी। अन्याय अधर्म पाप तम हारी।।
प्रीति पुनीत नबी अनुरागी। आरत आलाप सुनाते रागी।।
शीतल करते मन श्रमहारा। पुलक पल्लवित जग आधारा।।

दोहा — नबिया की अभियाचना उच्छवासित उद्गार।
अभेद्यतम क्रूर विकट आकुल प्राण पुकार।।

(यशायाह नबी—अभियाचन 52 3 16)

उमग सग जयकार गाता। एक पहरूआ पुकार सुनाता।।
सेत मेत बिकता तू प्राणी। लीक—अलीक चले मन—मानी।।
जाग! जाग हे दीन अज्ञानी। 'खोल बध धूल झाड़ मानी।।
'हाथ बढा हाथ प्रभु बढाता। सुरभित है दिगत ''वह आता।।
बिना फिरौती तुझे छुड़ाता। द्वार खडा दाता है बुलाता।।
अनुगुजन आप्त वचन वादी। तन्मय 'मरियम मन अह्लादी।।

दोहा — महिम महिमा प्रभु आया पहिन सत्य कटिबध।
सुनता वह दीन पुकार खोल तू मन के बध।।

(यशायाह 45 18)

प्रभु पथ का अकिचन राही। महिमा प्रभु की गाता पाही।।
सृष्टि रच कर प्रभु हरषाया। स्थिर कर मुदित 'वह मुस्काया।।
वर्षा हिम आकाश बरसाया। भूमि बीज उपज उपजाया।।
रहे न सुनसान सरसाया। बरबत बहारे बजा सुनाया।।
यो ही लौट कहीं न जाये। बोने वाला बीज न पाये।।
आता है वह बोने वाला। लवनी करे लवने वाला।।

दोहा — नबी के नीरव सकेत अनुभावन अनुभाव।
आता है महिमामय हिरदय हुलास चाव।।

(मीका अभियाचन 4 1-2, 5 4)

देख झूमती खजूर डाली। सोनई फसल का आता माली।।
शान्ति का बरमूल सुहाना। पृथ्वी छोर आनद बखाना।।
अभीक हो! प्रभु नाता जोड़ो। जल रेखा से मारग छोड़ा।।
प्रभु प्रताप चरवाही करेगा। ओर छार तक नेह अगुवाही।।
हे बेतलहेम शान्ति पाखी। जग देखेगा भर भर आँखी।।
उतर स्वर्ग से 'वह है आता। पृथ्वी पर 'स्वर्गिक शान्ति लाता।।

दोहा — स्पन्दित हर युग होगा' वह ऐसा उन्मेष।
उद्वेलित हदय करेगा जग आशीष विशेष।।

जर्कयाह नबी अभियाचन (9 9-10)

भक्ति भाव से नबी पुकारे। स्तुति महिमा अनुभूति पसारे।।
अवतरित जग म एक होगा। सुहावन पावन वह होगा।।
प्राण प्राण मे त्राण भरेगा। हरित भरित हिरदय करेगा।।
युद्ध धनुष सब टूट गिरगे। ध्वज शान्ति ललित लहरेगे।।
विनयी राजा प्रभु आयेगा। गरदभ शावक चढ़ आयेगा।।
रक्त पिपासु प्रीत जल पीये। पाप ताप परिताप वर जीये।।

दोहा — दूर दूर के देशो तक समुद्र से समुद्र पार।
विभव पराक्रम जग देखे दीन महिम उद्धार।।

नबी होशे का अभियाचन (11 1, 14 9)

कहे नबी क्यो खोया खोया। विभव विलास क्यो सोया सोया।।
सौ सौ बार प्रभु है मनाता। पाप बोझ तेरे वह हटाता।।
कहता मैंने ही सृजा बनाया। दे निज प्यार श्रृगार सजाया।।
विभुता प्रभुता से हरषाया। अदन वाटिका हर्ष बिठाया।।
बन प्रवीण तू बूझ सकेगा। आदम वश नहीं भटकेगा।।
प्रण पालक प्रभु उदार हाली। तू दाखबारी वह माली।।

दोहा — मृतक सा जीवन तेरा हिरदय से कर ताप।
जाग! हे सोने वाले उठ! प्रभु आत आप।।

जीवन ज्ञान नबी सुनाते। मति सुमति प्रीत—नीत जगाते।।
करूणामय प्रभु उद्धार हमारा। बल सबल प्रबल विश्वास सहारा।।
प्रेमिल प्रेम जग रखवाला। धर्न स न्याय करने वाला।।
हे सर्व शक्तिमान सर्व ज्ञानी। आदि स अत तू सदा निमानी।।
तू सृजक रक्षक क्षमा दाता भटके हुआ का जीवन त्राता।।
प्रभा द्युति छवि शोभा आभा। जग देखे शान्ति का गाभा।।

दोहा — हे शान्ति—दाता पुत्र प्रभु तू अपरिवर्तनशील।
कल औ आज युगानुयुग सर्व व्यापी गतिशील।।

(I तीतुस 3 5 II तिमुथी 2 13 III युहल्ला 11 36 IV 5 22 लूका 8 24 VI यूहला 15 13 VII 591-H 8 1 3 VIII मती ,18 20)

नबी यशायाह अभियाचन (40 3-4)

मरियम गुन अजेय आख्यान। आप्त वचन गुजन सुहान॥
चौकस करो राजमार्ग वह आता। दृष्टात–लाली वचन सुनाता॥
प्यार शान्ति का अवधानी। आशा आनद विभव वाणी॥
धरा रंग क्या कर हुआ धानी। आता कौन एसा वरदानी॥
नया चमन शुभ्र ज्योत पसारी। गिरी ठूठ शाख अग्रसारी॥
अगहर अक प्रभु पहलौठा। आहूत अगहुण वह एकलौता॥

दोहा — दूभर राह का राही अन्तर्मन का विश्वास।
राह फैलाय आता पावन एक एहसास॥

(अगहर — पहिला अगहुण — अगुआ)

नबी यशायाह अभिवाचन (10 13-14, 11 5 9)

वीर समान वह गद्दी विराज। गर्व दर्प भर गिर सब राजे॥
अगन ज्वाल सा एश्वर्य निराला। झाड कटील जल तम काला॥
काट गिराय घन बन शाखे। कटनी छॅटनी वृक्ष और दाख॥
करता करैत से खिल्वाडी। हाथ नाग–बिल डाले झाडी॥
बॉध धर्म का फेटा आता। छोटा बालक न्याय लाता॥
उदार पृथ्वी करे अगुवाही। चरवाहे सी कर चरवाहा॥

दोहा — लबालब सागर जैसे एसा उसका ज्ञान।
झुकाये छोर आकाश, एसा प्यार महान॥

यशायाह अभिवाचन (42 3-4)

जग का सेवक बन वह आता। अद्भुत हिम्मत साहस पाता॥
कुचल नरकट निरभय उठाय। सिद्ध प्यार हिरदय जगाये॥
हर वय के हर राह चौराहे। हेर रहा देने को छोहे॥
जो बैठ बन्दी बन्द अन्धेर। बन विहान जगावे सबेरे॥
सदा हाथ थाम चले ऐसे। रक्षक तेरा ही है जैसे॥
सच्चाई न्याय से वह तोले। धर्म तुला रख न्याय से बोले॥

दोहा — कहता तू है मेरा मत डर मैं हू संग।
तू अनमोल सुन ले वचन मधुर प्रेम रंग॥

यशायाह अभियाचन (33 3, 52 2, 53 3-6)

सत्य–प्रकाश जग न पहिचाने। दीन विनयी को रोगी मानें॥
जग का रोग उसने बताया। बॉह फैला रोगी अपनाया॥
कीमत उसकी जगत न ऑकी। मुँह फेर राह नहीं झॉकी॥
जगत न तुच्छ उसको जाना। त्यागा अनचाहा पहिचाना॥
चाह उसको मारा कूटा। मान सम्मान चाहे सब लूटा॥
निर्जन भूमि मे अकुर कैसे। उजास धानी जग लाये ऐसे॥

दोहा – बोझ अधर्म सब उठाया। कि सब पाये पनाह।
घायल हुआ दुख उठाया। कि भटक पाये राह॥

यशायाह अभियाचन (53 7 12)

छल की बात कभी न बोला। सत्य न्याय क्षमा कहे अमोला॥
जग निर्मम निर्दयी उसे ताया। चुपचाप सहा धीर न गॅवाया॥
दोष लगा अपराधी बताया। मृत्यु–दड , दुष्ट सग सुनाया॥
बध होने वाली भेड़ जैसे। खोला न मुँह रहा शात ऐसे॥
उसे कुचल यह प्रभु सुहाया। जीवन उत्सर्गी प्रण निभाया॥
प्रभु धुन का अटल दीवाना। दाऊद – गद्दी विभव सुहाना॥

दोहा – प्रतिरोध दुष्टता सहा देता रहा उजास।
सत्य–राह चल दिखाया वह एक सत्य–प्रकाश॥

यशायाह अभियाचन (40 6-8 42 6)

प्रभु वचन हैं अटल अविनाशी। युग युग रहत सदा सुवासी॥
सारे मनुज हैं घास जैसे। भार हॅसे, सॉझ सूख कैसे॥
शोभित फूल मैदान सुहान। हॅसे खिले फिर सब मुरझाने॥
मरियम निरख दाख बारी। नबी वचनो की फुलवारी॥
पर्वत शिखर चढ नबी बाले। जैसे खेत खलिहान तोले॥
यशायाह की अगम्य वाणी। करती ज्या अतिथि अगुवानी॥

दाहा – अधो की ऑखे खाले सब को मिले सम्मान।
अज्ञानी का ज्ञान दान वह है नवल विहान॥

यशायाह अभियाचन (7 14-15 8 1 9 17)

प्रकाश पाये पावन माटी। लिख अक्षर लं बड़ी एक पाटी।।
अंधियारे पर प्रबल उजियाला। मृत्यु–देश म हर्ष निराला।।
पुत्र मानवता महान होगा। प्रभु विभव कांधे पर होगा।।
नाम इम्मानुएल वह पाये। भले बुरे मधु फल खाये।।
दिव्य ज्योत सी पावन बाला। पहिनेगी अभियाचन माला।।
पुलकित मरियम मन सुकुवांरा। चाहत प्रभु पुत्र एक दुलारा।।

दोहा — मन टकारे सुने वादी प्रभु सरूप पुत्र कांत
अविजित हो प्रकाश राशि निरूपम अनुपम शात।।

मरियम को दिव्य दर्शन

दरस देखे मरियम आसी। चारो ओर दिव्य उजासी।।
गूँज रहा द्युलोक है सारा। निवेदन वेदन प्रभु स्वीकारा।।
एक आलोक बॉह फैलाये। उतर स्वर्ग से धरा पर आये।।
बालक रूप अधरो मुसकाये। ज्योति शीतल सी लहराये।।
धीमे प्रकाश का आना जाना। स्वर्ग दूतो ने वितान ताना।।
वह था वह है वह आयेगा। सत्य मधुर प्रेम जग पायेगा।।

दोहा — उज्जवल किरीट पहिने पवित्र है पवित्र नाम।।
युग युग का वह राजा न्याय उसका काम।।

दाऊद अभिवाचन (90 2)

हे मुक्ति के आनद दाता। विनत विनयी दाऊद सुनाता।।
हे परम पावन उजियारे। क्षुद्र पात्र हम घिरे अंधियारे।।
पावे अनुग्रह तेरा सुहाना। तेरी दया करूणा अवधाना।।
धर्मी जन को प्रभु सरसाओ। शान्ति लहर बन छा जाओ।।
चरण–ध्वनि हम सुनते तेरी। प्रतिपल प्रतिदिन सुनते भेरी।।
मधुरिम महाभाव बन आओ। अपनी महिमा जग बरसाओ।।

दोहा — हे उद्धारक महनीय जग पाये उद्धार।
अन्तर्यामी प्रभु सुने मन का मधुर गुजार।।

प्रकाशित वाक्य से (अध्याय 4-5)

पूर्ण प्यार सा कोई आया। खुला आकाश दर्शन पाया।।
स्वर्ग सिहासन एक दिखलाया। पावन परम प्रेम जग पाया।।
स्तुति पावन आत्माए गाती। प्रभु की जय जयकार सुनाती।।
निष्कलुष मेम्ना एक ऐसा। उजला रूप 'प्रभु पुत्र के जैसा।।
रक्त धुले श्वेत वस्त्र पाया। आसन पर पिता सग बिठाया।।
'मरियम' मन वेदी ज्योति पाया। दिव्य दरस उमग हरषाया।।

दोहा— निर्मल अकलुष पुत्र कैसा देखे नयन निर्निमेष।
अद्भुत प्यार देखे मरियम मूदे नयन उन्मेष।।

मरियम अभियाचन

'मरियम मन भाव विभोर भरे अजुरि अजोर।
बूंद पड़े धरा लहके बरसे प्रभु कृपा कोर।।
प्रभु दीनो को स्वीकार सूखे न फुलवार।
करे प्रतीक्षा जग सारा हल्का करे दुख भार।।
नित नये रूपो मे आए हे प्रभु मेरे कांत।
स्निग्ध प्रेम बरसाए देश देश औ प्रात।।
उठा ले प्रभु अब पतवार हिरदय चढाते भेट।
आनद ज्वार बन आए बाँहो मे ले समेट।।
कोई द्वार से लौटे न दूर करे अधकार।।
पवित्र 'सत्य-प्रकाश आप प्रेम का रूप उदार।।
हे पावन सृष्टि रचयिता सबसे विलक्षण शान।
हे शुभ्र शान्ति दाता जीवन का दे ज्ञान।।
भाव अगुवानी आप करे बन कर आवे प्रेम।
'नया जीवन सब पावे, क्षमा दया सुनेम।।
धरा रूदन सुने आप निभावे वचन दाय।
निर्मल हृदय दीन उद्धार असहाय के सहाय।।

दीपित मान सब पावे, मिट जाय अंधकार।
मृदुल स्पर्श बन आए झकृत कर सितार॥
सारी सृष्टि आप समाय स्पदित निशब्द अरूप।
वचन देह धर आयं बन उद्धारक रूप॥

तन्मय तन्वगी तपनीय बाला। देख ज्योतिमय प्रभ ज्वाला॥
दीन दलित की एक अभिलाषा। सत्य सनातन सचित आशा॥
मनीषित मन की तरल उजासी। गतिमय गजर आत्म–प्रकाशी॥
गमक महक लहक तम हारा। स्वर्गिक विभव प्रकाश न्यारा॥
शाश्वत ज्योत प्रकाश माला। निर्मल नमित नमस उजियाला॥
जग आनद नेक उजियारा। दिगत व्यापी प्रकाश धारा॥
दोहा — हे उज्जवल पवित्र सुषमा धरती की उजास।
प्रगट प्रभु की महिमा कर तुझ से आग्रह खास॥

मन्न की शुचिता तेरी पावन मधुर महान।
शोभा शील अतुल सरल तुझ का प्रभु का दान॥
अनन्यता अनुपम तेरी पवित्रतम तेरा त्याग।
सम्पूर्ण सर्मपण तेरा निवदन शुचितम राग॥
स्तुत्य प्रकाश सनातन देखे तू अनमोल।
पुत्र परमेश्वर प्रकाशी मरियम सुन बोल॥
मरियम सुने नभवाणी पूरी हो अभिलाष॥
कैसे बोल ये अमोल कैसा यह एहसास॥

जिब्राएल स्वर्गदूत से सवाद (लूका 1 28-35)

दूत एक मरियम से सवादी। मन तेरा क्या है प्रतिवादी॥
हे पावन मरियम प्रभु चेरी। आनदित हो! जयकार तेरी॥
आगे आगे चल अगुवानी। पीछे रक्षक प्रभु सर्व ज्ञानी॥
जगत सुचेता पुत्र तू पाये। मत डर धन्य तू कहलाये॥
कह मरियम मैं हूँ प्रभु दासी। पूर्ण हो वचन, मैं हुई आसी॥

उल्लास अजब मरियम मन छाया। आशाओ ने दीप जलाया।।

दोहा — जिब्राएल वचन सुनाये यीशु रखे तू नाम।
सामर्थ्य प्रभु की छाया अतुल्य कान्ति सुनाम।।

स्वर्गदूत का मरियम को सिजदा करना

शीश नवाता तेजोधारी। दिव्य भव्य मरियम उजियारी।।
स्तुति अभिनन्दन जयकारे। भावित भाव अनुग्रह निहारे।।
स्वर्ग राज्य का मुक्ति दाता। पावन सृष्टि का शान्ति दाता।।
आदि अत वह जग उपकारी। प्रीत क्षमा अवगाहन वारी।।
पवित्र प्रकाश श्रृगार सजाता। मुक्त भाव स धरा पर आता।।
आगम वाणी प्लावित वादी। प्रकाश अनुसरण कर अहलादी।।

दोहा — ज्वलन शील अग्नि सा देगा जीवन दान।
वायु समान उपकारक जग का वह कल्याण।।

इलीशिबा और मरियम (लूका 1 5-23)

दूत हुआ फिर से सवादी। 'इलीशिबा का प्रभु हुआ हादी।।
सध्याकाल 'वय—पुत्र पायगी। प्रभु महिमा वह दान पायेगी।।
दूत ओझल द पावन आशा। महिमा मंडित हुई अभिलाषा।।
'मरियम नगर इलीशिबा जाती। पावन शुभ्र दरशन सुनाती।।
दो ज्योतियाँ श्रृगार सजाय। निरख निरख दोनो हरषाय।।
'मरियम प्रभु की महिमा गाये। 'हर घटी पूरी कर सुहाय।।

दोहा — 'माता मा को दे बधाई हरषे आँचल दाप।
प्रम उमडन हृदय निर्मल भरते आनद सीप।।

मरियम की वापसी

मजिल मरियम अब देखे आग। निर्मल निर्भय पुलक पलक जाग।।
कहे वानी युग रह रीत। राह न रीते पर चुग गात।।
करूणा के स्वर प्रभु पुकार। प्रभु पराक्रम कभी न हार।।
दर्पित दर्प सदा बेसहारा। लीक लीक चल थका हारा।।
नभ मडल का एक सितारा। जग म आता जग सहारा।।

प्रीत राशि तारे मुसकात। रत्न मणि ज्योत बिखराते॥

दोहा — "विस्मित अर्न्त–मन विभव हर्ष अपार अनत।
मिटा भेदभाव रग, जाग रहे उर दिगत॥

विश्व की प्रथम जन–गणना (लूका 2 अध्याय)

मरियम युसुफ दम्पत्ति धानी। बाट जोहते गान वरदानी॥
सुनी अगस्तुस केसर आना। प्रजा नाम लिखाय राजाज्ञा॥
नासरत से 'बेतलहम जाना। मारग कठिन 'युसुफ पहिचाना॥
पत्नी सग वह जाय कैसे। राजाज्ञा वह निभाये कैसे॥
छोडू या ले जाऊ ऐसे। पर्वत वादियो पार हो कैसे॥
'वश दाऊद पहिचान बढ़ाना। राजाज्ञा को भी है निभाना॥

दोहा — विविध शकाए मन घेरे इंगित करे अज्ञात।
सेवक धर्म औ प्रभु इच्छा रक्षक हो प्रभु अजात॥

बेतलहम यात्रा पर

पावन शिखर अतुल हिम शीता। जल भर लाते झरने मीता॥
देवदार वृक्ष सदा बहारी। बूंदे झिलमिल शरद फुहारी॥
दाखलता बेले सुखकारी। वृक्ष जैतून अनूप श्रृगारी॥
विषम क्लेश 'मरियम है पाती। शरद राते अब गहराती॥
पार दर्रों के अभी जाना। राहेल से भी आशीष पाना॥
ऊँचे धार–दार शिखर माला। वादियो मे तम कूट काला॥

दोहा — सामने भव्य प्रभु भवन नीचे राज प्रासाद।
'बेथलहम अब दिखलाया पाया मन अहलाद॥

बेतलहम मे आनद

'बेतलहम आनद घनेरा। मरियम–युसुफ लाये उजेरा॥
निधि स्वर्गिक देख हरषाया। अम्बर सुख राशि बरसाया॥
उतर स्वर्ग से प्रभु यहा आये। शीतल छॉह बेतलहम पाये॥
निज वाचा प्रभु जग हरषाया। दीन दुखी आरत सरसाया॥
पुलकित प्रेम नयन छलकाये। अमित आनद मन न समाये॥

हरष हरष महिमा बखाने। परम प्रेम अपार पहिचाने।।

दोहा — झुक झुक शीश नवाये धन्य बेतल धाम।
करूणामय प्रभु आये जग देखे अभिराम।।

बेतलहम मे जनगणना भीड़

बेतल शोभा छवि अति न्यारी। दिशा–दिशाओ स नर–नारी।।
सागर ज्यो मनुज उमड़ाये। लिखा नाम लौटे हरषाये।।
पनाह ढूँढ़ते द्वार द्वारे। थके मरियम–युसुफ मग–हारे।।
युसुफ व्यग्र मरियम अकुलानी। खाली पाये न एक भी ढाणी।।
पर्वत क्रोड गुफाए चरवाही। बढ़े कदम प्रभु की अगुवाही।।
झुरमुट ओट प्रकाश आयामी। भीतर चरनी, पशु भी विश्रामी।।

दोहा — छोटी कन्दरा एक यही कहा बिताय रैन।
शीत विकट यह अधेरी चलो बिताये रैन।।

धर्न्य कन्दरा व यीशु अवतरण

झिलमिल ज्योत रश्मि हिमानी, बरनी न जाय महिमा सुहानी।।
सारी सृष्टि के सृजनहारे। करूणा सागर जग रखवारे।।
ज्ञेय–अज्ञेय अनत रूपधारी। त्रिएकत्व महिमा धारी।।
पिता पुत्र पवित्र आत्मा प्रकाशी। प्राण चतना देह उजासी।।
सुन नबियो की दीन पुकारे। प्रभु आये बन प्रेम फुहारे।।
हर्षित करने निज दाखबारी। कन्दरा छोटी–लगी प्यारी।।

दोहा — , समय सितार तार जोड़े रहा पुराने उतार।
प्रशात रात की बेला जनमा जग उद्धार।।

अवतरण महिमा

धवल यश चादर नभ बिछाया। ज्ञान विभव आभा फैलाया।।
प्रकाश ऊर्म्मियाँ जग लहरायीं। शतरूपा हर्ष तरगे गायीं।।
आकाश महिमा गूँज सुनाता। विभव शान्ति का मुक्तिदाता।।
जो था, है जो आनेवाला। सत्य सनातन वैभववाला।।
प्रभु का पुत्र जगत मे आया। परम पवित्र याजक रूप पाया।।

असख्य आनन्द कण हरषाय। दया–दृष्टि सृष्टि भाव जगाय।।

दाहा – स्तुति स्वर्गदूत गात। महाभिषेक विधान।

पवित्र पवित्र महा पवित्र सुनाते महिमा गान।।

पुच्छल तारे का प्रगट होना

अनगिन तारे जगमग सारे। करते अभिनदन हर्ष सारे।।
पवित्र गुरुदेश दूत लाते। प्रकाश भरी राह बनाते।।
अनूप मिलन आशा सितारा। नभ मे चमका विशाल तारा।।
चरनो मे जग वैभव देखा। फिर प्रतीक्षित विधान अवलेखा।।
मीठे स्वर पवन लहरा जाती। धन्य धन्य महिमा सुनाती।।
दिव्य प्रकाश का आना जाना। कन्दरा विभव स्वर्गिक लुभाना।।

दाहा – दीन हीन सा चरनी मे तनिक नहीं अभिमान।

धन्य दीनता पराक्रम देखा प्रभु महान।।

स्वर्गदूतो का स्त्रोत स्त्रवन

पुलकित पख पसार आते।

पुनि पुनि महिमा गाते।।

होवे शान्ति पृथ्वी पर पवित्र प्रभु का प्रताप।
मनुष्यो मे सदभावना मिटे हृदय उत्ताप।।

धर्मी जन शान्ति पावे आनद समाचार।
'शान्ति का राज आया महिमा उसकी अपार।।

प्रकाश मय प्रकाश वह निर्मल प्रकाश ज्योत।
धरा स्वर्ग का आनद दिव्य आनद स्त्रोत।।

पवित्र पवित्र महापवित्र जनमा जग उद्धार।
बल तेज विपुल वैभव देख सब ससार।।

सृष्टि द्वारा अभिनदन

कण–कण अणु–अणु महिमा गाये। आनद उद्घोष सुनाये।।
प्रकाश अनूप धरा पर आया। निरभ्र आकाश मद मुसकाया।।
धर्मी जन की पावन आशा। आकुल प्राणो की परिभाषा।।
प्रभु तेज 'बेतलहम उजासी। कण कण ज्योतिर्मय प्रकाशी।।

जग विस्मित सा देखे सारा। आत्म–शिखर से उतर निहारा।।
दाऊद–नगर देश सब जागा। पुलकित प्रेम मूर्ति अनुरागा।।
दोहा – आँचल धरा न पसारा प्रगट किया आभार।
उमड़ घुमड़ भाव लहर रजत पंख पसार।।

चरवाहों को अगुवानी आदेश (लूका 2 15 20)

प्रकाश चरवाहा ने देखा। मंगलमय सितारा विलेखा।।
अभिनन्दन स्वर्गदूत सुनाते। महिम प्रभु को महिमा गाते।।
चरवाहे सब आये आगे। सुन सन्देश प्रभु में लागे।।
अति आनन्द मगन हुए सारे। आशिष पाये चरण निहारे ।।
चले बेतलहम ज्यों जाते। संग हजार दीप जन जाते।।
चरनी में प्यारा शिशु धारा। भव्य दिव्य प्रभु! तम अधारा ।।
दोहा – प्रेम पुलकित यश गात भेंट आनन्द मान।
अशिषित धुन नभ गाय प्रभु आलोक महान।।

महिम–स्त्रोत

धन्य धन्य हे मुक्ति–दाता। हे स्वर्गिक विभव न्याय–ज्ञाता।।
हे अमिट विभा के उजियारे। हे अखंड आशा रखवारे।।
हे प्रेममय शक्ति सहारा। हे करूण करूणा उजियारा।।
सत्य सनातन महिमा तेरी। जग पाया ज्योत उतारी।।
तेरा अनुग्रह आशिष लाये। सब को शान्ति गान सुनाये।।
महा–प्रेम हम सब अपनाते। युक्त गाते नया स्तुति गाते।।
दोहा – विस्मित युसुफ औ मरियम कैसा है यह उपहार।
बार बार शिशु निहार मरियम करे विचार।।

मरियम को भव्य–दर्शन (दानियल 9 20 27)

मरियम हिरदय भाष्य जागा। देखे दानियल प्रभु अनुरागा।।
'दिवस–यत्र नबी एक लाया। अर्थ भरा संदेश सुनाया।।
सागर सा गहरा जन आया। भटका जीवन को पाया।।
ज्ञान–ज्योति वह वक्त चुनौती। गतिमय पथ को अनूप दर्शनी।।

सत्तर सप्ताह अवधि की धारा। चमकेगा युग धर्मी सितारा॥
पसरा जो चहु ओर अंधेरा। भव्य–भोर वह लाया सवेरा॥

दोहा – जग चाहे तुच्छ जान और ले रहे प्रान।
निर्मम बलि बंद करेगा रहम का नव–विहान॥

ज्योतिषियो द्वारा अभिनदन (मत्ती 2 अध्याय)

रैन बिताय पलका माता। माँ की चाहत बन गुज़ाता॥
जग म चमक ज्या सितारा। रहम का दानी बने दुलारा॥
नफरत प्यार बने सुहाना। प्यार म दान दुखी उठाना॥
नवजात कहाँ मुक्ति का राजा। हम अभिनदन कर अधिराजा॥
पूर्व दिशा के ज्योतिष ज्ञानी। द्वार खड़े ज्यात पहिचानी॥
अगुवानी तारे की पाये। पढ़ आलेख दरस को आये॥

दोहा – शान्ति का वह राजा। दीन–हीन की ढाल।
जग न पाया मेषपाल। धर्मी जन हुए निहाल॥

भेट चढ़ाना (मत्ती 2 अध्याय)

गधरस लोबान औ सोना। भेट चढा दखा रूप सलौना॥
हे सृजक रक्षक जीवनदाता। तू है सत्य–धर्म क्षमा ज्ञाता॥
क्षमा दान अधिकार है पाया। पवित्र आत्मा समृद्ध–पुत्र लाया॥
हे अदभुत युक्ति करने वाला। तू पराक्रमी जग रखवाला॥
तुझ म आदि अन्त अनादि। हर युग का शान्ति निनादी॥
तू सर्व शक्तिमान सर्व ज्ञानी। पवित्र करूणामय न्याय दानी॥

दोहा – हे याजक महायाजक मानव पुत्र महान।
बुद्धि से हावे परिपूर्ण जग पाया वरदान॥

हेरोदेस राजा का नृशस आदेश (मत्ती 2 13-18)

नभ म भव्य दखा सितारा। भावी कहता पुच्छल तारा॥
राजा हरादस घबराया। आलेख पढ नबी बतलाया॥
सताप ताप सब हरने वाला। दृष्टि से सृष्टि जगाने वाला।
जन्मा एक मेषपालक आया। यहूदा भूमि नाम सुनाया॥

हर युग का उद्धार है लाया। जग शान्ति दाता कहलाया।।
सूरज सा तेज सच्चा न्यायी। निरमल स्वर्गिक सा अगुवायी।।

दोहा — क्रोधी लपट अभिमान हेरोद बना कुठार।
शिशु नवजात सब द्विवय जाओ करो सहार।

बालक यीशु का शुद्धिकरण (लूका 2 22 29)

शुद्धिकरण का दिन जब आया। भेट चढ़ा प्रभु रीत निभाया।।
प्रभु आराधक शिमौन निहारा। यीशु नाम पुरोहित पुकारा।।
भर-भर अंक शिशु दुलरावे। प्रभु प्यारा याजक कहलावे।।
धन्यवाद प्रभु को वह बोला। हुआ कृतज्ञ प्रभु–पुत्र अनमोला।।
उद्धार देखती आँख मेरी। हे प्रभु ज्योत प्रकाशी तेरी।।
सुन हे मरियम ! हे जगधात्री! पुत्र तेरा है जग की बाती।।

दोहा — हृदय यह बिंध जायगा कष्ट तेरा अपार।
टूक टूक होगा प्राण वार पार तलवार।।

याजक शिमौन भविष्य भाष्य (लूका 2 28 39)

अच्छाई–बुराई माप लाया। दृढ़ चट्टानी शक्ति है पाया।।
कहे शिमौन हृदय खोलेगा। उत्थान–पतन राह मोलेगा।।
जग विरोधी हो जायेगा। तीखा दर्द पसलिया सहेगा।।
करो विदा अब हे जग त्राता। हे प्रभु मेरे मुक्तिदाता।।
अन्ना नबिया एक आयी। बालक यीशु देख हरषायी।।
वचन सुनाती वह प्रभु आसी। धन्य धन्य आज यह दासी।।

दोहा — प्रतीक्षित जग उद्धारक देखे अब ससार।
ज्योति यरूशलेम पाया शान्ति विभा अपार।।

युसुफ को स्वप्न चेतावन (मत्ती 2 13 18, 19, 23)

उधर दुंदुभी मृत्यु बजायी। स्वप्न चेतावन युसुफ पायी।।
रामा नगर विलपता रोता। नवजात शिशु जीवन मुर्झाता।।
दम्पति हुए तब मिस्र निवासी। संग प्रभु की ज्योत उजासा।।
संदेश हेरोद मृत्यु पाया। मार्ग सुवास लहक बुलाया।।

हर्षित टर्पान इस्त्राएल आया। अतिपुस से पर भय खाया।।
यारा हुआ नासरत का वासी। दम्पत्ति हुए प्रभु म विश्वासी।।

दोहा — यरूशलम को उसाँस सुनत गुनत यीशु ।।
उपहास मानवता का टख न पात यीशु ।।

बालक महिमा (लूका 2 40-41)

अम्बर कुमार सरल सलाना। बालक छाटा ज्ञान अनहाता।।
मात–पिता का आज्ञाकारी। बुद्धि परिपूर्ण प्रभु उजियारा।।
वर्ष बारहव पर्व मनाने। सग कुटुम्ब आशीष पाने।।
प्रभु भवन लगा प्रभु का प्यारा। शरद ज्योत्सना सा मनहारा।।
देह–गुति बलवत ज्यो राजा। बाल गभीर ज्यो अधिराजा।।
भट लगा प्रभु महिमा गाता। तन मन अर्पण प्रभु अपनाता।।

दोहा — शास्त्र सुनता वह पावन सुनता हो गभीर।
स्वर्गिक पुलकन जागी वचन सुनाता प्रवीर।।

यीशु मंदिर म (लूका 2 41 52)

आत्म विभोर सा सभा देखे। समय–सुतक सनद सलेख।।
प्रखर वाणी तापस जगाया। करूणाकर क्षमा रूप दिखलाया।।
उपकार धरा का नूरानी? । अकल्पस अकल्प अथाह वाणी।।
दुरभाव मिटा अपनाव गाता। स्नेह प्रीत नव आस जगाता।।
पुत्र किसका! अभय अनमोल। जग सारे का पल म तोल।।
दीप शान्ति मदरिम जलाया। निर्मल प्रकाश बालक दिखलाया।।

दोहा — चकित विस्मित सब दख अद्भुत पावन ज्ञान।
ज्ञान–शास्त्रिया मध्य सहज भाव प्रज्ञान।।

यीशु नासरी — प्रथम उद्बोधन (लूका 2 41 52)

पत्र मनो आगाप सब पात। विश्राम–दिवस प्रभु स्तुति गात।।
समूह समूह जात यात्रा। यीशु कहा पूरा जग–धारा।।
जाब किसलय दूर म न पाया। शक्ति सम्पत्ति वापस आया।।
दूजा गह द्वार नगर। उल्ला मन अन्तर दो–गर।।

वृक्ष वह कुल्हाड़ काटा जाता। उत्तम फल जो नहीं है लाता।।
आग झोक प्रभु उसे जलावे। रह–दीन , सुख आशीष पावे।।

दोहा – तृप्त करो, भूखी आशा जो है अधिक पास।
करो न झूठा दिखावा उदार रख एहसास।।

योहन–निर्जन की पुकार (लूका 1 15-23)

नगर नगर कस्बो डगर जाता। न्याय नीत–रीत समझाता।।
चकित भ्रमित मन शान्ति पाते। दीक्षा ले मन सयम लाते।।
फिर फिर योहन देता साक्षी। कहता 'मेरे पीछे प्रकाशी।।
सारी सृष्टि का जीवनदाता। अनुग्रह सत्य का वह दाता।।
जग पूछे 'योहन तू प्रमाणी ! 'क्या तू ही यीशु नूरानी? ।।
नहीं! नहीं मैं भी प्रभु पुकारूं। न एलियाह! मैं डगर बुहारूँ।।

दोहा – यशायाह सा मधु रागी। निर्जन की पुकार।
राह बना डगर दिखाऊँ सुनाता प्रभु दुलार।।

योहन द्वारा, यीशु की दीक्षा (योहन 1 24-34)

'जल से मैं देता हूँ दीक्षा। जन 'वह देगा आत्मा–दीक्षा ।।
देखूँ अनिमेषित क्या बोलूँ। योग्य न जूती बध खोलूँ ।।
निज ओर प्रभु को देख आता। विभोर योहन बोल सुनाता।।
देखो इधर ही प्रभु आते। मुक्ति दिलाने जग को आते ।।
'शुद्ध पवित्र निर्मलता लेखो। परमेश्वर का 'मेम्ना देखा ।।
'निष्पी दृष्टि दमकती आँखे। परिवृत करे बाँहें ज्या पाँख ।।

दोहा – प्रभु लेते सेवक देता अद्भुत यह सयाग।
सदा रहे सानिध्य, सत्य–प्रेम सुयोग।।

(मेम्ना– बलिदान का प्रतीक एक पावन सबोधन)

नभ वाणी (यूहन्ना 1 32-34)

डुबकी ले प्रभु ऊपर आये। पवित्र वचन आकाश सुनाये।।
'मृत्यु निशा अब दूर होवे। मधुर–मधुर गुजन रव होवे।।
'परमेश्वर–पुत्र पिता साक्षी। धर्मी दग सत्य की साक्षी ।।
'कपात शान्ति का अवलखा। उतरा आशीष बन दखा ।।

शान्ति—कपोत प्रभु का जैसे। विचरे पावन जन यह ऐसे ।।
प्रभु पुत्र यही है मुक्तिदाता। आत्मिक दीक्षा का प्रदाता।।

दोहा — उत्तम उत्तम सब से श्रेष्ठ यह था है यही द्वार।
चिर प्रतीक्षित पुत्र प्रभु सत्य प्रीत आगार।।

उपवासी यीशु का अन्तर्मंथन (लूका 1 32 34)

दीक्षा ले यीशु हुए उपवासी। पर्वत कन्दरा निर्जन निवासी।।
यर्दन—तट दिन चालीस बिताने। निर्मम मथन—उन्मत्त जलान।।
जीवन खामोश बहाव कैसा। सतह सपाट नद यह ऐसा।।
उथला गहरा बेहिसाबी। डूबती चट्टान नायाबी।।
कुछ हरियाली कहीं किनारे। या परछाइयाँ गत निहारे।।
भावा सपनो आकाक्षाओ। आन्दोलित मन अन्त घटनाओ।।

दोहा — फेका घाटी केन्द्रोन करते भ्राता याद।
त्रस्त मन उच्छवासित प्रबल हुए प्रतिवाद।।

परीक्षा (मत्ती 4 1-4) "भूख"

पथ साधना कठिन चौराहे। अटके भटके निर्जन अनचाहे।।
प्रलोभन उपचेतन गहराय। रूप बना इबलीस वह आय।।
कह पुत्र—पावन तृप्ति पाये। ध्यान धरे भूखे प्रभु न पाव।।
भूख बनावे सब को चेरी। हावे मान धूल की ढेरी ।।
पत्थर भी रोटी बन जाय। सब क्षुद्र अह कुत्सा ढप जाये ।।
सुन मतवाले। जा अन्त टोहा। इबलीस प्रलोभन क्या जाहा।।

दोहा — मनुष्य रोटी स नही यह शास्त्रा का लख।
जीवन प्रभु से ही पाता मिटे न स्वर्णिम रेख ।।

देह का मोह (मत्ती 4 5-7)

इबलीस पराजित दिखलाया। नभ झीनी बूंदे बरसाया।।
प्रकृति सुषमा ससृति का छाया। बैठ किनारे मन हरपाया।।
मदिर शिखर दमकता आशा। प्रदीप्त प्रम नवल परिभाषा।।

शिखर चढा इबलीस दिखलाया। कहे चम्त्कृत कर हरषाये॥
'चढ शिखर छलाग लगाये। 'मुक्ति का वैभव दिखलाये ॥
'प्रभु–दूत उठावेंगे निराले। धर्मी जन क प्रभु रखवाले ॥
दोहा — 'मत ले निज प्रभु परीक्षा सुन समझ मति–भ्रात।
सेवा प्रम प्रार्थना इनमे मुक्ति प्रशात॥

जग वैभव (मत्ती 4 8-11)

सकल्प भरा मन यीशु पाया। उत्तुग शिखर चढ मन हरषाया॥
उर–न्गित मेघ–धनुष बनाया। अर्न्त–विभव रत्न आभ पाया॥
इबलीस 'मन–टाह अवलोका। अतिम अवसर चूक न मौका॥
'जग विभव देख तू यह सारा। सुख सज्जित ससार है प्यारा ॥
तारो से अधिक मनोहारी। दूँगा विभव बना अधिकारी ॥
प्रभु से जो तोड मन हारे। 'दडवत कर , मुझे मन धारे ॥
दोहा — सुन इबलीस कहे यीशु 'तू कर प्रभु प्रणाम ॥
हुआ पराजित इबलीस करे प्रभु को प्रणाम॥

दूसरा खड — जीवन दर्शन

(जग पहिलौठा प्रभु पुत्र एकलौता आध्यात्मिक क्राति प्रणता)

पृथ्वी स्वर्ग अब जाइ जुडाना। मानव–मानव मिलन कराना॥
विश्वास आस्था अब दीप जलाना। तर्क–कुतर्क–वितर्क से बचाना॥
आस विश्वास रहे न उदासी। तोप सतोष सदा प्रकाशी॥
जग म जीवन–ज्योत जलाये। 'प्रभुता प्रभु सवक बन आय॥
कैस जीना जग पहिचाने। सरल महज मानवता पान॥
'मूल्य–वाहक जग 'पहिलौठा। कह वानी यीशु एकलौता ॥
दाहा — अधकार म वह प्रकाश शब्द शब्द उजास।
मुक्त अबाध अमद ज्यात 'यारन देख प्रकाश॥

यीशु आह्वान (योहन्न 1 35-42 3 5-31)

नाम गिमान पतरस पुकारा। निश्चेपी दृष्टि यीशु निहारा॥
रजा धवल ज्यात एक निहारा। जीवन मुसकान उजास प्यारी॥

रोम रोम आह्वान सा देता। ज्योत बनो ! सग ज्यात प्रणेता ॥
कह अंद्रियास प्रभु हम आते। रब्बी रब्बी हम साथ हैं आते॥
यीशु सग निवास को आये। खर–पतवारी झोपड पाये॥
योहन समाचार सब पाया। हर्षित आनद वह मुसकाया॥

दाहा — सूर्य सग भार तारा ज्यो दूत अग्र प्रभात।
पूरा हुआ आराधन दखू अब चिर प्रात ॥

(प्रथम शिष्य—आद्रियास और पतरस निक्षेपी—बाधने वाली दृष्टि)

प्रथम आशीष—कस्बे काना को (योहन्ना 2 1-12)

गलील मध्य एक कस्बा काना। आशीष प्रथम पाये सुहाना॥
माता मरियम विमुग्ध—भारी। विवाह—भोज क्लान्ति—हारी॥
दने दम्पति आशीष आयी। उपहार हृदय मे भर लायी॥
कस्बा सारा उत्सव मनाता। भाव—ग्राही आशीष गाता॥
प्रणय—शुचि दम्पत्ति मुग्ध ऐसे। अवनि—तल के अधिराजा जैसे॥
उत्सव उल्लास बढता जाता। द्वार निहारे अनमनी माता॥

दोहा — शात आभ मुख मुस्कान। अकित मन विषाद।
कोष मधु—पात्र रिक्त हुए उत्सव का आह्लाद॥

यीशु और नथनाएल (यूहन्ना 1 43-51)

काना आर थे यीशु आते। शिष्य फिलिप गुरू सग निभाते॥
मार्ग नथनाएल दिखलाया। यीशु कहे सच्चा मानव आया॥
भाव उपेक्षा नथनाएल बोला। युसुफ पुत्र यीशु नासरी ताला॥
बढई पुत्र सब कहते ज्ञाता। बुद्धि ज्ञान का हुआ प्रदाता॥
नासरत रहा विध्वसकारी। दे न सका जन सुख कारी॥
सुन नथनाएल यीशु बुलाता। तुझ पर अतुल प्रीत बरसाता॥

दाहा — वृथ अजीर सा फलदायी स्तुत्य तेरे काम।
बाँध कमर साथ चलना लेना नहीं विश्राम॥

(यीशु की पहली पुकार। वह बुलाता है)

जीवन कौन पाता है। (यूहन्ना 2 1-11)

साथ सब पहुँचे कस्बे 'काना। नथनाएल था निवासी 'काना॥
दाख पात्र रिक्त थे सारे। माता मरियम मौन निहार॥
यीशु समीप आई उद्दीप्ता। दीप शिखा सी वह जन माता॥
स्वप्निल अगूरी रस रीती। 'पुत्र भर दे। तू जीवन प्रीती॥
कहे यीशु जीवन वही पाता। विश्वासी बन प्रभु रीत निभाता॥
जीवन–पात्र रहे उमडाता। जग कहे– मधु कहाँ से आता? ॥

दाहा – विवाह प्रधान विस्मित उमडा प्रीत श्रांत।
नथनाएल मुग्ध मुसकाता गाता प्रभु क स्रात॥

प्रभु–मंदिर व्यवसायिक केन्द्र नही। (यूहन्ना 2 12 22)

साधना पथ यीशु बनात। 'पर्व पास्का यरूशलेम जाने॥
मदिर जगमग न्यारा प्यारा। धर्मी विश्वास का एक सहारा॥
वदी धूम उठ नभ झूमे। विश्वासी–श्रद्धा अबर चूम॥
देख छवि बालपन याद आय। दीक्षा बाद थे यीशु आय॥
पावन मदिर था यह कैसा। 'व्यवसाय–केन्द्र बना ऐसा॥
प्रभु विमुख ठग पिडारी सारे। जड विधियाँ भाव मृत हुँकारे॥

दाहा – रूद्ध किया प्रभु विश्वास फैला शब्द जजाल।
शास्त्रा को द चुनौती बैठे व्याल विशाल॥

मंदिर का परिष्कार (यूहन्ना 2 12 22)

यीशु मन आन्दोलित भारी। आत्म–बल–प्रभ हुआ सचारी॥
तेरे भवन की धुन पर वारी। जीवन अपना करूँ बलिहारी॥
पिता अध्यता पुत्र अधिकारी। अर्न्तमन की ज्योत उजियारी॥
प्रभु सेवक उठाया काडा। भू चैतन्य प्रभु स जाड़ा॥
हे सर्राफो उठा जाओ। 'खाह डाकुआ नहीं बनाआ॥
मदिर प्रभु निवास कहलाता। धर्मी प्रभु एहसास है पाता॥

दोहा – व्यूह चक्र इस न बाँटा बसता यहा विश्वास।
चतन-स्रात जल पाता टूटा मन प्रभु आस॥

क्षण प्रतिक्रिया (यूहन्ना 2 18)

क्षण प्रतिक्रिया पावक दरकाया। रूद मता का वाद उठाया॥
किसस अधिकार है पाया। मन्दिर निज सम्पत्ति जताया ॥
पूर्वजा का थाती हमारी। वर्षों का श्रम ख्याति है न्यारी ॥
प्रवरा नाहा निज दिखलाआ। कह वाक विधान सुनाआ ॥
याशु कह यह मदिर जाना। आत्म–पुनरूत्थान पहिचाना॥
दह मदिर नाह मिट जाये। ज्यात का मदिर फिर बन जाय ॥

दाहा — नाज भूमि पड़ कर पाता अकुर पल्लव प्रात।
सत्य भा जागन पाता लाता नवल प्रभात ॥

देह मंदिर और नया जीवन (यूहन्ना 2 19)

गिर–मन्दर का दापक जलाआ। दापित मन दिव्य झलक पाआ॥
रहा मन्दिर क तजस् जैस। तन मन निरमल रहता एस॥
उजला मन–मन्दिर कहलाय। निमल पावन उजास फैलाय॥
नया जन्म ल नित नित दही। भरता नतन–नित प्रभु–नही॥
मिटा दा नाह नश्वर देही। जीवित रहत भाव वि–दही॥
प्रणत–भाव सब शाश झुकात। क्रुद्ध नाग तिलमिला घबरात॥

दाहा — मदिर जैसी यह देही कर्म वचन का रूप।
निरुपम विश्व चैतन्य रख तजस् अनूप॥

नया जन्म और पुनरूत्थान कैसे? (यूहन्ना 3 1—9)

निकादिमुस प्रधान एक आया। बुद्धि प्रखर निज वाद सुनाया॥
ह रब्बी! आप ज्ञानी मानी। नया जन्म ल कैस प्राणी? ॥
क्या फिर शिशु बन गर्भ समाय!॥ और दुलार माता का पाये ॥
सुन!सुन! क्या भटक अज्ञाना। कहीं न आना–जाना प्राणी॥
जा देखे नहीं ज्यात उजेरी। मदिर नहीं! वह कब्र अधेरी ॥
दख वायु किधर से आये। स्पर्शन दे एहसास जगाये॥

दाहा — कर अन्तर्मन गतिमान लहरा उठे तरग।
आत्म–उत्थान पुनरूत्थान नया जन्म प्रभु सग॥

विश्वासी पर अनुग्रह (युहन्ना 4 43-50)

नगर डगर सब आशीष गाते। 'बेथलहम रब्बी रूक न पात॥
मातृ भू दशन जग रीती। नत्री सहता सदा वृण प्राता॥
'कफरनहूम हुआ उद्‌गारी। सरल प्रेम प्रभु हुए बलिहारी॥
एक विश्वासी खडा किनारे। दीपित आस प्रभु आर 'निहारे॥
'प्रभु अनुग्रह मैं पाऊँ पुकारा। 'सुने प्रभु' जीवन मैं हारा ॥
आस है दुर्जयी पुत्र सहारा। चगाई दे 'प्राण आधारा ॥

दोहा — 'इंगित करे मैं अनुचर , आया आगन द्वार ।
पुत्र कुशल से है तरा प्रभु विश्वास आधार।

"नव जीवन पुत्र पाया" (यूहन्ना4 51-52)

सेवक संदेश लेकर आया। 'नव जीवन है पुत्र ने पाया ॥
स्वामी हर्ष अपार मनाये। अनुग्रह प्रभु का भेट चढ़ाय॥
आतुर अहलादी प्रभु अनुरागी। ल्कि–सतरण करता परागी॥
नेह के अश्रु ``नयन टपकाते। भेट चढा सब महिमा गात॥
प्रभु के लिए गीत नया गाओ। बीन बजा स्वर सब मिलाओ॥
सब निधिया से निधि निराली। वजन प्रभु क जाये न खाली॥

दोहा — करूणा रह सदा उसकी। प्रभु हैं करूणावान।
निर्मल अन्तस् हुए कृतज्ञ। प्रभु का तज महान॥

यीशु का कार्य क्षेत्र

झील गलील हिलोर इठलायी। सम बाँध सागर ज्या उमड़ायी
'ईश राज की करा तैयारी। नील क्षितिज उद्‌घोष है भारी॥
ह 'हिप्पोस तिबरस मगदाला। जीवन अपना बना ले आला॥
हे 'जबलान देश 'नपताली। तुझ पर छिटकी प्रभु की लाली॥
ह 'बतसदा, सुन ले 'चुनौती। पूरी कर विश्वासी मनौती॥
ह 'कफरनहूम तू व्यापारी। पाप–पुन्य कालाहल भारी॥

दाहा — हे पावन शृग धरोर माँग दया का दान।
कह वानी है आता परम पावन कल्याण॥

स्वर्ग राज्य (मत्ती 13 44)

स्वर्ग–राज्य अब हुआ नूरानी। फसल करतो है अगुवानी।।
हरे भरे मैदान खलिहानी। जीवन रग चढे हुए धानी।।
उन्मात्ति हुए पुष्प परागी। उन्मत नद भी हुए अनुरागी।।
पद ध्वनि किसकी है यह आता। ज्योतित–प्रम है पवन सुनाती।।
व्यक्ति बन समष्टि सुहानी। समझे अर्थ कर न नादानी।।
प्रेम दीप वह उजला एसा। हर युग प्रकाशित रहे जैसा।।

दोहा — मनुज का मनुज सम्मान। दिलाता पुत्र महान।
सत्य सनातन है प्रेम। प्रभु वाचा आह्वान।।

पर्वतीय उपदेश (मत्ती 5 3–12)

सात जल स्त्रोतो की वादी। मनहर उपत्यका गध माटी।।
तन्मय रब्बी निहारे वादी। पिता स हुआ पुत्र सवादी।।
सत्य–ज्योत पुत्र वरदानी। कण कण अनुप्राणित प्रमाना।।
सूर्य किरण दे रही गवाही। पुनीत प्रम उत्तम चरवाही।।
झील तरगित स्वर मिलाती। सुने प्रेम पम वचन विभाती।।
जन जन ऑखे रब्बी निहारे। मुग्ध मौन नमन प्रभु पुकारे।।

दोहा — प्रभु निज महिमा मे आओ वचन कर विभोर।
विभव–वान विभा छाये ऐसा हो यह भोर।।

पहला— धन्य वचन, दीनता (मत्ती5 3)

आए प्रभु ज्या शीतल सच्छाया। अणु अणु उमगित रग छाया।।
स्वर्णिम–वचन बोले अनमोला। जीवन की सदाए जग तोला।।
धन्य है वे जा दीनात्मा। ईश राज उनका धन्य आत्मा।।
निर्णयन दिन अकूत कहे वादी। तर्क विनिमय नहीं सवादी।।
शाश्वत जीवन मूल्य सुनाते। मन दानता प्रभु गगनाता।।
मनुज निर्णय हो प्रभु आकाक्षी। दते निज जीवन की गाथी।।

दोहा — स्वर्ग–राज्य जो चाह प्रभु म मन अनुराग।
बन जा प्रभु म धनवान राग मिटे प्रभु राग।।

दूसरा धन्य वचन—शोक मनाना (मत्ती 5 4)

धन्य वे जो शोक मनाते। हाथ बढ़ा प्रभु हैं अपनाते ॥
पाप मय जीवन से पछतावे। प्रभु तरस खा उसे उठावे॥
रहना पावन पवित्र सुनाते। आत्मिक प्रेम प्रेमिल समझाते॥
यह जग नहीं अश्रु की घाटी। क्लेश द्वेष रक्त सन न माटी॥
शोक मनात दिन न बात। वादी गूजे शब्द मन जीते॥
लौट कहती मन की टकार। शांकित मन अधीर प्रभु पुकारे॥

दोहा— दुख कसौटी रह खरा ढूँढ ले हर्ष आनद।
ज्योति और छाया सग मन न उलझे द्वन्द्व॥

तीसरा धन्य वचन— विनीत प्रेम (मत्ती 5 5)

धन्य हैं वे जो विनय धारी। पृथ्वी के वे ही अधिकारी ॥
आनद—मय हुआ उजेरा। प्रेम ज्योत प्रकाश घनेरा॥
रसाल भार झूम कहे डाली। आत्मिक मिठास की यह लाली॥
ज्ञान जो भीतर से है आता। कोमल मृदुल भाव भर लाता॥
विनय—शील मन जग हितकारी। प्रीत ज्योत जगाये मन हारी॥
चल पैने पर नाश जो लाता। उलझ गिर विनाश वह पाता॥

दोहा— धीरज विनय औ सयम आत्मा का फल प्रेम।
नया जीवन जग पाये बरसे मगल क्षेम॥

चौथा—धन्य वचन, धर्म की भूख—प्यास (मत्ती 5 6)

धन्य जो धर्म के भूखे—प्यासे। तृप्ति पाते प्रभु जिन्हे तराशे ॥
लहर—लहर रूपी अक्षर माला। जगमग करते मनके माला॥
एक लहर लहरा पकडे किनारा। बढ दूसरी बन जाय सहारा॥
प्रभु निकट जो बढ कर आता। जीवन तट पार वह सुझाता॥
आत्मिक ज्ञान नित नित पाता। घटी पूरी करता विधाता॥
प्रभु सेवा मे लुट मिट जाता। पानी पर वह चल दिखलाता॥

दोहा— पूर्ण बनो क्लेशों मे पिस तन मन दे दो दान।
व्यर्थ न जाये जीवन प्रभु से माग वरदान॥

पाँचवाँ धन्य वचन—क्षमा (मत्ती 5 7)

धन्य है व जा क्षमाधारी। दया क्षमा क वे अधिकारी ।।
पवन वृक्ष लहरा गया सार। वृक्ष ऐश्वर्य वादी निहार।।
सर्व सिट एक जीवित भाषा। क्षमा दया दान की अभि—भाषा।।
शुद्ध—पुर—मुक्त जो प्राणी। वही समझ प्रभु दया वाणी।।
दरा प्रत्यक्ष प्रभु विश्वव्यापी। पथ रक्षक करूणा बन प्रतापी।।
अन्तर्मन असीम शक्ति पाता। युग विरासत जग पा जाता।।

दोहा — सदय करूणा भाव बढ कर एसा अनुष्ठान।
भेद प्रभाव बढ़ नहीं जग निपजे क्षमा दान।।

छठा धन्य वचन— शुद्ध मन (मत्ती 5 8)

धन्य है शुद्ध अतर निराला। जगत आशीष वह उजियाला ।।
पर्वत हुए नव रूपायित गारे। तजोमय पुँज प्रभा श्रृगारे।।
पावन पर्वत चढ़ कौन कैसे?। शुद्ध निर्दोष मन पाव कैसे?।।
आँखा स प्रभु वाणी बाँधा। और मन का प्रभु म साधो।।
मन—मान हीन जब बन जाय। फनिल कल छल सब मिट जाये।।
आदि अत थाह वह पाये। मन मदिर प्रभु का तब सज जाय।।

दोहा — कर युद्ध स युद्ध अन्त और विश्व को जीत।
बन एक कोष आनदमय चढ पर्वत मन जीत।।

सातवाँ धन्य वचन— शान्ति स्थापक (मत्ती 5 9)

धन्य है व जा मेल कराते। प्रभु पुत्र जग म कहलाते ।।
वादी म झकार सुहानी। आभ—श्वत बिखरी द्युतिमानी।।
अम्बर पुलकित धरा मुसकाती। शान्ति का अभिषक सुनाती।।
दूर थ जा सब निकट आये। टूट सम्बन्ध जोड सुख पाये।।
जीवन यह असीम दिखलाय। प्रम आनद मन हरषाय।।
सदय करूणा बढ़ती जाय। युद्ध घटा क्षितिज नहीं छाय।।

दोहा— नाप ताल का काम नहीं भाई से कर मिलाप।
बूँद—बूँद स सागर मिट द्वेष मन ताप।।

आठवाँ धन्यता वचन– बलिदान (मत्ती 5 10)

धन्य व जो हैं बलिदानी। पाते शान्ति मुकुट वरदानी ॥
तेज प्रखर हुई वाणी प्रतापी। रब्बी मुख चमक तन तापी ॥
धरती भूमि के वन गुंजता। नूतन दृष्टि औदार्य जगा ॥
स्वर्ग स हिम बरसता जैसे। भू मिलन कर लौट न ऐसे ॥
आत्म–दान सृष्टि सरसाता। उपज अकुरित फल भी लाता ॥
हर युग सत्य ज्योतित पाये। आत्मिक शांतियाँ युग सजाये ॥

दोहा – आशाओ की वेदी पर देही दो दान।
नई धरा स्वर्ग बनाने देता रहेगा प्रान॥

धर्म हेतु सताय (मत्ती5 11)

धन्य धन्य हैं सब प्रभु नेमी। अश्रु हास रंग भरत प्रेमी ॥
स्वर्गिक राज विभव हैं पाते। अधकार म ज्योत जलाते॥
दीप रोप सहते सब ज्ञानी। न थक न राह रुक प्रमानी॥
चिक वस्त्र छूट आस छाँह। छिन्न भिन्न हो सहार चाह॥
रात हो महामृत्यु की काली। दीप शिखा सी शान निराली॥
ये तरल विरल मृदुल भाषी। प्रभु ज्योतियाँ सदा प्रकाशी॥

दोहा – अपलक फलक देखता मिल न चाहे कूल।
दुख स अधीर न होते प्रभु वाटिका के फूल॥

जीवन की मीरास (मत्ती5 11-12)

सुन्दर व्यवहार मनुज निशानी। धन्य धन्य आशीष प्रमानी॥
प्रभु के सग जीय और गाय। मनहर सृष्टि धरा सजाय॥
सदियाँ बीत जाय तो जाये। धूल भरे मेघ आये तो आय॥
आत्मिक शान्ति तन मन पाता। जीवन सघर्षों मुसकाता॥
प्यासे जन मन सब तृप्ति पाये। हर युग पावन वचन सुनाये॥
कहे रब्बी 'जीवन प्रभु द्वारा । भटक पाप क्यो मन है हारा॥

दोहा – 'सताव निंदा विरोध मे रख जीवन उजास।
प्रभु–राज्य है धर्म वचन 'जीवन' की मीरास ॥

आनदमय प्रतिज्ञा (मत्ती 7 7—11)

द्वार की दस्तक सुन अनेता। खोल द्वार देख प्रभु सुनेता।।
माँगा ता दिया जायगा। ढूँढा ता सब, तुम्हे मिलेगा ।।
पावन जन का प्रभु सरसाता। जा है निज प्रार्थना सुनाता।।
देव न कौन पिता पुत्र राटी। प्यार बदले दुत्कार माटी।।
करत सव जीवन की वाछा। स्नेह प्रीत भरी आकाक्षा।।
सदय सहज भाव है मनहारी। पथ न राको बन कुविचारी।।

दाहा — ज्याति अनत बन जाआ मिट जाय अवसाद।
स्वर्गिक छटा अम्बर क मन म भरे अह्लाद।।

दोष न लगाना (मत्ती 7 1—9)

दाष दूसरा पर न लगाना। दीन वृत्तिया निज न गँवाना।।
जिन मापा स तुम मापागे। माप उन्हीं से तुम जाओग ।।
भाई आँख तिनका क्या दखे। निज *आँख लट्ठा नहीं लखे ।।*
अहकार पोष और पाले। रग पाखड सदा निराले।।
भाव अवज्ञा नाश है लाता। रूप हिसा दाहक बन जाता।।
शूकर सन्मुख निज भाव मोती। फेका नहीं आब है खोती ।।

दाहा — पग तल रौंदे विलोपक होवे नही कृतान्त।
जटिल छल कुटिल है दभ, कभी न हावे शात।।

पक्षपात (मत्ती6 23)

दूषित भाव सदा पक्षपाती। एक धारणा औ हठी अनुपाती।।
पक्षपाती है जग द्विनाशी। तुला सूत्र काटता विनाशी।।
डॅकिनी शक्ति यह निपाती। इच्छा—अनिच्छा बने सघाती।।
पक्षपात है एक नार तिजारी। आत्मिक ह्रास की प्रथम पौरी।।
चूस खून हिसक पशु जैस। सत्य न्याय बिखराये ऐसे।।
कहे वादी ले प्रभु सहारा। आत्मिक जन्म ले दोबारा ।।

दोहा —पक्षपाती बमीठा से होवे तब बचाव।
करूणामय की करूणा से डाह से मिले बराव।।

पाखंडी प्रचारक (मत्ती 7 15-20)

अदान झूठ नबी विभागी। मधु-निष कुंभ मन के दागा॥
भेड परिवेश मे कपट धारी। गौंध चमक मन ब्याज उधारा॥
भींडार से फाड़ खाने वाले। विकारा आग दहकाने वाले॥
फल से कर पहिचान निभाना। कटील झाड़ दाख न आना॥
उत्तम वृक्ष उत्तम फल उपजाता। साधना-मय औगर्य पाता॥
बुरा फल बुरा वृक्ष हो लाता। असमय आग झोंका जाता॥

दोहा — अधिकार से प्रभु बोले वादी हुई विनीत।
हुए अधीर विनि-पातकी साच रहे अनीत॥

क्रोध और हत्या (मत्ती 5 15 20)

कहे रब्बी सब भाई-भ्राता। भेट चढ़ा मिल कर मुक्ति दाता॥
क्रोध हत्या विचार अपकारी। भाव क्षमा है जग हितकारी॥
कहे अपशब्द वह अत्याचारी। हत्या समान दंड है भारी॥
समान समझा अपराध दोनों। मन के झाको निर्जन कोना॥
हाथ बढ़ा कर लो समझौता। क्या जीवन भर संताप बोता॥
न्याय-पथ नहीं बिसराना। अगन राह पर नहीं जाना॥

दोहा — प्रभु मे मिलन पुन कर लो आत्म ज्ञान जयमान।
चेतन मन का अवधारण फल अदृष्य सज्ञान॥

दुराचार (मत्ती 5 15 20)

ऑख कर न बुरी अभिलाषा। पढ न मन व्यभिचारी भाषा॥
चल हीन चरित्र पथरा जाये। हीन-मति जल डूब समाये॥
आत्म परख करो बन ज्ञानी। हाथ दाहिना रहे सदा कल्याणी॥
मनुज मन मानी बहु-आयामी। जोड़ सूत्र हो प्रभु अनुगामी॥
साझा हित आस्था सदाचारी। नम्य सुनम्य रहे प्रणधारी॥
सृजनशीलता मन अपनावे। पथ-कटीला पार कर जावे॥

दोहा — मन औ मानस संकल्पन बनते जीवन सार।
प्रतिक्रिया की छाया मे उभरता सत्व-तार॥

शपथ और सत्यता (मत्ती 5 33-37)

सुन रब्बा है तुझे समझाता। कठार सेवक धर्म सिखलाता।।
रह वचन प्रामाणिक तेरे। पथ प्ररित रहे सदा उजारे ।।
नहीं बाँधना शपथ के घेरे। विजय पराजय दर्शन फेरे।।
हाँ म रह सत्यता तेरी। और नहीं भी रह न्यारी ।।
जो इससे अधिक है होता। दर्प भरा वह मनुज समझौता ।।
स्वर्ग सिहासन प्रभु का प्यारा। धरा है चरण–पीठ सहारा ।।

दोहा— अवनि अम्बर शपथ न लना निज शक्ति अभिमान।
दह ड़ीह डींग भर कर शपथ न लना प्राण ।।

कृतज्ञता भाव बढाओ (मत्ती 5 38-42)

रब्बा कहे कृतज्ञ भाव बढाओ। प्रतिकार द्वेष विचार मिटाओ।।
नालिश कर कुरता कोई चाहे। उसे अँगरखे की दो छाहे ।।
बेगार मील कोई ले जावे। साथ दो मील तू बढ जावे ।।
मध्य सेतु बने एक एसा। अन्तर कलुष मिटावे जैसा।।
आग्रही पालता विष धीमा। पावन भाव, मन रखे सीमा।।
तर्क नहीं अनुभूति मन बाँधे। सज्ञान आस्था जन मन साधे।।

दोहा— जो माँगे उसे दे दा मिटा विवाद विरोध।
बन समन्वय दृष्टि प्रसूत दा कृतज्ञता बोध।।

प्रेम और पूर्णता (मत्ती 5 43-48)

शत्रु पर भी प्रम दरशाओ। एसा शुभ चिन्तन मन लाओ ।।
प्रेम ज्योति का अमिट उजाला। मन बाँधे यह बंधनमाला।।
वर्षा जल है जग सरसाता। धर्मी अधर्मी विभेद न लाता ।।
सूर्य भी है जन मन हरषाता। दुर्जन सज्जन ध्यान न लाता।।
शक्ति महान प्रेम पहिचानो।। जीवन ज्याति इसे तुम जानो ।।
समझ अधूरी मनुज उलझावे। कर अवरूद्ध राह भटकावे।।

दोहा— प्रम मय पूर्णता बिलक्षण आत्म शक्ति का स्रात।
अतुल सवेदन पूरित असीम ऊर्जित ज्योत।।

प्रकाश और अधकार (मत्ती 6 22-24)

अधकार–शक्ति रजन निराला। उद्वलित मन रहे न उजाला।।
रब्बी कहे प्रकाश है आशा। एक सबेरा भरा प्रत्याशा।।
शरीर का दीपक हैं आँख। भर प्रकाश तू फैला पाँखे।।
दृष्टि रखे सदा प्रभु प्रमानी। जीवन भरे जगत म कल्याणी।।
जीवन जो बर्फानी पाषाणी। अधकार की यही निशानी।।
कठोर–सत्ता जब हो कुविचारी। बन जाता मन अहकारी।।

दोहा – सेवा दो स्वामिया की सवक मन रहे भेद
रह प्रेम मात्र एक से दूजे से मन भेद।

दो मार्ग (मत्ती 7 13-14)

रब्बी कहे दो मारग प्यारो । आत्म–अन्वषी बन विचारो।।
चौड़ा मारग एक मनहारी । आत्म–रति घातक सचारी।।
मिले न मजिल झझा भारी। मिटे जीवन एक हाहाकारी।।
तट ममकारे मोद मनाती। दूर प्रभु से राह भटकाती।।
दर्पित मन धन मद इठलाता। धीरज खोकर बट वह खाता।।
पथ दूसरा प्राण सचारी । विनीत मन प्रभु मे बलिहारी।।

दोहा – विनाश ओर लेजाता पथ जो है विशाल ।।
द्वार सकीर्ण कर प्रवेश / थाम ले प्रभु मशाल।।

सच्चा धन (मत्ती 6 19 21)

वैभव लालच और तृष्णाए। स्वर्ण जजीरे ये एषणाए।।
सचयी भाव नहीं बढाना। व्यामाह जीवन तू न गँवाना।।
अर्थ आसक्ति विछलन जैसी। जर्जर करे जीवन घुन ऐसी।।
सरल प्रेम कृतघ्न बन जाता। अर्थ हीन जीवन उलझाता।।
अर्पण कर दे मन तू प्यारे। द्वार–स्वर्ग खुल जाये सारे।।
दिव्य अनुपम प्रभु का खजाना। दौलत बटार तू मन माना ।।

दोहा – चोर सेंध लगा न पाये पूँजी यह अनमोल ।
घटे नहीं दिन दिन बढे, मन के द्वार खाल।।

सुवर्णिम नियम (मत्ती 7 12)

प्यार दया चाहते हो जैसी। दते रहो सब का तुम वैसी ।।
सहज सरल आनद बटोरा। पावन भाव प्रभु–रश्मि अजारा।।
नियम सुवर्णिम ज्योत एक ऐसी। धरा प्रकाशित होवे जैसी।।
उज्जवल रहे मडल–आभा। लहक–महक झूमे मन–गाभा।।
निर्मल आत्मीय भाव जग पाये। आत्म–शक्ति प्रशस्त बन जाये।।
प्रभु म जीन की प्रत्याशा। निर्जन जीवन की उजली आशा।।

दोहा — जग का नियम सुवर्णिम शोभित समता भाव।
शीतल स्रोत रहे बहता मन का मधुरिम चाव।।

जीवन की आधारशिला (मत्ती 7 21-23)

जिसने आत्मा को न जाना। उसन क्या। प्रभु का पहिचाना।।
वचन सुन समझे वह ज्ञानी। बुद्धिमान न करे नादानी।।
अच्छाईया पर महल टिकाता। चट्टानो पर घर वह बनाता ।।
वर्षा हो बाढ चाहे आँधी। पाये कुछ ना थके निनादी ।।
वचन सुन समझे न अज्ञानी। ज्योत रहित कर मनमानी।।
बालू पर वह घर बनाता। हर बुराई से घर वह सजाता ।।

दोहा — आये बाढ वर्षा आँधी विधि के बकिम रग।
छिन–छिन घर ढह जाये रहे न कोई सग।।

मन आशान्वित रहे (मत्ती 6 25 24)

रब्बी कहे 'प्रभु जीवन–दाता। परम प्रधान वह मुक्तिदाता ।।
'प्रभु अनुग्रह सदा मन विचारो। देह की चिन्ता कर, मन न हारो' ।।
दखो पक्षी प्रभु महिमा गाते। न बोते न भडार जमाते ।।
'प्रभु मे पाते व भी बसेरा। मन हारे तो जीवन अधेरा ।।
दखो 'बन–पुष्प है मुसकाता। भव्य वस्त्र सुलेमान लजाता ।।
घास कैसी देखो हरषाये। रौंदी जाये पर न मुरझाये ।।

दोहा — 'क्या पाये' तू चिन्ता कर बढे न आयु पल एक।
आज का दुख आज रहे प्रभु दगा कल नेक ।।

मत्ती का शिष्यत्व (मरकुस 2 13-17)

जन जन मन के रब्बी दुलारे। वाणी के उद्घोषक न्यारे॥
लौट कफरनहूम प्रभु आये। नहा धर्मी जन मन सरसाये॥
निर्निमेष एक दृग प्रभु बाँधे। द्रवित भाव कोई श्वास साधे॥
कटु जीवन से कर समझौता। बैठा मन में था कुछ बोता॥
हे लेवी तुझे प्रभु पुकारे। प्रभु का अनुचर क्या मन हारे॥
नूं अतिथि आज मैं तेरा॥ ज्योतित होवे जीवन तेरा॥

दोहा — संघर्ष भँवर उतराया नयना बहता नीर।
चरणों समर्पित मत्ती हुए कुटिल मन अधीर॥

प्रेरितो का चयन (मरकुस 3 19-19, लूका 6 12-16)

रब्बी बैठे चट्टान छाया। शिष्यों को सब निकट बुलाया॥
अक बारह आधार बनाया। ज्यों मूसा गोत्र ठहराया॥
प्रेरित कह प्रभु नाम पुकारा। तेजस्वी पत्रुस प्रथम निहारा॥
अन्द्रियास पत्रुस ज्योष्ठ भ्राता। आत्म त्यागी प्रभु मन लुभाता॥
प्रभु कहे याकूब जेबेदी। हो उत्सर्गी प्रभु बलिवेदी॥
याकूब भाई योहन प्रभु प्यारा। प्रभु अनुग्रह पाय तू न्यारा॥

दोहा — हे हलफई पुत्र याकूब तुझ में प्रभु की आस।
सेवक प्रभु—भवन बनावे सब पाय प्रकाश॥

बोआनर्गस कहते उत्साही। यहूदा करेगा मन चाही॥
फिलिप और बार्थोलामी। रहे सदा प्रभु अनुगामी॥
यदेयुस हे सिमोन कनानी। हे थोमा बनना प्रमानी॥
हे मत्ती तू सरल सदनारा। सदा रहे प्रभु में धर्म—धारा॥
सब होव प्रभु में प्रकाशी। जीवन—दानी प्रबल विश्वासी॥
भटकी भेडों पास तुम्हे जाना। स्वर्ग—राज्य अर्थ समझाना॥

दोहा — सोना चाँदी न ताँबा लेना न कोई दाम।
बिन दाम तुमने पाया देना बिना नाम॥

प्रेरितो का लक्ष्य (मत्ती 10 8 20)

प्रभु के सवक तुम सेनानी। जीवन रहे सदा प्रमाणी ॥
झरना सा पावन द्युतिशाली। मन हो गगन सा विभवशाली॥
जाओ जग म ज्योत जलाओ। भूल भटको राह दिखाओ ॥
तापित मन शान्ति दिलाओ। मृतक प्राण जीवन सरसाओ ॥
शातल मद समीर स जाओ। तृण दल पल्लव का हरषाओ॥
जग हँसे कर प्रताड़ित गाह। याद न आये सुखद छाहे॥

दोहा — दुर्विजित जग गहराईयाँ मन का छोटा न्यास।
सत्य—बैरी विरोधी, रोकगे प्रभु प्रकास ॥

लवण और दीपक (मत्ती 10 9, 5 13-16)

न झाली और नहीं लाठी। न दो कुरते बना विवादी ॥
न पनही न शीश उष्नीशा। मन हो पवित्र भरा आशीषा ॥
तुम हो जग की ज्योत सुहानी। प्रभु मे रहो सदा नूरानी ॥
पर्वत बसा नगर छिप कैसे। आढ़क धरे दीप कोई कैसे ॥
तुम पावन श्रृग हा सुखदायी। जलो दीप से जीवन—दायी ॥
पृथ्वी क लवण' हो तुम प्यारा। बिगडे न स्वाद धरा श्रृगारो॥

दोहा— छोह छोर मिले न तो क्या मन न होवे अधीर।
सत्य कार्य जग समझेगा धरना मन म धीर॥

पुरानी व्यवस्था और नया नियम (मत्ती 5 17-20)

सावधान! व्यवस्था न मिटाना। प्रभु आज्ञाए सदा निभाना ॥
वर्ग जाति क्या खडित प्राणी। आदम है आदम सब प्राणी॥
सत्य साध्य जग करे सुहाना। मूसा वचन सरल है बाना॥
प्रभु से साक्षात्कार कराने। अन्तर्मन को ज्योतिर्मय बनाने॥
स्वर्गिक नियम भवितव्य बनाने। स्वर्गिक शान्ति भू पर लाने॥
उड़ा! क्षितिज शुभ्र कपोत जैसे। विश्व—गगन दमको तुम ऐसे॥

दोहा— प्रभु व्यवस्था जो टाले, छोटा करे दिन—मान ।
स्वर्ग—राज्य पाये नहीं प्रभु से रह अनजान ॥

शिष्यत्व का मान (मत्ती 16 24-28)

क्रॉ सत्य आत्म–सात एसा। सत्पर्ष हो ज्यात लाव जै
उत्पीडन वग घुटन किनारा। छूट जायगा जग सहा
बचन प्रभु का सरसायगा। अद्‌भुत महिमा तू पाये
प्राण बचाना जो निज चाह। प्रभु से दूर रहे पाप छां
रब्बी कह जा आना चाह। हा ल पीठ सोच का
क्रूस उठा। मुक्ति पर्व मनाने। अभिज्ञान समत्व ध्यय पा

दोहा – फिर न लज्जित मन होगा न रहगा अवस
प्रभु स जुडाव महाज्ञान चख न मृत्यु स्वा

प्रभु की प्रार्थना (मत्ती 6 10-15)

आओ! सग प्रार्थना बोलो। कह रब्बी और मन तोला
हे स्वर्गिक! परम पिता हमारे। पवित्र नाम मन बसे हमार
राज तेरा इस जग म आये। भावना पावन जग हरपाय
श्रम से दिन भर न घबराये। रोटी तेरी कृपा की पाये
करते क्षमा भूले अपराधी। द क्षमा प्रभु हम भी अपराधी
नहीं डालना हम परीक्षा। बचा बुराई औ द निज दाक्षा

दोहा – राज्य पराक्रम महिमा तेरे है! आमा
अनुग्रह तेरा हम पावे मन रह तुझ म दीन

रब्बी के चिन्तन क्षण (मरकुस 1 35-39)

भोर को जब झुटपुटी अधरा। मन पाता स्वर्णिम सबेरा
उपत्यका एक प्रभु मन भायी। अर्न्त–मथन बना सुखदायी।
पिता से पुत्र हुआ सलापी। हे परम प्रधान पिता प्रतापा।
धरा–स्वर्ग छोर गुँथ जाये। स्वर्गिक शिखर महिमा पाये।
जन जन दरस तेरे पाये। जन जन मन प्रार्थना बन गाये।
शिष्य ढूढते बने उतापी। ढूढे शान्ति ज्यो मन तापी।

दोहा – खोज रह व नादान कहा छिपी प्रभु उजास
दर्शन पाये हरपाये देखा रब्बी प्रकास।

सबत की महिमा (मरकुस 2 23-28)

सबत दिन था एक विश्रामी। रब्बी विचरते खेत अभिरामी।।
शिष्य चलते पगडडी धारा। साधना अबाध प्रकृति निहारा।।
कैसी प्राणमयी उदगारी। प्रभु साक्ष्य प्रेमिल मनहारी।।
पात तृपि आहार प्राणी। पुलकित ऊर्जा सुखद कल्याणी।।
मजी कलियाँ रग चित्रकारी। प्रभु वैभव कैसा उपकारी।।
हर अकुर पर प्रभु निशानी। कैसी यह हरितिमा नूरानी।।

दोहा — आनद गीत सुनाती प्रभु शब्दो की गूँज।
करूणामय धीरजवत झकृत है अनुगूँज।।

अकुर अकुर महिमा सजाये। स्वर्णिम बाले झूम समझाये।।
विश्वास हजार गुणा बढ़ जाता। अकुरित जीवन फल है पाता।।
राह रोक खडे कुछ मतिहारा। कुटिल बुद्धि का लिये सहारा।।
हे प्रभु आज दिन विश्रामी। शिष्य आपके क्यो अ–विरामी ।।
विचरे खेत पड़ौस नादानी । 'बाले तोड कर मन–मानी ।।
रब्बी कहते सुन सब ज्ञानी प्रश्न गम्भीर पर गतिमानी।।

दोहा — मनुज हेतु है दिन सबत वाच्य अर्थ तू छोड़।
बहु आयामी सबत दिन समझ अर्थ मुँह न मोड़।।

मूसा व्यवस्था अर्थ प्रभाती। जीवन गाये सदा विभाती।।
हँसिया काट न मन खेती। हाथ से हाथ मिला प्रभु सेती।।
निर्मल मन स जो अन्न पाये। प्रभु भट समन उसे तू पाये ।।
जीवन तो है एक मुनादी। आहार है देह बुनियादी।।
तन मन दोना रहे परागी। रहे प्रभु मे सदा अनुरागी।।
समय रूके क्या! धरा सजाने! दृष्टि चाहिये स्वर्ग बनाने।।

दोहा — 'सबत–दिवस नहीं कहता कि बैठ बन कर दीन।
मुकुट शान्ति का चाहे अनगिन दाने बीन।।

प्रेम करूणा नहीं अपवादी। सबत दिन न बनाओ विवादी
हाथ बढ़ा कर बनो दानी। प्राण–सदा है मूल्यवानी ॥
क्षमा दया उत्सर्ग बन आओ। प्रभु म जीवन प्राण बढ़ाओ॥
रोग नहीं वैद्य बन कर आओ। पाप नहीं पापी का बचाओ॥
'जाडो प्रभु से सच्चा नाता। 'प्रभु म सब भाई बहिन माता ॥
सत्य न्याय को विजय दिलाओ॥ धुआँता बाती का बुझाओ॥

दोहा– अहो! सब प्यासे लोगा आओ जल के पास।
अधर्म हेतु क्यो–कर बिके छोड़ प्रभु का विश्वास॥

(मत्ती 12 7 मत्ती 9 12 13 मरकुस 3 31-35 यशा 42 1-4 यूहन्ना 7 37 यशा 55 1 50 1)

उठ हो प्रकाशमान (यशयाह 60 1)

जन मन प्राण विवेक जगाते। जीवन का आनद समझाते॥
प्रभु के पवित्र नाम के द्वारा। ज्योत–एश्वर्य बन तम–हारा॥
जो आत्मा–दीपित हो जाये। समष्टि चैतन्य मन समाय॥
प्रभु एहसास मिले सर्वव्यापी। ऊँचा ज्ञान पूर्ण सत्य प्रतापी॥
अविनाशा विभाव मन गहराय। मनुज आत्म–मृत्यु नहीं पाये॥
प्रभु निष्ठा सौंदर्य सरसाय। जब स्त्रोत–विश्वाम लहराये॥

दोहा– कहे रब्बी युग विरासत लाया नवल विहान।
आया बन प्रेमिल भाव उठ हो! प्रकाशमान॥

जीवन –'चैतन्य' (मरकुस 1 40-45)

रब्बी कहे स्तुति हमे गाना। जड विचार रूढ सोच मिटाना॥
'मृत्यु की छाया को हटाना। नव–जीवन की ज्योत जलाना॥
फिलस्तीन को प्रभु बढ जाते। जीवन दर्शन नया समझाते॥
टेक जानु कहता एक काढी। पभु मैं आया तेरी ड्योढी ॥
दया द्रवित प्रभु हुए कल्याणा। स्पर्शन कर बाले नम्र वाणी॥
'चगा हो 'जोड प्रभु सग नाता। सब का वही है मुक्तिदाता॥

दोहा– तन निर्मल बना पावन हुआ स्पदित मन प्राण।
प्रभु भेट चढाओ जाओ नित रहे प्रभु का ध्यान॥

तन मन की चगाई (मरकुस 1 40-45)

कह सव जग–बहिष्कृत कोढी। प्रकाश पाया प्रभु की ड्योढी ।।
जीवन त्रास रहा मैं पीता। भय सकट रोग रहा जीता ।।
प्रभु स्तुति अब चगाई पाया। स्पर्शन कर प्रभु मान बढाया ।।
दुखी मन का प्रभु बने सहारा। दया–ज्योत्त से किया उजियारा।।
अभिशापा से मुक्ति दिलायी। पथ–बीहड नयी राह बनायी।।
गेप रहे प्रभु नई आशाए। नव–उल्लास नवल धारणाए।।

दोहा — मित्र रह भ्रात राहे देकर नव आह्वान।
प्रतिबद्धता सब सीखे हाथ बढा नादान।।

उपवास महिमा (मरकुस 2 18 22 मत्ती 7 21 23)

शास्त्री कहत यीशु उलझाये। उसकी चालो उसे फँसाय।।
प्रवल वेग से बाण चलाय। कहते अर्थ उपवास सुनाये ।।
शिष्य आपके हुए विलासी। दिन विलाप के नहीं उपवासी।।
सुने सभी ज्ञानी अभिमानी। — प्रायश्चित दिन रहे ईमानी ।।
जब तक दूल्हा साथ बराती।। शाक मनाते नहीं घराती ।।
दूल्हा जब बिछड़ जायेगा। विलाप–दिन शोक आयगा।।

दोहा — नये वस्त्र का पेवन्द, जीर्ण–वस्त्र क्या मेल ।।
चीर खींच सिकुड़ फाड़े और लग बेमल ।।

रब्बी कह उपवास–उल्लासी। आत्मिक बल पाये उपवासी।।
उपवास नहीं कोई दिखावा। चेतन मन देता प्रभु बुलावा।।
जगे ज्यात मिटे रात काला। उपवास–शक्ति है रसाना।।
सघन निराशा म उजियाला। यश मान दर्प जले तप ज्याला।।
निर्मल मन पावनता पावे। जीवन नवल उद्यान बन जाव।।
आत्म–निरीक्षण राह बनाये। परम प्रभु आशीष वरसाय।।

दाहा — परम्परावादी मनुज ढात रीत रूढ।
सोच बदलो प्रभु प्यारा प्रभु सदश गूढ।।

आँधी को शान्त करना (यूहन्ना 5 30 47)

बना रहे क्या कठिन कसौटी। हर तर्को मे धारणा छोटी।।
रब्बी कह नया स्रोत लाया। अभिसिंचन कर कर समझाया।।
वाग परम्परा मूल तोलो। सर्वमय–दृष्टि बनाकर बोलो।।
साच–विचार व्यास–वृत बढ़ाओ। निषध–मुखी–दृष्टि अब हटाओ।।
प्रभु से साक्षात्कार करा आआ। निज मन म प्रभु दर्शन पाओ।।
शान्त तूफान आँधी आवे। डगमग नौका पार पावे।।

दोहा — आधा मन की शात करो लहर उछाल नाव।
करो मिलाप हा प्रभु स उससे क्या अलगाव।।

शुद्ध–अशुद्ध भाव (मरकुस 7 1 10)

परम्परा नद प्रवाह जैस। राकते बोझिल तर्क कैसे।।
शुचि अशुचिता वना दिखावा। करते प्रभु से भी छलावा।।
होठ का आदर प्रभु–प्रभु गाता। मन नहा प्रभु गूँज सुनाता।।
सिखात नियम सुनाते रीती। आदर कर माता–पिता प्रीती।।
आज्ञा उलट–पुलट कर जाते। सवा सेतु ताड़ गिरात।।
शुद्ध अशुद्ध अतस दिखलाता। मन स जो है बाहर आता।।

दाहा — रोगी करते तन प्राण व्याधि हैं बुर विचार।
पवित्र औ सुखद रूप चाह थाम ले वग विचार।।

बीज बोने वाले का दृष्टात (मत्ती 13 1 23)

सागर तट बैठ रब्बी निहारे। लहर कर प्रभु से गुहार।।
सुना द रब्बी शारवत वाणी अभिसिंचित हावे जग कल्याणी।।
तट फैल रही अनुपम आभा। जन मानस की शान्त आभा।।
आ विराजे रब्बी एक नौका। जन–गण–मन को फिर अवलाका।।
सुनो! एक बीज बाने वाला। बीज बिखर चला मतवाला।
कुछ गिरत मारग क किनारे। पक्षी चुग हुए तृप्त सार।।

दाहा — गिर कुछ पथरीली भूमि पाय न माटी नह।
अकुरित हुए बढ़ नहीं गहरा थीं न तह।।

झाडियो गिरे कुछ कटीली। दब गये झाड़ी थी गर्वीली॥
अच्छी भूमि गिरे जीवन पाया। फल तीस_साठ सौ गुण आया॥
कान सुनता मन ज्याति पाता। अतस वैभव स्वर्ग मुस्काता॥
गहरी मिट्टी ही अकुर पाये। जड़ पकड़े औ फल भी लाये॥
सुने समझे औ ज्ञान बढ़ाये। प्रभु वचन का वही फल पाये॥
नबी यशायाह वचन टकोरे। देख सुने पर रहे कारे॥

दोहा — दृष्टातो की बात यह खालो मन के बध।
प्रभु अनुग्रह के उपहार पावे न मन अध॥

रब्बी कहत वचन खलिहानी। बीज है प्रभु विभव लासानी॥
निपजे वचन कि मन सरसाये। प्रभु विभुता जीवन पा जाये॥
राह किनारे जो था बोया। सुप्त मन मे बीज वह खाया॥
ग्रहण करे क्या भू पथरीली। ठहर कैसे? माटी न गीली॥
कष्ट पड़े धीर मन अकुलाय। पतित हो भटक घबराये॥
चिता धन मोह रोग विकारे। झाड़ कटील रोंदे मन हार।

दोहा — अच्छी भूमि है धर्मी मन नित नित आब नवीन।
भरा रहे मन का खत्ता प्रभु मे रहता दीन॥

गेहूँ और जगली बीज (मत्ती 13.24 30)

वचनो का अनुग्रह जो पावे। अर्न्त—प्रज्ञा मधुरिम मुसकावे॥
लहके महके मन सुख पाता। झुक झुक हृदय—पात्र फैलाता॥
देखो मन एक खेत सुहाना। बोना तुम लासानी दाना॥
प्रतिपद कोई दुश्मन रोपे। बीज कपट चौपटहा ”ापे॥
दाना सग दाने विषैले। रूप दिखलाते जब व मैले॥
मन का धू धू य ही जलाते। सौ सौ बार कलक लगाते॥

दोहा — भली फसल हो मृत—प्राण छिटकाता वह बीज।
मन के निर्धन कोना म पनपता कपट बीज॥

शक–शुबह जीवन की भूल। पाप आकर य ही शूल।।
राग शूल फूल नढ़न दना। कामल ततु उखाड़ न लना।।
निस्तब्ध क्षण जब दुल्राव। अंकुर–जीवन तब मन पाव।।
ग्रहण शक्ति मन पाव एस। बढती फसल हर क्षण जैसे।।
पौधा यह आनद फल लाता। जग का यही फल बरसाता।।
आनद–फसल रक्षा कर प्यार। विस्तार अनत जग पसार।।

दाहा –दाने रख काठार मे जीवन धन ये मूल।
झाक दे आग समय दख दुराग्रहा के शूल।।

राई का बीज (मत्ती 13.31-32)

जैस मुग्ध भाव लहराए। जल पर लहर मुग्ध छायाए।।
कह रब्बी फिर स समझाता। अर्थ मापी प्रतिदान बताता।।
मन–प्रगार का वैभव एसा। स्वर्ग–राज अनत है जैसा।।
राई बीज सा छाटा पात्री। बन जाता अर्न्तमन यात्री।।
विशाल वृक्ष सा सुख पहुँचाता।। शाख–प्रशाख फलित हरषाता।।
नभ क पक्षी करत बसरा। प्रकाश–वितान बन उजरा।।

दाहा – सग प्रभु जोड़े नाता। पाये सुख अहलाद्।
विस्तार मन–परिधि पावे। जीवन क सुन नाद।।

खमीर (मत्ती 13 33–34)

प्रभु स अनुभूति प्रीत बढाआ। भाव अद्वैत एहसास जगाआ।।
ज्ञान बुद्धि खड अधियारे। पाप लज्जा द्वैत ही विस्तार।।
मन के राग विकार विनाशी। लहर वत् जीवन है सर्वनाशी।।
जीवन मथन करा दुलारा। सागर गूँज सुना सब प्यारो।।
स्वर्ग–राज्य विस्तार है एसा। खमीर है उठान करे जैसा।।
द्वन्द्व मिटा बनो दृष्टा साक्षी। मन बने प्रभु का आकाँक्षी।।

दाहा – प्रेम से प्रेम बढआ मथन करा गभीर।
जीवन अनुपात प्रम मथ मथ बन खमीर।।

गुप्त धन ओर अमूल्य मोती (मत्ती 13 44—49)

भूमि खाद क्या तू छिपाय। चार है सध लगा ल जाय।।
नहिं दृष्टि रखता तू अज्ञानी। ठगे स्वय का एसा मानी।।
आत्म पराभव का अधियारा। दखे कैस भार उजियारा।।
सत्र बत खत माल ले ल। जा कुछ है मब प्रभु का द द।
स्वर्ग राज्य गुप्त धन है ऐसा। बढता जाय न रीते जैसा।।
फिर कभी रीता मन न होवे। आनद मगन हाकर जीवे।।

दोहा— स्वर्ग राज मोती अमाल खोज सके ता खाज।
देर दे सब ल ल माल प्रेम प्रीत की आज।।

सागर ओर जाल (मत्ती 13 52)

ममार सागर है मनहारी। मत्य आनद शान्ति त्रिधारी।।
एकता समन्वय बल धारी। रहता भाँत रग रूप धारी।।
लाभी कोलाहल भी भारी। चट्टानी पहाड़ द्विभागी।।
गहरे सागर जो तू झाँक। लौट फिर नहीं तट को आँक।।
मछुआ महान प्रभु अन्तर्यामी। जाल फक हरत स्वामी।।
जीवन प्राण डूबे उतराय। मुक्ति दाता फिर खिलाय।।

दोहा— तट पर मीन अकुलाय जड़ित थकित चुपचाप।
तौर सागर जो आये पाय जीवन माप।।

भण्डारी (मत्ती 13 52)

धानी पर सन्ध्या गिर आयी। झुट—पुट अधेरा बन छायी।।
कपड़ी बाझ लिए चल जाता। पथ—प्रदर्शक गह दिखलाता।।
दिखा जा रही नव—रगा। नयी —पुरानी गुगल रेगा।।
बुझ न सकती ज्योति ज्वाला। पहिन ले तू भी जुगत माला।।
मन है गृहस्थ एक भडारी। जन बैठ व हैं प्यारी।।
र गुरू रूपा ठाकर खाता। यता स्त्री गा दिखलाता।।

दोहा— रान रहना है सदा कठ रा नहीं गुर।
मन की द्वारा है सभार त्री

१

तूफान (लूका 8 25)

झील तिबरियस शीश नवावे। बढी नाव सग आर नावे।
लहर लहर हुइ प्राणनाशी। आलाडित मन भी विनाशी।।
दुविधा कैसी क्षण तूफानी। दुर्बल मनुज वेग तर्क उफानी।।
कपित मन डरता प्रभु पुकार। प्रभु! नाव पहुँचे तट किनार।।
रब्बी कहे आँधी शान्त हाव। रूक आघात शान्ति होव।।
हे अल्प विश्वासी बवाली। मन का तिमिर बन जजाली।।

दोहा — उद्वेगी सहे ममकार डूबता मति मद।
झझा झेल धर्मी पाता जीवन का मकरद।।

प्रार्थना की शक्ति (लूका 8 33)

गिरासनी तट पहुँची नौका। पाया एक अपदूत न मौका।।
काई न था उसे बाँध पाया। निवस्त्र फिर वह पतित काया।।
ऊँच स्वर कहता प्रभु निबाह । नाम सेना दया प्रभु चाह।।
प्रार्थना कर प्रभु ध्यान लगाते। आज्ञा अपदूत को सुनात।।
इस देही से रख न नाता । ताड मराड अपदूत जाता।।
समूह शूकर जाय समाया। डूबा कोई रोक न पाया।।

दोहा — चरवाह शकित सारे देखते ज्योर्तिमान।
प्रभु—पूर्ण वह काया गाती महिमा गान।।

चगाई व सेवकाई का आदर व तिरस्कार (लूका 8;35-52)

जन मन कहे रब्बी नूरानी। काई कहे चमत्कार कहानी।।
अपदूतो का मित्र सहयागी। पापी है ईश निंदक रागी।।
नहीं! प्रार्थना शक्ति लासानी। रब्बी म प्रभु की अगुवानी।।
दखा याइर पुत्री छविमानी। जीवन मिला उसे वरदानी।।
पवित्र भाव से कलुषित काया। दीपित हा मिले प्रभु छाया।।
याद करो व थ दुखी प्राणी। पाये अनुग्रह औ प्रभु वाणी।।

दोहा — हिसक प्रतिशोधी वचक वचन सुनाते शूल।
रब्बी कहे निज देश म मलिन होता दुकूल।।

गुप्त धन और अमूल्य मोती (मत्ती 13 44—49)

भूमि खाद क्या तू छिपाय। नार है मध लगा ल जाय।।
नहिं दृष्टि रखता तू अज्ञानी। ठग स्वय का एसा मानी।।
आत्म पराभव का अधियारा। दख कैस भार उजियारा।।
मन बार खत मोल ल ल। जा कुछ है सब प्रभु का द द।
स्वर्ग राज्य गुप्त धन है एसा। बढता जाय न रीत जैसा।।
फिर कभी रीता मन न हाव। आनद मगन हाकर जीवे।।

दोहा — स्वर्ग राज मोती अमाल खोज सके ता खाज।
बच द सब ले ल मोल प्रेम प्रीत की आज।।

सागर और जाल (मत्ती 13 52)

ससार सागर है मनहारी। सत्य आनद शान्ति त्रिधारी।।
एकता समन्वय बल धारी। रहता भाँत रग रूप धारी।।
लाभी कालाहल भी भारी। चट्टानी पछाड द्विभागी।।
गहरे सागर जा तू झाँक। लौट फिर नही तट को आँके।।
कुशल मछेरे प्रभु अन्तर्यामी। जाल फक हरते स्वामी।।
जीवन प्राण डूबे उतराय। मुक्ति दाता फिर दिखलाय।।

दाहा — तट पर मीन अकुलाये जडित थकित चुपचाप।
लौट सागर जो आये पाये जीवन माप।।

भण्डारी (मत्ती 13.52)

वादी पर सध्या घिर आयी। झुट—पुट अधरा बन छायी।।
कपटी बोझ लिय बल खाता। पथ—प्रदर्शक राह दिखलाता।।
दिगत बना रही नव—रेखा। नयी —पुरानी सुमेल रेखा।।
बुझ न सकेगी ज्याति ज्वाला। पहिन ल तू भी नूतन माला।।
सच है गृहस्थ एक भडारी। नन नैठे व हैं पसारी।।
रे मूढ क्या ठाकर खाता। वचन रब्बी राह दिखलाता।।

दोहा — सदा रहना है सचेत कठ रहे नही मूक।
मन की व्यथा है गभीर अन्तर मे उठी हूक।।

तूफान (लूका 8 25)

झील तिबरियस शीश नवावे। बढी नाव संग और नावे।
लहर लहर हुई प्राणनाशी। आलाडित मन भी विनाशी।।
दुविधा कैसी क्षण तूफानी। दुर्बल मनुज वग तर्क उफानी।।
कंपित मन डरता प्रभु पुकार। प्रभु! नाव पहुँचे तट किनार।।
रब्बी कहे आँधी शान्त होव। रूके आघात शान्ति होव।।
हे अल्प विश्वासी बवाली। मन का तिमिर बन जजाली।।

दोहा — उद्वेगी सह ममकार डूबता मति मद।
झंझा झेल धर्मी पाता जीवन का मकरद।।

प्रार्थना की शक्ति (लूका 8 33)

गिरासनी तट पहुँची नौका। पाया एक अपदूत ने मौका।।
कोई न था उसे बाँध पाया। निर्वस्त्र फिरे वह पतित काया।।
ऊँचे स्वर कहता प्रभु निबाह । नाम सेना ल्या प्रभु चाह।।
प्रार्थना कर प्रभु ध्यान लगात। आज्ञा अपदूत को सुनात।।
इस देही से रख न नाता । ताड मरोड़ अपदूत जाता।।
समूह शूकर जाय समाया। डूबा कोई रोक न पाया।।

दोहा — चरवाहे शकित सारे देखत ज्योर्तिमान।
प्रभु–पूर्ण वह काया गाती महिमा गान।।

चंगाई व सेवकाई का आदर व तिरस्कार (लूका 8,35-52)

जन मन कहे रब्बी नूरानी। कोई कह चमत्कार कहानी।।
अपदूता का मित्र सहयोगी। पापी है ईश निदक रागी।।
नहीं। प्रार्थना शक्ति लासानी। रब्बी म प्रभु की अगुवानी।।
देखा याइर पुत्री छविमानी। जीवन मिला उसे वरदानी।।
पवित्र भाव से कलुषित काया। दीपित हो मिल प्रभु छाया।।
याद करो वे थ दुखी प्राणी। पाये अनुग्रह औ प्रभु वाणी।।

दोहा — हिंसक प्रतिशोधी वचक वचन सुनाते शूल।
रब्बी कहे निज देश म मलिन होता दुकूल।।

पाँच सहस्त्र को भोजन (यूहन्ना 1,15)

जीवन सम्मान कर आओ। दकर तृप्ति तृप्ति को पाआ।।
आत्म–सात करा निदा सारी। सेवा समादर बन भडारी।।
सकरी है घाटी गहरा पानी। फसल तैयार रग है धानी।।
फसल पव कहे रब्बी आया। भूख प्यास सबने बिसराया।।
स्नेह प्रीत भाजन कराय । शिष्य कह दीनार न पाये ।।
बालक एक है लाया रोटी । रब्बी कहे आशीषित रोटी ।।

दोहा — बाँट रहे प्रभु आशीष दे रहे शिष्य मूल।
अनुग्रह तृप्ति सब पाते खिल रहे वादी फूल।।

सागर पर चलना (मत्ती 14 30)

रब्बी कह बढा सुपथ आगे। ज्ञान नेतना प्रकाश जागे।।
सध्याकाल हुआ मधुकोपी। प्रार्थना लीन रब्बी तापी।।
निद्रालस शिष्य मन घबराया। कहा रब्बी सशय टकराया।।
प्रहर चौथा धुधलका छाया। डगमग नाव डालती काया ।।
पतरस दखे जल–सैलानी । भय शकुल मन हुआ तूफानी।।
नाम ले रब्बी पतुस पुकार। रूप यौगिक शिष्य निहार।।

दोहा — आता मैं पतरस कहे आ दृढ विश्वास साथ।
मैं डूबा रब्बी बचा। बढ थामा प्रभु हाथ।।

प्रभु की कलीसिया और पतरस का आह्वान (मत्ती15:13-15)

सुषमा सौरभ छिटक तारे। छायाछन्न हैं तट किनार।।
पर्वत–पर्वत मैं दीप जलाऊ । पत्थर पर कलीसिया बनाऊँ ।।
अक्षर अक्षर पढाऊँगा ऐसा । आँक जीवन युग मान जैसा।।
नरक–शक्तियाँ विजय न पाये। वृत्त–चक्र वृत्ति ताड़ हटाय।।
हर पौध जा स्वर्ग स आती। जीवन फल रसाल भर लाती।
अया — अध का राह दिखाय। कह रब्बी दाना खड्ड गिराय।।

दोहा — पृथ्वी–स्वर्ग बध खोल कैसा मनहर ज्ञान।
स्वर्ग–राज्य कुजी देता पतरस सुन आह्वान।।

यीशु उत्तरी क्षेत्र मे (मत्ती 15 21-28)

सूर सैदा उत्तराल जाते। मणियाँ विश्वासी खाज लाते।।
रब्बी कह प्रभु सब के खेवैया। चाहे हो तुच्छ सी गौरैया।।
छाड़े नहीं कभी न सहारे। सिर क बाल गिने हुए सारे।
चढ जा प्रभु खड़ हाथ पसार। आदम पुत्र कह तुझे पुकारे।।
प्रभु को जा तू निसरावगा। दही मृन लकर जीवेगा।।
नहीं तुझे वह पहिचानगा। जब प्रभु सन्मुख तू जावगा।।

दाहा — जा अगीकार कर प्रभु करे प्रभु अगीकार।
क्षमा नहीं वह पाता चल जा पख पसार।।

समय के लक्षण (मत्ती 16 1—4, लूका 12 52-56)

खाजते चिन्ह य अविवका। भूले मानवता औ नेकी।।
समय की गति नही य जाने। पृथ्वी आकाश चिन्ह पहिचाने।।
पश्चिम मेघ देख हरषाते। रिम झिम वर्षा आनद मनाते।।
दक्षिणी वायु देख घबराते। लू चलेगी जन मन अकुलाते।।
देखो समय अब जो है आता। अदावत द्वेष फूट हैं लाता।।
पुत्र पिता विरोध उठगे। सास बहू दुश्मनी करेगे।।

दोहा — तीन के विरूद्ध दा खडे दा के विरूद्ध तीन।
ज्वाला उठेगी ऐसी करूण बजेगी बीन।।

मति— अध पीढी (मत्ती15 10-20)

तुलना किसस करूँ मतवालो। छिप—छिप विवर तकने वाला।।
स्वल्प नीरा उल्का से चाली। सुन समझ कूट वाचाली।।
पाषाणी पाप—पुज अचेता। लालस अभीप्सा अग्र कुचेता।।
अशुद्ध भाव ही है विषपायी। मुख पर आते बन कषायी।।
हाय खुराज्नि हाय बैनसैदा। पाताल क्यो कफरनहूम पैठा।।
मन है एक भडार निराला। भर लो चाहे मधु या हाला।।

दाहा — निर्जन म विश्राम खाज पीढी यह मति—अध।
अवेरे न उत्तम काप उलझ जाल के फद।।

बनाओ, बालक सा निर्मल ह्रदय (मत्ती 18 1-7)

कठोर दृष्टि सहज सरल बनाओ। बालक सा निर्मल ह्रदय पाओ॥
ज्योति किरण बालक अलबेला। प्रार्थना सा नित नित नवेला॥
प्रश्ना का उत्तर वह अनाखा। प्यार भरा जवाब वह नोखा॥
सुन्दर असुन्दर भेद न जाने। पलको की अजुरि पहिचाने॥
सुमन–वृन्द सा कात परागी। प्यार भरा सदा अनुरागी॥
मन जा एसा हो छविमानी। सृष्टि का दृष्टि मिल वरदानी॥

दोहा – बिम्ब सहेजे गर्व भरे कारक सब य शाक।
डुबोते अथाह सागर रह उदास स–शोक॥

चक्की पाट है प्रलोभन (मत्ती 18 6 9)

बोझिल भारिल मन बनाया। बाध चक्की पाट गले लटकाया॥
चाहता सागर पार जाना। उलझा प्रलोभनो अनजाना॥
रब्बी कहे आसक्ति धागा। कच्चा है यह तोड़ दे तागा॥
विचार प्रपची तम मिटाओ। शक्ति सकल्प ज्योत बनाओ॥
मन प्राण सद्–विवेक जगाओ। यू अग्नि मे निज न झुलसाओ॥
सोये हैं जो जगाने आया। खोये उन्हे बुलाने आया॥

दोहा - देखो सुनो औ समझो पकडे हो दुख छार।
मद से मदतर होगी फिर न मिले दृष्टि–कोर॥

भटकी भेड़ (मत्ती १८·१२–१४)

चन्द्र– वदनी वादी प्रकाशी। हरित वर्ण हुआ रूप उजासी॥
वचनो की शोभा प्रभ –न्यारी। खिल खिल जाये मन फुलवारी॥
दृष्टात मनहारी एक सुनाया। वादी एक चरवाहा आया॥
सौ भेडे स्वामी हरषाया। नाम ले ले पुकार मुसकाया॥
भटकी भेड एक झुड़ विराना। खोज रहा ठौर हर ठिकाना॥
अक बैठाऊ जो मिल जाय। निन्यानवे सग सौ मिल जाये॥

दोहा – रब्बी की चरवाही है उत्तम और छविमान।
पावे सब ज्योति नूर रहे न कोई अनजान॥

मंदिर का कर (मत्ती 17 24 27)

शिष्या स कपट वाद बढाया। दुरबल डोर जाल फैलाया।।
प्रश्न गढा गूट एक अनास्था। छाड सत्य अर्थ अधर्मी आस्था।।
मादक मगरूरा रूप सुहाना। प्रभु विमुखी दुरमति दुरित बाना।।
कहते कर नहीं रब्बी चुकात । करणीय कार्य क्यो कर भुलाते।।
कर–दाता रब्बी अर्थ सुनात। उत्तम मन कर–दाता समझात।।
मन जा रहता सतत प्रवाही। जन–जन पाता कर गवाही।।

दोहा — अर्थ भाव कर विनियोग नहीं हिसक दृष्टि भट।
कर अकन पात्र –अपात्र रख नहीं दृष्टि भद।।

क्षमा धर्म (मत्ती 18 21-22)

पूछ पतरस रब्बी सुनाव। कितनी बार क्षमा भाई पावे।।
सात से सत्तर गुन पुकारा। गुनत क्या क्षमा –धर्म दुलारे।।
क्षमा जीवन शक्ति है कल्याणी। प्रम की थाह मन की वाणी।।
स्वय ही स्वय को उठाना। निर्मल सौगात प्रभु का पाना।।
आत्म – विभव असीम निराला। भव्य सच्चा जीवन पथ आला।।
श्राप साये नद अधियारे। पार करा दे क्षमा पतवारे।।

दोहा —सात बार बैठ तुला सुन मन का आह्वान।
सात से सत्तर गुणावन बढ नह का मान।।

क्षमा –आचरण (मत्ती 18 15 16)

पृथ्वी जैस लती है फरे। प्रज्ञा दृष्टि मनुज निज हर।।
विरूद्ध अपने भाई जो पावे। स्नेह भाव रब्बी कह ज्यव।।
दख एकान्त उसे मनाव। दोष बताव भ्रात समझावे।।
लेता सुन यदि वह तुम्हारी। समझा भाई मिला हितकारी।।
भ्राता अनमाल जा अनुतापी। भाव पूरित पुनीत वह तापा।।
जो न सुने लना तुम साक्षी। न्याय–धर्म तब हाना भापी।।

दोहा —रौंद पीसता ममकार जैसे समुद्र अशान्त।
स्नह सम्पदा निगले लहर औ ज्वाल भ्रा।।

क्षमा करे, क्षमा पाये (मत्ती 18 23-25)

क्षमा विभव सदा हितकारी। जग जीवन पाव सुखकारी।।
ऋण-पत्र देखे एक अधिराजा। लखा -पत्र ले स्वामी विराजा।।
सेवक ऋण-पत्र है एक लाता। दस सहस्र मुद्रा दिखलाता।।
स्वामी मेरे। सब चुका दूँगा। दीनार एक नहीं भूलूगा।।
बाहर आ दास बना स्वामी। कहे ऋणी स करू नीलामी।।
स्वामी पुन सवक बुल्वाया। दुष्ट! तू तनिक दया न लाया।।

दाहा— पाया तू क्षमा मुझ से फिर क्या हुआ अधीर।
क्षमा कर क्षमा पाय नयन भर क्या नीर।।

पड़ौसी कौन! एक दृष्टात (लूका 10 29-37)

कौन पड़ौसी समझ कैसे। सिमट चले कहे रब्बी एसे।।
कलुषित मन रहे सदा विवादी। जीवन मूल्य न समझ नादी।।
मनुज एक था जाता यराहो। लूट पीट ठग पटका डीहो।।
देख पुरोहित एक कतराया। नजर उठा लेवी मुख फिराया।।
सामरी एक घायल उठाया। तेल दाख मरहम लगाया।।
दकर दिनार सराय स्वामी। सवा अनुबंध ले ली हामी।।

दाहा— मन बोध का यह नाता कहो पडोसी कौन!।
दुख-सुख निभाये साथ नह करे जो मौन।।

प्रधान-पद का दायित्व (मत्ती 19 1)

यर्दन पार सामरिया आये। यहूदिया मन रब्बी समाये।।
मार्था-मरियम आतिथ्य पाया। प्रभु चरणों म शीश नवाया।।
शिष्य बहत्तर करत अगुवानी। नगर डगर बढत वरदानी।।
निकट प्रभु जबदी पुत्र आय। हे प्रभु महिमा जब आप पायें।।
दाँय-बाँय अधिकार हमारा। कहे रब्बी न्याय प्रभु दे सारा।।
जिसको चाहे आसन देवे। जा चाहे पद-प्रधान लेव'।।

दाहा— सेवक बन सबको खेवे रहे प्रथम अतिम पास।
तन मन का कर परित्याग पाये प्रथम उजास।।

अनत जीवन वारिस कौन? (लूका 10 25-28)

पूछ रहा एक मानी ऐसे। जीवन शाश्वत पाऊँ कैसे।।
रब्बी कहे, गुन आज्ञा सारी। न होवे जीवन अतिचारी।।
अपने प्रभु का मान बढ़ावे। पूरे मन स प्रभु को ध्यावे।।
सग आ, तोड़ बधन सारे। तन मन धन अर्पण कर सारे।।
पीछे हटा धनी अभिमानी। कैसे प्रवेश पावे मानी।।
ऊँट सुई नाके निकल जाये। धनी–मन–निर्धन प्रवेश न पाये ।।

दोहा – स्वर्ग–राज अनत जीवन जीवन हो सराबार।
अनुभूत होवे मन भीतर महिमा पावे अपार।।

जागते रहो (लूका 12 35-48)

ज्ञान–वान मनुज, प्रभु–भडारी। प्रभु सम्पत्ति का अधिकारी।।
जो प्रभु का उत्तम कस्माली। सौंपे फसल जैसे एक माली।।
जागता रहे प्रभु सेनानी। जलता रहे दीप कर्म वाणी।।
आये द्वार पर जब स्वामी। सोता न पावे गृह–स्वामी ।।
नम्र आतिथ्य सदा स्वीकारो। प्रतिदान आशा मन न धारो ।।
फल–हीन वृक्ष व्यर्थ भूमि घेरे। काट दे माली, वह न हेरे ।।

दोहा – छिप न पायेगा प्रभु स छिपता क्या कोठार।
ढका जो खुल जायेगा कर ले तू विचार।।

प्रश्न तलाक (मरकुस 10 1-12)

रूढ़ व्यवस्था धुरी उठाये। रेती रेती व्यभिचार समाये।।
बन कर सिद्धान्त ढिढोरी आये। सौदागर प्रश्न तलाक लाये।।
उचित क्या। रब्बी तलाक लेना। त्याग–पत्र विधान लिख लेना ।।
कहे रब्बी कठोर यह वाचा। मन देख लिख मूसा साँचा।।
नर औ नार प्रभु ने बनाया।। जोड़, नया परिवार सजाया।।
प्रवचन शूल काट गिराते। स्वच्छ अभिसिचन न पाते।।

दोहा – हाँफती हवाए रोक मन को लेवे जीत।
पति–पत्नी करे मन मथन सेतु बने पुनीत।।

निष्पाप कौन! (यूहन्ना 8 1-11)

अनुभूतियाँ ले शुद्ध सुहानी। पर्व मनान यरूशलेम नूगनी।।
सुरभित सुवास हर मोड़ राह। सौरभ संदेशो की छोहे।।
गवाक्ष खोलने रब्बी आये। वचन पावन वादी पाये।।
एक राह कहे दिशाहारी। दोष भारी अनथाह नारी।।
पहला पत्थर फके निष्पापा। कर पत्थर-वाह नार श्रापी।।
विनत माथ लिख सत्य प्रमाणा। पूछे रब्बी कहाँ व अज्ञानी।।

दोहा — चले गय प्रभु! सब मूक लगा सके न दोष।
नयन वेदना अछोर दिया प्रभु ने तोष।।

गुहार (लूका 18 1-8)

गुहार न्याय की अधिप सुनात। रब्बी जन-गण-मन सरसात।।
एक न्यायधीश ऐसा गुमानी। सब कहे न्याय करे न मानी।।
'न्याय करे प्रभो! मुझे बचाये। करे गुहार विधवा एक ध्याये।।
सुनी न मनुहारे वर्ष बीते। दिन बीते आस नहीं रीते।।
नित नित विधवा मुझे यह सतावे। न्याय करूँ आनद मनावे।।
प्रभु की दया विधवा ने पायी। रब्बी कहे प्रभु नहीं अन्यायी।।

दोहा — रख प्रभु आस सग सदा हट जाये अवराध।
प्रभु विभव सदा अनोखे रख तू मन मे बोध।।

सच्ची अराधना (यूहन्ना 6 31-59)

भाव-प्रणव-मन मधु है पीता। सेवक प्रभु का प्रभु सग जीता।।
देता सदा प्रभु की गवाही। और पाता अनत परवाही।।
दीन न हाव मन सदेही। मिले दया दान प्रभु हैं नेही।।
व्याकुल हो चूक न प्रभु सेवा। भटकेगा तू बिना खेवा।।
पुत्र तू मन पिता से बाँधे। सकल्प त्याग मन मे साध।।
करो अराधन महिमा गाओ। रब्बा कहें जीवन-स्रोत पाओ।।

दोहा — अनत स्रोत बह जाये सुख-दुख सम रहे आस।
जीवन जल प्यासा पाये जो आये प्रभु पास।।

मन की घाते (यूहन्ना 8 31 59)

प्रेमिल–प्रेम बनता परागी। कण–कण वादी म अनुरागी।।
करत विवाद प्रति आघात। समझे न मूढ़ आत्मिक बाते।।
टपकी एक बूँद झील नीली। रग बैंगना वह जहरीली।।
कह रब्बी पाप करने वाला। पाय नहीं पुत्रत्व मतवाला।।
सरल तरल मन प्रभु का पावे। आशाय अतुल मन हरषावे।।
वचन बूँद टपके एक पीली। स्वर्णिम हो मन झील लाली।।

दोहा – पारे सा छिटक बिखर थिर न रहे मन म्लान।
रब्बी वचन सरल विधानी रत्न–ज्योत अम्लान।।

उत्सर्गी–वाणी (यूहन्ना 8 12-20)

सग–सग ज्योत जो चलेगा। ज्योत सग ज्योत सा चमकेगा।।
मन ज्योतिर्मय प्राप्त करेगा। अधकार से सदा बचेगा।।
'पूरी करे पुत्र 'पिता चाही। पिता देगा पुत्र की गवाही।।
समय शीघ्र ऐसा आयेगा। 'ऊँचा पुत्र मानव चढ जायेगा ।।
कर नहीं जग विश्वास पायेगा। डूब अधर भटक जायेगा।।
कहेगे कहा से था आया। वह था मनी जो बतलाया ।।

दोहा – न्याय–हेतु जग मे आया इन्सानियत की चाह।
निर्धन उत्सर्गी दानी थकित हुआ भार–वाह।।

दिव्य–रूपान्तर (मत्ती 17-18 अध्याय)

पर्वत थबोर दमकता आभा। रब्बी सग शिष्य ज्योति–गाभा।।
देखे शिष्य रब्बी दमक न्यारी। आभ–ज्योत अलौकिक उजियारी।।
जीवत हुए क्षण महिमा भारी। ज्योतित मन दिव्यातर सुखकारी।।
खुला प्रज्ञा द्वार पवित्र जैसे। दुर्गम ज्ञान शिखर चढे ऐसे।।
आत्यतिक अनुभूति जगाते। स्वर्गिक अनुगुजन पढ जाते।।
मन चक्षु खुला आकाश देखे। श्वास–श्वास परम प्रभु अवलेखे।।

दोहा – भूल गया जो स्वय को पाया उसने मूल।।
प्रभु मे आविष्टित मन उलझे न' तट कूल।।

याकूब पड़े अरु द्युतिमानी। जीवन सब का हा गतिमानी॥
देखे योहन विभव उजासी। नीरव निर्जन कैसा प्रकाशी॥
दीप्ति–वान सूर्य क जैस। प्रभु प्रभा दखे पतरस एस॥
प्रमिल दिव्य सौंदर्य सुहान। लघु–लघु महिमा सब पहिचान॥
ज्योर्तिमय मघमाल प्रभु कैस। मधुर गर्जन प्रिय पुत्र सुना एस॥
जीवन अमूल्य कान्ति पाया। जिस रूप तलाशा मिला गाया॥

दाहा — सघन मिलन हुँआ प्रभु स, अनुगुँजन रहे आर।
पतरस याहन याकूब आनदित हुए विभार॥

क्षितिज–क्षितिज ध्वनियाँ गूँजे। प्रभु–पुत्र प्रभु–पुत्र गहन अनुगूज॥
सहस्त्र स्त्रोत उमड सुहान। विशद विस्तृत ज्ञान मुसकान॥
दहधारी रूप बदन कैसा। निर्मल पावन चन्द्रिका जैसा॥
आत्मिक शातल ज्योत जैसा। अग जग प्रकाश भरता कैसा॥
नभ नक्षत्र धरा सब हरषाय। पशु–पक्षी भा महिमा गाय॥
मूसा एलियाह रूप पुनीता। सृष्टि सँवारी अभिनव प्रीता॥

दाहा — कहत धरा प्रभु धराहर विभव पराक्रम प्रताप।
मडप बना कुल तीन जीवन क य माप॥

कान्हल आ आपाधापी। पावन रूप ये है उत्तापी॥
जिस शान्त भाव प्रभु पाया। कितना सकून मिले मन काया॥
सप्र कर दान शान्ति जग। सौम्य भाव सता न माग॥
सब का सुना विश या अज्ञ चाहे। उनके पास कहन की चाह॥
बाना उन स जा रड़ताल। आग्रही दभी ये मुँह–ताल॥
तुलना–तुला पा जा तुल बैठ। कटुता गर्वीली मन म पैठ॥

दाहा — छाट बड़ सब प्रभु मे पात है आशीष।
लक्ष्य निज सफल बनाओ झुक प्रभु सन्मुख शाश॥

कुशाग्र श्रमिक बरते सावधानी। धोखा भरा जग है अभिमानी।।
पर सत्य रहता वरदानी। वही है ज्योति ज्योतित–दानी।।
काम चाह बड़ा या छोटा। करो मन से न हो भाव खोटा।।
पथ काँटे वह नहीं बुहारे। निष्क्रिय जीवन प्रभु बिन गुजारे।।
सहज रहो करो न दिखावा। प्रभु सेवक करे न छलावा।।
नक गलाए वय की पहिचानो। तरूण उद्वेग द्वेष न ठानो।।

दोहा – नित बढाओ आत्म–ज्ञान विपदा बने सहाय।
अनिष्ट कल्पना तन्हाई अध विकार मन मुरझाय।।

पृथ्वी–पुत्र धरा भार उठावे। जग चाहे उस काठ चलावे।।
धरा प्रभु अदन–बाग निराला। सवारे प्रभु पुत्र वही आला।।
वृक्ष नभत्र पशु पक्षी सब जैसे। पृथ्वी–पुत्र बन रहा धरा एस।।
सदा रहे अनुशासन मर्यादा। नम्यता विकसे रहे न बाधा।।
पावन स्पर्श दे प्रभु बोल। रब्बी कह भयभीत क्यो डोल।।
रूपायित जीवन नीति दिखाया। जयी प्रभु–पुत्र सृष्टि सजाया।।

दोहा – ससार अभी है सुन्दर सुखद शान्ति का नीड।
करना नही रक्त –रजित दरक जायगा नीड़।

उत्तम मेषपाल (यूहन्ना 10 1-13)

समय साधना का अब आता। अपार दौलत जग है पाता।।
शिष्य देखत नया उजेरा। भए बुद्धि का मिटा अधेरा।।
टूटे न जीवन लय हितकारी। आशकाए मिटी अब सारी।।
शिष्य सग रब्बी उतर घाटी। लहर बुलाय परदन माटी।।
रब्बी कह बुलाने चरवाही। उत्तम चरवाह निर्भय चरवाही।।
पुग साथे चरवाही जागे। काल–जयी चरवाहा मागे।।

दोहा – भेड़े स्वर पहिचान पुकारता ले नाम।
आत्मसात कर पीड़ा कभी न ले विश्राम।।

पवित्र सगत (मत्ती18 19-30)

निरभ्र यरदन ल्हरक नीली। अगाध आलाड़न उन्मीली॥
चट्टान अनमनी कम्पाय। गह्वर पथ निर्जन विलमाय॥
फैल रहा कदर्थ मदमाया। धवल कॉस शूल घबराया॥
जीवन हरियाली रब्बी लाय। कण कण महक नवल महकाय॥
फूल लहक वादी हरषाय। राशि राशि सत्य महकाय॥
रब्बी कहे रहेंगे प्रभु साथी। जन दो या तीन हो प्रभु भाषी॥

दोहा — एक मन होव विश्वासी प्रभु रहता उन बीच।
स्रोत आनद समागम दाता हाथ उलीच॥

नम्रता और आतिथ्य (लूका14, 1-24)

स्वर स्रोतो का उत्सव ऐसा। प्रीति भोज आमत्रण जैसा॥
विश्व मानक रब्बी समझाते। प्राण प्रवाही स्वर सुनाते॥
ज्योत जले जग उजास पाता। पग पग धीर रहे मुसकाता॥
ऊचा आसन मन न लुभाये। निज क्षमता सीमा दिखलाये॥
जग आतिथ्य ग्रहण करो एसे। स्वामी स्वय मान द जैसे॥
तथ्य समझो एक बुनियादी। विनयी विनीत तू रह मर्यादी॥

दोहा — स्नेह वृष्टि करता जाय प्रभु दगे प्रतिदान।
जो नीचा ऊँचा होगा देता है प्रभु मान॥

भोज का आमत्रण दृष्टात (लूका14 15-24)

अनगधा सी माटी गीली। ढहते कगार नीचे ढीली॥
गध गमक गीत बटोर लाती। कोमल धूप श्रृगार सजाती॥
कहे रब्बी एक भोज सजाया। नगर प्रतिष्ठित जन बुलाया॥
कर बहाने क्षमा सब मॉगे। समझ गया स्वामी कच्चे धागे॥
नगर गॉव गलियो मे जाओ। द्वार राह चौराहे जाओ॥
दृष्टि—हीन कगाल ले आओ। भर जावे पडाल बुलाओ॥

दोहा — जिन्ह बुलाया वे निर्धन पावे क्या प्रभु दान।
निविड़ मुक्त प्रभु अभिज्ञान पाते अज्ञ अनजान॥

निर्धन लाजर दृष्टांत (लुका 16 6-31)

भावित प्रोक्ति रब्बी सुनाते। अर्न्तमन प्रज्ञा रहे जगाते।।
पहिन वस्त्र बैंजनी सुहाने। एक धनी मुदित फिरे मनमाने।।
द्वार पड़ा लाजर भिनसारी। भूख प्यास देह घाव भारी।।
बार बार मार सहे धिककारे। दिवस एक मृत्यु उसे उबारे।।
प्रभु न्याय फिर आया एसा। अजर हुआ न धनी मान कैसा।।
नरक पडा दख अधिराजा। देखा दीन प्रभु–क्रोड़ विराजा।।

दोहा — तड़प रहा ज्वाला प्रभु मैं लाजर स जल आँसे।
कह प्रभु तू सब हारा अब क्या भरे उसाँस।।

विश्वास और बुद्धि (लूका 17 5-6)

रब्बी कह प्रभु विश्वास बढ़ाओ। बढ़ा प्रभु गवाही तुम आओ ।।
हृदय स्वर्ण खदान बनाओ। निपजे सोना कसौटी लाओ।।
बुद्धि है एक ऐसी कसौटी। परख विश्वास कुदाल छोटी।।
विश्वास एक आनद घनेरा। प्रभु पुलकन सद्‌आस बसेरा।।
एक मजिल है विश्वास सुहाना। प्रभु दिव्यता को अपनाना।।
तप रो तप कुन्दन हो काया। प्रभु प्रेम की मिले फिर छाया।।

दोहा — राई सा विश्वास भी दता नवल विहान।
मार्ग समुद्र दे जाये मरू बन जाय उद्यान।।

गवाही (लूका 17 7-10)

विश्वास सदा ही प्राण पाता। उत्तर है। प्रश्न नहीं उठाता।।
जो चाहे निज प्राण बचावे। खावे प्राण बचा न पावे।।
शुद्ध करो मन उदार एसा। दास बन जाये मित्र जैसा।।
फिर न कहना दास तू मेरा । कमर कसी रहे बधक मेरा।।
जग के कोढ़ मिटाते जाओ। शुद्ध भाव सेवा अपनाओ।।
भर भर तूणीर बैठे ज्ञानी। रब्बी बना रहे सेतु कल्याणी।।

दोहा — दस कोढी चगे हुए भेंट चढाता एक।
पूछे रब्बी नौ कहाँ नहीं हुए मन नेक।।

दर्प और अनुताप (18 9-14)

दृष्टि सीमा रखे जो छोटी। नहे कैसे श्रृग शिखर चोटी।।
करे प्रार्थना एक व्यभिचारी। 'धन्य प्रभु मैं न अतिचारी ।।
और न महगूल लेनेवाला। उपवासी, दान अश देनेवाला।।
'एक दीन दीनता से बोले। क्षुद्र मे क्षुद्र , धूल ना कुछ माल।।
'प्रभु दया कर मैं अति पापी । क्षमा कर मन से अनुतापी ।।
अभिमानी वह दर्प जगाता। निज हस्ती दीन रहा मिटाता।।

दोहा — जब तक मन म मैं रहे देख न पाये छोर।
निज छाया राह रोके, हाथ न आये डोर।।

बालको को आर्शीवाद (लूका 18 15-17)

हँसता एक शिशु पास आया। अह्लादित 'रब्बी उसे उठाया।।
कहते शिशु जग की प्रभाती। विस्मित पुलकन मन हरषाती।।
अनुभूति काम्य कैसी। सुवासित करे दिगत जैसी।।
मुसकान निस्पृह निसग कैसी। स्वर्ग—दूता सी उजली ऐसी।।
बालक सा कोमल मन बनाओ। स्वर्ग—राज अधिकार पाओ।।
ऊँचे आकाश के ये तारे । झिलमिल करते जग निहारे।।

दोहा — रोको मत, आने दो इनका सच्चा बोध।
निर्मल अर्न्त दृष्टि प्रभुमय रखे न बैर विरोध।।

जीवन के चार प्रहर (मत्ती 20 1-17)

कह रब्बी एक उद्यान स्वामी। पिता परमेश्वर अर्न्तयामी।।
उत्तम श्रमिक चाहे सेवकारी। अनुग्रह आशीष देवे भारी।।
प्रथम प्रहर चौराहे 'वह आया। दीनार एक तय श्रमिक लाया।।
दूसरे पहर श्रमिक बढ़ाया। तीसरे प्रहर और ले आया।।
अतिम प्रहर श्रमिक फिर आये। अनुग्रह दीनार श्रमिक पाय।।
प्रथम प्रहर के श्रमिक बोले। दीनार अधिक दे कम न तोले।।

दोहा — धन मेरा देता विचार जीवन के प्रहर चार।
जा तेरा है ले जा अनुग्रह की दीनार।।

आह्वान (लूका 19 1-10)

'यरीहो ओर रब्बी थे जाते। दुर्गम पर्वत बीच राह बनाते॥
'जक्कई मन प्रभु महिमा गाता। वृक्ष चढ़ा देखे रब्बी आता॥
हे जक्कई ! तुझे प्रभु बुलाता। शीघ्र उतर पाहुन है आता॥
शक्ति– ज्योत बना मन गाया। दुर्गम पर्वत बीच राह पाया॥
कहे रब्बी अवसर है आते। दस्तक दे द्वार लौट जाते॥
विश्वास पात्र औ बुद्धिज्ञाता। वदन करता प्रभु–जब आता॥

दोहा — हृदय से अनुताप करे, वही पावे उद्धार।
ढूँढता खोये हुओ को सुनता मन पुकार॥

आशीष बाटो (लूका 19 11-27)

कहे रब्बी मन द्वन्द का घेरा। कैसे देखे ज्योत उजेरा॥
एक कुलीन दूर देश जाता। दस दास दस मुद्रा सौंप जाता॥
लौट, लाभ अश कहे सुनाए। प्रथम कहे एक से दस ' बनाए॥
धन्य–धन्य दस नगर तू पाये। कहे दूसरा पाव बढ़ाये॥
नगर पाँच तू भी जा पाये। दास एक डर बोले घबराये॥
छिपा अगोछे, रखी यह मैने। "प्रभु आशीष बॉटी न तैने ॥

दोहा — तेरा ही वचन प्रमाण दुख सहे अतहीन।
दे दो है जिसके पास अकृतज्ञ से लो छीन॥

सत्य कीलित होगा (लूका 9 44-45)

खजाना अनुपम अनूप राशी। हुए कण कण हैं रत्न प्रकाशी॥
वादी सुने शहनाई मीठी। चेतन अनुभूति ज्योत दीठी॥
'आदम' एक ही प्रभु बनाया। दस पॉच से, न सृष्टि सजाया॥
ऊर्जा अदम्य एक ही पाता। कर्म वचन लय दिव्य है लाता॥
जग वैभव बन कर यह आता। उद्बोधक आह्वान दे जाता॥
रब्बी कहे समय अब आयेगा। कीलित सत्य त्रास पावेगा॥

दोहा — मानव– पुत्र पकड़ा जावे प्रतिशोध का ताप।
वेदना रहे दुख पावे एक मानक निर्माप॥

जीवन ज्योत (यूहन्ना 8 12 20)

रब्बी कह प्रकाश नया लाया। जीवन ज्योत बन लौ जगाया।।
ज्योति एक सवदन निराला। कांपे छाया अंधेरा काला।।
मन मदिर की ज्योत नूरानी। उत्सर्गी जीवन की निशानी।।
सहन शक्ति की एक परीक्षा। थिर करे प्रज्ञा देव दीक्षा।।
रोशन प्रेम ऐसा बनाती। मिट असत्य स्नेह बढाती।।
ज्योत है एक विश्वास प्रकाशी। अविश्वास मे भरे उजासी।।

दोहा — जीवन शक्ति एक आलोक जले ज्योत से ज्योत।
लघु ज्योत भी जीवन ज्योत जले प्राण ज्यो ज्योत।।

जीवन जल (यूहन्ना 7 37-57)

जल गुणज्ञता जो मन धारे। पूरित करे गड्डा सिमट उबारे।।
छोड़ ऊंचाई तल पर आवे। पात्र पात्र निजता दिखावे।।
बूंदे स्फटिक ये श्रम—स्वेदी। बहे अश्रु तो मन होवे वेदी।।
शात करे तृषा तृप्ति दिलाये। अवरूद्ध मन प्रवाह बन जाये।।
यहा अनत—जीवन सरिताये। कहे रब्बी जा प्यासा आये।।
वचक कहे यीशु अभिमानी। कहता जीवन—जल मैं ज्ञानी।।

दोहा — जल जीवन का एक मानक आदम की पहिचान।
करे लघन जल सीमा वहा कलुष अभिमान।।

दस कुमारियो का दृष्टात (मत्ती 25 1-3)

कहे रब्बी आशीष वह पाता। सदा रखता प्रभु सग नाता।।
सुनो मशाल ले दस कुमारी। करे वदन दूल्हा सुकुमारी।।
पाँच बुद्धि—मति रश्मि माला। सग मशाल कुप्पी तेल प्याला।।
माँगे तेल कुप्पी है खाली। पाँच नादान तेल न प्याली।।
बुझी मशाल ले हाट जाओ। दूल्हा आया कदम बढाओ ।।
बुद्धिमान करती अगुवानी। अभिनव प्रकाश की महमानी।।

दोहा — सदा रहे जो तैयार मिले नेह निधान।
देर कर रहे सोता पाय न प्रभु दान।।

खोई मुद्रा का दृष्टात (लूका 15 8 -10)

विधवा एक धन पूंजी जोड़ी। यन कन दस मुद्राए जोड़ा।।
मुद्रा एक हजार लाख जैसे। लाखो नहीं एक मुद्रा जैसे।।
रहस्य एक मुद्रा खोई कैसे। दीप जला ढूंढे पाये कैसे।।
मिले जब तक मुद्रा नहीं जाय। रब्बी कहे मन चैन न आय।।
द्वार द्वार समाचार सुनाय। मिल गयी मुद्रा हर्ष मनाय।।
तलाश जिसकी जो मन पाये। दुगनी पूंजी ज्यो हरषाये।।
दोहा — जीवन का सम्मान करो त्रस हो जाव नास।
भटके को खोज लाओ घाव मिटे मन टीस।।

उड़ाऊ — पुत्र दृष्टात (लूका 12 13-21)

कहे रब्बी अमोल एक क्यारी। सवार पुत्र दो फुलवारी।।
समय आया एक दिन ऐसा। चंचल मन उड़ जाये जैसा।।
पुत्र छोटा पिता से चाहे। अंश दे दे मेरा न छाहे।।
दूर देश ले सब कुछ जाता। मात–पिता फिर सुध न लाता।।
भोग–विलास मित्र मडल ऐसा। लुटा सब कुछ कगाल जैसा।।
अनुतापी पिता पास आया। हर्ष मना पिता गोद बिठाया।।
दोहा — प्रात भूला साय लौटा मन मे भर अनुताप।
मर गया था जी उठा नयी किरण दुराप।

अनुताप (लूका 12 13 21)

प्रभु जिस काम को नहीं चाहे। और मन उस मे ही उलझाय।।
नित नित नई उलझन आय। विश्वास शक्ति साथ छोड़ जाय।।
उपाय कोई सुझ न पाये। आलोकित मन प्रभु निकट आये।।
दोष स्वीकृति प्रथम बनाय। विजय–दिवस आत्मा मनाये।।
नूतन बल आत्मा फिर पाये। आनद अनुग्रह प्रभु बरसाये।।
अनुतापी मन मधुमय होवे। भटका मन फिर ज्योतित होवे।।
दोहा — जले भट्टी दुरभाव एस जैसे जल कॉस।
पग पग अनुतापी मन पाता प्रभु विश्वास।।

लोभ (लूका 12 13 21)

गगन घोसला क्या टिक पाता। बिना आधार गिर गिर जाता।।
धनी एक उड़े पछी जैसे। धन–धान्य देख झूमे ऐसे।।
रखूँ कहाँ, भडार बनाऊँ। नया भवन, कोठार सजाऊँ।।
प्रचुर धन जीवन प्राण मेरे। चैन आनद बहुतेरा तेरे।।
हे निर्बुद्धि ! प्राण नहीं तेरे। काल रात्रि ! अब करे क्या डेरे।।
रब्बी कहे धन रह गया सारा। छोड़ गये प्राण, तन आधारा।।

दोहा – सचय कर धन एसा, हर्षित करे, मन प्राण।
नित नित बढता जाये, पाये जीवन उत्थान।।

षडयत्र का आरभ (यूहन्ना 11 47-57)

यहूदा जाति विनाश आया। महा– पुरोहित भविष्य सुनाया।
सनसनी अद्भुत राज छायी। परिषद एक बुला बैठायी।।
मृतक लाजर वह उठ आया। शाश्वत जीवन उसने पाया।।
'ईश –राज्य है 'आदम जगाता। धधकी लपट ज्यो बढ़ता आता।।
राज 'रोम भी धुन सुनाता। अवसर पा नित राज बढाता।।
यही समय करे हम तैयारी। मृत्यु–दड सुनाये उद्धारी।।

दोहा – धूल परत मन पर पढ़ी षडयत्र का विचार।
द्विभापक बन छाया, क्रोध द्रोह का भार।।

यरूशलेम प्रवेश (यूहन्ना 12-12 16)

दाऊद नशी स्तुति अब गाये। राज अधिकारी पुत्र कहलाये।।
बधक दास मान दिलाने। कोट–कगूरे तोड़ गिराने।।
यरूशलेम बुलाता प्रभु सुनाया। शुभ उत्कर्ष दिवस अब आया।।
दिव्य प्रभु कल्याण दिखलाया। गर्दभ शावक, एक मगवाया।।
'काठ न काठी 'वस्त्र बिछाया'। नव–उमग जन–जन सरसाया।।
पुलकित मन राह वस्त्र बिछाते। खजूर शाख ज्यो भाव लहराते।।

दोहा – सुन हे पुत्री सिय्योन, होशन्ना जयकार।
राजा आता है तरा, महिमा उसकी अपार।।

जन मन आनदित ऐसा। महिमा गान सुनाता कैसा।।
हे हमारे रहबर दानी। सिजदा करते हे नूरानी।।
कैसा शिरीन नाम तेरा। जन जन कहता 'मसीह मेरा।।
प्यार दिया 'पिता के जैसा। किरदिगार सा आलम ऐसा।।
आसमाँ बयाँ करे जलाली। फिर्जा पर छिटक रही लाली।।
सूरज चाँद सितारे सारे। आलोक दिव्य उल्लास पसारे।।

दोहा — पहाड समुन्दर दरिया, औ' मैदान तमाम।।
सुबह शाम दिन औ' रात गाते स्तुति 'कलाम ।।

जैसा कादिर हलीम वैसा। जलवा जैसा रहीम वैसा।।
निहायत अजीम खूबी तेरी। तारीफ करे तकरीम तेरा।।
सुना तूने सादिक फरियादे। बरलायी उसकी मुरादे।।
तेरी रहमत पुर जलाली। पनाह निगाहे बेमिसाली।।
खुशनुमा सरफराज हमारा। रहनुमा शाहशाह हमारा।।
तेरा नूँर है गैरफानी। हे इम्मानुएल तू रहमानी।।

दोहा — इन्सानो म तू इन्सान सलामती का शाह।
चरनी का नूर वजूद हमारी उम्मेदगाह।।

बेशकीमती प्यार है कैसा। हक्क औ अबदी हयात जैसा।।
वचन है पाक कलाम ऐसे। नजात भरी जिन्दगी जैसे।।
रात की तारीकी मिटावे। रूहा की बेदारी हटावे।।
वचन तेरे 'शाफी जैसे। खुश–इल्हामी सिताइश एसे।।
तरी उल्फत है लासानी। दिल है गालिब हे रब्बानी।।
आवे आजमाइश तूफानी। बनते ढाल वचन नूरानी।।

दोहा — शहद से ज्यादा शिरीन, वचन है दिल निशान।
तसल्ली–दीह ज्यो हादी रहे न दिल गमगीन।।

कादिर निगहबान चरवाहा। प्यार किया जहाँ अनथाहा।।
प्यासा तेरे पास जो आया। आब–हयात चश्मा तुझ पाया।।
तू ही मुनव्वर है सहारा। हर दिल अजीज ईमान प्यारा।।
तुझ से मिली ताकत रूहानी। दौलत अपार और ईमानी।।
तरा आफताब बे–बयानी। शिकस्ता दिल की शादमानी।।
बेदाग बे–ऐब बादशाही। दाखिल हुए सब बारगाही।।

दोहा – हे यरूशलम जरीना हे शहर आलीशान।
तू मुकदसों मे मुकदस नूर का मिला दान।।

जीवन के सवेदन गूँजे। सृजन धर्मी विश्वासी झूमे।।
सब रग छिटके जग फुलवारी। प्रतिध्वनि मानव–पुत्र उपकारी।।
मुक्त कठ सब मिल कर गाते। जीवन प्रवाह नव रूप दिखाते।।
कहत धन्य हे मुक्तिदाता। जग अधिपति हे जीवनदाता।।
कृपा सागर तू अन्तर्यामी। महापवित्र हे प्रेमिल स्वामी।।
हे उज्जवल निर्मल मनहारी। तू सच्चा पारखी जग उद्धारी।।

दोहा – सत्य मार्ग जीवन तुझ म तू प्रकाश का स्रोत।
आत्मिक दृष्टि जग पाय अवनि पर नवज्योत।

प्रीति मर्म तूने समझाया। तुझ मे जीवन शोभा पाया।।
हम बुझे दीपक अलसाये। बाधाओ से थे घबराये।।
वाणी दी जीवन को ऐसी। पावक कण स्वर्णिम बने जैसी।
अवनि पर मानवता छाये। स्वर्गिक शिखर का विभव लाये।
'अनत जीवन' गान सुनाया। तारा पथ सा मन सजाया।।
पथिक प्रेम का प्रेम बढाया। चतुर वैद्य ज्यों रोग अपनाया।।

दोहा – आत्मिक बल सब पाय दूर किया अधकार।।
दुख भरी थी नाव हमारी बोझ लिया उतार।।

तून करूणा–किरण बरसायी। प्यासा की हा–प्यास बुझायी।।
दुख सुख सहार बन कर आया। क्रोध को प्यार से दुलराया।।
थकित भारिल हृदय मुसकाया। दीन का अधिकार दिलाया।।
दो प्रेम पड़ौसी वचन पाया। सेवा–सेवक मान बढ़ाया।।
दान की महिमा दृष्टि सुनाया। भाव देने का उत्र बताया।।
मात–पिता बहिन भाई नाता। मान करे वही प्रभु भ्राता।।

दोहा – गुण दोष समझाय भावन सुना दृष्टांत।
रहे वचन–लय कर्म बद मन रहे पावन शांत।।

दस्तक दिल पर दे जगाया। अधकार से हम उठाया।।
पाप नहीं–पापी का जाना। मृत्यु नहीं जीवन पहिचाना।।
महा–धनी–धन हीन बताया। दीन मन महा–धनी सुनाया।।
वीर नम्रता क्षमा समझायी। द्वेष दभ दुरित कटुलायी।।
ऐसा दिया अनमोल खजाना। विलक्षण ज्ञानभरा सुहाना।।
झुक जाती जग की गवाही। आता जब मानवता राही।।

दोहा – धन्य धन्य हे अधिराजा तेरा माप अमाप।।
नबी कहे शान्तिकुमार मानव पुत्र अपाप।।

जयवत-प्रवेश लूका (19 40)

हे जयवत चेतना राही। विश्व–सुचेतक भाव सराही।।
गूंज शिखर क्रान्ति पथ वाणी। पर्वत ढाल उतर रह ज्ञानी।।
रहु विध विपर्यय हठी अभिमानी। चाहे रोकना न्याय वाणी।।
स्पदन कब जीवन रूक पाया। शीत ताप स्वर हर्ष उमडाया।।
सुगम मार्ग पर हमे चलाया। नह समन्दर लहर लहराया।।
नगर प्रवेश किया ज्यो विभाती। ज्योति–चरण जयवत प्रभाती।।

दोहा – जन जन करता अभिषेक सागर बनी एक बूद।
धरा कुटुब बन जाये सजो एक एक बूद।।

मदिर ओर (मती 24 1 31)

परम मुदित शिष्य — वृद हरषाते। रब्बी सग प्रभु—भवन जाते।।
'अल्फा, औ ओमेगा यहोवा। ढ़ाल, झिलम चट्टान यहोवा।।
शीतल प्रभु—प्रेम निर्झर जैसा। शीतल बयार दुलार ऐसा।।
अग्र—दीप धूप सुगध—फुहारे। झिल—मिल झालर पर्दे सितारे।।
स्वर्ण—जड़ित छत स्वर्ण डाटे। वेदी मणि माणिक्य बेल बाटे।।
श्वास—श्वास अनुभूति पावे। वाचा—मिठास हर पल जगावे।।

दोहा — 'खींच लाया प्रेम तेरा हृदय उठी हिलोर।
मेरे प्रभु मुझे सभाल पुत्र पाये कहा ठौर।।

युगात प्रकाशन (मती 3-31,21-43-46)

हे रब्बी भवन दमक कैसी। मन हरपावे विमुक्ति ऐसी।।
अनूप साधना पूर्वज आशा। शिष्य विभोर महक सद् आशा।।
व्यथित मन रब्बी अकुलाया। अभिचार—दिवस अब है आया।।
धर्म — अर्थ 'बनेगा महाभारी। उलझेगी बुद्धि मनुज लाचारी।।
'पत्थर पर पत्थर न बचगा। ऐसा' विनाश कहर ढायेगा।।
स्वाग रचेगे भवन कगूरे। ज्ञान—दभी मानी अधूरे।।

दोहा — जग जिसे समझे निकृष्ट 'वह केन्द्र मेहराब।
गिरे जिस पर चूर करे अद्भुत 'वह ठहराव।।

रूप रूपायित रूपायमानी। ठाकर देगा हठी अभिमानी।
युद्ध और युद्ध भड़केगे। जाति जाति , राज—राज लड़ेग।।
ज्वाला—मुखी अगन बरसायेंगे। अकाल औ भूकप आयेंगे।।
रक्त—नदियॉ बहे निशानी। डर अथाह दर्दीली कहानी।।
देख युगात धैर्य न खोना। सावधान! पथ—भ्रष्ट न होना।।
धर्म अर्थ बनेगा महाभारी। उलझगी बुद्धि मनुज कुविचारी।।

दोहा — उडेगी राख परते मुरझायेगी घास।
ठिठुरन मनहूस बारिश खेत खलिहान नास।।

मत्ती (23 7-12)

शिष्य सुन– कहे रब्बी प्रकाशी। ज्ञान भटकेगा गुरू उदासा।।
एक ही गुरू अपर्ण हो जाओ। निज विश्वास प्रभु मे बढाओ।।
सब भाई–भाई मृदु स्वर बोले। एक ही देह एक ही चोले।।
बडा बने जो मन को ताले। रखे विनीत भाव रब्बी बोले।।
जगत पिता ही पिता हमारा। पिता से बडा कौन हमारा।।
राह दिखाये प्रभु–पिता स्वामी। विवेक संग बढे अनुगामी।।

दोहा– गुरू–दंड हाथ न लेना बन कर प्रभु साकार।
मंडल–राज्य बन जाता स्पृहा गुरू महाभार।।

मत्ती (23 1-7)

ये जो कहते ज्ञान–शास्त्री। गुना और गुना तुम आस्त्री।।
छिन्न न हो पुरा–श्रृंखलाए। गढे उपरवार कृतज्ञताए।।
नीति अनीति और उपधाना। कथनी और करनी पहिचानो।।
डार रेशमी बोझ अतिभारी। उलझाते ये कोमल प्रहारी।।
बाँध बोझ कँधे धर देते। डग–मग नाव उसे भी रते।।
अंगुली का भी दे न सहारा। निठुराई ऐसी समय हारा।।

दोहा – प्रथम आसन स्थान चाह करें उन्मुक्त विहार।
प्रणाम औ जय जयकार थर्रा जाय संसार।।

अन्ध नेतृत्व को धिक्कारे (मत्ती 23 13-14)

रब्बी हुए अति गंभीर ऐसे। निर्घोष घनाघन मेघ जैसे।।
समय उठा अनुपम मनभाये। धर्मी अघाते मोद मनाते।।
दुर्वृत्त–हठी–शठ आँख चुराये। उद्वलित दहकन धुँध–आये।।
रब्बी वचन हुए तेज निधाना। चेतन युग का वितान ताना।।
शोक तुम पर हे युग संहारी। राह रोकते तुम अतिचारी।।
घर के घर निगल हरषाते। कुचल दरिद्र दीन विधवा जाते।।

दोहा – हे स्वर्ग द्वार टकसाली क्षुद्रताओ की छाप।
प्रवेश दिशा न बताते प्रवेश कर न आप।।

(मत्ती 23 16 22)

शाक तुम पर अध नताआ। कपटी कुटिल मूढ ञाताआ।।
कुछ दोष नहीं कहते माहे। मदिर शपथ उठाआ नाहे ।।
वदी रख दान शपथ खाओ। दान नता कह मुक्ति पाआ।।
मदिर स्वर्ण की शपथ उठाओ। शपथ–बध नलाव ढाआ।।
कौन बडा। मदिर या साना। पवित्र हुआ मन्दिर स साना।।
रे मूर्खो तनिक बुद्धि विचारा। अध–साधका दुनियादारो।।

दाहा – स्वर्ग–प्रभु का सिहासन मदिर प्रभु निवास।
शपथ प्रभु की क्यो लेता करता प्रभु उपहास।।

(मत्ती 23 15)

शोक तुम पर ह क्रताआ। ताक रहे किस विक्रेताआ।।
रचत व्यूह विकट विकराला। विमोहित करते ज्यो ज्वाला।।
झूठा प्यार कपट छिपात। वचन मधुर मीठा सुनाते।।
नित नई दृष्टि प्रम नरसात। सौ सौ नार उलझा मुसकाते।।
जल थल पाट एक कर दिखाते। भक्ति–विह्वल जन समझ न पाते।।
कहत भाग हम पर तुम्हारा। डुबात उस धार मझधारा।।

दाहा -- घात लगा बैठ रहत जीर्ण कगार आट।
फदा फक लटकात अधर–झूल की चोट।।

(मत्ती 23 23 24)

शोक तुम पर मृताशन जैसे। भीतर डर छिपा प्रचड एसे।।
सत्य शील बन दान ठहरात। अतुलित धन चढाव पाते।।
मच्छर छान छाड़ क्या दत। और उट निगल निगल लत ।।
सौंफ पादान अश दिलाते। अगुली धाते दान महकात।।
न्याय दया विश्वास क्या छाड़। प्रभु स रहत हा मुख माड़।।
ह क्षिप्रहस्त ह दुष्ट ह शापी। युग प्राण जग हा परितापा।।

दाहा – महा–पाप युद्ध भड़का बुझाया मदिर दीप।
रक्त सना कीच फैला कौन जलाव दाप।।

(मत्ती 23 25 26)

शाक तुम पर कैसे कु–राही। उलट दत प्रभु की गवाही।।
आह। कैसी दुरमति दिखाया। द्वाय महल औ दूह उठाया।।
निर्मल पावन सम्पदा गवायी। पवित्री–करण , शान्ति बिसरायी।।
प्रभु–भवन हाट–घाट लगाया। दृढ विश्वास न स्वच्छ बनाया।।
उजले माजे कटोरे थाली। भीतर भरी मद मतवाली।।
हरष हरष पीते मद प्याली। कूट–फॉट स्वछद निराली।।

दाहा – हे आत्मस्वर सत्ताए– समय कुचलेगा शीश।
लालुप कपट सधिया सुने न कराह टीस।।

(मती 23 27)

शोक तुम पर हे कूट साक्षी। दिखत धर्म–निष्ठ प्रभु भाषी।।
चून पुती दीवार जैसे। गध–रूध अधियार जैसे।।
हे तिमिर राशि हे कठमाटी। धिक्कारे लिखता युग–पाटी।।
जीर्ण जरा अस्थियाँ सोने। पाखड भरे बिखरे ढाँचे।।
कहते महिपाल हम तुम्हारे। हमीं याजक अनुष्ठान हमारे।।
हाशियारा स बहकाया। जाल फूट का खूब फैलाया।।

दाहा – ताड मरोड सुनाते कर्तव्य धर्म आदश।
जग के बन प्रभु दवश द रह स्वर्ग–प्रवश।।

(मत्ती 23 29-35)

शाक तुम पर हे निराकारी। नबी सहारक तमाचारी।।
हे सर्पो ह करैत सताना। हे खल–मडल चतुर सयाना।।
जीवन को मृत्यु दड सुनाते। काठ धर्मी चढा हरषाते।।
मानवता का हाय मिटात। मकबरा बना उस सजात।।
कहत जो हम उस युग होते। नबियो को यूँ न खोते।।
अपनी गवाही खुद ही देते। जीवन नहीं मृत्यु–वर लेते।।

दाहा – अन्तर्मन परिधि बढा चक्र–मडलाय दाह।
वलय महासागरीय बन मिल प्रभु अनत छाह।।

(मत्ती 24 10-14)

य घटनाए जग पीड़ाए। समझा आरभ की यातनाए।।
यत्रणा काल एसा आयगा। धर्मी पकडा धर्म हतु जायगा।।
सत्य सत्य–हानि हा जायगा। समय की त्रास अटक जायगा।।
धूप नैवध अध अनुकारी। ऐश्वर्य भक्ति अभिचारी।।
काम नगन न्यार न्यारे। खुल झराख बढ अधियार।।
शाक! शोक! हा! शोक बढेगा। बाझ सन्नाटा गहरायगा।।

दोहा – मारग लम्बे यात्रा लम्बी मिले न ज्योत प्रकाश।
अभीह उत्पीडन –स्फाट घात–प्रति–घात नास।।

(मत्ती 24 15 28)

जहा शव गिद्द भी आयेग। उत्तापक जुगुप्सा पतन लायेग।।
विताड घिनौना मलिन नासी। हा! शोक विनाश कालग्रासी।।
करेग राज्य अत्याचारी। प्रमादी कामी अधिकारी।।
कहे रब्बी महा अन्यायी। सहार रक्त क्लेश दुखदायी।।
पीडित मात नार हतभागी। अपहृत दुर्गति नास अभागी।।
और गर्भिणी हाय द्विनाशी। सहगी घोर पीड़ा नाशी।।

दोहा – दखो प्रमाद न सोना ठिठक जाये न आस।
न्याय दिवस प्रभु लाय रख प्रार्थना विश्वास।।

(मत्ती 25 40-46 मरकुस 12 38-40)

ह नगर सुन विलाप मरा। होगा निर्लज्ज ज्ञान डरा।।
नृत्य उन्मत्त कॉपे निशाय। ज्ञान शास्त्री उत्सव मनाए।।
विराट एक दरबार लगाया। अनगिन कृपण लाल मगाया।।
कारीगरा से जाल बनाया। धागा कपट आशा पिराया।।
प्रभु भवन जाले नही समात। हवा के झाके उन्हे गिरात।।
मन जलाया जग भी जलाया। गिर अगन अगन दहकाया।।

दोहा – जरा जीर्ण वस्त्र पहिने युत्थपति बैठ अधार।
महा–नबियो के बैरी ज्योति को रहे चीर।।

(मत्ती 25 31-46)

साझ हुई तो भोर भी होगा। दोपहर तेज कम भी होगा।।
मुक्ति न्याय का दिन वह होगा। जीवन–संहिता पठन होगा।।
नन मेषपालक प्रभु आयेगा। निज भेडे छाँट ले जायेगा।।
प्रभु न्याय–विनम्र जग देखेगा। जग चरागाह नन जायेगा।।
विकृत परिजशी अज विवादी। छाँट दूर करेगा बकवादी।।
प्राण इच्छा दैहिक बकराना। लगाव नहीं बिलगाव जाना।।

दोहा – दुर्गति दुर्जीव पातकी हे पाप की दुर्गंध।
ध्वसा के विस्तारक अज कूप गिरे मति अंध।।

पुनरागमन (मत्ती 24 21-31)

न्याय दिन जब प्रगट आवेगा। विलाप हाहाकार लावेगा।।
शक्ति अतरिक्ष हिल जायेगी। चन्द्र ज्योत्सना फिर न रहेगी।।
टूट टूट तारागण गिरेंगे। धरा पर ताप उद्वेग बढेंगे।।
सूर्य अधकार – मय होगा। मन धरा शून्य निर्जन होगा।।
कौंध विद्युत पूर्व–पश्चिम जाती। ऐसे आये न्याय विभाती।।
तुमुल ध्वनि तुरही की जैसे। मेघ पर न्याय सामर्थ ऐसे।

दोहा – सीमात से सीमात तक जीवन का वरदान।
संसृति नयी बनायेगा फिर एक नया विहान।।

(यूहन्ना 12 20-46)

शान्त मेघ अनुरणन सुनाया। घनन घनन मृदग बजाया।।
तेजस्वी पुत्र प्राण प्रिय मेरा। लाया जग मे नया सवेरा।।
हृदय का सत्य तत्व दर्शाता। ज्ञान बुद्धि विवेक हर्षाता।।
रब्बी की ज्योति प्रभु ज्योत सुहानी। परखा जाये मनुज निशानी।
व्यक्ति मे समुदाय मापे। समुदाय मे व्यक्ति नापे।।
प्रभु दास–प्रभु प्रेम पियासा। है विश्वास प्रकाश जग आशा।।

दोहा – ज्योति सग चल चला ज्योति तुम्हारे साथ।
अर्थ समझे विवेकी समय अभी है हाथ।।

प्रभु पुत्र कौन! (मत्ती 25 34-40)

'परम पिता के बोल सुनाता। 'मानव पुत्र 'पुत्र महिमा गाता।।
जीवन दाता का कौन परोसे। 'प्रभु जीवन यह तेरे भरोसे।।
धन्य है तू उत्तराधिकारी। हे स्वर्ग–राज्य अधिकारी।।
भूखा और मैं था पियासा। गावा भरा और झुलसाया।।
परदशी था अक लगाया। वद 'बदी का भी अपनाया।।
पुत्र कहे 'क्या आप! सुनाते। खुद को दीन बता रूलाते।।

दोहा – पिता कह 'हे भडारी मानवता धन अपार।
सवा हर रूप करता जा सब को द दुलार।।

विलापी उदगार (लूका 19 41-44)

अपलक रब्बी मौन निहारे। लिपट भवन, भर उसाँस पुकारे।।
नगर पतन ऐसा आयेगा। नींव हिलेगी, भवन गिरेगा।।
तडक टूक टूक छिटकेगा। दुर्जय काल कराल आयेगा।।
धरा यह स्वर्गिक धुआयेगी। नरक ज्वाल झुलस जायेगी।।
क्षमा दया करूणा मिटेगी। दुख दर्द निर्धनता सहेगी।।
कष्ट भरा जीवन यह जियेगी। उत्थान-पतन राह 'पर चलेगी।।

दोहा - आज है यह मदमायी सुने न प्रभु आहान।
घूम रही बद्ध - परिधि शान्ति से अनजान।।

(मरकुस 11 11-18)

बेतनिय्याह जा विश्राम पाये। प्रात यरूशलेम फिर आये।।
हरित वृक्ष अजीर, राह देखा। फल हेतु निकट जा अवलेखा।।
कुसुम हीन फल वृक्ष पाया। 'छिन्न हो मूल वृक्ष कुम्हलाया।।
हीन व्यक्ति नियति यह पाता। धरा कर्जदार हो मर जाता।।
आशा का एक दीप जलाने। अक्षय वैभव अन्तर जलाने।।
मदिर ओर बढे अविरामी। शान्ति-ध्वज वाहक अभिरामी।।

दोहा - रस रूप गध सरसाये, नया मन नया सुबोध।
झाड-झखाड उखाडे दिशा-हीन को बोध।।

समुदाय अस्मिता (लूका 20 20-26)

जल कण पात कौन तैराव। कौन जल राशि शीश उठाव।।
कण एक विलग सा दिखलाया। प्रश्न उठा वादी वह आया।।
भेद अभेद रब्बी समझाय। कर देना उचित अनुचित बताये।।
रब्बी कह दीनार दिखलाय। राजा को राज–कर जाय।।
औ प्रभु का प्रभु भेट चढाये। कण–कण– जल राशि बन जाय।।
तर मन म तरल छाया। दुरित वाणी कलुषित काया।।

दोहा – प्रजा राज औ राज प्रजा भाव दानो प्रधान।
प्रमुदित कर मानस विभव यही है समाधान।।

प्रभु अश (लूका 20 19 17)

अति मनहर एक दाखबारी। प्रण-सहित देते स्वामी बारी।।
आवे ऋतु अश भिजवाना। सेवा - अश, सेवक सम पाना।।
स्वामी गये विदेश व्यापारी। सेवक जग रीति मन विचारी।।
छल लेता छल का सहारा। छल का फल लगे अति प्यारा।।
जो आया अश लेने निकाला। पुत्र को मारा मन था काला।।
स्वर्ण फेक लेवे जो कॉसा। डूबे विभ्रमी पाप निराशा।।

दोहा - निकाले स्वामी घर से, हि पामर उद्दड।
सत्य सधर्म रखा नहीं स्वामी हुए प्रचड।।

विधवा का दान (लूका 21 1-4)

अथ व्यवहार जीवन प्रमाणी। रब्बी सुनाते अमूल्य वाणी।।
प्रभ भवन रब्बी खड प्रकाशा। माप रहे दान–दानी आशा।।
गडा धूम से बजी बधायी। दानी–सुयश दास–मिल गायी।।
विगलित विधवा एक पदमरागी। सजल नयन मन कृतज्ञ परागी।
अर्पण कर दो मुद्राए जाय। दरिद्रता अपनी छिपा न पाय।।
रब्बी कहे दान यही प्रमाणी। छलकता निर्झर सा कल्याणी।।

दाहा – सुयश सुकीर्ति भेट दान रखे दृष्टि लाक–लाभ।
कृतज्ञ–मन दान सुपावन दानी मन की आभ।।

(यूहन्ना 12 44-50)

पावन न्यार किरण नूरानी। उठ कर नल यीशु महि–वाणी।।
उग्र पिशाच हुए गति मानी। कुटिल कठार शास्त्रा हिमानी।।
धना रक हुए त्रुटि मैली। दीन धनी हुए भरभर थैली।।
शांति का राजा अर जगता। दुख का भार उठा ल जाता।।
नया प्रकाश जग म आय। जन–गण–मन म ज्यात समाय।।
ताप महता धर्म–धीर–धारी। तिरस्कृत कर चाहे ससारी।।

दाहा — धन्य भारित पर पारदर्शी वाणी म उद्घाष।
रत्न हान का जाता। दखा मम्मा निर्दोष।।

आस्था म आस्था तत्त्व नारा। प्रभु पुत्र प्रभु अरा कैसा धारा।।
मानम की आस बूंद झीनी। नवी वाणियाँ महक गई भीनी।।
प्राण म सागर सा लहराया। गमक माटी की मन सरसाया।।
कठिन प्रम का वचन निभान। सवक कर्म को मधुर बनान।।
हर आँगन म दीप जलान। प्रभु भवन एक नया बनाने।।
अस्त प्रजा का सूर्य न होवे। शिखर शोभित अरूणिम होवे।।

दाहा — मारग एक नया बनेगा कब्र अन्धकार चीर।
सर्वकाल प्रभुता करेगा एक प्रोह एक पीर।।

"क्रूसीकरण" तीसरा खड

यीशु हत्या का षडयत्र (मती 26 1-5)

विकट व्यूह धर्मवृद्ध बनाते। काइफा आगन सभा जुटाते।।
मुख उगलते त्वेष अभिमानी। घोर वाद उलझे नादानी।।
छिन्न–भिन्न मति सब कुचाली। प्रबल प्रभजन उखड़े व्याली।।
कपित मन भीत कातर कामी। निर्जीव कदुक से सग्रामी।।
कहते वित्त–लोभ अपनाये। अल्प–बुद्ध कह वे मुसकाये।।
घात करे विधर्मी नीड बनाता। क्रूस चढ़ावे स्वर्ग रचाता।।

दोहा — काइफा महापुरोहित बाला वित्त नित्त जाल।
पर्व दिन है अभी नहीं उपद्रव व्याल कराल।।

प्रमुख आज्ञा (मती 22 34-40)

सिला बीन हे प्राण मेरे। प्रभु खेत चौड़े लम्बे घनेरे॥
धर्म तत्व धर्म–ध्येय सुनाया। जीवन रस भर भर पिलाया॥
जीवन–पथ विभुता की गवाही। गतिशील चैतन्य प्रभु राही॥
फलित करे उत्सर्ग एक दाना। देखो अकेला गेहूँ दाना॥
भाज वस्त्र पहिन जा मन जागे। जग की चक्र–वर्तिता त्यागे॥
आँधिया काल चक्र की आती। जीवन श्रोत बुझा न पाती॥

दोहा – कहे रब्बी अपने प्रभु से तन मन से कर प्रेम।
और पड़ोसी से भी निबाहे नेह नेम॥

प्रभु पुत्र (यूहन्ना 12 37-50 मती 24 45 51)

जीवत तृप्ति उद्‌दार है आया। जीवन पुनरूत्थान है गाया॥
कहे वादी बहरे सुन न पाते। मति अंधी भी देख न पाते॥
महिमा से बैर दिखलाते। चाप उठा वे बाण चलाते॥
प्रभु लाया मिरास सुखदायी। प्रभु दास करता सेवकायी॥
ज्योति–स्वरूप जग में आया। अंधकार उसे न देख पाया॥
अपराधी वह है गिना जाता। संग्रही अन्यायी कहलाता॥

दोहा – प्रभु पुत्र धीर धैर्यवान दर्पण सिद्ध पुनीत।
सिद्धताओ मे सिद्धता जन मन प्रीत गीत॥

सच्ची दाखलता (यूहन्ना 15 1-15)

सच्ची दाखलता मुझे जानो। पिता मेरा कृषक पहिचानो॥
संग लता जो रहती शाखा। छँटनी कर कि फले शाखा॥
मुझ में रहो मैं तुम में जैसे। फलवान बन वचन प्रभु ऐसे॥
जैसे मानता मैं प्रभु आज्ञा। अनुकरण कर नहीं अनाज्ञा॥
दास नहीं मित्र हुए तुम मेरे। जग कहे नेह प्रीत के डेरे॥
करना प्रेम परस्पर ऐसा। दिखलाया मैंने तुमसे जैसा॥

दोहा – जाओ औ फलवत हो ज्योतित रह विवेक।
स्थाई रहे फल तुम्हारा दीपित रह प्रभु टेक॥

(यूहन्ना 12 44-50)

पावन स्नर किरण नूरानी। उठ कर नर यीशु महि–वाणी।।
उग्र पिशाच हुए गति माना। कुटिल कठोर शास्त्री हिमाना।।
धना रक हुए तुटि मैली। दीन धनी हुए भरभर थैली।।
शांति का राजा अब जाता। दुख का भार उठा ले जाता।।
नया प्रकाश जग म आय। जन–गण–मन म ज्योत समाय।।
ताप सहता धर्म–धीर–धारा। तिरस्कृत करे चाहे ससारी।।

दाहा – क्षण भारित पर पारदर्शी, वादी म उद्घोष।
नर हान को जाता। दखा भम्ना निर्दोष।।

आस्था म आस्था तत्त्व नीरा। प्रभु पुत्र प्रभु अश कैसा धारा।।
मानस की आस बूँद झीनी। नवी वाणियाँ महक गई भीनी।।
प्राण मे सागर सा लहराया। गमक माटी की मन सरसाया।।
कठिन प्रम का वचन निभान। सेवक कर्म को मधुर बनान।।
हर आँगन म दीप जलान। प्रभु भवन एक नया बनाने।।
अस्त प्रजा का सूर्य न होव। शिखर शाभित अरूणिम होवे।।

दाहा – मारग एक नया बनेगा, कब्र अन्धकार चीर।
सर्वकाल प्रभुता करेगा एक प्राह एक पीर।।

"क्रूसीकरण" तीसरा खड

यीशु हत्या का षडयत्र (मती 26 1-5)

विकट व्यूह धर्मवृद्ध बनाते। काइफा आगन सभा जुगते।।
मुख उगलत द्वेष अभिमानी। घोर वाद उलझे नादानी।।
छिन्न–भिन्न मति सब कुचाली। प्रबल प्रभजन उखड़ व्याली।।
कपित मन भीत कातर कामी। निर्जीव कटुक स सग्रामी।।
कहते वित्त–लाभ अपनाय। अल्प–युग कह वे मुसकाये।।
घात कर विधर्मी नीड़ बनाता। क्रूस नगावे स्वर्ग रचाता।।

दोहा – काइफा महापुरोहित, बोला वित्त नित्त जाल।
पर्व दिन है अभी नहीं उपद्रव व्याल कराल।।

शिमौन कोढी का आतिथ्य (मरकुस 14 3 9)

दिगत सुवासित सुमन सजाए। सुमधुर गीत पवन सुनाए।
उपकृत हुआ शिमौन कोढ़ी। प्रभु अतिथि 'यीशु खड़े ड्योढ़ी।।
रोम रोम उमगित हरषाया। कैसा विहँसता प्रात आया।।
प्रभामय प्रभ चहुँ ओर फैली। प्रभु की अगुवानी अल्बेली।।
अधकार पर सत्य द्युति न्यारी। पग पग बिखरा छव एक न्यारी।।
जागे लोग जड़ता दूर भागे। कर्म ज्याति नह प्रम जाग।।

दाहा — ठुकरायी पीडा का प्रम पूण आह्वान
वेदना को अपनाया प्रबाधन दे महान।।

अभ्यजन (मत्ती 26 6-13)

अन्तस सुगध कौन ल आया। मिटा निजत्व कौन मुसकाया।।
'कृतार्थ कर प्रभु मैं चेरी । क्षुद्र अति क्षुद्र दासी तेरी ।।
सगेमर पात्र तोड़ आसी। शीश उड़ेला जटा मासी।।
चरणा प्रभु 'यीशु के चढ़ाया। निज कश अश्रु चरण धुलाया।।
क्षण बिखराव मिलन ल आया। गहन पीडा समानुभूति लाया।।
मरियम तू निर्मल प्रभ—धारा। जग को याद रहे विश्व—हारा।।

दाहा — *कहे रब्बी यह अभिषक कैसी पावन प्रीत।*
अधीर हिसक हुए दरिद्र बन न सके जग मीत।।

यूहन्ना (12 1 11)

जग का मर्म मधुर भाव—भीना। आदान—प्रदान सुख झीना।।
पथ प्रदर्शक सा उपदानी। भाव बधुत्व कर्म वाणी।।
मरियम आनद हर्ष बढाया। लाजर रब्बी सग सुख पाया।।
निकट शिखर मजिल जब आती। तब कठिन गह होती जाती।।
हवा की आधी उठती आती। शक्ति—परिवश कसती जाती।।
कहे यहूदा शिष्य निपाती। 'दीन अभिषक यह प्रतिघाती।।

दोहा — घड़ी विदाई रब्बी कहे फैली नेह सुगध।
बधु सम प्रीत निभाया क्या समझे मति—अध।।

यहूदा का विश्वासघात (मती 26 16)

क्षाभित यहूदा व्याल जैसा। नाट खा उथला कराल एसा।।
नक्षत्र नभ से टूटा एक जैस। ज्योति विलीन हुई रिपु—पथ ऐसे।।
खडित अधैर्य मन कर ज्वाला। गरल उगलता ज्यो नाग काला।।
प्राण नाश निमित यीशु पकड़ाऊँ। कहो । कितनी मुद्रा मैं पाऊँ।।
वैर शाधन वैरी उपचारा। काइफा प्रचड फलक धारा।।
दहकता स्वर्ण तीस मुद्राए हा तैयार । तो हम मगवाए।।

दोहा —राने लगी दिशाए यहूदा बहा प्रवाह।
शक्ति व्यग्र व्यथाए दख चचल—चित चाह।।

अंतिम भोज की तैयारी (मरकुस 14 12 16)

पर्व पास्का प्रभु कहाँ मनाव। फसह—भाज हम तैयार कराव।।
जैतून पार नगर को जाओ। द्वार निर्झर कुण्ड सियोल पाआ।।
जल भरा घड़ा सेवक काधे। पीछे उसके मारग साध।।
कहना स्वामी से रब्बी आये। पर्व पास्का शिष्य सग मनाय।।
कहाँ अतिथि—शाला हम सजाय । कक्ष सज्जित स्वामी दिखलाये।।
चादर सितासित फैली न्यारी। पत्रुस याहन कर तैयारी।।

दोहा — अलौकिक रग सुहाने देते समय सकेत।
पिता श्रेयस पुत्र बढावे दह चढा सुहेत।।

अंतिम भोज के लिए प्रस्थान (मरकुस 14 17)

सायकाल झुट—पुटी अधेरा। पिता सग करने को बसेरा।।
मन के सारे बधन खाले। समय चलने का रब्बी बोले।।
चल रब्बी शिखा निष्कप ऐस। शिष्य बारह बढे ज्यात जैस।।
क्षितिज धूम प्रकाश सरसाया। धरा का अन्तर्मन गहराया।।
भूमा पुत्र साधक एक न्यारा। मनुज — पुत्र मनुजता आधारा।।
गन्तव्य को है स्वय जाता। अलौकिक प्रमिल रग सजाता।।

दोहा — पारदर्शी जीवन— दर्शन मिट जाय मन मैल।
उत्सर्ग की राह चला बता प्रेम की गैल।।

नवीन आज्ञा (यूहन्ना 13 34-16-17)

प्रेम की ज्योति जलाओ ऐसी। प्रकाशित पथ बन जाए जैसी॥
प्रेम करो आपस में ऐसा। किया प्रेम मैंने है जैसा॥
बड़ा बन गौरव जो चाहे। दास बन दे सेवा को चाहे॥
याद रहे एक ही गुरु तुम्हारा। परम पिता प्रभु ही आधारा॥
गुरुवर नहीं कभी कहलाना। भाई हो भाई संग निभाना॥
आदर्श दिया मैंने है जैसा। तुम्हें भी करना हाँ है वैसा॥

दोहा— सेवक राह पर चलना स्वामी से बड़ा न दास।
एक बार फिर याद करो रब्बी आज्ञा प्रकाश॥

यीशु आज्ञाए

सत्य मार्ग जीवन मुझ मे युग का नया प्रबाध।
अपनाओ पहिचानो बनो युगीन सुबाध।।
समझा जिसन माना लिया सत्य को ताल।
मेरे पीछ बढ चलो प्रभु मिले दिल खाल।।
वचन मर रख मन म विधान य जीवत।
प्रभु इन्आए है इनमे हो जाओ फलवत।।
पिता मुझ म मैं पिता 'पिता का मैं निवास।
उठो मैं तुम स कहता रख निज पर विश्वास।।
सत्य म हा प्रतिष्ठित फिर चल मर सग।
राह नकी पर चलकर जीवन म भर ल रग।।
सेवक अर्पित रहे प्रभु मे स्वच्छ रहे ज्या नीर।
अपन प्रभु का वदन कर रखना दुख म धीर।।
धारण कर मुझे पहिन लो आत्मा से ले ज्ञान।
जा कुछ तुम सुनते हा सुनो लगाकर ध्यान।।
ऐस रहा सब मुझ मे ज्या रहे वृक्ष म शाख।
फूल फल औ बढे सग रह जा शाख।।
आत्मा मैं सत्य की सहायक एक प्रमान।
मुझे प्रगट करो ऐसे निजत्व बना महान्।।
हो जा अनुयायी मेरा न्याय राह आलाक।
उठ सग खडा हो साथ उलझन की क्या टाक।।
मेर प्रम म रह कर आनद स हो पूर्ण।
जावन नहीं है उद्वेग न हो क्लेश से तूर्ण।।
मरा जुआ धर काधे मन म रख विश्वास।
मुझ मे बना रह सदा पाये सतत प्रकाश।।
शुद्ध स शुद्ध मिल जाये शोक रहे न रोग।
उठा अपना क्रूस प्रतिदिन आत्मा रह नीरोग।।

नय सिरे जन्म लकर स्वर्ग–धरा का जाड़।
नभ पर अंकित कर नाम क्षुद्र गाता को छाड़।।
अपन म रख क्षार–तत्व क्षारत्व की आन।
दर्शन सतुलन का यही और धरा मुसकान।।
कसी रह त्मर सदा जलता रह मन दाप।
जागत रह कर जला सदा सत्य क दाप।।
उठ खड़ा हो बीच म जीवन तरा अनमाल।
तुझ म प्रभु का निवास बद मुट्ठी का खाल।।
कर नहीं अचभा सुन तू मन क वाद्य–सितार।
जीवन मार्ग है खुलते प्रज्ञा का कर विस्तार।।
डरा मत ढाढस बाँधो मैं हूँ सग साथ।
पीछ मरे आआ थाम कर मेरा हाथ।।
पिना पर रख कर विश्वास गाओ जीवन प्रीत।
सत्य साथ सग चलो मृत्युजयी हा गीत।।
कर विश्वास वचन मेरे बन प्रकाश की धार।
स्नह नेह तुम लुटाआ खाल हृदय के द्वार।।
नाम प्रभु क माँगोगे रख विश्वासी नम।
प्रार्थना हागी पूरी परखा वचन सुनम।।
खोज कर तू प्रभु राज्य अनूप अनुपम ज्ञान।।
तुला किसी तुले नहीं परम तत्व प्रभु दान।।
प्रवश कर सकेत द्वार पहुँच प्रभु की डयाढी।
राह चौडी द्वार विशाल पहुँच न प्रभु डयाढी।।
जैसा तरा विश्वास ले जा चगाई दान।
दख जीवन विभाता, पहिन प्रभु परिधान।।
पुत्र जैसा सिद्ध बना पाओ निर्मल आभ।
अनूप सौख्य अपूर्व ज्योतिर्मय श्वत–आभ।।
दयावत जैसा पिता ऐसा हा पद मान।
उग्गस जर्जर काया म भग्ना जीवन प्रान।।

समन्वय की ध्वनियाँ स्नह सौहार्द्र फुहार।
जा अगरखा छीने दे द कुर्त्ता पुकार ॥
रखो कितनी रातियाँ लाओ मर पास।
पुलक ललक कर बाटा प्रलाभन रह न पास॥
उस द दा जा माँगे आनद तर पास।
सुख दुख मे सहाय बन मनो म भर सुवास॥
आवाज द बुलाओ जा विश्वासी नक।
नूर प्रभु का वह दखे थिर रह जा प्रभु टक॥
प्यासा हूँ मैं जल रा बन कर स्त्रात प्रवाह।
पीन का जल दा मुझ जीवन–जल की नाह॥
पात्रा मे जल भर दो भरा शाश्वत उल्लास।
भरा रह जीवन पात्र छलकता मन हुलास॥
राका मत आने दो धरा की गध धूम।
बालका का आने दा निरमल मन निरधूम॥
है जो कुछ तेरा दे दरिद्र का कर निहाल।
आ अनुयायी हो मेरा मन बना कर विशाल॥
राआ मत धीरज रखो सुना दिव्य सदश।
रू श्वास तिमिराछन्न ढूढती नव परिवश॥
रोको उस राका करता जा अपराध।
भाई तेरा न भटके भरसक उसे साध॥
दिव्य ज्यात है प्रकाशित यहा तुम्हार साथ॥
ज्यात सग चलत रहा और थाम ला हाथ।
आनद मनाआ जाओ बनकर आनद स्त्रोत॥
जा खाया था मिल गया। दमका ज्या नवज्यात॥
आत्मा की फसल तैयार सुनो समय सदश।
कटनी करा तुम जाआ फसह का दा निर्देश।

प्रभु परीक्षा मत करना अथ कुटी म नैठ।
पाये प्रभु दरस कैस अथ कुटी म पैठ।।
शूकर आग निज माती नहीं डालना भूल।
उथल बिखर मचल कर फिर-फिर रौंदे धूल।।
परीक्षा म नहीं पड़ा करा प्रार्थना दिन रात।
छलती है मन एषणाए कारक य उत्पात।।
जा अपने लागा के पास सुषमा नन भरपूर।
पिता क घर बहुतर हर घर का हा नूर।।
प्रभु का प्रभु का दना सही जीवन की राह।
राज का मिल राज का नना रह प्रवाह।।
सत्य की देन गवाही हर क्षण रह तैयार।
खमीर से रह चौकस जा चाह उद्गार।।
सार मन औ प्राण स तू कर प्रभु म प्रम।
सारी बुद्धि शक्ति स कर अराधन सनम।।
जा आव मर पाछे और उठाये क्रूस।
निजता से कर इकार पाडन कर महसूस।।
उठा नम मपपालक! करता जो मुझ स प्रेम।
चराओ तुम भेड मेरी पुकार उन्ह सप्रेम।।

प्रभु भोज स्थापना (लूका 22 14-16)

शिष्य–सग भोज प्रभु विराजे। ज्योत विभव ज्या महाधिराज।।
पैत्रसु योहन भोज सजाते। कर प्रार्थना प्रभु वचन सुनाते।।
कृतिमय जीवन सब अपनाये। उद्भेदन उद्भ्रान्त मिटाये।
मधुरतम सवरण अराधना। देह–रक्त–श्रम सब मिल पाए।।
सहभागी जागरण अहलादी। सजग रहे प्रभु मे न विवादी।।
प्रबल इच्छा थी उद्भूति जगाऊँ। प्रभु– भोज नई रीत बनाऊँ।।

दोहा– तन्मय परितुष्टि अनूप प्रभु से मिलन सप्रीत।
आत्म–उत्थान का विभव हृदय का दिव्य–गीत।।

प्रभु–भोज आशीषित रोटी (लूका 22 14-24)

आशीषित रोटी प्रभु उठायी। विनीत भाव प्रभु स पायी ।।
पूर्ण विधि साधक है लाया । जग को दिव्यान दन आया ।।
दह मेरी दिव्य भाव लाया। पावित्र्य प्रेम सौहार्द्र समायी।।
ऋति गति अभ्युदय जगावे। विश्वासी–बाध निश्चय पावे।
जीवन शक्ति मानवत्व सारी। ग्रहण करा क्षमता से सारी।।
सकल्पित जावन है परासा। शिष्यत्व पर किया भरोसा।।

दाहा – बाटा और ग्रहण करा बरस आशीष मह।
दह समर्पित करता हूँ अब रहूँगा अ–दह।।

आशीषित कटोरा लूका (22 20-17-18)

फिर उठा रस भरा कटारा। रक्त मरा न्याय हेतु बटोरा।।
नेह स्नेह उमडे प्याला। जीवन मकसद भरा निराला।।
इसमे है जीवन की धारा। ग्रहण करो मन्तव्य प्यारा।।
याद करे न जग, भूल चाहे। क्षमा दया को देना छाहे।।
चाहे तप प्राण बेसहारा। और निचुडे रक्त भी सारा।।
बूद बूद रक्त –धार जाडा। आशा भरा हृय है निचोडा।।

दाहा – जो कुछ सचित किया सब इसमे दिया उडल।
अब मैं हूँ तैयार विदा बढ बधुत्व मल।।

(यहूदा इस्किरियोती को पहला ग्रास (लूका 22 21-23)

हाथ बढा फिर ग्रास उठाया। और क्रियाती आर बढ़ाया।
आँख खाल अधेरा ज्यादा। दा हिस्सा चटा मन हा बाधा।।
कर विचार औ रूक जा थाडा। मन को शक्ति शाति का जोडा।।
धन की शक्ति रार अनजानो। एक इच्छा खिचाव अभिमानी।।
विवेक है निर्मल पावन धारा। दरिद्र प्राण पावे सहारा।।
ले ग्रास पूरा कर अभाप्सा। गुरू–शिष्य की अदम्य परीक्षा।

दोहा – जीवन का कोश उल्झा स्रोत सनातन खाज।
शक्ति–शान्ति एक कसौटी मन कान्ति की आन।।

यहूदा का निपात (यूहन्ना 13 21 30)

क्रियाती गम गम कँपाया। श्यामल स्तब्ध गगन भरमाया।।
ज्योतित सितारा धुँधलाया उथल–पुथल भीषण मन दराया।।
भवरताल मग अग टकरात। गहमा श्वास हिसक आघात।।
कौन निपाती! साधि है साज। कौन है! कौन! की आवाज।।
पजा उलझा कौन सुलझाय। उठा यहूदा शाश झुकाय।।
तिमिर राशि मनुज भटकाय। नव–ज्योत पर प्रात ले आय।।

दोहा – वाली कह टाता रह अपमाना का भार।
तू क्षाभ भरा दुष्काल ह अभाग प्रतिकार।।

यहूदा मन का उपद्रव

बढता घातक छाया जैसा। तुनता जाल यहूदा तैसा।।
छाया स कौन जात पाया। पराजय प्रतीक निज आया।।
छिड़ा महायुद्ध एक भारी। निर्जन रणभूत्र सागारी।।
भीषण द्वन्द्व महा टकार। यहूदा जलता ज्या अँगार।।
तृष्णा तृप्ति उद्वग आवशी। उन्माद अतिरक हुआ उन्मषी।।
कुठाआ स पिड अधियारा। धडकता ज्या विस्फाटक तारा।।

दोहा – टक्कर अतिम काट रहा चूक न लक्ष्य–भद।
बढी रफ्तार–मन सिकुडा रग ज्यात सार कैद।।

शहादत की अंतिम घोषणा (मत्ती 26 26-35 यूहन्ना 16 16 20)

शिष्या सग रब्बा प्रात गात। पर्वत जैतून का अग जात।
रब्बी कहत समय गवाही। बिछुड जायगा चरवाहा।।
झुड सारा बिखर जायगा। रात्रि काल पतन लायगा।।
थाडा दर का साथ हमारा। थाडा दर का पखवारा।।
थाडा दर बाद फिर हागा। साथ थाडी दर का हागा।।
प्रभु–ज्योत अर प्रभु म समाये। औ पिता सग महिमा पाव।।

दोहा – बीत तुम्हार यह ज्योति अब है थाडी दर।
ज्योत स ज्योत बढगी और न थाडी दर।।

महायाजकीय प्रार्थना (यूहन्ना 17 1 26)

विस्मित कातर सन्नाटा भारी। सिहर रही वादी दुख हारा॥
स्तब्ध नदी तट कछार किनारे। इशारत सासो को निहारे॥
स्वर्ग ओर रब्बी दृष्टि उठाये। महिमा प्रभु की मन समाये॥
प्रार्थना याजकीय वे गाते। पूर्व उत्सर्ग रब्बी सृजन सुनाते॥
लौट नदी जैसे फिर न आती। पर शिला कण संग ले जाती॥
हर क्षण संगीत नया गाती। और एक सृष्टि नयी रचाती॥

— दोहा — प्रभु में लौ लगाय, बह रहा वचन प्रवाह।
ज्ञान वचन जो सुनाया जग की बन चाह॥

महायाजकीय प्रार्थना (उत्पत्ति 4 2, यूहन्ना 17 1 2)

ज्योत उजास वादी अवलेखे। मुक्ति भुलाई मुक्त क्षण देखे॥
हाबिल जग का प्रथम चरवाहा। कह वादी कृषि कर्मी का गाहा॥
बँधा जब भूमि की सीमाएं। ईर्ष्या बैर पूंजी बन आए॥
फिर भाई बना भाई हत्यारा। बहा रक्त लोहू पुकारा॥
कहाँ शान्ति का सृजनहारा। शान्ति शान्ति युग काल पुकारा॥
वादी कह यीशु चरवाही। आज रन रही प्रथम गवाही॥

— दोहा — रब्बी बाधे टकटकी धरती का हल थाम।
सब का अधिकार समान पावें सब प्रतियाम॥

महायाजकीय प्रार्थना (यूहन्ना 17 3-5)

प्रभु ने दिया प्रभु से पाया। ईर्ष्या बैर में सब गंवाया॥
परम पिता तुझ से फिर चाहूँ। वही सत्य-पावन फिर गाहूँ॥
करुणा तरी सब पहिचाने। पावन सृष्टि का मर्म जाने॥
दया तरी आशीष पावें। सकत घाटी पार कर जावें॥
हर बंधन साँकल खुल जावें। निर्धन का घटा भर पुर जावें॥
नव ज्योति हर पर्वत चमकावे। ढल छाया विश्वास जगावे॥

— दोहा — अनुग्रह और भरपूरा प्रभु से पाय दान।
हृदय से निकली प्रभु चाह सिर बने वरदान॥

महायाजकीय प्रार्थना (यूहन्ना 17 6-9)

विनाशक शक्ति की काराए। हे प्रभु बन जाये प्रेम धाराए॥
कुत्सित कृत्य हो कर सतापी। आर्द्र दुरचित होव तापी॥
सुख लिप्साआ की कुरबानी। बढे धैर्य शक्ति हा बलिदानी॥
महनीय शक्ति बने हितकारी। अन्त करण नव– कान्तिकारी॥
मनुज है चिन्तनशील प्राणी। लौह स्वार्थ गल सुन वाणी॥
चेतन मानव उठ–जाग जावे। 'शान्ति ज्योत सब मिल उठावे॥

दोहा – जग उत्पीडित लाचार मन के बोझ अनताल।
प्रभु–वचना की सुयश–प्रभा प्रीत बने अनमाल॥

महायाजकीय प्रार्थना (यूहन्ना 17 10-12)

मिट नहीं जीवन की निशानी। हताश आख न छलके पानी॥
नदी जल की हमदारी जैसे। स्नेह की भागीदारी एस॥
महिमा प्रभु की है कल्याणी। आनद के स्वर मन की वाणी॥
हे परम पिता जो हैं तेरे। 'रक्षा करना दुख नहीं घेरे॥
विश्वास उनका बढे घनेरा। सब से निराला प्रेम तेरा॥
प्रभु तेरा याजक बन आया। स्त्रोत वचन तेरे मैं गाया॥

दोहा – मेरा सब कुछ तेरा तेरी हा जयकार।
जग से विदा लेता अब तन दुर्बल मन तैयार॥

महायाजकीय प्रार्थना (यूहन्ना 17 13-19)

प्रभु वचन जग का सुनाये। आनद से सब दीप जलाय॥
जीवन हा जीवन की धारा। ताप मिटे बहे मधु–धारा॥
प्रभु प्रेमी अब गान सुनाये। सासो की भाषा समझाय॥
रिक्त जीवन म आस सरसावे। बैर द्वेष जग नहीं सतावे॥
हर अवराध पार कर जाव। निदा दुख अपमान सह जावे॥
कभी न टूट ये श्रृखलाए। सत्य के दीप सदा जलाए॥

दाहा – प्रभु वचन सत्य प्रमानी हृदय का मधुर प्रकास।
प्रकाश तरग व लाय ज्यातित हो उल्लास॥

महायाजकीय प्रार्थना (यूहन्ना 17 20 23)

जैस मैं तुझ म तृप्ति पाया। सुमत धरा स्वर्ग सरसाया।।
एसा पुकार विश्वासा सुनाय। पाय सिद्धि तुझ मे हरषाय।।
ससृति सवा भाव जगाय। धरता अनुलेपन बन जाय।।
सम्पन्नता का मद न आय। विक्षिप्त घृणा प्रतिशाप न आय।।
सब की पीड़ा सुख नेक नामी। समरसता के बने अनुगामी।।
अनत ज्यातिपुज बन जाय। दया क्षमा वैभव बरसाय।।

दाहा — एक रूप तुझ म जैस मैं हूँ पूर्णभाव।
तुझ स व वध रह, रह न शाप निज भाव।।

महायाजकीय प्रार्थना (यूहन्ना 17 24)

जिस विश्वास का मैंन पाया। आस्था काव्य प्रीत रचाया।।
स्पर्श अनुभूति आत्म परासा। दग्ध-जगत का बना भरासा।।
अधकार पर विजय दिलाय। धर्म-सत्य का मन मे बसाये।।
समता सन्देश व सुनाय। सतुलन स्वर्ग-धरा बनाय।।
औरा का सुख दुख स्वीकार। हृदय की बात सुने न हारे।।
प्रभु महिमा देख अभिलाषा। अर्थ आस्था का हो परिभाषी।।

दाहा — सृष्टि उत्पत्ति से पहले मैं था प्रेम उदात्त।
यह मैं हूँ युग-युग सुने शक्ति समत्व प्रभात।।

महायाजकीय प्रार्थना (यूहन्ना 17 25-26)

प्रीत बन मैं जगत म आया। दिव्य आलोक प्रीत जगाया।।
पर ससार नहीं पहिचाना। सच्चा शान्ति आनद न जाना।।
क्षमा मैत्री करूण प्रार्थनाए। मिट रहीं य जीवन रखाए।।
ह पिता तू ही है गवाही। तेरे पथ का मैं रहा राही।।
विनीत मैं ह पिता चाहूँ। तेरी प्रीत म अवगाहूँ।।
प्रम ही जग जीवन आधारा। बहती रहे प्रीत रस धारा।।

दाहा — विमुक्ति मुक्ति बन जाय हृदय की करूण पुकार।।
आत्मदान विलपन सहन स्नह आधार।।

अंतिम उद्बोधन (मती 26 36-43)

चारो ओर निशीथ निराशा। प्रार्थना — शक्ति रब्बी बल आशा।।
आये शिष्यो पास अवलोका। अक हिमानी निद्रा का धाका।।
उठो। जीने की ले आकाक्षा। जागो! प्रभु म रख कर आशा।।
डरो मत! न हो तुम विवादी। आत्म–वेदन यह अवसादी।।
दीन निराशा एक हत्आशा। भटकाती है मन की काक्षा।।
लभ्य दुलक्ष्यना क्लेश भारी। जीवन पर मृत्यु अक प्रहारी।।

दोहा — प्रकाश बनो तुम जागो आत्म बोध से पूर्ण।
भय दुर्बलता सब त्यागो रहो न तुम अपूर्ण।।

यीशु की प्रतिबद्धता और यहूदा का षडयंत्र (यूहन्ना 18 1 2)

किद्रोन पार अब है जाना। महिमा अतुल पिता सग पाना।।
विनय समर्पित लक्ष्य स्वाभिमानी। जग समझे सन्निष्ठा सुहानी।।
हे यहूदा सत्य विक्रेता। उत्कोच प्रलोभन का क्रेता।।
तुष्टि का भूखा अहकारी। ज्वलनशील मन का अधिकारी।।
स्व उपासक, भेदक विलासी। दृष्टि पावे समुचित प्रभु भापी।।
प्रेम–प्रीत की क्या खरीदारी। हृदय हो स्वच्छ निर्मल दुआरी।।

दोहा — सैन्य दल सग यहूदा लिय दीपक मशाल।
देख रब्बी आया आगे उद्यान मे दुश्गल।।

युग कुत्साए (यूहन्ना 18 3-8)

खोज रहीं युग–सत्य कुत्साएं। दीपक और मशाल जलाएँ।।
ये कुत्साए युग तथ्य सुनातीं। मूर्च्छित बेचैन अलसातीं।।
जटिल प्रश्न उठा दोहरातीं। सत्य सामने देख न पातीं।।
रब्बी पूछते बढ कर आगे। किसे ढूढते तुम अभागे?।।
'यीशु रब्बी नासरत निवासी। 'वह मैं हू मनुज पुत्र प्रकासी।।
सत्य से साम्य कर न पाये। दुर्बल तन–मन पछाड़ खाये।।

दोहा — हौले से उठा रब्बी पूछते। किसकी चाह।
नासरत वासी यीशु वह मैं हू सत्य राह।।

हम सुलह सैनानी (यूहन्ना 18:9 11)

निष्पोषक - हैं सब कुछ खोते। पराजित स व्यर्थ - भार ढोते।।
शापित जीवन वे प्रतिशोधी। सत्य विनाशक गह अवरोधी।।
सत्ता मद झूल अभिमानी। बाँधते निष्पाप सत्य—वाणी।।
साया—सक्त स शिष्य जाग। पतरस तलवार उठा आग।।
घायल हुआ मलकुस सिपाही। रूको! हम नही जग सिपाही ।।
हाथ बढा रब्बी --दी लगायी। म्यान रखो खड्ग सुलह सुनायी।।

दोहा — जडता को न अपनाओ क्षुद्र—उद्वग यह दीन।
चतन—क्षमा यह निदान बनो न हत्यहीन।।

छोडो द्वन्द्व (यूहन्ना 18:14 लूका 22 48 53)

भाव समर्पण स रखो नाता। हम प्रभु के सेवक प्रभु दाता।।
भेद भाव की मिटा दो सीमा। दया क्षमा ममत्व बह धीमा।।
चेतनता की राह बनाओ। सतत प्रवाह बन बहते जाओ।।
ह- कुत्साओ लक्ष्य साधो। याशु नासरी को तुम बाधो।।
छोड़ो द्वन्द्व , ये बस—वारी। गध मदालसा दाख—वारी।।
यहूदा तूने अधर्म कमाया। जीवन—अर्थ समझ नहीं पाया।।

दोहा — रब्बी कह अब क्या चूमे प्रभु म हो कटिबद्ध।
हे प्रपची सकतक सत को कर आबद्ध।।

पतरस का अस्वीकरण (यूहन्ना 18 15-18 लूका 22 54 58)

ताप तपा तापित - दिन आया। - बाँधा याशु बदी बनाया।
सत्य - बाँधा- बाँधी अगुवायी। अँधकार प्रबल रात गहराया।।
हन्ना पास ले यीशु वे जात। - फिर भवन - काइफा पहुँचात।।
शिमौन - पतरस रूक रूक, आता। पुरोहित—आँगन छिपा न पाता।।
घूर - कर दासी एक बोली। तू शिष्य - —यीशु मैं तोली।।
मैं---न जानता - - तेरी - भाषा। उदास पतरस - गिरा - निराशा।।

दोहा— तू -भी उन्हीं म से एक -फिर बाला - एक दास।।
भले - मानुष, - - मैं नही और दख आस—पास।।

पतरस का तीसरी बार अस्वीकरण (मत्ती 26 73 75)

समीप पतरस–दास एक आया। तेरी बोली उन जैसी पाया ।।
नहीं नहीं मैं हूँ अनजाना । श्राप उठा–शपथ दोहराना।।
प्रात काल मुर्ग बॉग सुनाया। रब्बी मुड देखा। क्या! निभाया।।
कौंधे शब्द हाय अभागा। बन रागी तीन वार त्यागा ।।
बाहर जा फूट फूट रोया। हाय पतरस तू विश्वास खोया।।
जीने की चाह ही सजोयी। प्रभु प्रति–बद्धता हाय खायी।।

दोहा – सत्य का दीप बुझा कर चला अधकार सग।
निज अस्तित्व बचाया झूठ लिपटा कर अग।।

यीशु पर अभियोग कार्यवाही (मत्ती 26 57 68)

धर्म सभा काइफा बुलायी। शास्त्री धर्म वृद्ध सभा जुटायी।।
अभियाग लगाय दे गवाही। धर्म–विरूद्ध यीशु–चरवाही।।
झूठी साक्षी–झूठी गवाही। मिट पात सब चरवाही।।
तब आकर दास दो सुनाया। चमत्कार एक यीशु बताया।।
इस मदिर का गिरा मिटाऊ। तीन दिना मे नया बनाऊ ।।
मौन खड यीशु तेजधारी। शात–ज्योति जैसे अधिकारी।।

दोहा – महा–याजक घबराया पाया न एक दोष।
परमेश्वर शपथ तुझे कह प्रभु–पुत्र मैं निर्दोष।।

अभियोग (मत्ती 26 64-68)

आपन कहा है यीशु बोल। मैं कहता अर्थ आप तोल।।
जीवन–वचन अकुरित होवगा। और जग प्रभु महिमा देखगा ।।
बादल–चक्र बॉध कर जैस। आत मह बरसात कैसे।।
जब जब वचन स्रोत उमड़गा। तब तब आशीष जग पावगा ।।
हाय!हाय! प्रभु निदक भारी। रिगाड़ मिल कर सब प्रहारी।।
अब न चाहिय कोई गवाही। आत्म कथ्य यह न चरवाही।।

दोहा -- मृत्यु–दड अधिकारी चला पिलातुस पास।
तारे चुप चुप दखत भोर हुआ उदास।।

पिलातुस के सन्मुख 'यीशु' (यूहन्ना 18 28-32 लूका 23 1 5)

मनसा एक उठी सभा सारी। राजपाल भवन पहुच पुकारी।।
रोमी पिलातुस बाहर आया। दख यीशु मन म हरषाया।।
अपरिचय म परिचय गाया। षडयत्र काई मन घबराया।।
दिव्य छवि शीतल उजियारी। पावन पुरूष ज्याति एक न्यारी।।
अभियोग म याग को दखा। धूर्त–चाल अयथा अवलखा।।
वे गिल्लात कैसर द्रोही। भ्रष्ट करता जाति विद्राही।।

दाहा — यहूदी राज चाहता उन्माद भरा प्रचार।
स्वय को कहता ख्रीष्ट और प्रभु–पुत्र उद्धार।।

पिलातुस और यीशु (लूका 23 1-5 यूहन्ना 18 33-38)

पिलातुस मृत्यु–दड सुनाये। राजपाल भवन उस लाय।।
न्याय पीठ पिलातुस विराजा। क्या तुम हा यहूदी अधिराजा ।।
आप ही कहे यीशु बोले। राज्य मेरा जग क्या माले।।
दृष्टात सुनाता सत्य–भाषी। सत्य की देता रहा साक्षी ।।
सत्य क्या है। मुझे समझाओ। प्राण दान दू राह बताओ ।।
अधिकार आप प्रभु से पाये । महिमा उसकी सत्य सुनाय।।

दोहा — बाहर आय– पिलातुस वह निर्मल नही दाष।
पर्व–फसह की फिरौती मिले सम्मान निर्दोष ।।

हेरोदेस के सन्मुख यीशु (लूका 23 6-12)

हरोदेस यहाँ आवासी। औ यीशु है गलील निवासी।।
राज न्याय वहाँ तुम पाओ। हेरादेस भवन ले जाओ।।
देख यीशु हाकिम हरषाया। चमत्कार की आस मुसकाया।।
पूछ रहा प्रश्न वह सधानी। 'क्या अपराध मौन क्या वाणी।।
उग्र शास्त्री अभियोग लगाते। खीज हेरोदेस आज्ञा सुनाते।।
वस्त्र भडकीला पहिनाओ। ताज पाशो करा हरषाओ।।

दोहा — करो नबूवत का श्रृगार खुल मगरूर मौन।
लौटा दो पिलातुस को यह मैत्री का काण।।

उपहास और निरादर (लूका 23 11)

रब्बी की है अपूर्व उजासी। उज्ज्वल किरण स्रोत प्रकासी।।
मेग घेरे निरादर काले। उपहासा के उभरे आले।।
व्यथा, ग्लानि मर्म सहे वेदी। सहता रब्बी यह उत्सर्ग–वेदा।।
नई आस्था को, जीवन दता। बन आशा जीवन का खत्रा।।
विश्वास और विश्वासा राहे। आत्म विश्वासी की पनाह।।
पुत्र–दाय रब्बी ज्या निभाये। गतिशील सत्य लक्ष्य बनाये।।

दोहा — गति–चक्र को बन सितारा आभ हो निज्य कात।
मलिन भाव तृप्ति पाते हराद मन अशात।।

पिलातुस के पास यीशु की वापसी (लूका 23 13-16)

ज्यातित सत्य यीशु द्युतिमानी। शून्य चीरते विक्षुब्ध मानी।।
सन्मुख प्रभु दिव्य भोली–भाली। पिलातुस पाया ज्योत निराली।।
राज पाल मन्तव्य भिजवाता। काडे लगा मुक्ति मैं सुनाता।।
निर्दोष है एक न दाष पाया। न हरोद दोष–पत्र भिजवाया।।
दहक उठे ज्या लपट अगारा। भस्म कर मिट भवन सारा।।
नहीं चाहिये ज्योत किनारा। मुक्त करा बरअब्बा हत्यारा।।

दोहा — क्रूस पर हाँ क्रूस पर क्रूस चढाओ यीशु।
बिफरे फेनिल जजबात क्रूस चढाओ यीशु।।

पिलातुस ने यीशु को उपद्रवियो को सौप दिया
(लूका 23 21-22 यूहन्ना 19 4-12)

तीसरी बार फिर मैं सुनाता। निर्दोष है, दाष एक न पाता ।।
देखा मैं उसे बाहर लाता। राजा तुम्हारा तरस खाता ।।
एक ही व्यवस्था है हमारी । ख्रीष्ट नहीं यह है अतिचारी ।।
बढ़ रही उपद्रवी मनराए। जीवट पिलातुस का घबराए।।
निर्दोष रक्त मैं नहीं बहाता । धाता हाथ मैं मुक्ति पाता।।
रक्त हम औ सतति उठाय। क्रूस पर यीशु को चढ़ाय।।

दोहा — पहिना वस्त्र बैजयन्ति सर काँटा का ताज।
बलवई हाथ दिया सौप दीना का सरताज।।

यहूदा का अर्न्तद्वन्द्व (मत्ती 27 3-10)

दूर खड़ा क्रियाती पछताता। मुख मलिन प्रहारी धुँआता।।
भार मन राप मन विषादी। मर्मान्तक पीड़ा अवसादी।।
था कड़ी परीक्षा क्षण बीता। शिष्य हारा तन मन रीता।।
यह जात कैसी! ह अभागे। जा उत्सव मना! हत्भाग।।
हाय! सत्य सलोना क्या बना। क्या! स्वर्ण मुद्राओ न खरा।।
पद–लिप्सा न या था पुकारा। या विध्वस– मति हाथ पसारा।।

दोहा — पकड़ाया छल–छदम म मन का फूटा पाप।
हाय! रक्त का टपकार जलता मन परिताप।।

यहूदा अर्न्तद्वन्द (मत्ती 27 3-10)

फाके सर अर्थ – धर्म पड जात। धरा आकाश टकरा जाते।।
हाय! कपट माह द्वन्द कैसा। मनुज पछाडे खाता एसा।।
यह प्रलय–शक्ति दोहरी भाषा। क्या यहीं लिपि मनुज परिभाषा।।
मूल्य–ह्रास की क्रूर कारा। रीझ मनुज बह जाता धरा।।
वचन सुन अर्थ दाय न भाया। हाय सत्य वचन न अपनाया।।
बीज सुहावन एक न बोया। हाय! स्वर्ग मुकुट मैन खाया।।

दोहा — अन्तर्आत्मा झटके द किया तून अन्याय।
निज जीवन पुस्तक पढता खोल खोल अध्याय।।

यहूदा द्वारा आत्महत्या (मत्ती 27 5)

पछता पुराहित पास जाता। तास मुद्रा ये मैं लौटाता ।।
निष्पाप का मैंन पकडाया। मृत्यु–दड क्या आप सुनाया।।
निष्ठुर व्यापार किया कैसा। क्षमा न पाऊँ पापी एसा।।
हम क्या! तुम्हीं हा अभिशापा । ये मुद्राए रक्त मूल्य श्रापी ।।
दरिद्र मलिन मुद्राए ले जाओ। हमने मूल्य चुकाया जाओ ।।
लौट यहूदा बाहर आया। देह त्याग मन ग्लानि मिटाया।।

दोहा — ह रब्बी सत्य प्रणता तू ही अब सभाल।
मैं हा उत्तर मैं सवाल दुविधाओ का जाल।।

सत्य बिका (मत्ती 27 5-10)

मदिर बिखरी पडी मुद्राए। कौन समट य कुतसाए।।
रक्त मूल्य पाप की पूजी।। शुद्ध खरी निर्मल नहीं कूँती।।
बनाव मुक्ति–धाम–परदेशी । मत्रणा करत शास्त्रा एसा।।
खते कम्हार मोल ल उतारा। दह स दह का उद्धारा।।
रक्त–क्षेत्र वह कहलाया। मानव पुत्र मूल्य चुकाया।।
पूरी हुई यशायाह वाणी। बिकगा सत्य जग कल्याणी।।

दाहा — तम का राज निरकुश लायगा अधकार।
ताप बढे औ जल घट पकिल हागी धार।।

यीशु 'गबाथा पर (यूहन्ना 19 13-16)

भोर हुई यीशु खड़े गबाथा । हाय कैसी उत्पीड़न गाथा।।
कॉटा–ताज पर मुगदर मारा। गिर न जाये देने सहारा।।
टपटप रक्त बूँदे टपकार। विह्वल वादी बहे अश्रु धार।।
रक्त रजित बहता पसीना। मुख मलिन औ देह अति दीना।।
बध हाथ याशु सहत काडा। नौ लडिया का भयकर ताडा।।
निर्मम कहत–नमस्कार स्वामी। तुम्हा ता हो प्रभु अन्तायामी ।।

दोहा — बता दा किसने मारा तनिक न करना भूल।
फटकारा हाय काडा कामल दह पर शूल।।

यीशु की यातनाए (यूहन्ना 19 13-16)

धरा अनुराग यू बहाया। रक्त स्नान कहे वाटी कराया।।
कूल हीन वे कुटिल पाषाणी। नही जिनमे रक्त जग कल्याणी।।
निदा अपमान औ यातनाए। सदा बढाते दुख व्यथाए।।
उज्ला मन यीशु का कैसा। प्रेम से सरोबार है ऐसा।।
बूँद बूँद कर रक्त टपकाना। बँधुत्व रूप कैसा सुहाना।।
तदीय रूप प्रेम का निराला। छाप अस्मदीय लगी आला।।

दोहा — शिरोन का वह गुलाब पूर्णरूपण रमणीय।
हजारा म वह उत्तम कैसा है कमनीय।।

यीशु की यातनाए (यूहन्ना 19 13-16, यशायाह 53 3-8)

अभियाग पाटी लिख लाते। 'यहूदिया का राजा सजाते।।
डाकू बरअब्बा मुक्ति पाता। धन्य कह रब्बा शाश झुकाता।।
कूल हीन का कूल दिखाया। आप ने प्रेम रूप समझाया।।
दुखा आत्मा स हुए रूमानी। राग से था पहिचान पुरानी।।
मनुष्या न उसे तुच्छ जाना। सत्य प्रकाश नहा पहिचाना।।
ह चले रब्बी वे निपाती। सिहर उठी वादी अकुलाती।।

दोहा – बद्ध का मम्ना जाता मुख से निकली न आह।
जीवन कभी न हारता सत्य स्वत्व का नाह।।

क्रूस यात्रा (मत्ती 27 31)

झझा से तीव्र हुए उन्मादी। बिफर रह हाय उग्रवादी।।
चीत्कार करते थ ऐस। तूफान उठा हो कोई जैसे।।
वस्त्र बैजयति अब उतारा। निज वस्त्रा म यीशु सवारा।।
पथ अगम यीशु क्रूस उठाय। श्रात–गति वे बाहर आये।।
असह्य बोझ सत्य उठाये। धारे धीरे कदम बढाय।।
नाश–विध्वस भी हाय रोया। धीरज दख धीरज है खाया।।

दोहा – जग कहता क्रूस शापित यह सुख–दुख प्रतिमान।
जीवन की विजय यात्रा एक विजयी अभियान।।

क्रूस यात्रा (लूका 23 26)

दूर मजिल बढता राही। पद–चिन्ह रक्तिम द गवाही।।
उठता–गिरता बढ़ता जाता। क्रूर समय कोडे लगाता।।
उपहासा अनक वह अकेला। हाय पराभव कैसा धकेला।।
दूर खड सग साथी सार। छूट गय आस क सहार।।
रह क्षीण कदम डगमगात। हौसले सब छूटत जात।।
रिश्त मानवीय हामीदारी। पथिक शिमौन का भागीदारी।।

दाहा – टट मन का सहारा क्रूस उठा चला सग।
जग कहता बेगारी प्रभु दूत सजल सग।।

क्रूस यात्रा—क्रूस अर्थ (लूका 23 27)

वजूद सारा दर्पण बन जाता। हृदय का सौरभ तृप्ति पाता॥
दिव्य प्रेम क्रूसित अपनाता। प्रभु म निष्ठा क्रूस बढ़ाता॥
मन बनता सुसम्पन्न सुजाता। अभिव्यक्ति मुक्ति क्रूस देता॥
सुख दुख निस्पृह भाव जगाता। सात्विक उपासना सिखाता॥
जीवन की तलाश एक परागी। पवित्र प्रार्थना सा अनुरागी॥
परिष्कृत मानवता हो जाय। व्यक्ति सम्पूर्णता को पाय।

दोहा — धरा स्वर्ग दरशन इसमें शुचिता का परम भार।
निर्वेद नहीं रचना धर्मी निरभ्र जीवन डार॥

क्रूस यात्रा— अंतिम भविष्य वाणी (लूका 23 28-32)

सदा द्रवित रब्बी—देह कांपी। नस नस म पीड़ा व्यापी॥
अनुरक्त नेत्र देखा नर नारी। श्रद्धा—मय स्नेह विलाप भारी॥
सहज अनुभूति वही अपनापा। वचन सुनाया क्षितिज मापा॥
हे यरूशलेम पुत्रियो न रोओ। अपने जीवन—दीप बचाओ॥
समय शूल दिन चुभोयेगा। धार शोणित एसी बहायेगा॥
वेदना भार नहीं उठेगा। जीवन कोई बिरल बचेगा।

दोहा — मृत्यु को सब ढूंढ़ेगे निर्ममता का राज।
हरे वृक्ष कट जायगे निर्लज्जता का ताज॥

क्रूस यात्रा — उद्वेलन

विगलित हो सुधि बिसराते। विह्वल प्रेमी जन अश्रु बहाते।
सित आस्था के चेतन विश्वासी। पैनी नागरी गंध सुवासी॥
मिट रूढ़ियाँ त्वरा दिखाते। बदले परिवेश बोध पाते॥
ध्वनित प्रतिध्वनित रहा होता। उत्सर्ग रब्बी दे रहा न्यौता॥
प्रेम भाव युग गुम्फित जागा। रक्त—स्नात बह रहा परागा॥
नव धड़कन मुखरित होती। विनिमय मे उपायन बोती॥

दोहा — अश्रु—माला—हार पिरात मन रश्मि उपहार।
बिछुड़न की यह बेला सिसक रहा प्यार॥

क्रूस यात्रा– सचेतन

होते सघर्षी क्षण बवाकी। भीड़ जुटाते निष्क्रिय ताकी।।
जीवन क्षितिज विराधाभासी। अटक ऊहा–पोह अविश्वासी।।
कहाँ ठहर–कब मुड़ जाय। किस पगडडा पर रूक जाय।।
सुन न पाये उद्घोष सुहाने। य राही उनीद मनमाने।।
अपनत्व विनिमय क्या जाने। सुवासित सकल्प न पहिचाने।।
रब्बी उत्पीडन बना आह्वानी। अभिधा मे सचतन वाणी।।

दोहा – क्रूस है दर्पण निखरक, मजुल मानस निखार।
आत्मा स कर परामर्श मिट जाये सब खार।।

क्रूस यात्रा – रूपान्तरण यात्रा

क्रूस जीवन की भाव–धारा। एक *सच्चाई चेतन कर्मधारा।।*
मिट जाये मन की अधियारी। रक्त बूँदे बने उजियारी।।
मन की मिट जाती एषणाए। रूपान्तरण पाती कुत्साए।।
अर्न्त–दृष्टि क्रूस प्राण–धारा। वह मैं ही , कहे अश न्यारा।।
चेतन दृष्टि का ज्ञान–दाता। चलते रहा मिल मुक्तिदाता।।
क्रूस कसौटी जो चढ़ जाय। निर्मलता को वह ही पाय।।

दोहा – सूक्ष्म लोक की यात्रा सवर्धन ऊर्जा प्राण।
जल–कण से भिन्न जल–राशि, समझ रब्बी का मान।।

यीशु गुलगुता पहुँचे (लूका 23 34)

दूर गुलगुता पठार दिखाता। दुर्गम पथ अब सहज सुहाता।।
स्थान यही कपाल कहलाता। साधक यहीं है मुक्ति पाता।।
जीवन देकर जीवन पाना। मर्म जीवन का समझाना।।
दर्रे पठार पाटना घाटी। समतल सौरभ पाय माटी।।
मन्तव्य यही क्रूस यात्रा। पहुँचे गन्तव्य पूरी यात्रा।।
पिता सग पिता म मिल जाना। शुभ्र मुकुट वस्त्र धवल पाना।।

दोहा – याशु का उत्सर्ग अनुपम इन्सान बने इन्सान।
युगान्तकारी आलोक जीवन एक अभियान।।

यीशु क्रूस पर (लूका 23 33-38)

श्रापित कर यीशु वस्त्र उतारे। अहरी ज्यो जल्लाद निहार॥
बाँध यीशु क्रूस पर लिटाया। फैला बाह कील ठुकाया॥
पैरो को कस कर यू बाँधा। कील ठाक साथ लक्ष्य साधा॥
झटका देकर क्रूस उठाया। हाय! क्रूस पर यू लटकाया॥
हाथ पैरो बहा लहू-धारा। प्रथम उत्सर्ग वादी निहारा॥
अभियोग पत्र सग लगाया। हास कर उपहास दोहराया॥

दोहा — यहूदियो का यह राजा जग का किया त्राण।
निज को बचा न पाया क्रूस लटकता प्राण॥

वस्त्रो का बँटवारा (मरकुस 15 25-28)

दोषी सग दोषी बतलाया। प्रथम प्रहर यीशु क्रूस चढ़ाया॥
दाये बाये स्थान ठहराये। सग दो डाकू क्रूस चढ़ाये॥
शास्त्र वचन, या हुआ पूरा। निष्प्रभ किया उसे भरपूरा॥
वाह! मंदिर गिराने वाले। दिन तीन म बनाने वाले॥
उतर क्रूस से दिखलाओ। विश्वास हमारा यूँ बढ़ाओ॥
फिर उतरा हुआ वस्त्र उठाया। कुरता बुना हुआ दिखलाया॥

दोहा — वस्त्रो पर चिट्ठी डालो? करो न काट न छाँट।
शास्त्र वचन पूरा हुआ आपस मे लिया बाँट॥

क्रूस पर कहे—यीशु वचन महिमा

सितारे कोई उजले न ऐसे। उत्तरी ध्रुव के तारे जैसे॥
क्रूस वचन उजले ये कैसे। दिव्य उद्घोष पावन ऐसे॥
य हैं अदायगी-ईमानी। इन्सान के जज्बात इन्सानी॥
जोखिम भरी खोज य ऐसे। गिर गया जहाजी कोई जैस॥
कप्तान रस्सी फेकता जैसे। पकड़ जहाजी बचता ऐसे॥
अजीब किस्म का स्नेह ऐसा। पुनर्स्थापित प्रेम करे कैसा॥

दोहा — डूबती मानवता के रक्षक वचन-सलीब।
प्रयत्नशील जो होवे विश्वासी को नसीब॥

'हे पिता, इन्हे क्षमा कर, क्योंकि ये नही जानते कि क्या कर रहे है?"

छद उल्लाला — हे पिता इन्हे क्षमा करना तुच्छ न समझना कभी।
क्योकि ये नहीं जानते हैं कि क्या कर रहे हैं अभी।।

वचन महिमा

कोमलता इस वचन की देखो। भरपूर औदार्य अवलेखो।।
थाह न जिसकी कहती वादी। विनयशील आग्रह सवादी।।
खूनी साजिश को एक चुनौती। आत्मिक सत्यता की मनौती।।
करूण तरल सवेदन—शीला। प्रेमिल वाचिक क्रियाशीला।।
दिलो पर दस्तक सा देता। भटके मनुज को खोज लेता।।
सीमा मे पर, परे सीमाओ। क्षमा ज्योत जलती है पाओ।।

दोहा — परिष्कृत कर स्वभाव मन म भर प्रकाश।
समन्वय का एक विधान ज्योर्तिमय है उजास।।

आवाज दकर यह बुलाता। करते नादानी समझाता।।
मन भावनाए दोहराता। स्वतत्र न मानव कह जाता।।
नियम व्यवस्था समाज देता। बदले मे अनुशासन लेता।।
सकरे मार्ग से मुँह मोड़े। दौड़ रहे जो मारग छोड़े।।
अदायगी भूलते ईमानी। कर जाते चूक अभिमानी।।
करते शरीर सेवी दावे। इच्छा रहित सुकार्य दिखावे।।

दोहा — प्रथम वचन नूरानी कलवरी का सदेश।
दान प्रतिदान अबाधित नवल करे परिवेश।।

आशीष, आशीष आशीष, हम पर उडेल ऐसी।
आमीन, आमीन, आमीन, धरती हो स्वर्ग जैसी।।

क्रूसित दो डाकू (लूका 23 39 42)

लुटेरे दो क्रूस टंगे गाती। जावन का तुझ रहा बाती॥
एक निन्दा कर दकर वास्ता। हे यीशु! क्या तू ही मुक्तिदाता॥
रोक दूसरा उसे सुनाता। दापी तू! दाष दड पाता॥
वह निर्दोष गिना गया दोषा। पाड़ा सह वह कैसा तापा॥
जडता स तू नाता जाड़ा। नफ़रत बाँटा प्रभु स ताड़ा॥
नहीं दो बाल प्यार क बाल। अपना पराया भा न माल॥

दोहा — ह रब्बी क्षमा दिलाय सुन मरी पुकार।
पापी पर दया हाव खुल क्षमा क द्वार॥

दूसरा वचन (लूका 23 43)

मैं तुझ से सच कहता हू कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्ग—लोक मे होगा

छद उल्लाला — यीशु तुझ से सच कहता है स्वर्ग तुझ मिले।
और आज हा हागा साथ नव ज्योति पावन खिले॥

वचन महिमा

तापित प्राणी प्रकाश पावे। दुख की क्रीडा दूर हा जाव॥
दलित जन शरण प्रभु की आव। पुनर्जागरण ज्ञान मन भाव॥
निज प्रकाश से प्रकाश पावे। समीप प्रभु के जुड़ाव बढ़ाव॥
एहसास नया देने वाला। आनद—अनुभूति बढ़ाने वाला॥
महनीया चेतन यह वाणी। पाव जीवन शुद्धता प्राणी॥
रशा—रेशा गूथे सुचेता। भीतर तक अर्न्तमन छू लेता॥

दोहा — प्रेमिल अनुरागी वचन जीवन का महाज्ञान।
उद्भ्रात मन की शान्ति रख प्रभु से पहिचान॥

क्रूस की छाया मे (लूका 23-43)
पश्चाताप् करने वाला डाकू

जीवन के दो पहलू अवलेखो। क्रूस टगे दो डाकू देखो॥
हठ और विनय को पहिचानो। सत्य–असत्य का भेद जानो॥
पाप कभी न छोटा होता। हठ–धर्मी पाप का बीज बोता॥
पहला है बावरा अहेरी। अत समय तक हेरा–फेरी॥
ले रहा दूसरा प्रभु दीक्षा। आत्मिक जागरण मे प्रतीक्षा॥
प्रभु मरा ही है वह मरा। दे दे उसे सब कुछ न तेरा॥

दोहा — अविवेक प्रतीक पहला भटका हुआ विश्वास।
दूसरा पाया उद्धार रख कर प्रभु मे आस॥

आशीष, आशीष, आशीष, हम पर उडेल ऐसी।
आमीन आमीन, आमीन, धरती हो स्वर्ग जैसी॥

तीसरा वचन (यूहन्ना 19 25-27)

माता स यीशु बोले– हे माता! यह आपका पुत्र है।
फिर शिष्य से बाले– यह है तेरी माता।
छद उल्लाला — माता! देखो पुत्र तुम्हारा रब्बी माता से कहते।
हे यूहन्ना तरी माता रब्बी योहन पुकारते॥

वचन महिमा

ज्ञान राशि यह विमल–वाणी। मातृ शक्ति की प्रभा बखानी॥
माता के दो रूप सुहाने। एक जन्म दे जग पहिचाने॥
अक्षय–पात्र स्नेह भरी माता। आत्मा की महा–शक्ति माता॥
जन्म–भूमि है प्यारी माता। पुत्र उसका है दाय निभाता॥
उत्पादिका जग अधिष्ठात्री। त्रास रहित रहे श्रद्धा पात्री॥
मातृ सबध समष्टि धारा। वचन रब्बी सृष्टि को पुकारा॥

दोहा — अनूप प्रमाणिक पावन माँ कन्द्र परिवार।
प्रेम स्नह सकरूण मैर्य वह है ग्रथागार॥

क्रूस की छाया मे —माता मरियम (लूका 19 26)

पुत्र आपका देखिये माता। यूहन्ना प्रभु सकेत पाता॥
कहे वादी यीशु अभिलाषा। पुत्र पर रहती माँ का आशा॥
माता दाय योहन सभाला। अभ्युदित–दिव्य–दृश्य निराला॥
दान पारमिता शिष्य पाया। शीतल छाया माँ आराध्या॥
यश–कीर्ति वय सब कुछ पाया। प्यार अनुपम रब्बी समझाया॥
अटल धैर्य स्थैर्य मन समाया। ज्योति स्वरूपा ममता पाया॥

दोहा — माँ मरियम वदनीया उठाया कर प्रणाम।
जब तक धरा पर जीवन मरियम माँ रह नाम॥

आशीष, आशीष, आशीष, हम पर उडेल ऐसी।
आमीन, आमीन, आमीन, धरती हो स्वर्ग जैसी॥

चौथा वचन (मत्ती 27 45)

यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा– हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्या छाड़ दिया।

छद उल्लाला — ऊँचे शब्द यीशु पुकारा हे प्रभु मेरे तू कहाँ।
क्यो छोड़ दिया तूने मुझ अधकार घेरे यहाँ॥

(सत्य राह पर चलने वाले मन का नैराश्य उद्वेलन सत्य पर्यावसन फिर दृढ़ सकल्प)

वचन महिमा —नैराश्य

सफ्ल पर्यावसन का राही। क्यो! विषण्ण नैराश्य प्रवाही॥
कहे वादी मर्मान्तक पीड़ा। अवसाद अपमान औ व्रीडा॥
अर्न्त दिशाए भाव सचारी। कोमल तीक्ष्ण कठोर भारी॥
'छाड़ दिया परमेश्वर मेरे। सग साथी न तू पास मेरे॥
जब प्रकाश की रही प्रतीक्षा। घिर आया अधकार तीखा॥
शुभ्र सात्विक प्रकार सुनाती। करूणा प्लावित नेह लुटाती॥

दोहा — दस्तक युग न सुन पाया देता रहा पुकार।
तेरा था मैं पुरोधा शक्ति का रहा ज्वार॥

उद्वेलन

वाझ भारी विपदा की बेला। अगाध तिमिर मे मैं अकेला।।
निष्ठुर मूर्च्छनाए प्रहारी। मलिन रक्त सनी देह हारी।।
कौन पराया। कौन सगाती। खुद को भी आज झुठलाती।।
रिक्त हुई दह पात्र प्याली। बँटे वस्त्र झोली है खाली।।
उखडा क्यो ज्याति का बसेरा। क्या तम के बीच हुआ डेरा।।
क्षण एक नहीं विराम पाया। वचन बीज खेता बिखराया।।

दाहा — बैठा न शीतल बयार। चला सत्य की राह।
जग न सदा दुत्कार छला मिली नही क्या छॉह।।

पर्यावसन — दृढ सकल्प

वचन यह प्रात प्रार्थना जैगा। न्यास भव्यना दिव्य ऐसा।।
रम्य आलोकित पुज कैसा। यमक के साथ अनुप्रास जैसा।।
स्वर्णिम छटा ऐक्य अदीठा। चीर अधकार प्रकाश दीठा।।
स्पर्श करे न दुख की ज्वाला। मधुर अति मधुर वचन निराला।।
हृदय बाझिल हल्का हो जाये। मन पर प्रभु नाम अकित पाये।।
दुखी व्यथित मन मैं लाया। दर तेरे प्रभु मैं आया।।

दाहा — सूनी है सब राहे तेरा ही है साथ।
प्रभु अर्चना यह ऐसी थामे बढ प्रभु हाथ।।

आशीष, आशीष, आशीष, हम पर उडेल ऐसी।
आमीन आमीन आमीन, धरती हो स्वर्ग जैसी।।

वचन पॉचवॉ (यूहन्ना 19 28)

यीशु ने कहा— मैं पियासा हूँ

छन्द उल्लाला — शास्त्र निमित पूरा हो अब गहरी है यह सहिता।
वचन—दीप फिर एक जलाया प्यासा सर्व—आत्म हिता।।

इबारत पूरी हुई (यूहन्ना 19 30)

आरम्भ इबारत हुआ पूरा। साथ निभाया प्रभु भरपूरा।।
जय—पराजय गू अर्थ पाया। पूरी—यात्रा समय सुनाया।।
शास्त्र वचन का वह पुराधा। कह वादी, जीवट का योद्धा।।
मानव स मानव का मिलाया। प्रेम—मय मनुज रन दिखलाया।।
न सग्रह न सना बटोरा। प्रेम राही फिरा खारि—खारी।।
प्रसुप्त प्रेम पुनरीप जागे। शस्त्र—भडार जग सब त्यागे।।

दोहा — जीवन उद्देश्य यह नहीं ऊँचा पद नगर प्रात।
प्रभु आज्ञा—बाध निभाया पूरा किया नितात।।

आशीष, आशीष, आशीष हम पर उडेल ऐसी।
आमीन, आमीन, आमीन धरती हो स्वर्ग जैसी।।

छठा वचन (यूहन्ना 19 30)

यीशु न कहा पूर्ण हुआ।

छद उल्लाला — शास्त्र वचन रब्बी निभाया कार्य मरा पूर्ण हुआ ।
सिद्ध लक्ष्य सब स्वात गाया पुत्र मानव सिद्ध हुआ।।

वचन महिमा

प्रभु सवक की यह दृढ वाचा। पूरा कर वाचा जो बाँधा।।
टूट देह या प्राण छूटे। धर्म—आनद समष्टि लूटे।।
अनवरत प्रकाशित वचन ऐसा। देह प्राण चेतन कल्प जैसा।।
प्रभु म जीवित रह अनुरागी। अनत जीवन पावे त्यागी।।
पूर्ण स पूर्ण बन विश्वात्मा। प्रभु स प्रकाशित पूर्णात्मा।।
महान है यहा शब्द यात्रा। कौन मापे बाध—अन्त—मात्रा।।

दोहा — यह मानवता परिसीमा आत्म—विकास द्वार।
पूरी कर शक्ति पाता लक्ष्य सिद्धि की पुकार।।

आशीष, आशीष आशीष हम पर उडेल ऐसी।
आमीन, आमीन आमीन, धरती हो स्वर्ग जेसी।।

सातवाँ वचन (लूका 23%46)

यीशु ने पुकार कर कहा– ह पिता मैं अपनी आत्मा तर हाथा म सौंपता हूँ।

छद उल्लाला – ॐ शब्द यीशु पुकारा हाथा म तर पिता।
सौंपता अपनी आत्मा मैं सभाल प्राण ह पिता।।

वचन महिमा

वचन दीप्ति सुहानी कैसी। सदा नूरानी रह जैसा।।
पवित्र हृदय का वचन प्रकासी। जागृत एक सकल्प सुवासी।।
स्वर्गिक आभा मन मुसकाता। हृदय सितार झकृत कर जाता।।
नित नित प्रभु की छाया पाता। विश्वास दीपक सदा जलाता।।
प्रभु की प्रतिछाया मे जाता। माधुर्य सुधा नित नित पीता।।
दिव्य स्वातत्र्य अद्‌भुत कैसा। फिर न झुके बंधे कहीं जैसा।।

दाहा – पलट जाय मन काया सदंशा यह अज्ञात।
दुध–मुँहे बालक जैसा मन हाता नव–जात।।

आशीष, आशीष, आशीष, हम पर उड़ेल ऐसी।
आमीन, आमीन, आमीन, धरती हो स्वर्ग जैसी।।

प्राण–उत्सर्ग (लूका 23 46)

पहर मध्यान्ह अब दिखलाया। घंटे छ रब्बी दुख पाया।।
गहरायी वादी ल उसाँसे। मुँदती पलके टूटती साँस।।
जीवन पूर्ण समर्पण गाता। पिता सग पिता मे समाता।।
चारो ओर रब्बी निहारा। फिर ऊँचे शब्दो पुकारा।।
सौंपता हाथो म तेरे । अपने प्राण हे पिता मेरे ।।
त्याग दिया देह का डेरा। प्रकाश गया छाया अधेरा।।

दाहा – जग जुटा देखे तमाशा टगी देह निढाल।
सूनी आँख स्याह सपन धर्मी प्रतारण काल।।

यीशु की मृत्यु—कुछ घटनाए

अधकार छा जाना (मरकुस 15 53)

अधकार एसा घिर आया। पहर तीसर तक रहा छाया।।
प्रकाश खा गया कहे वादी। यहाँ तम का डरा विवादी।।
निराश जीवन छिप–छिप रोता। आह भर नभ विद्‌लित होता।।
अधकार पूर्ण दिन यह कैसा। दुख प्रतारण सहे सत्य जैसा।।
कुटिल मन की जटिल कुत्साए। बनी तिमिर कुहास भटकाए।।
क्या! तम सत्य छिपा सकेगा! प्रकाशित ज्यात बुझा सकेगा।।
दाहा — शक्ति–पात शक्ति स्फुरण प्रकाशित है प्रकास।
दूर नहीं सबेरा नया स्वर्गिक दिव्य उजास।।

धरती का डोलना (मत्ती 27 51)

प्राण त्यागा यीशु अनमाला। उत्सर्ग निराला यह अमोला।।
धरा दहल गयी और डाली। छली जायगी कब तक भोली।।
सागर लहर तट टकरायी। लौट विहल बावरी चकरायीं।।
सत्य क्रूसित कर दिखलाया। धरा पर पाप बोझ बढाया।।
तापित्र शापित तडपीं उसाँस। धरता पाताल उच्छवासे।।
प्रम भाई–चार को काड़। *छली लुटेरे स्वतत्र छोड।।*
दाहा — काँप उठी सृष्टि सारी छिन गया हृदय चाव।
खड खड मानवता काँप रहा सदभाव।।

चट्‌टाने तडकी , कब्रे खुल गयी (मत्ती 27 51 52)

कबरे खुलीं तडकीं चट्‌टान। घन बिजली चमकी अनजाने।।
युगा युगो से जो थे साये। जाग उठे पछताये रोये।।
कठोर मन तड़के ज्यो चट्‌टान। द्रवित हुए सत्य पहिचाने।।
अधकार की कब्र मे सोया। उद्‌दामी प्रबल मन भी रोया।।
वादी कहे कब्रे खुलीं कैसे। प्रकाश जीवन पाया ऐसे।।
स्व पर विजय मन हरषाया। अनत जीवन मारग पाया।।
दोहा — मानव का अपना निर्णय बनाता कर्म प्रवाह।
रब्बी वचन हुए फलवत आये सब प्रभु छाँह।।

मंदिर के पर्दे का फट जाना (मरकुस 15 38, मत्ती 27 51)

परम–ज्ञान की बात सुहानी। कहे वादी यह प्रीत पुरानी॥
रूप प्रभु का है विश्व–व्यापी। उसी म सृष्टि वह सर्वव्यापी॥
विश्व–उद्यन रूप रब्बी धारा। नभ मडल का अनुपम सितारा॥
छलक रहा आयास छविमानी। जग समझ त्रिएक्य प्रभु वाणा॥
रूढ बडियाँ रीतियाँ छोड। पाप–बलि राति–प्रीत ताड॥
मन का परदा रब्बी हटाया। भवन परदा दो टूक गिराया॥

दोहा – प्रभु प्रकाश दखो प्यारा मन–मदिर प्रभु–रूप।
जग कह मदिर परदा दो टूक फटा अनूप॥

मृत यीशु को भाले से बेधा जाना (यूहन्ना 19 31–37)

पर्व पास्का दिन सबत तैयारी। क्रूसित रहे न कोई दहधारी॥
जा मृत उतार उसे दफनाव। जीवित का ताड टाँग हटाव॥
दह निढाल यीशु अवलखा। पुष्टि कर मार भाला देखा॥
रक्त औ जल तरलित प्रवाही। 'यीशु मृत हैं देता गवाही॥
हड्डी एक न ताड़ी जायेगी। शास्त्र वाणी सत्य सुनायगी॥
क्रूसित मृत्यु रब्बी ने पाया। शाकित सदश युसुफ रूलाया॥

दोहा – कर साहस पास पिलातुस माँगा याशु मृत–देह।
आज्ञा–पत्र युसुफ पाया द्रवित मन बहा नेह॥

क्रूस की छाया मे शिमौन कुरैनी (लूका 23 26)

नत–शिर खड़ ये क्रूस छाया। सिसकता प्यार मन कुम्हलाया॥
मिले समीहा कहती वादी। रब्बी स अभी हैं सवादी॥
शिमौन कुरैनी वह बेगारी। बना रब्बी का क्रूसधारी॥
गन्तव्य पहुँ ा क्रूस उतारा। धन्यवाद रब्बी ले नाम पुकारा॥
कठिन राह का रहा सहारा। सेवक मैं आप स्वीकारा॥
उपकृत हुआ आप अपनाया। आज प्रभु से सब कुछ पाया॥

दोहा – धन्य है जीवन मेरा मिला सवा का ज्ञान।
अवसर मिला मुझ पुनीत आप प्राणा के प्राण॥

क्रूस की छाया मे — यूहन्ना' (यूहन्ना 19 26)

प्रमिल शिष्य यूहन्ना प्यारा। अतरग सबल वह दुलारा।।
खडा आहत प्राण सजोये। उच्छ्वासा मे साहस बोय।।
मौन सर्मपण प्रहर विषादी। सभाल माता अवसादी।।
आत्म—सात् करता उद्भासी। आलोकित प्रम रब्बी प्रकासी।।
गति चक्र का मणि उजासी। धीर गभार आत्म विश्वासी।।
रब्बा सौष्ठव शक्ति पूरा। प्रभु म तन्मय रही न दूरी।।
दोहा — जिससे प्रेम रखता था जा रब्बी विश्वास।
निज धर्म स्थित कर्मयोगी प्रतिरद रब्बी पास।।

क्रूस की छाया मे—''मरियम मगदलीनी (यूहन्ना 19 25)

प्रेम आलुप्त छाया जैसी। वारि स्नात परिप्लावित कैसी।।
लौकिक मोह मर्यादा छोड़ा। और रब्बी से नाता जाड़ा।।
सत्य की राह रब्बी दिखायी। आत्मा पावन निर्मल पायी।।
दूर खड़ी मौन सकुचायी। स्तब्ध—श्वास रूप मुरझाया।।
प्रभु चरणो तक पहुँचू कैसे। अश्रु से चरण भिगाऊ कैस ।।
अपलक देख रक्तिम दही। मूर्त्त करूणा सी वह विदहा।।
दोहा — मगदलीनी द्रवित मन कातर वह निढाल।
एक पात्र थी उपेक्षित प्रभु ने किया निहाल।।

क्रूस की छाया मे—यीशु कुर्त्ता पाने वाला सिपाही (यूहन्ना 19 24)

जिसन प्रभु कुरता था पाया। सिपाही वह पन हरपाया।
मराहता कता अनबाला। गूँथन दखा है अनमाला।।
दख रहा आलोक त्कार। रब्बी उत्पीडन अ मन नार।।
स्नह शपथ रब्बी हैं निर्दोपी। निष्पाप तनिक नही वह दोपी।।
नया मन रूप पाता उजेला। रब्बी सग मिलता वह अकेला।।
सरल निर्मल पावन रब्बी कैसा। अभिनव तना ज्याति जैसा।।
दोहा — मन ही मन शीश नवाता निकला पर्ची स नाम।
प्यार गूँथन गुँथ गया सवक बना अनाम।।

क्रूस की छाया मे—पसली छेदने वाला सूबेदार (यूहन्ना 19 34)

सूबेदार आज्ञा—पत्र पाता। बर्छी से पसली छेद दिखाता॥
पानी बन रक्त हुआ प्रवाही। मृत—देह की देता गवाही॥
बेझिझक मृत देह उठाओ। दॉव दावे जोखिम ले जाओ॥
अपना दाय मैंने उतारा। यह रहा मृत राजा तुम्हारा॥
अतिम बार जो यीशु देखा। ठिठक सहम कर फिर अवलखा॥
पवित्र प्रेम का रूप पहिचाना। मनुज मन के सत्य को जाना॥

दोहा— रिसता घाव जो देखा, विकल हुआ कुछ मौन।
मन बिधा कुछ उन्मना विभव—भूति यह कौन ?॥

यीशु का अभ्यजन और दफन (यूहन्ना 19 38-40)

कलवरी निकदिमुस युसुफ आया। गधरस अगरू मिश्रण लाया॥
कीलित रब्बी देह निहारी। सुकोमल मृत—देह उतारी॥
द्रव्य लेपन करता विलापी। बिलख—बिलख हृदय रोता तापी॥
चादर मलमल रब्बी लपेटा। शान्ति अद्‌भुत, छॉह प्रभु लेटा॥
पर्वत श्रेणी मध्य एक बारी। चट्टान बीच एक कब्र दुख हारी॥
याशु मृत—देह वहॉ सुलाया। पत्थर पट्टी युसुफ ढकवाया॥

दोहा— एक करूण प्रकाश ओझल पाप का कर विनाश।
घूम रहा था दुष्चक्र, फिर छीरे आकाश॥

चौथा खड

पुनरूत्थान

प्रकाश रूप विदेह कह वादी। ज्योतिनाद सर्वज्ञ सत्यवादी॥
आदि मध्य अत ऋत उद्‌गाता। दिव्य आनद क हुए दाता॥
अनत रूप अक्षय प्रेम—धारा। ज्योति रूप प्रभु युक्त ज्योत—धारा॥
सूक्ष्म व्यापक शक्ति सर्व ज्ञाना। हुए प्रामाणिक शास्त्र माना।
परम—पद वरणीय परभाती। प्रभु ज्यो सुविभव रूप विभाती॥
दिव्य—आत्मा स्वर्गिक उजासी। सर्व व्यापक सहचर प्रकाशी॥

दाहा— आत्म आदेशित सत्य मृत्यु का कर उल्लघन।
रब्बी हुए पुज प्रकाश विश्व रूप परम वदन॥

'प्रकाश पूर्ण समाधि'' (मत्ती 28 11-15)

लौट शिष्या पास वे जाती। जा कुछ देखा सब सुनाती।।
रूकी वहीं मरियम मगदलीनी। राता भावित प्रीति झीनी।।
'तू क्यो है रोती? हे नारी। कहाँ रखा रब्बी ढूंढी वारी।।
कृपया बता दा समझी माली। मरियम! हे रब्बी! प्रीत निराली।।
निकट न आ पिता पास जाना। जा शिष्या पास दरस बखाना।।
उठ शिष्य दौडते आय। कब्र प्रकाशित महिमा गाये।।

दाहा — प्रहरी भयभीत भागे महापुराहित रक।
चुरा ले गय शिष्य मिल कह धर्म वृद्ध सशक।।

किल्युपस और लूकस को दिव्य दर्शन (लूका 24 13-35)

लूकस—किल्युपस गाँव जाते। करते याद रब्बी सुख पाते।।
सहचर बन रब्बी मुसकाते। त्रिएकत्व रूप प्रभु समझाते।।
पहुँचे गाँव बने प्रभु मीता। भोजन आशीष माँगी सप्रीता।।
खुली दृष्टि रब्बी—रब्बी पुकारे। आझल रब्बी दरस निहार।।
आनद मडप छाँह कैसी। समाये सृष्टि—दृष्टि निक्षेपक कैसी।।
कैसे पावन वचन हरपाते। मन प्रकाश बन राह दिखाते।।

दोहा — हृदय उल्लासित ऐसा रूका न हर्ष अतिरक।
लौट यरूशलेम आय सुना रह प्रभु टक।।

ग्यारह प्रेरितो को दिव्य दर्शन (यूहन्ना 20 19-23)

भयभीत शिष्य सप्ताह बीता। करते प्रार्थना कहाँ मीता।।
मिल तुम्हे शक्ति रब्बी बोल। 'ला पवित्र—आत्मा मन खोल।।
दखा घाव सताते प्राणा। चिन्ह ये अमिट जग कल्याणी।।
एक सूत्र म तुम्ह पिरोया। सत्य—बीज प्रेम मन म बोया।।
शिष्य प्रभु के बढ़े वृक्ष जैसे। फल फूल छाँह द एस।।
प्रभु मान बढ़े तम सहारो। प्रेम क्षमा क्षण—क्षण विचारा।।

दाहा — दरस प्रभु द्वार खोला हुई हताशा दूर।
आनदित शिष्य विभार प्रभु म हुए भरपूर।।

दिदुमुस और 'थोमा' को दिव्य दर्शन (यूहन्ना 20 24-29)

हे दिदुमुस! आ समीप मेरे। बढा विश्वास, चल तू उजेर॥
प्रभु मे स्थिर कर मन विश्वासी। भटक न तू नैराश्य उदासी॥
रहे सदा तेजोमय आशा। जानते प्रभु तेरी निराशा॥
दृष्टि विषमता, न अपनाना। समझ प्रभु इच्छा दरस सुहाना॥
देख चिन्ह थामा अविश्वासी। कठोर मन न पावे उजासी॥
अन्तकरण मलिन शुद्धि पाया। अमित महिमा ज्ञान-दरस पाया॥

दोहा — प्रभु मरे परमेश्वर दिदुमुस उठा बोल।
क्षमा क्षमा क्षमा चाहू, दरस यह अनमोल॥

सागर तट पर शिष्यो को दिव्य-दर्शन (यूहन्ना 21 1-14)

तट सागर प्रात काल सुहाना। तिबिरयास पर दरस लुभाना॥
प्रभु दरस अभिलाषा जागी। ध्यान निष्ठ से बैठे सुभागी॥
ले जाल पतरस गये किनारे। हेर हेर थके रब्बी पुकारे॥
प्रविष्ट हो गहरे पायेगा। भरा जाल तू उठायेगा॥
प्रकाशित वचन रब्बी सुनाते। प्रभु सेवा की याद दिलाते॥
प्रमाद मन का दूर हटाया। विनाश-विकर्षण से बचाया॥

दोहा — दिव्य ज्ञान शिष्य पाय ज्ञान दिव्यान्न दान।
बोधित मन तज पाया प्रभु मे ज्योतिर्मान॥

अन्तरदर्शन यात्रा गलील से बेतनियाह तक (मत्ती 28 16-20)

आस्था आनद प्रेम जगाने। अनास्था भीरू मदीय मिटाने॥
भाव कुत्सा विजय दिलाने। दया करूणा महत्ता समझाने॥
ससृति सेवा सेवक बनाने। व्यष्टि मे समष्टि स्त्रोत गाने॥
करते व अन्तर्दर्शन-यात्रा। शिष्य ग्यारह प्रकाश-यात्रा ॥
घाटी पार गलील आते। पर्वत श्रेणी श्रृग चढत जाते॥
नीचे तरगित समुद्र नीला। ऊपर स्वच्छ आकाश सुनीला॥

दोहा — पहुँचे उस शिलाखड सुनते जहाँ उपदेश।
शिलाखड पर बैठे रब्बी थे दिव्य वेश॥

अन्तरदर्शन यात्रा– तैयारी (लूका 24 50-53)

प्रकाश–स्नात रब्बी सुनाते। राह निर्देश सब समझाते॥
तिमिर आवरण अब हटाने। और प्रकाश ज्योत जलाने॥
उठो प्रकाश – स्त्रोत बन जाओ। जग है प्यासा प्यास मिटाओ॥
उठ यात्री और कर तैयारी। उठ सभल सभाल दाखवारी॥
पथ है दुर्गम यात्री अकेला। अजित–स्नात गाना अलबेला॥
गन्तव्य लक्ष्य शिष्य पाते। रब्बी सग 'बेतनियाह जाते॥

दोहा – सब को पीड़ा अपनी कहा हृदय की बात।
जीवन है एक वरदान उत्पाड़न है निपात॥

अन्तर्दर्शन यात्रा– उठ प्रकाश देख

उठ प्रकाश देख खोल आँख। प्रज्ञा–चक्षु की फैला पाँख॥
यह तेरी ही तो है काया। तम की बना रही जो छाया॥
पथ यह गौरव–मय प्रकाशी। द्वार द्वार है यहाँ उजासी॥
साहस कर उठा ले कूँजी। स्वर्गिक दान की अकूट पूँजी॥
कुजी जो एक बार उठाये। हर भाति पर विजय वह पाये॥
मन आल्हादित तू घबराता। देख प्रकाश सग रब्बी आता॥

दोहा – सकट का सहचर सहज रखता तुझ से प्रीत।
हर विपदा से बचाय सच्चा है वह मीत॥

अन्तर्दर्शन यात्रा–चेतावनी (यूहन्ना 21 15-19)

सावधान! घातक है छाया। बिध करेगा 'विराग मन काया॥
दुष्ट सदेह कु–बीज धरेगा। चढा शिखर नीचे पटकेगा॥
दह–बधन धन दलित करेगा। 'दीप–शिखा सा मन काँपेगा॥
तन पर घावो के चिन्ह होगे। लोहित पाँव काठ जड़ होगे॥
श्रम तेरा ढहता जायेगा। वय–पराभूत दह पायेगा॥
आत्मा का बल उखड़ न जाय। परिर्वतन से डर मुकर न जाय॥

दोहा – धन्य प्रभु कहते रहना न बिसराना उपकार।
पिसे हुओ के लिये प्रभु अनुग्रह रख अपार॥

अन्तरदर्शन यात्रा—प्रभु एहसास रख (युहन्ना 21 15 17)

शुद्ध मन आलय परमात्मा। सहज भाव परितृप्त आत्मा।।
प्रभु मे अविरत रहे आह्वानी। अर्न्त दीपित प्रार्थना ध्यानी।।
रहे स्वभाव फिर प्रभु साक्षी। परिपूर्ण प्रफुल्ल मधु भाषी।।
चिन्तन गत्यात्मक रहे सुवासी। 'वह मुझ मे 'मैं क्रिया उजासी।।
देख दिव्य सौंदर्य की झाकी। प्रभु की प्रीत रीत है बॉकी।।
शुद्ध प्रकाशी प्रभु अविनाशी। स्फटिक—रेख बन तू प्रकाशी।।

दोहा — चैतन की विश्व—चेतना, ज्ञान से परे प्रेम।
प्रम शक्ति बलवत बन रब्बी से सीख नेम।।

अन्तर्दर्शन यात्रा—नया जन्म (यूहन्ना 21 17-18)

नया जन्म ले मिटे पुराना। पुनरुत्थान मे सृजन सुहाना।।
सर्व समुद्भव चैतन्य जागे। उमडे स्रोत अनत तम भाग।।
देख चारो ओर उठा ऑखे। चढ शिखर मन खाल पॉखे।।
तू अजेय—शक्ति मन विजेता। प्रवाहमानी प्रज्ञा सुचेता।।
प्रभु चाहे तू होवे भाषी। तेर प्रकाश का अभिलाषी।।
प्रकाशमान तू, प्रकाश पाये। तरे ऊपर प्रभु तेज आये।।

दोहा — जीवन मे भर आलोक प्रभु मे हो द्युतिमान।
दर्शन अलौकिक तू पाय प्रभु मे शोभायमान।।

अन्तर्दर्शन यात्रा—अनुगमन (यूहन्ना 21 20)

शीतल प्रकाश हृदय समाया। गगन सा विस्तृत वितान पाया।।
वचन ईश्वरीय अभय वाणी। अनुष्ठानी मन हुआ प्रमाणी।।
सग्रथन दिव्य गान सुनाता। पुलकित मन स्तुति प्रभु गाता।।
दिव्यान्तर यह कैसा सुहाना। नयी ऊष्मा का नया गाना।।
प्रभु मेरे! मैंन पहिचाना। जीवन एक इबादत—खाना ।।
ठूठ भी पल्लवित हा जाये। पत्थर भी बोल औ गाये ।।

दाहा — ह प्रभु मैं हूँ तेरा तू मरा चरवाह।
कडवाहट सब पायूगा रलूँगा तरी राह।।

अन्तरदर्शन यात्रा –आशीष

तूने पाया प्रभु का आत्मा। प्रभु आशीष तू निर्मल आत्मा।
प्रस्तर–प्रभु–भवन का प्यारा। मानवता का दृढ़ सहारा॥
प्रभु मे मृत्यु प्रभु मे जियेगा। जग अकृतज्ञ नहीं मानेगा॥
बूँद–बूँद तू निचुड़ जायेगा। जग की करूणा न पायेगा॥
जल रक्त की धारा बहाता। करूण–रक्त ही मनुज बचाता॥
हे मबुद्ध पथ अनुयायी। प्रभु मे सज्जित, कर अगुवायी॥

दोहा – करूणा ईश्वरीय विधान रोके कौन प्रवाह।
यह नियमो का है नियम सनातन प्रेम अथाह॥

यीशु का स्वर्गारोहण (लूका 24 50-53)

रब्बी संग शिष्य सु–संवादी। पहुँचे बैतनियह कह वादी॥
नील–नभ–वितान मेघ छाया। पुलकित मन दृष्टि जो उठाया॥
धवल–वस्त्र रब्बी धर्म–काया। मेघ–सिंहासन पर दिखलाया॥
प्लावित स्निग्ध प्रकाश ऐसा। प्राणि–मात्र हेतु शान्ति जैसा॥
आऊँगा मैं फिर आऊँगा। प्रेमिल धरा फिर निखारूँगा॥
करूणा बादल बन हरषायी। आशीष बन बरसी सरसायी॥

दोहा – बाँहे उठाये रब्बी देते आशीर्वाद।
करूण–ज्योत का अभ्युदय जगा हृदय मे नाद॥

महिमा (मत्ती 28 16-20)

स्वर्ग धरा गल–बाँहे डाले। स्वर्गिक विभव छलकते प्याले॥
आलोकित कण कण है निराला। डाल डाल स्वर्णिम उजियाला॥
हजारा उद्घोषक रागे। झूमे आनद मनाएँ जागे॥
खुले स्वर्ग के द्वार सारे। अभिनदन कर दूत निहारे॥
स्वर्ग सिंहासन सत्य विराजा। पहिना मुकुट रब्बी अधिराजा॥
महिमा–मय शान्ति ज्योतिमानी। करूणा क्षमा दया द्युतिमानी।

दोहा – दिव्य अनत–प्रेम रब्बी शक्ति और शक्तिमान्।
मृत्युजयी सत्य आशा जीवन ज्योतिमान॥

स्तुति–गान

स्तुति गात शिष्य मिल सारे। रब्बी विभुता ससार निहार।।
अप्रमय तज विश्व कल्याणी। मुक्ति प्रदाता सत्य प्रमाणी।।
न्याय वाणी शान्ति का राजा। अपूर्व शोभा राजाधिराजा।।
चेतन साथी सुफलदाता। स्वज्योत आनद हरपाता।।
पापा का नाश करने वाला। भेद बुद्धि को हरने वाला।।
प्रेम का दाता मदा वरदानी। अनुग्रही आशीष सुहानी।।

छन्द सार – आशीष आशीष आशीष हम पर उडेल एसी।
आमीन आमीन आमीन धरती हो स्वर्ग जैसी।।

ईश्वरीय नाम

नाम इम्मानुएल कहलाया। युग मसीह–मसीह कर गाया।।
आने वाला था जा आया। सदेशा शान्ति जग सुनाया।।
अज्ञान अमर्ष मिटा गलाया। जीवन प्रेमिल गीत बनाया।।
समझे मानव अपनी सीमा। ईश्वर–सत्ता सदा असीमा।।
युग–युग सुनगा युग–वाणी। उद्वेलित होगा जन मन प्राणी।।
परम पराक्रमी परम प्रधाना। शान्त प्रशान्त मृदुल सुहाना।।

दाहा – स्वामित्व भेद मिटाया बना शत्रु को मीत।।
अपकार मे कर उपकार जीवन रहे पुनीत।।

मीठे बोल

अनत जावन का उद्‌गाता। परे मृत्यु जीवन हरषाता।।
जग जीवन का अनन्य सहारा। पुनरूत्थान मारग न्यारा।।
करूणा से भर हाथ बढाया। युग क पाप बोझ उठाया।।
मृत सचयन जीवन पाया। जीवन सचारक मृतक उठाया।।
लाया नव चेतन उजियारा। अधोलोक छिपा अधियारा।।
जन मन के दुख हरने वाला। पावन निर्मल काति वाला।।

दोहा – हे पुत्र पाप क्षमा हुए कैसे सुन्दर बोल।
मन की हरते पीड़ा जीवन नाद अनमोल।।

प्रभु पुत्र

सर्वज्ञ सर्वदर्शी कहलाया। प्रभु सवक प्रभु महिमा गाया।।
मन दीपित था पिता जैसा। जग कहता मानव यह कैसा।।
पिता प्रतिकृति बन पुत्र दिखाया। सन्जीवक सज्ञान पुत्र लाया।।
पिता पुत्र और पवित्र आत्मा। तीन शक्ति धारक पुत्र ज्ञाता।।
जीवन जल का अनुपम सोता। वचन–बीज रहा वह बोता।।
सदा रहा जीवन खलिहानी। जग परित्राता पुत्र वरदानी।।

दोहा — एक बीज एक ही पौधा सहस्त्र बीज भडार।
प्रथन बँधन अब खुले फूल खिल ससार।।

यीशु का वैधक रूप

यीशु विभात प्रात उजियाली। आत्मा की चगाई निराली।।
आत्मिक रागो की चगायी। शुद्ध मन की प्रबुद्ध अगुवायी।।
उद्धार पाता अनुपम विश्वासी। जब पछता मन बने कर्म भापी।।
दुर्बल मन रोग मुक्ति पाता। रब्बी वचन वैधक बन आता।।
पतन पुनरूत्थान बन गाता। सात्विक मन प्रभु दर्शन पाता।।
प्रभु अनुग्रह है रोग हारी। निर्बल बल पाता है भारी।।

दोहा — यीशु वचन वैधक सारे स्नेहशील उपचार।
कायो सी पीड़न हरता देता मन को दुलार।।

यीशु का आह्वान

भूल भटका बुलाने वाला। कीमत बड़ी चुकानेवाला।।
झकझोर कर जगाने वाला। जग भ्रान्तियाँ मिटानेवाला।।
दलितो को उठाने वाला। स्थिर प्रकाश देने वाला।।
भेद आवरण मिटाने वाला। नई मनुजता लानेवाला।।
आज कल परसो करे चाहे। करे पाप भूल कोई चाहे।।
जिम्मेदार मनुजता सारी। भूल प्रतिकार चाहे भारी।।

दोहा — प्रभु व्यवस्था उल्लघन जग मे लाता पाप।
कुरबानी वह चाहेगा बन करके अभिशाप।

रब्बी वैभव

स्तुति गाते मेघ वरदानी। जो मैं हूँ सो हूँ वचन प्रज्ञानी।।
सौम्य–सत्य निष्ठा एक उजेरा। सहज उत्कर्ष आशा का सवरा।।
स्वर्गिक विभव धरा ने पाया। यीशु जग मे रब्बी कहल्या।।
ज्ञान क मोती जग बिखराया। दृष्टि सयम प्रेम समझाया।।
मित्र बन ससार मे आया। ऊँचा मान कभी न दिखलाया।।
प्रभु–पुत्र यीशु जीवन कहलाया। सुरभित कर धरा हरषाया।।

दोहा — दिव्य प्रकाश रश्मि सहस्र शात क्राति युगीन।
ऊर्जा शील बन मानव नहीं अशक्त वह दीन।।

भाव–तासीर

जग उद्धारक सब का प्यारा। पावन प्राण शक्ति छद न्यारा।।
इबारत जैसी यीशु वाणी। जहाँ सुने जागे वहीं प्राणी।।
वाद के वर्तुल गिरा मिटावे। समता सम–प्रदाय हरषावे।।
मन का दृष्टि–क्षेत्र बढ़ावे। अन्तर्मन–ज्योत नई जलावे।।
खड बँटे मानव मिल जाते। अक्षाशा पर जीवन हरषाते।।
दस्यु–कुचाली हो अनुतापी। बनते विश्व मानक व्यापी।।

दोहा — उसकी शीतल छाँह म फलवत होती आस।
बोझ डाल दे उस पर और कर तू विश्वास।।

स्वय भू प्रकाश

आत्म–प्रकाश बन रब्बी आय। विश्व–चेतना बन कर गाय।।
जग कहता रब्बी परम–आत्मा। महा–मानव चैतन्य आत्मा।।
गुने मनुज सत्य–असत्य जाने। दृष्टाता की महिमा पहिचाने।।
विलक्षण ज्ञान युक्तियाँ सारी। पावन निर्मल भाव हितकारी।।
स्वयं–भू–प्रकाश बन गाती। प्रभु भक्ति मन मे उपजाता।।
विपद सागर मे तिनके जैसे। पार ले जाय नौका ऐसे।।

दाहा — प्रचुरता से प्राप्त करो सब को है अधिकार।
चोर चुरा नहीं पाय जमा खत्ते भडार।।

त्रि–आयामी

त्रिएक्य की महिमा लासानी। पिता कहा या पुत्र नूरानी॥
पवित्र आत्मा पुकार सुहाना। तीन आयामी सुविज्ञ बाना॥
त्वरा अहं कारक मिटाय। विश्वास आस नम्रता जगाय॥
रिक्त कठौता जल भर लाय। विशाल प्रसाल्क रूप पाय॥
स्वर्गिक रूप अलौकिक निराला। निरमल रिरदय प्रकाश उजाला॥
अर्थो का अनुभव हो परागी। अन्तस की माटी अनुरागी॥

दोहा – जो बचाय वह खाता राज पा राज बाँट।
रखता बचा वह खाता प्रेम की लगा हाट॥

मृत्युजयी रूप

उत्तम मारग खरा सत्य प्यारा। विचार इच्छा शक्ति सहारा॥
अमर रूप यह मृत्यु न पावे। पुत्र पिता एक ही हो जावे॥
जीवन की रोटी वह लाया। शाश्वत जीवन विभव दिलाया॥
वसीयत एक आदमी नामा। रब्बी उल्लास एहसास नामा॥
सद्भाव सचेतन नूरानी। एक अदायगी वह ईमानी॥
सहजीवा, सहज धर्म कल्यानी। प्रार्थना सा याशु नूरानी॥

दोहा – एक समग्र विश्व विभाती अजस्त्र समय की धार।
स्वतप्त अनुभूति महान अनश्वर यीशु प्यार॥

सुमिलन

किरण किरण रग तार तारा। बिखर रही नव उमग बहारा।
लुटा रही दौलत दे न्यौता। प्रेम प्रीत दुलार सगन्यौता॥
गीता भरा एक नव सबेरा। किरण नीड़ पर नया बसेरा॥
चप्पे–चप्पे गूँजा एक नारा। यीशु मसीह दुलारा प्यारा॥
जीवन रश्मि समीहा मसीहा। समुद्भव शान्ति का मसीहा॥
जन मन समुद्बोधन सैलाबी। दिग मडल नम–नमित सिलाबी॥

दोहा – स्वर्ण धूप धुली हवाए धरती हुई निहाल।
धन्य हुआ जग सारा, शान्ति–सुमिलन–काल॥

आशीष, आशीष, आशीष हम पर उड़ेल ऐसी।
आमीन, आमीन, आमीन, धरती हो स्वर्ग जैसी॥

उन्नीसवा सर्ग

प्रकाशित वाक्य

प्रभु रहस्य अदभुत कह वादी। कैदी का दरसन अहलादी।।
दृष्टि–लभ्य योहन समीक्षा। सवादा पतमुस मे शबीहा।।
अन्तर–दर्शन भावी अभिभाषी। गहरे वचन इति सूचक साक्षा।।
कर आत्म–सात् मिले किनारा। गुत्थी भरमाया विश्व–सारा।।
जग विनाशक ध्वज फहराया। तूफॉ है मनुज–मन समाया।।
आशा म निरूपित प्रत्याशा। निराशा मे ज्योतिमयी आशा।।

दोहा — लौट रही प्रभु आशीष सुन योहन की बात।
जो है अल्फा ओमगा कुपित क्यो हैं? प्रशात।।

पृथ्वी प्रभु की कलीसिया

विश्व–व्यापी मडल जग सारा। ससृति सवा है बहता धारा।।
आत्मिक ऐक्य रख विश्वासी। पृथ्वी छोर तक सवा भाषी।।
दीन दुखी दुर्बल को उठावे। प्रभु अराधन महिमा गावे।।
आशीष दान प्रभु से पावे। मडल अगुवाई ऐसी निभाव।।
देह बन मनुज देह जैसे। सुख दुख वहन करे सब ऐसे।।
जन जन वरदान प्रभु का लाया। धरा को स्वर्ग बनाने आया।।

दोहा — फिर क्यो लौट रही है? प्रभु करूणा आशीष।
दानी नहीं प्रतिदानी लूट रहा बख्शीष।।

प्रथम दर्शन–सात सदेश (प्रका वाक्य–अध्याय 1-3)

आत्मिक दरशन योहन पाया। प्रभु–दिन सहित प्रभु दिखलाया।।
शब्द बडा तुरही का सुनाया। दीवट सात प्रकाश दिखाया।।
श्वेत चोगा पटुका बाँधे। तार सात हाथ दाये साधे।।
दडवत कर शीश झुकाया। प्रभु पुत्र महान दर्शन पाया।।
मत डर उठ लिख भावी साक्षी। परखा प्रभु पाया न विश्वासी।।
जिसने प्रभु से प्रेम निभाया। हे योहन वही प्रभु सुहाया।।

दोहा — प्रभु बुलाते द्वार खड़े सुन ल सब सदेश।
पाप–मृत्यु से बचात उठ–पहिन–सुन्दर वेश।।

सात संदेश (प्रका—वाक्य अध्याय 1-3)

हे योहन! लिख संदेश सारे। मंडल—मंडल भेज हरकारे।।
जीवित हुए सब मृतक समाना। टिमटिमाता दीप वह लुभाना।।
वचन जिसने धीरज से पाया। घड़ी परीक्षा प्रभु न निभाया।।
जिस न ठंडा गरम पाया। वह जल गुनगुना भरमाया।।
जीवन वृक्ष—फल मिल न आसी। प्रभु निंदक का नहीं उजासी।।
जागे जो रहे प्रभु का पाता। जो सोया वह कुछ न लाता।।

दोहा— थिर है जो प्रभु विश्वासी लिख पुस्तक में नाम।
बोझ डाल मिटा दूँगा जो लिपटे दुष्काम।।

दूसरा दर्शन (प्रका—वाक्य अध्याय 4)

योहन फिर आत्मा में आया। स्वर्ग—सिंहासन दर्शन पाया
रूप कोई उजला मोती जैसा। यशब माणिक दमके ऐसे।।
मोहर बंद पुस्तक उठाया। दिव्य विराजा कोई दिखलाया।।
मरकत मेघ—धनुषी आभा। ज्योति—पुंज सौम्य मालाभा।।
चौबीस सिंहासन छवि न्यारी। धर्म वृद्ध विराजे द्युति प्यारी।।
चहुं ओर दिव्य घोष उमंगें। विद्युत सी दमकीं तरल तरंगें।।

दोहा— आँख ही आँख ऐसे सिद्ध प्राणी वे चार।
सर्वज्ञ प्रभु पवित्र पवित्र करते सब जयकार।।
युगानुयुग महिमा पावें पवित्र प्रकाश अनंत।
सृष्टि का सृजनहारा जीवन स्रोत अनंत।।

(अध्याय 5 प्रका वाक्य)

दूत एक आह्वान सुनाता। पवित्र पावन पुस्तक दिखलाता।।
'योग्य कौन मोहर तोड़े। स्वर्ग—धरा सोपान जोड़े।।
जार जार 'योहन्न रूलाया। पावन जन ऐसा न पाया।।
अकलुष शुचिता मन धारे। 'मैं आया कोई जन पुकारे।।
'मनुज पुत्र जैसा दिखलाया। सारा दिगंत सुरभित गाया।।
सागर बिल्लौरी हर्ष लहराया। न्याय—अन्याय बोल बताया।।

दोहा— धन्य तू प्रभु का याजक धन्य धन्य तू—दान।
धन्य सामर्थ—ज्ञान शक्ति धन्य—धन्य आमीन।।

सात मोहर (प्रका वाक्य अध्याय 6)

पुस्तक मोहर बन्द अन्वेषी। दर्शन सहित भाव उनमेषी॥
मनुज मन सवार अलबेला। रग रग हय चढ़े अकेला॥
श्वेत हय सवार जग विजेता। सामर्थ ज्ञान वह सत्य प्रणेता॥
हय–लाल सवार वह उन्मादी। धरा शान्ति करे हरण प्रमादी॥
काला हय अकाल सवारी। एक दिनार सेर धान व्यापारी॥
पीत–हय वह सवार विकारी। नाम मृत्यु रोग महामारी॥

दोहा — वृत्ति चार दरस दिखाये जग–व्यापी ये सताप॥
मन ही हय–तू सवार समझ मन के उत्ताप॥

(प्रका वाक्य अध्याय 6 9-17)

ताड़ पाँचवा मोहर लाये। विदीर्ण हृदय थकित बिसराये॥
उत्सर्गी ये आत्मिक दही। वेदी तल बैठे प्रभु–नेही॥
ये अश्रु–रश्मियाँ सत्य–भाषी। ताप तप्त हाहाकार साक्षी॥
पुकारते न्याय कब आयेगा। कीमत रक्त चुकायेगा॥
छठी मोहर धरा अत देखा। प्रकाश रहित सूर्य अवलेखा॥
चन्द्रमा रक्तिम लाल अधूरा। लिपटा पत्र सा आकाश पूरा॥

दोहा — द्वीप पर्वत सब टल गये दिन भयानक प्रकोप।
प्रभु न्याय दिवस आया दहले धरा प्रभु कोप॥

(प्रका वाक्य अध्याय 7)

जग प्रताड़ित जन न्याय पाते। हृदय पर प्रभु छाप दिखाते॥
उत्थान–पतन आधियाँ झेले। हुए न विपन्न सकट से खेले॥
धर्मी जन स्वर्गदूत उठाते। चारो कोनो से धर्मी आते॥
हर कुल–राष्ट्र भाषी आये। श्वेत वस्त्र पहिने दिखलाये॥
दडवत कर शीश झुकाते। प्रभु की जय जय कार सुनाते॥
विश्वासी ये प्रभु मुकुट पाते। निज वितान तले प्रभु बैठाते॥

दोहा — वर–विज्ञ से सत्य प्रतिज्ञ पावन मन का प्यार।
मानव पुत्र, प्रभु सन्तानें रूके नहीं मझधार॥

तीसरा दर्शन—सात तुरही (प्र वा 8 1-7)

गर्जन—शब्द बिजलियाँ कौंध। विकृत मन अठखेल चकचौंध।।
खाल सातवीं माहर दिखाया। सन्नाटा सा धरा पर छाया।।
सात तुरही दूत ले आया। निर्मम विनाश धरा रूलाया।।
तुरही प्रथम सुन धरा काँपी। बदला ऋत चक्र कौन मापी।।
बढ़ रहीं मनुज की एषणाएं। सहते वृथ सतप्त यातनाएं।।
सूखा मरू अति वृष्टि बाढ़। धरा उद्वलित दरक दहाड़।।

दोहा— महकती गध बनी धुआं बरस आले आग।
जल तिहाई डूबी धरा दरक गया एक भाग।।

(अध्याय 8 7-11)

सागर की उत्ताल उछाल। हिल्लोलित करता जल उत्ताल।।
जलनिधि रग सात नीलाभा। यशब माणिक मोती सी आभा।।
सिसक रहा रोता भरमाया। भ्रांत भ्रात सागर हहराया।।
तुरही दूसरी सुन घबराया। खड—मनुज अज्ञान टकराया।।
आग उगलता एक पर्वत आया। जल सारा निज लोहू पाया।।
जलचर प्राण वनस्पति सारी। नष्ट हुए दुखी सागर क्षारी।।

दोहा— तुरही तीसरी फूँकी गिरी आग्निक मशाल।
मीठ स्त्रोत हुए खारे नाग—दौन सी ज्वाल।।

(अध्याय 8,9,10,11)

महा—कलश का समय आया। अविवेकी मनुज प्रलय लाया।।
तुरही चौथी नभ हिलाया। राग कष्ट पाचवी दहलाया।।
युद्ध विगुल छठी ने बजाया। खून—टोना अतिचार लाया।।
फिर दूत धरा उतरा आया। सग खुली एक पुस्तक लाया।।
निगल इसे, मुख मधु सा मीठा। कडुवाहट शुद्ध कर अदाठा।।
ले लगी नाप भवन बनाना। धरा स्वर्ग तक ऊचा उठाना।।

दोहा— तुरही सातवीं फूँकी भवन प्रतिष्ठा पुकार।
उल्लास आनद प्रवाह करूणा प्रेम फुहार।।

चौथा दर्शन (एक रूपक, यीशु—जन्म, तम की पराजय) (अध्याय 12)

दरशन दरस योहन लुभाया। सहित रूपक अनूठा पाया॥
धरा इस्राएल महिमा देखे। सूरज ओढे तेज अवलेखे॥
चॉद पॉव तल नूर देखा। प्रसव पीडित नार रश्मि लखा॥
अजगर लाल जीभ लपलपाये। नवजात मृत्यु घाट पहुँचाये॥
सत्य दड लिये न्याय आया। विश्वासी मन का बल बढाया॥
मानव—पुत्र हुआ देहधारी। पराजय अजगर पाया भारी॥

दोहा — विभोर विस्मित जग दखे क्षमा—दया औ प्यार।
नयी आशा एक दखे द्वार खडी पुकार॥

असत्य का साम्राज्य (अध्याय 13)

चीर सागर लिव्यातान आया। वीभत्स कुचक्री काल लाया॥
सिर पर प्राण घातक घाव ऐसा। सत्—असत् युद्ध हुआ जैसा॥
पराजित सा शक्ति जुटाता। घुटन त्रास सशय फैलाता॥
बड़—बाला निदक प्रभु कैसा। स्वय—प्रभु बन आया जैसा॥
कपट—बुद्धि अन्दाज निराला। निज जैसा काई ढूँढ निकाला॥
दहशती अहसास सुनाता। शिकजे पाशविक सत्य रूलाता॥

दोहा — प्रभुता अधिकार चाहे छ सौ छियासठ अक।
अपूर्ण अह न पूर्ण बने सृष्टि का छठा अक॥

सत्य—विजेता (अध्याय 14)

मगल ध्वनि विजेता सुनात। पर्वत खडे प्रभु महिमा गाते॥
सत्य जग पर आशीष लाता। विध्वस शक्ति रोक हरषाता॥
पैन कूट षडयत्री साये। प्रभु का हँसुआ काट गिराय॥
पवित्र धीरज बीज खेत बोता। मोती सा दाना—एक न खाता॥
महिमा—मय उत्सर्ग बलिदानी। बरसते ज्या फुहार सुहानी॥
अन्त—स्वर के चेतन भाषी। राष्ट—जाति—कुल जग अभिभाषी॥

दाहा — सागर जल—झरन जैसे लुटात विश्व—प्यार।
जल धाराआ जैस सनातन सुसमाचार॥

पाँचवा–दर्शन, कोप कटोरे (अध्याय 15, 16)

कुबुद्धि पाप दड पायेगी। प्रभु विस्मृति ताप बढ़ायगी॥
मन–कषाय कपट लायगा। उलट दारूण कष्ट लायेंगे॥
बौना ज्ञान, प्रभु मान भुलाया। सृष्टि आस्था पलट भरमाया॥
अभिशापो का ढेर लगाया। तपन झुलस नगापन लाया॥
सूर्य ताप बढ़ा झुलसाया। ओले वृष्टि विपदा बढाया॥
धरा सतुलन बिगड़ा सारा। भूडोल ज्वार–प्रलय किनारा॥

दोहा – प्रभु दिन आयगा ऐसे जैसे आवे चार।
जन्म न जो पावेगा। कैसे देखे भोर॥

दर्शन छठा –बध्या–मनोवृति वाले राज्य (अध्याय 17)

दूत एक योहन पास आया। 'इधर आ देख पतित एक काया॥
सागरो पर साज सजाये। बैठी लाज सम्पदा गँवाये॥
किरमिज वस्त्र पहिने लुभाये। निदित 'पशु–सवारी मन भाय॥
सोने का कटोरा उठाये। पीव लाहू दृष्टि लगाये॥
यह है 'महानगरी चतुरायी। वध्या कुटिल वृत्ति निठुरायी॥
झूम रही है मद मतवाली। नगर डगर चित्त हरनेवाली॥

दोहा – मुस्कान यह कूट तमिस्त्रा अतिचार भरा कुभ।
लाशो का बोझ उठाय अनत तृष्णा दभ॥

उद्वेलित उदभ्रात अगड़ायी। विनिमय माधुरी रग लायी॥
स्वार्थ आतक घृणित यातनाए। छीलने लगी तन स्पर्धाए॥
स्वद–रक्त की करूण धाराए। मुट्ठी धान विवश है करूणाए॥
हत्याओ की कुत्स छलनाएँ। झुलसी ज्यातिर्मय आत्माए॥
निर्मल सात्विक उपासनाए। सहती दारूणयुग अभीप्साए॥
प्रभु भवन जले ढहे लुटे। धर्म–रीति नीति आस्था छूटे॥

दोहा– नगर शुचिता हुई कलुषित गिरे जीवन प्रतिमान।
धूर्त परिधान स्वच्छ, रजत कणा का मान॥

जन–जागृति (अध्याय 18)

दूर उद्‌घोष एक सुनाया। महानगरी सताप दिन आया।।
ह अशुद्ध आत्मा व्यभिचारी। तू विलासी नगर व्यापारी।।
गर्व भरी तेरी य हुंकारे। पहुँची स्वर्ग तक करूण पुकारे।।
मृत्यु शोक अकाल सहगी। दीनो की हया भस्म करगी।।
लोहू धक्के जर्मी ये लाशे। बजबजा उठीं ये बन्नू सासे।।
तुझे जलायगी बन ज्वाला। साना चाँदी मोती माला।।

दोहा — तेरी वीभत्स लालसाए घसीटे तन प्राण।
घड़ी भर म नाश हागा बदलेगा दिनमान।।

जागरण स्वर–समवेत (अध्याय 18)

जा तुझ से हुए धनी–मानी। माँझी मल्लाह औ जलयानी।।
जिनके दम पर तू गुर्रायी। छिप छिप माँस रही चुभलायी।।
घड़ी भर म उजड़ ढहग। रोयेगे औ विलाप करेगे।।
फिर न हागा दीप उजाला। न उत्सव कोई राग निराला।।
बड़ी शक्ति से नगर गिरेगा। फिर कभी उठ न पायेगा।।
प्रभु के लोगो बाहर आओ। विनाश स निज को बचाओ।।

दोहा — जागरण के स्वर लहराये। सब मिले सग एक।
मिल अनेक कुल से कुल प्रतीक मम्ना नेक।।

विजयी सकल्प (अध्याय 20)

धरा को निर्मल हम बनाये। प्रम निर्मल मन पुनीत पाय।।
मडल–मडल का हरकारे। दौड रह कलीसिया द्वारे।।
छोडा अनगढ कथा कहानी । ढले ढलाये साचे अमानी ।।
पहिन महीन मल मल आओ। दुल्हिन सा श्रृगार सजाआ।।
प्रभु–भाज बुलाता है आओ । क्षितिज क पार क्षितिज बनाआ।।
मेम्ने का विवाह है आओ। कलासिया को दुल्हन बनाओ ।।

दाहा — वीर वेश सत्य याद्धा श्वत–हय का सवार।
पावन रक्त सना चादर आढ दूल्हा निहार।।

धरा कुल के सयुक्त सुनेता। विश्व–रूपान्तरण अभिप्रता।।
पुर्न–सृजन प्रत्यक्ष–बोध प्रणता। वह तरा भाई कहो सुचेता।।
नव स्वातन्त्र्य भव्य नूरानी। सत्य पैरवीकार लासानी।।
दूर करते जावन हताशा। उदात्त भावना दत आशा।।
श्वेत मम्ने की धरा माता। करे अभिषक आशीष दाता।।
विजय औ विजयी उल्लास मनाते। शहीदी उत्सर्ग याद दिलाते।।

दोहा – सार्विक नियम है शान्ति स्वर्ग स उतर ताप।
शक्ति समृद्धि हजारा मत कर हत्या निर्दोष।।

बीसवा सर्ग

अनत जीवन

श्वेत तरल तरू वल्लरिया मे कौन आज मुसकाया है।।
भूमि नभ जल थल सरावर मे किसन साज सजाया है।।
सुवासित पवन लहरा सुरभित अन्तर व्योभ जगाता है।
पक्षियो का कठरव मधुर यह क्या संदेश सुनाता है।।
मन की चचलता जब छूटे गीत हृदय तब गाता है।।
विश्वास प्रेम और आशा आत्मिक दान पाता है।।
सनातन परमेश्वर महिमा वचन नि शब्द सुनात हैं।।
पावन आदम मन चमन हा, अमन–लय लहक जगाता है।।
बूद बूद मे नील आकाश सिमट विस्तारण पाता है।।
आनद रव अनुभूति अपूर्व हृदय द्वार खुल जाता है।।
अनत प्रशात वचन अनत मन प्रार्थना सजाता है।।
अविनासी स्थिर सत्ता जिसकी महिमा उसकी गाता है।।
कल आज और कल युगानुयुग वह तू है वही है तू।।
आदि अन्त अलफा ओमेगा जो था है वही है तू।।

निर्झर जैसी करूणा उसकी मन उद्यान खिल जाता है।।
करूणा तेरी सदा रहे प्रभु मन आनदित गाता है।।
अन्तर ऊर्जित वचन दमकते दिगत प्रकाश पाता है।।
वचन की सत्ता सृष्टि–दृष्टि नित नित नव रूप गाता है।।
अनत जीवन सूर्य अभ्युदय क्षितिज अरूण हो जाता है।।
एक काव्य–मय दृश्य अलौकिक मन स्पदित हो जाता है।।
अद्‌भुत सवेदन मन को घेरे अनुभूति सत्य पाता है।।
सम्पदा अनूप अनत जीवन मन बुद्ध क्षेत्र हो जाता है।।
मृत्यु और जीवन सत्य मे अनत जीवन आभा है।।
प्रभु ज्योत आत्म उजियारा भाव विनय विकसाता है।।
दीपित हृदय सत्य शक्ति बन भेद मिटा प्रभु गाता है।।
बढ़ावे प्रेम विश्वास प्रीति लोक समाज बनाता है।।
प्रभु अराधन उमड़न ऐसी कोटि कठ मिल गाते है।।
धन्य धन्य सर्व सत्ताधारी प्रभु अनुग्रह सब पाते है।।
परम आनद यह अतिसूक्ष्म निज मन मे प्रभु पाते हैं।।
जब विश्वास चैतन्य पाता परम शक्ति बन जाता है।।
पिता समान अगुवाई देता 'खरा पुत्र बन सुचेता हो।।
हृदय द्वार दस्तक दे कहता, करूणा न्याय प्रणेता हो।।
स्वर्ग राज्य शासन दिखलाता, विश्वासी दान प्रभु पाता है।।
गतिमान रूप प्रभु दिखलाते असख्य रूप सवादी है।।
कण कण तब रस बरसावे प्रभु प्रभुत्व सचारी है।
देखे प्रभु आसन प्रभु सिवाने युग युग सदा सुहाने है।।
दिव्य आसन प्रधी प्रभु भाषा भावित पढ़े प्रभाषा है।।
सारी सृष्टि है प्रभु सिवाना राज परक्रम लुभाता है।।
और नहीं कोई पलवाना, प्रभु ही जीवनदाता है।।
'श्वेत आसन हिम निर्मल कैसा शान्ति गीत सुनाता है।।
उद्धारक आसन तेज न्यारा धर्मी जन को सुहाता है।।
'ले–पालक रूप प्रभु दरशाता वाचा दाय निभाता है।।

रक्त धार पुत्र' जीवन बहाता पिता मुकुट पहिनाता है।।
शब्द वचन यह आसन वाणी, पवित्र वचन सुनाता है।।
भविष्य वक्ता नबी गुण गात सेवक ज्यात जलाते हैं।।
कैसी हो। बारी–वृक्ष शाखा प्रभु राज्य अर्थ गात हैं।।
आसन एलाम जल का सोता अभिव्यक्ति बल बोता है।।
शान्ति–शक्ति राष्ट अपनाता विश्व एक्य लहराता है।।
प्रभु मडलियों विश्व कहलाय प्रभु भवन बन जाता है।।
महा–भोज का आनद परम प्रभु भोज सज जाता है।।
करूणा स्नेह प्रीत प्रेमवारी प्रभु तज पृथ्वी पाती है।।
न्याय आसन से जब प्रभु बोले धरा नभ डोल जाते हैं।।
अक्षर अक्षर लिख सृष्टि सारी दूत पुस्तक सुनाता है।।
क्या तूने किया है मतिहारी अक्षर अक्षर दिखलाता है।।
निर्मम हत्या औ झूठ गवाही निर्दोष को उलझाया है।।
तिनका तिनका अब क्या हेरे प्रभु दिन न्याय सुनाया है।।
राष्ट न्याय भी प्रभु करेगा कार्य तोलता सारे हैं।।
आत्मा का फल शान्ति बाता वह प्रभु अनुग्रह पाता है।।
ज्ञान फल खा आदम चूका प्रभु परखता आत्मा है।।
जन्मे आत्मा तब जन्म पाता, देह जन्म देह हारा है।।
आत्मिक भरपूरी जो पाता श्वास–जीवन क गाता है।।

चौपाई

प्रभु अभिषिक्त करता विश्वासी। निज आत्मा उडलता आसी।।
दरशन झाड़ी मूसा पाया। यहाशू अगुवाई सिखलाया।।
आत्मा दान शमूएल पाया। राजा दाऊद स्तुति गाया।।
यशायाह था नहीं अकला। दानियल पर आत्मा उडेला।।
मत्ती मरकुस योहन्ना लूका। अभिषिक्त पतरस को न चूका।।
नबी याजक और राजाओ। अभिषेक करे महाराजाओ।।

दोहा – पुस्तक खोल यीशु कह प्रभु रखता जीवन टेक।
जन जो जग उद्धार लाता करता प्रभु अभिषेक।।

प्रभु पर रख विश्वास जो दौड़े अनत जीवन पाता है।।
आनद अनन्त सुखदायी, प्रभु पुकार सुन लेता है।।
शक्ति विवश विपन्न को देता, श्रेय मारग दिखाता है।।
उतार फिसलन गड्डे बचाता प्रेयस पतन सुनाता है।।
पहरूआ सा निर्भय बढ जाता मानव धर्म बचाता है।।
उत्सर्ग बेदी का साधक वह प्रभु सेवक हो जाता है।।
अनत व्यापक राज सेवा का द्वार–द्वार वह जाता है।।
सुगधित सुरभित समीर जैसे जल की निर्मल धार जैसे।।
ओस की शीतल बूंद जैसे मधुर मधुर फुहार जैसे।।
स्वर्ग हेतु, पूर्ण शान्ति के लिये जीवन भेट चढाता है।।
अनत विभव सकल्प सेवा सेवक उपवन सजाता है।।
निराश उदास सिहरे मन को हाथ बढा उठाता है।।
प्रेम पूर्ण नयन दृष्टि से प्रीत दीप जलाता है।।
विलासिता की ताव्र कौंध मे स्निग्ध भाव दमकाता है।।
मित्रो का मित्र प्रेमी बन जग जीवन हरषाता है।।
अन्त करण की सुवास पावन सागर पर लहराता है।।
हर तन्हाई की बाहे थाम जीवन प्रकाश दिखाता है।।
अनत असीम उल्लासित मन, प्रभु मे स्थिरता पाता है।।
स्वर्गिक आनद अपूर्व शान्ति, जन जन को वह सुनाता है।।
जोड़ जोड़ हर इकाई को वह खत्ता नया सजाता है।।
प्रभु प्यार पावन मधुर मीठा, नाम पुकार बुलाता है।।
अन्धकार तन्द्रा से उठ वह प्रभु पुकार सुन लेता है।।
पवित्र आत्मा दान पावन, प्रेम गीत बन गाता है।।
गहरी भाषा सवाद–गहन नीरव गान सुनाता है।।
दिव्य रूपान्तर दिव्य दरशन, हदय द्वार खुल जाता है।।
कोमल मन नूरानी पावन पुलकित हो खिल जाता है।।
मैं था अभी अब मैं नहीं हू प्रभु महिमा मुसकाती है।।
प्रभु से पाया प्रभु को सर्मपण, ऐसा दीक्षा लेता है।।

जीवन जल सा उमड़े वैभव ऐसी शिक्षा देता है।।
प्रम की भूख प्रेम से तृप्ति, शील क्षमा सिखलाता है।।
दाँव, फटक पीस गूँध कर निज, नमनशील बनाता है।।
तच तच पावन अग्नि पर वह जीवन 'रोटी बनाता है।।
सुवासित 'राटी से फिर वह, प्रभु भोज महिम सजाता है।।
जैसे कोल्हू दाख पेर कर मधुर मधु छलकाता है।।
जीवन–मधु बना कर ऐसे, सेवक रस बरसाता है।।
रक्त बूँद ओस बूँद बन कर तरल छटा बिखराती है।।
खेत खेत खलिहानो मे जीवन फसल बोता है।।

चुनौतियाँ

पर जड़ता–कथा विलक्षण अधर्म पाप की बेल।
कच्चे धागे सी यह डोर विचित्र इसके खल।।
उन्मादी पशु रूप धारे बुझे दीप विश्वास।
मूर्च्छित प्राण चेतना, ले आती विनाश।।
अह कीट देह गलाता लुट जाता खलिहान।
वायु बवडर बीज उड़े मन होवे वीरान।।
मन भीतर है एक वर्तुल कारक वह तूफान।
कहे नबी नहेम्याह प्रभु का सुन आह्वान।।
हे वेदी टहलुओ सूने हुए भडार।
अर्ध चढ़ाए कौन प्रभु जीवन करता गुहार।।
सूखी दाखलता हरी कुम्हलाए अजीर।
करती है विलाप भूमा नयन रहा न नीर।।
तिमिर दिन है विकलाना, ढूँढ रहा 'एज्रा भोर।
भेट प्रभु वेदी चढाओ रोक मन के शोर।।
थम जा थम जा, ओ निर्बल कहे अमोस' अधीर।
सब कुछ भस्म हुआ जाता तन पर रहा न चीर।।
चलता अलीक वह गिरता सभल हे प्रवीण।
लीक बनावे मिटावे बूझ बूझ तू प्रवीण।।

कुण्डलिया

न्याय प्रीत प्रभु रहे सच्चा प्रभु की इतनी चाह।।
हे मनुज नहीं क्या अच्छा कहे योएल चल राह।।
कहे नहूम चल राह मारग देख रख साहस।
प्रभु धीमा पर न्यायी नगर डगर रह चौकस।।
घासला ऊँचा बाँधे करे युक्ति और उपाय।
तिनका रहे न श्रृंग हबक्कूक कहे प्रभु न्याय।।

दोहा

परिधि पर क्यो घूम रहा कस कमर हो तैयार।
सैनिक निज लाठी उठा तरी हुई पुकार।।
दीपक हाथ ले छोटा देख महिमा अपार।
प्रकाश मिले हर कदम, तय कर मील हजार।।

आत्मिक दृढता के चालीस शिखर

१ *प्रथम शिखर विश्वास शुचि प्रभु–प्रीत सुसगीत।*
जीवन सोपान प्रथम यह पावन पवित्र पुनीत।।

२ *आस बढावे शिखर यह बल पाये विश्वास।।*
धुँध कुहास मिट जावे जीवन भरे उजास।।

३ *आत्मिक शक्ति बढाता शिखर त्रैक्य महान।*
मनुज प्राणी त्रिएक्य शरीर आत्मा प्रान।।

४ *माली जैसे रक्षा कर, मनहर बारी दाख।*
यहोवा क्षण क्षण सींच कहे शिखर यह पाख।।

५ *दुख दाये और दावे मन हो चूर चूर।*
यहोवा युक्ति अद्भुत शिखर रहे न दूर।।

६ *हार को जीत बनाता कहे शिखर षटकोण।*
यहोवा सदा हितकारी सुने करूणा–कर मौन।।

७ *मार्ग यही यही है मार्ग सुनो शिखर अनुगूँज।*
दाँये मुड़ो या कि बाँये शिखर सात पर गूँज।।

८ *जैसे पक्षी पाँख फैला शिशु लेता है ढाँप।*
चोट झेले सब तेरी रक्षक यहोवा आप।।

९ प्रभु छाहे हैं य शिखर, बौछार देत आड।
दुखो से रक्षा कर प्रभु रोके आँधी बाढ़।।
१० घट न होवे प्रभु करूणा मूढ़ उखाड़े मेख।।
शुभ शीतल शिखर धवल प्रभु महिमा तू देख।।
११ क्रोध यहोवा जब प्रगटे डिग धरा यह धीर।
शिखर कहे लिपटे गगन होत नक्षत्र अधीर।।
१२ केसर क्यारी ज्या खिल, शिखर चढ़े यशमान।
औ विभव ज्यो लबानोन, प्रभु अनुग्रह महान।।
१३ शिखर तेरह सावधान देख प्रभु का न्याय।
धैर्य धीरज धारण कर राह समुद्र दे जाये।।
१४ पत्री खोल प्रभु आग चढ शिखर मन तोल।
दिव्य आनद पायेगा कह दे सब दिल खोल।।
१५ पावन प्रीत हृदय जगे उठ अतस हिलोर।
शिखर चढाई सरल लग खिले फूल चहुँ ओर।।
१६ दुख तेरे सदा झेलता भरे हर्ष अकवार।
बचे ठोकर पदाघात, चरवाही टकार।।
१७ भ्रात बुद्धि तर्क अटकाती फैलाती महा जाल।
प्रभु महिमा जब प्रगटे जगल बनते ताल।।
१८ अनजान पथ पर अगुवाई सुन पावन प्रबोध।
शिखर ओर दृष्टि लगा मिल जाये दिशाबोध।।
१९ नाम ले तुझे बुलाता सग वाचा की टेक।
देख शिखर ज्योति महिमा करता प्रभु अभिषेक।।
२० प्यासी भूमि जल पाये मरू प्रगटे जल धार।
वश तेरा आशीषित कहे शिखर पुकार।।
२१ क्षमा करो क्षमा पाओ खुले द्वार बिन चोट।
प्रभु कृपा धन गुप्त मिले प्रभु मडप तृण ओट।।
२२ शाप ताप काल प्रकाल रक्षक प्रभु शक्तिमान।
आदि अत सर्वज्ञानी यहोवा परम प्रधान।।

२३ देख तुझे निर्मल किया धवल चाँदी समान।
मार्ग यहोवा सत्य–पथ दूर करे अभिमान।।
२४ प्रबल करे हाथ दाहिना मुख चोखी तलवार।
न्याय वचन आगे चले निर्भय हो ललकार।।
२५ हठ न करूँ पीछे न हटू रहू शिष्य परिवेश।
सदा रहू कृतज्ञ सुनू भार क प्रभु सदेश।
२६ हे धर्म पर चलने वाला सुनो शान्ति की बात।।
फिर सजे अदन वाटिका लाओ नवल प्रभात।।
२७ शान्ति का बात सुनाते रक्षक सैनिक वेश।
पाँव वे क्या ही सुहाने लाते शुभ सदेश।।
२८ धर्म का फल है शान्ति औ परिणाम सुखचैन।
छाँह पाये तृप्त धरा शिखर कहे दिन रैन।।
२९ व्यर्थ न लौटे प्रभु वचन सरसे ज्यो जलजात।
आकाश मेह बरसाव करे नहीं पक्षपात।।
३० प्रभु स अटल बधा रहे प्रभु भवन कर प्रवेश।
जाति कुल राज सब आओ पहन पावन परिवेश।।
३१ दुष्ट समुद्र ज्या लहराय थिर न रहे पल एक।
पर्वत ज्या दृढ उत्तम रहे प्रभु थामे धर्मी नक।।
३२ पलक झपक नहीं आलस न भाव दृष्टि मलीन।
सीची हुई तू क्यारी कहे नबी क्यो दीन।।
३३ मनुज ज्ञान क्रिया का रूप वचन का बन प्रतीक।
लक्ष्य रहे प्रभु अराधन और चले प्रभु लीक।।
३४ भीतर का उत्पात मिटा देख प्रकाश उद्धार।
आत्म तेज प्रखर बना तब बने एक हजार।।
३५ खडहर पर जीवन बसे गहनो का श्रृगार।
नया नगर बस जाता याजक करे जयकार।।
३६ तू है प्रभु की चाहत दुल्हन का दे मान।
तेरे कारण हर्षित होता प्रीत पाये सम्मान।।

३७ ज्योत जैसे अरूणादय, दृढ़ प्रत्यय वह मीत।
दुख सहता सब तरे कोमल उसकी प्रीत।।
३८ यहोवा की यह वाणी जो प्रबल रह विश्वास।
दोष लगाये साजिश कर ऑच न आये पास।।
३९ ऐसी शक्ति प्रभु देता शिखरा पर झंकार।
माता दे पुत्र जैसे हर्ष हर्ष कर दुलार।।
४० हर क्षण जीना अत तक धूमिल हो न आस।
भव्यतम एहसास प्रभु का क्षीण न हो विश्वास।।

दोहा — आत्म दृढता शिखर पर खड़े नबी यशायाह।
आरे चीरता मनरश मुख निकली न आह।।

कुण्डलिया

ज्योत न्याय चमकेगी महिमा गलील निहार।
दीन महिमा पायेगा कहता नबी पुकार।।
कहता नबी पुकार सकट तिमिर छटेगा।
सृष्टि कौमार्य पुत्र वह जग इम्मानुएल कहेगा।।
शान्ति राजकुमार मनुज पुत्र वह क्षमा ज्योति।
तुच्छ त्याज्य घायल चमका ज्यो न्याय ज्योति।।

दोहा — शपथ है प्रभु करूणाई दुख धूप की यह राह।
कह मीका पृथ्वी छोर तक समता की वह छाँह।।
खून पसीने का योग, औ आँसू विनियोग।
अनत जीवन एक चाह साधित गान मन योग।।

कुण्डलिया

देश देश सग रहेगे एक भाष्य एक बाल।
कहे नबी सपन्याह सब रहेगे दिल खोल।।
सब रहेगे दिल खाल कहे नबी मोहर प्रभु छाप।
हाथ अगूँठी जैसे पहिन निज मन को तू माप।।
निर्मल वचन विभव की जग जन पहने प्रभु वेश।
नबी मलाकी कहे जग मग दमके सब देश।।

दाहा — अभय प्रेम गूढ गहरा सवक का प्रभु दृष्टात।
दरस रखे प्रभु महान दरपण सा मन कात॥

चौपाई

मेर धनुष मरकत का जैसे। दमक रहा सिहासन एसे॥
मशाल माणिक माती ऐसे। जड सिहासन उजले कैस॥
काटि दामिनी दमके जैसे। शब्द महा गजन तर्जन एस॥
दीपक सात जल रह कैसे। अगन ज्वाल उमगित जसे॥
गिल्लौरी दमक सामने ऐसी। काँच समुन्दर उजास जैसी॥
उजले आसन कोई विराजे। संग धर्म वृद्ध चौबीस राजे॥

दाहा — स्वर्ण मुकुट शीश धार जीवन के य प्रभात।
करते दडवत बारम्बार वन्दन दिन औ रात॥

चार प्राणी आसन रखवार। देख रहे तल अतल है सार॥
जैसे आँख ही आँखे। गति क्रम माप फैला पाख॥
शक्ति प्रतीक सिह हुँकारे। उकाब आत्मा रूप विस्तारे॥
चार कोण स्वर्गदूत निहारे। थाम खडे रूख हवाओ सार॥
कहते था है आनेवाला। पवित्र प्रभु जीवन देने वाला॥
प्रेम प्रतीक बछडा बलिदानी। दया क्षमा ज्योत पुत्र वरदानी

दाहा — याहन मन प्रभु वदी सत् कर्मो का उन्मेष।
जीवन ज्योत प्रभु पाया बरसी प्रीत विशेष॥

आशीष आशीष आशीष हम पर उडेल ऐसी।
आमीन आमीन आमीन धरती हो स्वर्ग जैसी॥

दाहा — १ ज्ञानी भटके ज्ञान म दीन रहता अनजान।
अज्ञान मे ज्ञान महान् जीवन अनत सज्ञान॥
बिरले ही द्वार पात जीवन का वरदान।
हर रूप सवा करता जा रहे क्षमा निमान्॥